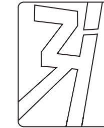
मैथिली कविताक हजार वर्ष-2

मैथिली कविताक हजार वर्ष

(भाग दू)

(आलोचना)

तारानन्द वियोगी



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-42-0
मैथिली कविताक हजार वर्ष-2

पहिल संस्करण (सजिल्द): 2023

मूल्य : दू खण्डक सेट : **1650.00 टाका**
प्रत्येक खण्ड : **825.00 टाका**

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

MAITHILI KAVITAK HAJAR VARSH-2 (Criticism) by Taranand Viyogi
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : Complete Set of 2 Volume ₹ 1650.00
Each Vol. ₹ 825.00

अनुक्रम

विद्यापति आ हुनकर कविता

एक व्यक्ति-कविक रूप मे विद्यापति मिथिलाक पहिल नि:संदिग्ध कवि छलाह, जिनका मे आ जिनका द्वारा मिथिलाक जातीय कविता प्रतिष्ठापित भेल। ओ मिथिलाक छलाह कि नै छलाह, ई बात उनैसम शताब्दी बितैत-बितैत वृहत्तर देशक स्मृति-पटल सँ लुप्त भ' चुकल छल। हुनकर जबर्दस्त प्रशंसा बंगाल मे छलनि आ बंगाली भाषाभाषी लोकनि अपन एहि आदिपुरखा कवि कें पाबि परम सम्मानित अनुभव करैत छला। एम्हर हुनकर एतुक्का मैथिल समाज सामंत लोकनिक चरणपूजन मे, आ जँ ताहि सँ ऊपर उठलहुँ तँ ज्ञानक खोइंचा छोड़यबा मे शताब्दी-शताब्दी सँ व्यस्त छल। जातीय मनोनिर्मिति कवि कें आदर देबाक छलैके नहि, ने साधक कें ने समाजसुधारक कें। एतय तँ सामंत एकमेवाधिकारी छलाह, आ ताहि लेल तात्कालिकता पर्याप्त छलैक, इतिहास कें जोगा क' रखबाक, ओकरा रचबाक कोनो प्रयत्न नहि छलैक। बंगाली समाज पर अपन श्रद्धेय प्राचीन कवि विद्यापतिक कते जादू चलल छलैक तकर एक प्रमाण हमरा लोकनि कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक किशोरावस्थाक घटना सँ बुझि सकैत छिऐक जे कोना ओ भानुसिंह ठाकुरक छद्मनाम सँ पदावलीक रचना कयने रहथि आ एतय धरि जे तकरा काव्य-संकलनक रूप मे प्रकाशित करौने रहथि। ओ संकलन हुनकर प्रथम कवितासंग्रह छनि जहिया ओ मात्र अठारह-उपैस बरखक रहथि। भूमिका मे ओ लिखने रहथि जे भानुसिंह ठाकुर सतरहम शताब्दीक एक कवि छला जे ब्रजबुलि मे कविता लिखलनि, से कविता हुनका कतहु सँ परि लागि गेलनि अछि आ तकरा ओ प्रकाशित करबा रहल छथि। बाद मे जा क' बात खुलल जे ई मात्र हुनकर कलाकारी छल, ओ अपनहि भानुसिंह ठाकुर छलाह। विश्वकवि ओ ओहिना नहि भेला। मिथिला मे तँ आइयो क्यो प्रयोगशील नवतुरिया साइते एहन साहस क' पाबय। जखन कि रवि ठाकुरक संग भेल मात्र एतबे रहनि जे ओ एक टा काव्य संकलन पढ़ने रहथि—'प्राचीन काव्यसंग्रह' (संपादक अक्षयचन्द्र सरकार आ सारदाचरण मित्र, कलकत्ता,1878-79)। ओहि संकलन मे विद्यापति के कविता प्रमुखतापूर्वक संकलित रहैक। तकरा सब कें पढ़ि क' ओ तेहन भावाविष्ट

भेल छला जे विद्यापतिमय भ' गेल रहथि। हुनके भाषा, हुनके शैली, हुनके शब्दावली मे ओ अपन सौन्दर्यानुभूतिक उद्‍गार प्रकट कयने रहथि। एहि कविता सभक अधययन मैथिल युवाकवि कें जरूर करबाक चाहियनि। एहि संग्रहक पहिल कविता तँ तहियाक छी जहिया ओ मात्र सतरह बर्खक रहथि।

ई तँ बंगालक प्रसंग भेल जे ओतुक्का प्रतिभा पर विद्यापतिक केहन प्रभाव रहैक। एम्हर मिथिला दिस जँ देखी तँ की पबैत छी? 1883 ई. मे महराज लक्ष्मीश्वर सिंहक आज्ञा सँ दरभंगाक वकील बिहारीलाल फितरत अपन लिखल पुस्तक 'आईना-ए-तिरहुत' प्रकाशित करौलनि! ई असल में तिरहुतक इतिहास लिखबाक कोसिस छल जखन कि फितरतजीक स्रोत बहुत कमजोर छलनि। ई किताब उर्दू मे छल। किताबक रचना-उद्देश्यक बारे मे ओ लिखलनि—'प्राचीनकाल (तिरहुत) के जानकारी की बात आती थी तो अज्ञानता के चलते कुछ नहीं कह पाता था। इसीलिए हिम्मत किए कि इन बातों की खोज की जाय और एक पुस्तक लिखा जाय जिससे जो लोग वर्तमान में हैं और जो भविष्य में हों उन्हें इसकी जानकारी मिले और स्मृति बनी रहे। यद्यपि संबंध वकालत के व्यवसाय से है, जिसमें अवकाश अति अल्प होती है।[1]

एहि पुस्तक मे विद्यापतिक विवरण एक पाराग्राफ मे देल गेल अछि। कोन रूप मे? 'तिरहुत में बड़े-बड़े पंडित शास्त्रदां गत काल में हुए हैं, और अब भी मौजूद हैं।' गत कालक एक शास्त्रदां पंडित विद्यापतिक संबंधमे फितरत साहेब लिखैत छथि—'पाँच सौ वर्ष से ज्यादा हुआ होगा कि गौरीपति ठाकुर के पौत्र, गणपति ठाकुर के पुत्र विद्यापति ठाकुर, मैथिल ब्राह्मण, न्यायशास्त्र के बड़े नामी पंडित और कवीश्वर थे। राजा देवसिंह के पुत्र महाराज शिवसिंह उर्फ शिबय सिंह एक मौजा बिसफ़ी, परगना जरैल, विद्यापति ठाकुर को बतौर जागीर दिये थे, जो आज तक विद्यापति ठाकुर के वंशज नन्द ठाकुर वगैरह के कब्जे में है। और विद्यापति ठाकुर का लिखा हुआ नामी ग्रंथ 'पुरुषपरीक्षा' यादगार है।[2]

एहि कथन कें पढ़ने बात स्पष्ट होइत छैक जे उपैसम शताब्दी बितैत-बितैत विद्यापतिक स्मृति कतबा आ कोन रूप मे मिथिला मे बचल छल। ओ न्यायशास्त्र के एतेक नामी पंडित भेला जे शिवसिंह हुनका जागीर देने रहथि। ओ कवीश्वर सेहो रहथि मुदा हुनकर जे नामी ग्रन्थ भेटैत अछि से पुरुषपरीक्षा (संस्कृत गद्यकृति) थिक। जखन कि पं. गोविन्द झा लिखने छथि—'विद्यापति न्यायशास्त्र पढ़ला तकर कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि।'[3]

ध्यान रखबाक बात थिक जे आइ विद्यापतिलिखित ग्रन्थक रूप मे जतेक पुस्तक उपलब्ध होइत अछि ताहि मे सँ कोनो पुस्तकक पाण्डुलिपि मिथिला मे प्राप्त

नहि भेल छल। एकर तात्पर्य थिक जे मिथिलाक पंडित लोकनि मे विद्यापतिक प्रतिष्ठा प्रामाणिक रूप मे नहि छलनि। एहि बात कें विद्यापतिक मैथिल अध्येता यथा रमानाथ झा सेहो गछलनि अछि। एकमात्र जाहि पाण्डुलिपिक एक हस्तलेख मिथिला मे भेटबाक दावा कएल जाइछ ओ 'पुरुषपरीक्षा' छल। एहि पाण्डुलिपि कें फितरत साहेब देखि सकल रहथि कि नहि, कहि नहि मुदा 'नामी ग्रन्थ' जे ई छल से दोसर कारण सँ छल। एकरा मादे किछु सूचना राजकृष्ण मुखोपाध्यायक रूढ़िभंजक आ क्रान्तिकारी लेख 'विद्यापति' (नाना प्रबंध/1883 मे संकलित) सँ भेटैत अछि। ई महान ऐतिहासिक लेख थिक जे बंगाली पंडित लोकनि कें दलमलित क' देने रहनि, जाहि मे पहिल बेर एहि तथ्यक 'प्रमाणपूर्वक' उद्‍घाटन भेल रहैक जे विद्यापति बंगाली नहि, अपितु मैथिल छथि, मिथिलाक छथि। ई लेख सर्वप्रथम 'बंगदर्शन'क ज्येष्ठ, 1875क अंक मे छपल छल आ लगले 'इण्डियन एंटीक्वेरी'क अक्टूबर 1975क अंक मे जॉन बीम्स एकर अंग्रेजी अनुवाद छपौने छलाह। तहिया विश्व भरि मे एहि बात कें ल' क' उत्तेजना पसरल रहैक जे एक टा बंगाली गछै छथि जे विद्यापति बंगाली नहि छलाह, मैथिल छलाह।

अपन पुस्तक 'विद्यापति विवरण' मे पंडित श्रीवल्लभ झा लिखलनि अछि जे ई लेख जखन प्रकाशित भेल, 'समस्त बंग प्रान्त मे अशान्ति भ' गेल छल। विद्यापति पर बंगाली लोकनि एहन मोहित छलाह जे ओ हुनका अन्यदेशीय सिद्ध होएब एक बहुत पैघ अपन कलंक बुझैत छलाह। अत: 'बंगदर्शन'क ओहि लेख पर नाना प्रकारक समालोचना होमय लागल। एक प्रतिष्ठित बंगीय विद्वान तँ अनुमानक विमान पर एतेक दूर धरि उड़ल छलाह जे 'विद्यापति बंगालीए छलाह। पहिने बंगाली लोकनि विद्याध्ययन निमित्त मिथिला जाइत छलाह। संभव थीक जे विद्यापतियो विद्याध्ययनार्थ ओतय गेल होथि तथा अपन अलौकिक प्रतिभा सँ राजा शिवसिंह कें प्रसप कय बिसफी गाम प्राप्त कयने होथि एवं सुविधा देखि ओतहि बसि गेल होथि। किन्तु अनेक सद्विवेकी प्रतिष्ठित विद्वानक अन्वेषणहु सँ ई आब निर्विवाद भय गेल जे ओ मैथिले छलाह।[4]

जहाँ धरि 'पुरुषपरीक्षा'क नामी हेबाक प्रश्न अछि, ई पुस्तक 1815 ई. मे प्रकाशित भ' चुकल छल। मुदा विद्यापति-रचित ई पुस्तक बांग्ला मे प्रकाशित भेल छल। जनविश्वास ई छल जे बांग्लाक यशस्वी कवि विद्यापति गद्य सेहो अद्‍भुत लिखलनि, तकर प्रमाण ई पुस्तक थिक। राजकृष्ण मुखोपाध्याय, ई प्रश्न उपस्थित भेला पर जे की पुरुषपरीक्षा मूल बांग्ला कृति थिक, अपन लेख मे साफ लिखलनि जे 'ई मात्र एक टा भ्रम थिक। कैक गोट विद्वान यद्यपि कि एकर भ्रम हेबाक सन्देह अवश्य कयलनि अछि, मुदा कोनो प्रमाण प्रस्तुत नहि क' सकलाह अछि।' मुखोपाध्याय

अपन लेख मे तीन गोट प्रमाण देलनि। हुनकहि शब्द मे—'(1) पंडितवर श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक हस्तलिखित एक बांग्ला 'पुरुषपरीक्षा' अछि। ई पुस्तक सम्प्रति संस्कृत पुस्तकालय मे अछि। पुस्तकक ऊपर मे लिखल अछि—' श्री विद्यापति पंडितक संस्कृतवाक्यसंग्रहीता पुरुषपरीक्षा। श्री हर प्रसाद राय द्वारा बांग्ला भाषा मे रचित।' (2) 'फोर्ट विलियम कालेजक इतिहास' नामक ग्रन्थ मे स्पष्ट चर्चा आएल अछि जे श्री हर प्रसाद राय मूल संस्कृत पुस्तक सँ बांग्ला भाषा मे अनुवाद कयलनि। ओ पुस्तक फोर्ट विलियम कालेजक अभिप्रेरणा सँ आ गवर्नमेन्टक सहयोग सँ श्रीरामपुर मिशनरी प्रिन्टिंग प्रेस सँ 1815 ई. मे मुद्रित भेल। (3) हमरा संस्कृत 'पुरुषपरीक्षा' उपलब्ध भेल अछि। एकरा देखने सँ पाठकगण सहजे बूझि जेताह जे बांग्ला पुरुषपरीक्षा आर किछु नहि, एकरहि बांग्ला अनुवाद थिक।'[5]

कवि विद्यापति बंगाली नहि अपितु मैथिल छलाह, 1870क दशक मे ई बात प्रमाणित करब अपना मे कतेक पैघ बात छल, एकर अनुमान हमरा लोकनि एहि सँ क' सकै छी जे राजकृष्ण मुखोपाध्याय अपन 'विद्यापति' शीर्षक लेखक आरंभ एहि पाराग्राफ सँ करैत छथि—'विद्यापति बंग काव्य-काननक पिकवर मानल जाइत छथि। हुनकर अपूर्व संगीत-ध्वनिक संग-संग हुनक सरस कविताकुसुमक वासन्ती सौरभ बंगाल मे सर्वत्र व्याप्त अछि, जकर सुधमय झंकार सुनि क' जानि नहि कतेको भावुक विहंग आ मधुकर सुमधुर तान गूंजित करए लगैत छथि, कतेको शत-शत भक्त लोकनिक हृदय-द्वार खुलि गेलनि, प्रेमिक लोकनिक पुलकित तनु अतुल आनन्दहिल्लोल सँ आन्दोलित भ' चुकल अछि। जखन अमृतमय स्वरलहरीक विस्तार कए कोकिल ऋतुराजक आगमनक संकेत दैछ, ओ की कहैत अछि से सर्वथा नहि बुझितो बुझबा मे अबैत अछि केवल ओकर हृदयतंत्र कें झंकृत क' मोहित क' देब' बला स्वर, ठीक तहिना जखन विद्यापतिक गीत सुनैत छी, बिना अर्थ बुझनहु मन मुग्ध भ' जाइछ, हृदयक अन्तर्तम तंतु धरिक स्वर बाजि उठैत अछि। एहि कलकंठ भावुक पिकवरक जीवनवृत्तान्त कें बुझबाक इच्छा ककरा नहि हेतैक? हम अपन अनुसंधान द्वारा जाहि-जाहि तथ्य कें बुझि सकलहुँ अछि, एहि प्रबन्ध मे तकरा हम प्रकाशित क' रहल छी। मुदा हम जनैत छी, एहि ठाम हम जे किछु कहब ताहि सँ अनेको विद्वानक सुख-स्वप्न भंग भ'जेतनि, अनेकानेक चिरसंचित मूल मे कुठाराघात हेतनि। एतेक दिनक दीर्घ अवधि धरि जे लोकनि बांग्ला साहित्यक इतिहास लिखलनि, स्पष्ट कही जे हुनका सभक संग हम एकमत नहि भ' सकब।'[6]

एकमत भेनाइ भने मुखोपाध्याय लेल संभव नहि होइनि मुदा ओहि विशाल बंगाली जनताक ओ की करितथि जे विद्यापति कें मन-प्राण सँ श्रद्धा करैत छलाह आ हुनकर गीत मे अपन संस्कृतिक गौरव अनुभव करैत छलाह। ग्रियर्सन लिखलनि अछि, 'बंगाली गृहस्थ लोकनिक एक-एक घर मे विद्यापति-गीतक वैह आदर छल जेना इंग्लैण्डक घर मे बाइबिलक होइत अछि।'[7]

एही समय मे ग्रियर्सनक 'मैथिली क्रिस्टोमैथी' प्रकाशित भेल। एहि मे ओ विद्यापतिक गीत सेहो संकलित करय चाहैत रहथि। गीत सभक पाण्डुलिपिक लेल ओ बहुत छिछियेला। लिखलनि अछि, स्वयं विद्यापतिक वंशधर लोकनि, उत्तराधिकारी लोकनि धरि ओ पहुँचला, मुदा हुनका सब लग मे किछु नहि छलनि। से देखि ग्रियर्सन के कते आश्चर्य आ दु:ख भेल हेतनि तकर सहजे अनुमान कैल जा सकैत अछि। विद्यापति-गीतक जे पोथा सब बाद मे भेटल आ फेर बिलाइयो गेल, तकरा भेटबा मे एखन बहुत देरी छलैक। विद्यापति मिथिला मे व्याप्त तँ पूरा छलाह, मुदा पंडित लग मे नहि, पढ़ल-लिखल लोक मे नहि, शिष्ट आ सम्भ्रान्त लग मे नहि। जँ क्यो क्रान्तिकारी शिक्षित रसिक एहि गीत सब कें लिखि क' रखनहु छलाह तँ ओ नुकायल छल। हरसट्टे पंडितद्रोही वस्तु कें अंग्रेज प्रशासक लग मे प्रकट नहि कयल जा सकैत छल। मुदा, ग्रियर्सन मिथिले मे आबि रहैत छलाह, आ मिथिलाक विद्यापति विश्व भरिक विद्वानक बीच विवादक विषय बनल रहथि, जे ओ बंगाली थिका कि मैथिल, तँ हुनका लेल उचित आ जरूरी छल जे मिथिला मे प्रचलित विद्यापतिक पदक ओ संकलन देथु। दू टा स्रोत छल जतय सँ हुनका विद्यापतिक पद सब भेटि सकैत छलनि—मिथिलाक स्त्रिगण सँ, जे लोकनि एकरा धार्मिक वा धर्म-निरपेक्ष अवसर पर समूहगानक रूप मे गबैत छली। दोसर, शूद्र नटुआ/गायक लोकनि सँ जे नाच मे विद्यापति पद गबैत छलाह। एहि स्रोत धरि ग्रियर्सनक तत्काल पहुँच नहि भ' सकलनि, तकरा पाछू विद्यापतिक संबंध मे हुनकर बद्धमूल धारणा कें हम जिम्मेवार पबैत छी। ओ विद्यापति कें वैष्णव भक्तकवि बुझैत छलाह, आ तकर समर्थन बंगाली जनताक मान्यता सँ होइत छलनि। अन्तत: 82 गोट पद प्राप्त करबा मे ओ सफल भेला, कारण जिन खोजा तिन पाइयाँ। परवर्ती विद्वान लोकनि हुनकर संकलनक महत्व कें प्रतिपादित करैत लिखने छथि जे हुनक कयल काज ततेक मौलिक छल जे 82 टा मे सँ 55 टा पद कोनहु पोथा (तरौनी, रामभद्रपुर, नेपाल, बंगाल आदि) मे संकलित नहि छल। ई पद ओ कतय सँ प्राप्त कयने छला? ओ स्वयं लिखने छथि जे गीत गाबि-गाबि क' अपन रोजी-रोटी कमौनिहार सूरदास (नेत्रन्ध) आ अन्य मामूली भिखारि गायक लोकनि सँ ओ ई गीत सब संकलित कयने छलाह, जे प्राय: ट्रेन मे गाबिक' मुसाफिर लोकनि सँ भीख माँगथि।[8] मुखोपाध्याय मुख्यत: पंजी आ भाषिक संरचनाक आधार पर विद्यापति कें मैथिल घोषित कयने छलाह, ग्रियर्सन अपन संकलन सँ प्रमाणित कयलनि जे हुनकर प्रसार-क्षेत्र पूरा मिथिला छल। ई प्रकारान्तर सँ मुखोपाध्यायक पुष्टि छल।

बंगाल मे विद्यापति एते प्रशंसित छलाह, आ एम्हर मिथिला मे एतेक उपेक्षित, तकर की कारण छल? आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि—'संस्कृत कें छाड़ि लोकभाषामध्य साहित्याराधना करबाक अपराधें विद्यापति अपना समयक ओ तत्परवत्ती कालक पंडित-समाज द्वारा उपेक्षिते टा नहि, तिरस्कृतो होइत रहलाह। परमगुरु वाचस्पति मिश्रक पौत्र महामहोपाध्याय केशव मिश्र हुनका 'अतिलुब्ध नगरयाचक' कहि हुनक मत कें पंडितक मत समेत स्वीकार नहि कएल। एम्हर आबि विद्यापतिक काव्यक रीति तँ पंडित लोकनि स्वीकार कयलनि, ओ गीत रचल करथि मुदा विद्यापतिक कविताक केओ पंडित अध्ययन कएल, ओकर अनुशीलन कएल, से नहि सुनल थिक। विद्यापति मिथिलाक नारी जगत मे, शिवभक्त मध्य मे अथवा किछु रसिक जनक मंडली मे जीवित रहलाह।'[9] विद्यापतिक प्रति मैथिल पंडितक तिरस्कार-भाव कतेक प्रचंड छल, तकर एहि सँ अनुमान कएल जा सकैत अछि जे अपन अंतिम पुस्तक 'दुर्गाभक्ति-तरंगिणी' ओ भैरव सिंहक अनुरोध पर लिखलनि। प्राय: ओही कालखंड मे मृण्मूर्त्ति बना दुर्गाक उपासना मिथिला मे आरंभ भेल छल होयत। ई पुस्तक पूजा-विधानपरक निबन्ध छल। आगू दुर्गापूजा तँ मिथिला मे बेस लोकप्रिय रहल मुदा विद्यापतिक पद्धति बप क' देल गेल, कोनहु आन पंडितक विधानानुसार आइ दुर्गापूजा होइत अछि। मुदा आश्चर्य, बंगालक दुर्गापूजा मे एखनो विद्यापतियेक पद्धतिक अनुसरण कैल जाइत अछि।

एतेक बेसी घृणा विद्यापति सँ किएक? मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि—'हम सब जनैत छी जे मिथिलाक श्रेण्यवादी पंडित सब विद्यापति कें 'लुब्धनगरयाचक भाषा कवि' कहि क' खिधांस कयने रहथि। ई आक्रमण व्यक्तिगत नहि छल। यदि हम सब तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक स्थिति कें मोन पाड़ी तँ बात अपने परिछा जायत। राजा सब सँ पैघ दानी भेलाह आ ब्राह्मण पंडित लोकनि ओकर सर्वाधिक पात्र। ब्राह्मणक रूप मे दान तथा अमलाक रूप मे दक्षिणा लेबाक ई परिपाटी कर्णाटवंश सँ ओइनवार वंश धरि चलैत रहल। परिणाम भेल जे ब्राह्मणलोकनि धीमानक संग श्रीमानो बनि गेलाह। बिसइवार वंश (विद्यापतिक वंश) मे तँ अनेक सामन्त, महासामन्त, महासामन्ताधिपति भेल छथि। किन्तु ओ सब लुब्धयाचक नहि कहयलाह। तखन विद्यापतिक उपहास किएक कयल गेल? असल मे विद्यापतिक भाषा आ साहित्य मिथिलाक अभिजन पंडित लोकनि कें स्वीकार नहि छलनि। ओ लोकनि विद्यापतिक विचार आ लेखन कें हँसी मे उड़यबाक प्रयास कयलनि।'[10]

अन्तत: भेल वैह जे पंडित लोकनि चाहने छलाह। विद्यापति-साहित्यक जड़ि मिथिलाक शिष्ट समाज सँ उकपन भ' गेल। मुदा, 1870 ई. बला दशकक पछाति जखन विद्यापति-विषयक शोध कें ल' क' गरदम गोल मचल, अंग्रेज शासक ग्रियर्सन विद्यापतिक अभ्यर्थना मे पुस्तक लिखलनि, ई सब जखन मिथिलाक शिक्षित समाज देखलक तँ हुनका केहन प्रतीत भेलनि? प्रो. जयदेव मिश्र लिखलनि अछि—'मैथिल लोकनि बुझलनि जे रजनी-सजनी कहि जाहि मातृभाषाक अवहेला करैत आएल छी तकरहु मे किछु तथ्य अवश्य छैक, अन्यथा सात समुद्र पार सँ आएल ग्रियर्सन साहेब अपार परिश्रम कए एहि रचना सभक किएक उद्धार करितथि?[11] पुन: दोसर ठाम प्रो. जयदेव लिखलनि—'हिनका (मैथिल) लोकनि कें तहिना आनन्द भेलनि जेना कोनो नव आविष्कार भेल हो। ओ सब सोचलनि जे जखन सात समुद्र पारक विदेशी कें एहि मे सौन्दर्य भेटि सकैत छैक तँ एहि मे अवश्ये अन्तर्निहित श्रेष्ठता छैक। ग्रियर्सनक उदाहरण एक टा क्षितिज केँ अनावृत्त क' देलक जे जतबहि नव छल, ततबहि आकर्षक।'[12]

विद्वान लोकनिक कथनक जँ मर्म बूझल जाय तँ मिथिलाक पंडित-समाज नितान्त परबुद्धि छलाह आ संस्कृतक व्यामोह मे अपन भाषा, अपन संस्कृति, अपन लोक-समाजे सँ नहि, एकरा समर्थन मे ठाढ़ भेनिहार पंडितो सँ घृणा करैत छलाह। आधुनिक बोधक तमाम दबावक अछैत आइयो शुद्धतावादी लोकनिक दृष्टिकोण मौलिक रूप सँ बदलि गेल हो, दुर्भाग्यवश से नहि भेल अछि। एहना मे मैथिली कें ब्राह्मणक भाषा कहनिहार तथा तकरा प्रमाणित केनिहार विद्वद्वर्गक वास्तविकता की अछि, सेहो बूझल जा सकैत अछि। विद्वान लोकनिक कथन सँ एक इहो बात नीक जकाँ स्पष्ट होइत अछि जे शिष्ट समाजक जातीय स्मृति सँ विद्यापति आ हुनकर रचना पूर्णत: लुप्त भ' चुकल छल। जँ देसकोस मे ओ पसरल छलाहो तँ ओकर वार्ता लेब कोनो तरहें जरूरी नहि बूझल जाइत छल। एतय धरि जे कवीश्वर चन्दा झा जखन विद्यापति-विषयक शोध आ संकलनक काज कयने छलाह तँ हुनक बेतरह खिधांस कएल गेल रहनि। ग्रियर्सन जें कि अंग्रेज छलाह, स्वामीवर्गक छलाह, शासक छलाह, तें हुनके टा बात एहि शिष्ट समाजक समझ मे आबि सकैत छल। अनेक-अनेक कारण अछि जे मैथिली मे आधुनिक युगक आरंभ केनिहार ग्रियर्सन कें मानैत काञ्चीनाथ झा किरण लिखलनि—'हमर विचारें मैथिलीक लेल युग-प्रवर्त्तनक संकेत देलनि चिरस्मरणीय सर जॉर्ज ग्रियर्सन।'[13]

प्रश्न अछि जे एक समर्थ रचनाकारक रूप मे विद्यापति किएक मिथिलाक स्मृति सँ लुप्त भ' गेल छलाह? जँ हमरा लोकनि लोकगीतक इतिहास-सम्मत स्वभाव सँ परिचित होइ तं एहि मे आश्चर्यक कोनो बात नहि अछि। एकर चर्चा जातीय साहित्यक अध्याय मे हम क' आएल छी। लोकसाहित्य मे व्यक्तित्वहीनताक सिद्धान्त चलैत अछि। लोकगीतक रचनाकारक संगें लोकसमाज पहिल बर्ताव यैह करैत अछि जे ओहि रचनाकारक व्यक्तित्व सोंखि लैछ आ जँ ओ बेसी सबल हो तँ तकरा मिथक

मे परिवर्तित क' दैछ। हम इहो बात पहिनहि कहि आएल छी जे जे रचना अपन आन्तरिकता मे पूर्णत: लोकोपयोगी नहि होइछ आ प्रभाववश ओकरा लोक मे चला देल जाइछ तँ समय बितला पर लोक ओकरा चलन सँ उतारि दैत अछि आ पुन: ओकरा शिष्ट साहित्ये दिस वापस क' घुरा दैत अछि। आधुनिक युग मे ई घटना हमरा लोकनि मधुप जीक गीतक संग होइत देखलहुँ अछि। मिथिला-समाज कें हिन्दी फिल्मी गीतक प्रभाव सँ बचेबाक लेल मधुप जी फिल्मी धुन पर मैथिली गीत लिखने छला। तहिया तँ लागल छल जे 'लोक' एकरा स्वीकार क' लेलक मुदा युग बदलिते एहन भेल जे ओ गीत सब वापस आबि गेल आ आब हमरा लोकनि शिष्टसाहित्यक कसौटी पर ओहि रचना सब कें परखबाक लेल विवश होइत छी आ से करैत एकरा सब कें नितान्त छुछुप पबैत छी। एहि उदाहरण द्वारा असल मे हम ई कहय चाहैत छी जे ई घटना विद्यापतिक संग कहियो नहि भेल। एक बेर जे 'लोक' हुनका स्वीकार केलकनि, रचनाकार अपने तं लुप्त भ' गेलाह मुदा गीत आबाद बनल रहि गेल।

आधुनिक भारतीय भाषा-कविता मे विद्यापति भणिताक आरंभिक प्रयोक्ता मानल जाइत छथि। हुनका सँ पहिने अपन संस्कृत गीत मे जयदेवे एकर प्रयोग कयने रहथि आ कि सिद्धे लोकनि। एकर वास्तविक अभिप्राय की छल आ एकर प्रेरणा ओ कतय सँ लेने छलाह एहि संबंध मे विद्वान लोकनि पर्याप्त विवेचन क' चुकल छथि। हमरा लोकनि देखैत छी जे ई प्रयोग लोकसमाज द्वारा ने केवल ग्रहण कएल गेल अपितु एकर कम-सँ-कम दू गोट उत्तर-प्रभाव सेहो घटित भेल। एक तँ विद्यापति मिथक-पुरुष बनि गेलाह। जाहि शिवक भक्ति मे ओ गीत लिखने छला से शिव हुनकर खवासक रूप मे सेवा करैत कल्पित भेलाह, जाहि गंगाक प्रति विद्यापति धाार्मिक श्रद्धा रखैत छलाह, से हुनकर आज्ञापालन करैत देखाओल गेली, आदि-आदि। दोसर प्रभाव ई भेल जे हुनक गीतक भावदशा आ शैलीक अनुसरण करब एक चलन बनि गेल आ आनो लोक 'भनहि विद्यापति' कहए लगलाह। आइ स्थिति ई अछि जे पंडित गोविन्द झा वैज्ञानिक ढंग सँ शोधपूर्वक जखन प्रमाणित कयलनि जे 'जय जय भैरवि' विद्यापतिक लिखल गीत नहि थिक, तँ मैथिल लोकनि कें ठीक तहिना कलंक लागब-सन के दुख भेलनि जेना राजकृष्ण मुखोपाध्यायक लेख पढ़ि क' तहिया बंगाली लोकनि कें भेल छलनि।[14]

एहि ठाम ध्यान देबाक एक बात इहो अछि जे मिथिला मे विद्यापति-परक मिथक शिव आ गंगा कें ल' क' अछि, राधा-कृष्ण कें ल' क' नहि, जाहि पर कि ओ प्रभूत मात्र मे, अपन अधिकांश गीत लिखने छलाह। विद्यापति सँ किछुए सौ बरख पहिने भागवतक तीव्र प्रचार-प्रसार भेल छल। इस्लामक आगमनक बाद जे हिन्दू धर्म अपना कें पुनर्गठित क' रहल छल, ई ताही अभियानक हिस्सा छल। ध्यान

रखबाक बात इहो थिक जे जाहि लीलाक वर्णन विद्यापति अपन गीत सब मे केलनि तकर स्रोत तँ भागवत अवश्य छल मुदा ओहि ठाम (भागवत मे) राधाक सर्वथा अभाव छलैक जखन कि विद्यापतिक गीतक केन्द्र मे राधा छथि। ई राधा कतय सँ अयलीह, ताहि पर रमानाथ झा बहुत दृष्टिसम्पप लेख लिखने छथि। लिखैत छथि—'आभीर अनार्य थे और उनकी ही देवी थी राधा जिन्हें वे शृंगार की मूर्त्ति मानते थे। राधा को शक्तिस्वरूपा मानने में देर हुई ही होगी, पर तबतक लोककाव्यों में उनकी लीलाओं का वर्णन प्रसृत होता रहा होगा। आभीरों में शृंगार की कविता प्रमुख थी इसलिए लोकभाषाओं में शृंगार प्रधान कविता-रचना की परम्परा को उससे बल मिला, अथवा यों कहिये कि शृंगार रस के आलम्बन के रूप में कृष्ण और राधा जो आभीरों में मान्य थे, वे ही लोककाव्यों में भी परिगृहीत हो गए। इसीलिए हमारे भाषा-साहित्य में कृष्ण और राधा की लीलाएँ शृंगार रस के प्रमुख अंग हैं और उनकी विशिष्टता लुप्त हो गई। वे शृंगार रस के साधारण नायक और नायिका के रूप में परिचित और नर-नारी के प्रतीक माने गए। बंगाल में नवीन वैष्णव धर्म के उदय होने पर जब मधुर रस की कल्पना की गई तब शृंगार के आवरण मे अन्तर्निहित भक्ति का भाव लक्षित होने लगा।'[15] बंगाल आ मिथिलाक लोकसमाजक स्मृति मे विद्यापतिक अलग-अलग रूप किएक छलनि, तकरो रहस्य एहि ठाम बूझल जा सकैत अछि। राधाक तँ प्रश्ने कोन जे मिथिला मे कृष्णो कें तेना देवता नहि मानल जाइत छलनि जेना शिव कें वा गंगा कें। एतय धरि जे डाकवचन मे कृष्ण कें 'छौंड़ा' कहल गेल अछि, ताहि ठाम आत्मीयता तँ जरूर अछि मुदा पूज्यताक ओहि चरम भावक अभाव अछि जे कृष्णभक्तिक मूल थिक। विद्यापति-विषयक मिथक सब मे राधाकृष्ण-प्रसंगक अभाव अछि, तकर कारण एहि सब ठाम ताकल जा सकैत अछि। राधाकृष्ण भने कतहु सँ आएल होथि आ आगू कोनहु आन प्रकारक विकास कयने होथु, विद्यापतिक ओतए ओ दुनू साधारण नर-नारीक प्रतीक छथि जे प्रेम करैत छथि, आ एक-दोसराक बिना अपना कें अधूरा मानैत छथि।

जातीय कविताक मूर्त्तिमान

विद्यापति अपने तँ लुप्त भ' गेला वा ई शब्द पसिप नहि हो तँ कही जे मनुक्ख सँ मिथक मे परिवर्त्तित भ' गेला, मुदा हुनकर गीत सब लोक-स्मृति मे बनल रहि गेल, एकर की कारण छल ? कारण छल जे मिथिलाक जातीय कविताक जाबन्तो विशिष्टता अपन कविता मे ओ आत्मसात क' लेने रहथि। हुनक भाषा आ अभिव्यक्ति ठीक-ठीक ओही तल पर उतरि क' व्यक्त भेल छल जतय सँ मिथिलाक अज्ञात स्त्री लोककवि लोकनि अपन व्यवहारक लेल गीत बनबैत छलीह। संवेदनशीलताक ओहि

ठाम ओहने उत्कटता छलैक जेहन लोककवि लेल काम्य होइत छैक। आ भाषा सेहो ओहने सरल-सहज जाहि सँ पूराक पूरा मार्मिकता बिनु भाषाक झोंझ मे ओझरौने एहि हृदय सँ ओहि हृदय मे उतरि जाइत छैक। विद्यापति संस्कृतक पंडित रहथि। संस्कृत कविता लिखबाक हुनका अभ्यास रहनि, मुदा छन्दक बन्ध कें तोड़ैत शुद्ध क' क' लयप्रधान रचना क' सकब, एक भिप बात रहैक जे स्पष्ट रूप सँ लोक परम्परा सँ लेल गेल छल। एहि सभ कथूक लेल सामान्य परिश्रम वा अभ्यास सँ काज नहि चलि सकैत छल, कहबाक चाही जे कायान्तरण प्रयोजनीय छल। ई कायान्तरण होइत हमरा लोकनि विद्यापतिक प्रसंग मे देखि सकैत छी। एकरा अतिरिक्त, जातीय साहित्यक दू गोट स्वभाव आरो छल जे विद्यापतिक कविता मे पूरेपूरी आत्मसात भेल। ई छल—अपराजेय आशावाद जकरा हमरा लोकनि विद्यापतिक समस्त साहित्य मे जगमग करैत देखैत छिऐक। आ दोसर, समकालिक मनुष्यताक विडम्बना कें चित्रित करबाक लेल बिम्ब सभक, मिथक सभक मुक्त मन सँ प्रयोग, जकरा लेल कि सेहो हुनकर बेस मान छनि।

मिथिलाक जातीय काव्य विद्यापतिक कविता मे ताहि तरहें मूर्त्तिमान छैक जे जखन क्यो मिथिलाक लोकगीतक विशेषता बतब' लगैत अछि तँ हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे ओ समस्त विशेषता विद्यापतिक पदो पर लागू भेटैत अछि। एकर किछु दृष्टान्त देखल जाय तँ बात स्पष्ट होयत। डॉ. अणिमा सिंह मैथिली लोकगीतक विशेषता बतबैत कहैत छथि—(1) भाषाक सरलता, सुबोधता आ वेगसम्पपता (2) भावक उदारता (3) मंगलैषणाक प्राधान्य (4) धर्मोन्मुख जीवनक कामना (5) पारिवारिक आ सामाजिक जीवनक सौमनस्य[16] एकरा अतिरिक्त ओ कहैत छथि जे मैथिली लोकगीत मे भावे ओकर प्राणस्वरूप होइछ आ सुर तँ ओकर अंगमात्र थिकैक। मैथिली लोकगीतक आद्य संकलयिता डॉ. राम इकबाल सिंह राकेश एकर व्याप्तिक वर्णन करैत लिखैत छथि—'कदम-कदम पर मिलते हैं यहाँ (मैथिली लोक-संसार में) जीवन के सुनहले गीत। एक-से-एक बढ़कर मार्मिक। किसी की आँखों में मुसीबत की बदली। किसी के मुख पर संध्याकालीन एकान्त। किसी के मुख पर मौत का-सा अन्धकार। किसी के अश्रुकण प्रकाश में चमक रहे, तो किसी के आंसू अन्धेरे में बन्द।'[17] राकेश जीक एहि कथन कें घटित करू तँ लगैत अछि जेना विद्यापतिक गीत-साहित्यक ओ विषय-विस्तार बता रहल होथि। एतय धरि जे जखन ओ (राकेश जी) मैथिली लोकगीतक लय आ भास पर गप करैत कहैत छथि जे मैथिली ग्रामीण कवि (तात्पर्य लोकगीत-रचयिता सँ अछि) अपने परिमार्जित और संयत गीतों के रचयिता ही नहीं, बल्कि अनेक नूतन छंदों और तालों के उत्पादक भी हैं। कहीं-कहीं एक ही छंद बहुरूपिये-सा रूप बदलकर जुदा-जुदा लिबासों में

प्रकट हुआ है। उनमें कुछ ऐसे हैं जो तेज रेती के समान कठोरतम इस्पात को भी काट सकते हैं, कुछ ऐसे हैं जो पतझड़-से जीर्ण-शीर्ण आत्मा का वासन्तिक निर्माण करते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो फूल की कोमल कली की तरह 'वनदेवी की गोद में मचल रहे हैं।'[18]—तँ एहन प्रतीत होइत अछि मानू विद्यापति-संगीतक विशेषता बताओल जा रहल होथि। एतय धरि जे मैथिली संस्कारगीतक प्रमुख संकलयिता राधावल्लभ शर्मा विशेषता बतबैत जखन मनोविकारक अभिव्यक्तिक प्रश्न पर अबैत छथि तँ कहैत छथि—'इनमें (तात्पर्य मैथिली लोकगीत सँ अछि) कृत्रिमता नहीं होती और न कुण्ठा या आत्मगोपन का प्रयास ही मिलता है। अकृत्रिम अभिव्यक्ति के कारण इनमें मिथिला के जातीय जीवन के यथार्थ के दर्शन होते हैं।'[19] तखनहु जेना यैह लगैत अछि जे ठीक-ठीक यैह विशेषता तँ विद्यापतिक गीतो पर लागू छैक।

अपन संकलन 'प्राचीन गीत' मे विद्यापति कें संकलित करैत आचार्य रमानाथ झा संपादकीय टिप्पणी मे, हुनक गीतक आन कोनो विशेषता गनेबा सँ पूर्व ई दू बिन्दु लिखलनि—(1) विद्यापति जन-साहित्यक निर्माण कएल, मानव-हृदयक मूलभूत वासना कें, नैसर्गिक भाव ओ भावावेश कें अत्यन्त सूक्ष्मता सँ यथावत चित्रण कएल। (2) रागताललयाश्रित कोमलकान्त पदावलीक रचना कएल, जाहि मे प्रसाद, लालित्य ओ माधुर्य उपर्युपरि अछि।[20] ई कहबाक कोनो आवश्यकता नहि जे विचारि क' देखला पर यैह दुनू विशेषता मैथिली लोकगीतक छिऐक। हमरा लोकनिक ध्यान एहि दिस जाइत अछि जे विद्यापतिक गीत कें ओ 'जन-साहित्य' कहलनि। जन-साहित्यक की तात्पर्य अछि? आधुनिक साहित्यशास्त्र मे जन-साहित्य आम जनक भौतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितिक मादे लिखल साहित्य कें कहल जाइछ। सामाजिक सरोकार आ सुस्पष्ट अर्थ मे जनहित एकर उद्देश्य होइत छैक। एहि कसौटी पर विद्यापति कत्तहु नहि ठहरैत छथि। दृष्टान्तक लेल यात्री नागार्जुनक द्वारा संकलित 'विद्यापति के गीत' के भूमिका-स्वरूप लिखल 'कवि-परिचय' देखल जा सकैत अछि। विद्यापतिक तत्कालीन परिवेश आ परिस्थितिक आकलन करैत ओ लिखलनि—'विद्यापति वैष्णव थे, या शैव थे या शाक्त थे—समालोचकों की खींचातानी सामान्य पाठकों को अवश्य ही मनोरंजन प्रदान करेगी। मुझे तो विरह-शृंगारवाले ये कोमल गीत तत्कालीन सामन्तवर्ग के मनोविनोद की सामग्री प्रतीत होते हैं। नर्त्तक और नर्त्तकियाँ भावाभिनयपूर्वक इन गीतों को गाते थे और सुविधाभोगी वर्गों के प्राण-मन इन्हें सुन-सुनकर परितृप्त होते थे। मुग्धा राधिका की अभिसार-लीला बूढ़े राजाओं का दिल गुदगुदाती थी। राजकुमारों और राजकुमारियों की रसिकता पर मान-मनौवल के विदग्ध वचन सान चढ़ाते थे।'[21]

प्रश्न उठि सकैत अछि जे जँ यैह, तखन यात्री जी एकरा संकलित किऐक

कयलनि आ एतेक आयासपूर्वक गीत सभक मनोरम गद्यानुवाद किएक कयलनि? एकर विस्तार मे ओ नहि गेलाह अछि आ 'कवि-परिचय'क हिसाब सँ ओकर बेगरतो नहि रहैक। ओ केवल ई बतबैत छथि जे महाकवि विद्यापतिक यश सौंसे संसार मे पसरल छनि आ ओ संसारक इनल-गिनल किछु महान गीतकार मे सँ छथि जनिक स्वागत रसिक-मंडली लोकनि विश्वस्तर पर केलनि अछि। दोसर बात ओ एहि गीतक प्रसारक मादे कहैत छथि जे बांग्ला, उड़िया, असमिया, संथाली, नेपाली, मगही, भोजपुरी, अवधी और ब्रजभाषाक क्षेत्र धरि पसरल एक दोसरक ठेठ शब्द सब कें तेना क' पकड़ैत गेल जे गीतक जे वास्तविक भाषा (मैथिली) अछि, तकर तँ मानू 'हलुआ' बनि गेल अछि।

जे कवि एते व्यापक क्षेत्र धरि प्रसारित होयत, निश्चय छैक जे ओकरा कविता मे एहन किछु अन्तर्निहित गुण हेतैक जे लोक-समाज मे एकर स्वीकार्यता बढ़बैत हो। कोनो संकलयिता वा अनुवादक सेहो सैह पाबि क' ई भार माथ पर लैत अछि। यात्री जी एहि बारे मे मात्र एक पंक्ति लिखैत छथि जे विद्यापतिक राधा-कृष्णबला पद सभक पाँती पाठक आ श्रोता कें आशाक संदेश दैत अछि। मानव-हृदय मे आशाक जे संचार करय, सेहो एते दीर्घकाल धरि आ विशाल भूभाग धरि, ओ आमजनक वस्तु भ' जाय, निश्चिते जन-साहित्य तँ ओ अवश्य भेल। आवश्यकता तँ आशाक संचारक छैक, कारण वैह ओहि सामंतवादी युग मे आमजन कें बचा क' राखि सकैत छल। अपन अस्सल आशय यात्री जी अपन लेख 'कविता: युगक गीता' मे व्यक्त केलनि अछि। विद्यापतिक गीतक महत्व स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि—'सृष्टिक सर्वोत्तम अवदान थिक मनुष्य, जीवनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काल थिक यौवन, रचनात्मक दृष्टिएँ सर्वोपरि स्थायी भाव थिक नर-नारीक परस्पर प्रीति। ओहि प्रीतिक अवहेला कएनिहार कवि किंवा दार्शनिक अगबे पाथर थिकाह।'[22] आगाँ ओ फेर लिखलनि—'काव्यात्मा विद्यापति कें चिन्हबा लए चाही भावप्रवण मानवीयता, सहानुभूतिक परम आकुलता, नर-नारीक पारस्परिक सद्भावना दिस अखंड आस्था।' सुनबा मे यात्री जीक बात आसान लागि सकैत अछि मुदा वास्तव मे एकर आशय गहन छैक। 'नर-नारीक पारस्परिक सद्भावना' मनुष्य-समाजक लेल एक एहन 'हरकुलिसन टास्क' थिक जकर समाधान एखनहु, एकैसम शताब्दीक एक चरण बितलाक आ नारीक एतबा मजगूत हेबाक बादो, नहि निकलि पाओल अछि। विद्यापति ताहि सद्भावपूर्ण परस्पर-प्रीतिक गायक छलाह। एकर जरूरति हरेक युग मे बनल रहतैक, जँ एहि देश कें आबाद बनौने रखबाक हो तँ। ई विपत्ति मे बल सेहो दैत अछि, आशाक संचार सेहो करैत अछि। अपन लेख मे यात्री जी विद्यापति-गीतक आनो आन विशेषता सभक चर्चा करैत छथि—'प्रासादिक भाव-गाम्भीर्य, अभिनव व्यंजन-शक्ति, मर्मस्पर्शी उक्ति-विन्यास, चमत्कारपूर्ण शब्द-शिल्प।'[23]

विद्यापतिक विभिप पक्ष सब पर एखन धरि जतबा वस्तु प्रकाशित भ' चुकल अछि, तकर मोटाइ तीस हजार पृष्ठ सँ कम नहि होयत। मैथिली मे अपेक्षाकृत कम काज भेल अछि, आ सुरुहे बहुत देरी सँ भेल अछि, मुदा एसगरे रमानाथ झाक लिखल पाँच सौ सँ ऊपर पृष्ठक सामग्री छनि। एहन आनो किछु गोटाक छनि। मुदा हम सब देखब, एहि मे सँ अधिकाधिक, प्राय: सम्पूर्ण, ओहि चारि विशेषताक बारे मे अछि, जकरा यात्री जी अंत मे कहलनि। प्रासादिक भावगांभीर्य, अभिनव व्यंजनशक्ति, मर्मस्पर्शी उक्तिविन्यास, चमत्कारपूर्ण शब्दशिल्प। एहि सभक पाछू जे अन्तर्निहित गुण छैक, जकरा इष्ट मानल गेल अछि, तकरा पाछू ध्यान एखने आबि क' देल जा सकलैक अछि। एहि तरहें देखी तँ विद्यापतिक जाहि साहित्य कें रमानाथ झा 'जन-साहित्य' कहलनि, ताहि पर लिखल गेल समीक्षा ने केवल शिष्ट साहित्यक मानदंड कें मानि क' कएल गेल अछि, अपितु ओहू मे ओकरा क्लासिक के दरजा देल गेल अछि। तखन, 'जन-साहित्य'क अभिप्रेत कोना स्पष्ट होयत? ज्ञानमंडल सँ प्रकाशित हिन्दी साहित्यकोश मे जन-साहित्यक परिभाषा एहि रूपें देल गेल अछि—'हर एक साहित्य जन-साहित्य नहीं हो सकता। जन-साहित्य बनने के लिए समाज की आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करना पड़ेगा।'[24] रमानाथ झाक अभिप्रायक ई प्राय: निकट अछि। मुदा परिभाषित करब एक बात थिक आ ओहि आशय कें स्फुटित क' क' समक्ष राखब एक भिप बात। एहना मे, मोहन भारद्वाज सँ सुनल एक प्रसंग मोन पड़ैत अछि। एक बेर भारद्वाज जी महाकवि सुरेन्द्र झा सुमन सँ भेंट करय गेला। सुमन जी पुछलखिन—आइ-काल्हि की लिखि रहल छी? कहलखिन—विद्यापति पर लिखि रहल छी। सुमन जी बजलाह—विद्यापति पर आब की लिखि रहल छी यौ?' अर्थात् हुनका पर तँ समस्त सब किछु लिखबा योग्य बात पहिनहि लिखल जा चुकल अछि। कहब आवश्यक नहि जे ई एक अतिक्रान्त मान्यता थिक।

कुला मिला क' देखी तँ मैथिली लोककविता, जकरा दोसर शब्द मे मिथिलाक जातीय कविता कहि सकैत छी, के जाबन्तो विशेषता विद्यापतिक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे आबि क' निमज्जित भ' गेल छल। एहि निमज्जनक व्यापकता ततेक बेसी छैक जे मानू एकरा बाद किछुओ आर छूटल नहि रहि जाइत छैक। प्रथम स्थान पर तँ भाषा अछि। विद्यापतिक द्वारा अपन पद सब मे प्रयुक्त विरल देसी शब्द आ तकर प्रयोगक चलन मादे विद्वान लोकनि कतोक ठाम चिन्ता केलनि जे ई सब शब्द आब लुप्त भ' गेल। मुदा मिथिला अपन वास्तविक अर्थ मे जतेक दूर धरि गाम-घरक आत्मा मे पैसल अछि, आँखि खोलि क' ताकल जाय तँ पता लगैत अछि जे ओ शब्द सब मात्र दरभंगा-मधुबनीक भाषा मे लुप्त भेल अछि, खगड़िया, गोड्डा आ

कि किशनगंजक भाषा मे एखनहु पूरेपूरी चलन मे अछि। तहिना लोक-छंद, रागताल-आधारित। रमानाथ बाबू आ कि आनो विद्वान जखन लिखैत छथि जे विद्यापति मैथिली मे गीत-रचनाक प्रवर्त्तन केलनि तँ कदाचित ई वास्तविक बात बताएब छूटि जाइत अछि जे विद्यापति स्वयं ई गीत कतय सँ अनने छलाह? यैह असल मे एहि भूमिक, एहि लोकक जातीय कविता-रूप छल। विद्यापतिक साहित्य मे जे कहन-शैली छैक, जकरा दुआरे हुनकर पद सब मार्मिकताक पराकाष्ठा छुबैत अछि, सेहो वस्तुत: लोक सँ गृहीत छल। महिला लोकनिक चिन्तना आ अभिव्यक्तिक पैटर्न कें ओ लगभग यथावत ग्रहण केलनि आ तकर मनोवैज्ञानिक समझ संग अभिव्यक्त करबाक कारण ओ अति विशिष्ट रचना बनि सकल।

लोक-जीवनक अंगीकारक ई घटना एतहि धरि सीमित नहि छल। अपन साहित्य मे ओ लोक-धर्म कें सिंहासन पर बैसौलनि। तहिया पंडित-समाजक धार्मिक आदर्श छल—ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या। मुदा विद्यापति लोक-समाजे जकाँ जगत कें सत्य मानलनि। जे कोनो भावना एहि जगत कें मनुष्यक सुन्दर अधिवास हेबाक अधिक योग्य बनबैत हो, सर्वत्र विद्यापति तकर पैरवीकार बनल देखल गेलाह। अपन शास्त्रीय लेखन मे सेहो ओ लोकनीति आ लोक-मान्यताक प्रबल पक्षधर रहलाह। लोकमिथक सभक ने केवल ओ प्रतिष्ठापन केलनि अपितु कतेको ठाम हमरा लोकनि हुनका बतर्ज लोक-परम्परा, नब मिथकक प्रवर्त्तन करैत देखैत छी। अकारण नहि थिक जे युग-युग सँ विद्यापति 'लोक'क पहचान आ प्रवक्ता बनल देखाइत छथि, आ एही कारणें मिथिलाक पंडित-समाज हुनका संग, हुनक रचनाक संग शत्रुतापूर्ण व्यवहार करैत पाओल जाइत छथि।[25]

विद्यापतिक व्यक्तित्व मे अनेको परस्परविरोधी गुणक अद्‌भुत समावेश छल। हमरा लोकनि चकित होइत छी जखन देखैत छी जे अपन युगक राजनीति मे आकंठ निमग्न ई कवि शास्त्र-विद्या कें दोयम मानैत छथि आ शस्त्रविद्या कें प्रथम स्थान दैत छथि। सुपुरुषक हुनक परिकल्पना मे वीरता एक अनिवार्य तत्त्वक रूप मे अबैत अछि। रमानाथ झा ठीक लिखलनि अछि जे ओ व्यक्तित्व निर्माण पर सर्वाधिक बल देलनि, कारण समाज व्यक्तियेक संगठन सँ बनैत अछि, आ व्यक्तित्ववान लोकनिक संगठने कोनो सबल राष्ट्रक सबल निर्माण क' सकैत अछि। व्यक्ति ओ जे केवल पुरुषाकार नहि वास्तविक अर्थ मे पुरुष हो, तकरे परिभाषित करबाक लेल ओ 'पुरुषपरीक्षा' लिखलनि। कहब आवश्यक नहि जे ओ अपनहु एक सुपुरुष छलाह। मुदा वैह सुपुरुष प्रेमक एक एहन अपूर्व कविता-संसार रचि जाइत छथि जे सर्वथा अभूतपूर्व छल। एहि प्रेम-रचनाक महत्व कदाचित ग्रियर्सनक कहल एहि बात सँ बेसी स्पष्ट भ' सकैत छैक जे ''भ'' सकैए जे आगाँ कहियो हिन्दूधर्मक सूर्य अस्त भ' जाय, कृष्णक प्रति श्रद्धा आ विश्वास समाप्त भ' जाय जे कृष्णक प्रेमस्तुतिये भवसागरक समस्त रोगक औषधि थिक, भ' सकैए जे ई सब टा श्रद्धाभक्ति कहियो विलीन भ' जाय, मुदा विद्यापतिक गीत सब मे जे राधा-कृष्णक प्रेम-वर्णन अछि, ताहि सँ लोकक आस्था आ प्रेम कहियो समाप्त नहि भ' सकैत अछि।'[26]

विद्यापति एक दरबारी कवि छलाह। मध्यकालीन दरबारी कवि लोकनिक प्रति आधुनिक अध्येता सभक भल विचार नहि छनि। विद्यापति एक सुदीर्घ जीवन जीलाह आ एक दर्जनक लगधग राजा, सामन्त आ नवाब लोकनिक आश्रित रहलाह। राजदरबारक चाकचिक्य आ वायवीयता कें ओ अत्यन्त निकट सँ देखलनि। मुदा, हुनकर ध्येय माँसल देह आ शरीर-सुख धरि सीमित कामलीला नहि रहलनि। एतय धरि जे अपन गीत सब मे जखन ओ संयोग वा विरह शृंगारक वर्णन केलनि तँ देवी-देवताक चरित्रनुसरणक तँ कोन कथा जे सम्भ्रान्त आ अभिजात वर्गक जे संस्कार छल, तकरो धरिक अतिक्रमण करैत एक साधारण प्रेमी-प्रेमिकाक प्रेम-व्यवहार मे अपना कें अधिक अभिव्यक्त पौलनि, आ ताहि लेल सीधे लोकसाहित्यक अनुगत भेलाह। भने ओ दरबारी आ राजपुरुष होथु, रमानाथ झा लिखलनि अछि—'विद्यापतिक निष्ठा तिरहुतक राजगद्दीक प्रति ओतेक नहि रहनि जतेक कि मिथिला-भूमि आ ओतुक्का निवासी सभक प्रति रहनि।'27 याचक बनि क' ओ इब्राहिम शाहक दरबार मे हाजिर रहथि, शाहक प्रशंसा मे लिखबो कम नहि कयलाह, मुदा ओहि आक्रान्तताक युग मे जे उत्पाती तुर्क लोकनिक दुखदायी व्यवहार होइत छल तकरो विरोध खुलि क' करबा मे कनेको नहि थकमकेलाह।

परिचय-वृत्त

विद्यापतिक जन्म एक समुज्ज्वल कुलक निविष्ट आ सुविख्यात ब्राह्मण-वंश मे भेल छलनि। हुनक वंशक प्रशस्ति आ अवदान पर सैकड़ो पृष्ठ लिखल जा चुकल अछि। नेनपनहि सँ राजकुल मे हुनक प्रवेश रहनि। स्वत: अनुमान कयल जा सकैत अछि जे अभिजात आ सम्भ्रान्त संस्कार कोना हुनका चौबगली गुंजायमान रहल छल हेतनि। मुदा अपन साहित्य मे ओ लोकमुखी भेलाह, शासक कें नहि शासित कें अपन प्रमाणक कोटि मे रखलाह आ तकर सम्मत व्यवहार आ संस्कारक तँ उचिते, बोली-बानी धरि कें शास्त्र समेत मे उद्धृत करैत पाओल गेलाह। अपन ब्राह्मण हेबाक गर्व तं हुनका अवश्य रहनि, तकर पता हुनकर उद्धरण सब सँ लगैत अछि, मुदा लोकमुखी हेबा लेल एकरा ओ बाधक कहियो नहि पौलनि, अपितु तकरा उपकारके मानल।

विद्यापति गीतात्मक स्वभावक रचनाकार रहथि। डॉ. शिवप्रसाद सिंह ठीक लिखलनि अछि जे 'विद्यापति का व्यक्तित्व केवल गीतों में ही व्यक्त हो सकता

था।'[28] मुदा हुनक कृतित्वक जखन आकलन कयल जाइछ तँ ओ अनेक आयाम, अनेक विधा, अनेक भाषा मे व्यक्त भेल देखल जाइत अछि। विद्यापतिक आरंभिक अध्येता लोकनि मे सँ एक प्रमुख महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री विद्यापति कें एक मूर्त्ति (व्यक्ति)क रूप मे नहि, कम सँ दू-तीन टा मूर्त्तिक रूप मे देखलनि अछि— एक ओ जे संस्कृतक महाविद्वान, तिरहुतक प्रधान सभासद आ हिन्दूसमाजक पुनर्गठनक लेल कृतसंकल्प पडित छथि। दोसर ओ जे एक अपूर्व कविक दृष्टि रखैत छथि, आदिरस शृंगारक एहन कविता लिखैत छथि जे काल पर विजय प्राप्त क' लैछ। आ तेसर विद्यापति ओ जे इतिहासकार छथि, कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताकाक रूप मे जनप्रधान इतिहासकारक अपन अनुपम व्यक्तित्व ल' क' ठाढ़ छथि।[29] एक गीत-प्रधान व्यक्तित्वक लोक लेल, एक गीतात्मक स्वभावक कविक लेल एहिसब कथू कें आश्चर्यजनक नहि कहल जाय तँ की कहल जाय?

अनेक असंभव गुण सब कोना विद्यापतिक व्यक्तित्व मे आबि एकत्रित होयब संभव भेल छल, शिवप्रसाद सिंह लिखने छथि—'विद्यापति दरबारी होते हुए भी जन-कवि हैं, शृंगारिक होते हुए भी भक्त हैं, शैव या शाक्त या वैष्णव कुछ भी होते हुए भी वे धर्म-निरपेक्ष हैं, संस्कारी ब्राह्मण वंश में उत्पप होने पर भी विवेक-संत्रस्त या मर्यादावादी नहीं हैं।'[30] विद्यापतिक गीत सब मे दरबारी संस्कृतिक नहि, सामान्य जनक मानसक प्रतिध्वनि अछि। सौन्दर्यक ओ उपासक कवि रहथि मुदा ताहि सौन्दर्य कें दरबारक भोग-वैभव आ चाकचिक्य सँ बाहर निकालि ओकरा अपन असली आ वास्तविक पृष्ठभूमि प्रदान केलनि, ओहि ठाम राजमहलक घेराबन्दी नहि, खुलल-खिलल नदी-नट, आम्रकुंज आ नदीमातृक प्रदेशक खेत-खरिहान हमरा लोकनि देखैत छी। विद्यापतिक एहि विशेषता सब पर मुग्ध भ' क' शिवप्रसाद सिंह कहैत छथि जे हुनका अहाँ एक दिस रीतिकालीन कविताक जन्मदाता कहि सकैत छी, कारण हिन्दीक जे रीतिकालीन कवि लोकनिक कविता छनि ओहि मे अहाँ कें हुनकर पिष्टपेषण-मात्र लागि सकैत अछि, तँ दोसर दिस विद्यापति कें भक्तिकालक पहिल कवि सेहो कहल जा सकैत अछि कारण हुनकर कविता मे जनमानसक अद्भुत प्रतिफलन व्यक्त भेल अछि।[31] डॉ. सिंह जखन विद्यापतिक परिस्थितिगत तुलना तुलसीदास संग करैत छथि तँ ई स्पष्ट होइत छैक जे ब्राह्मण-परिवेशक उपजा होइतहु विद्यापति कोना तुलसीदास जकाँ विवेक-संत्रस्त आ मर्यादा सँ भाराक्रान्त नहि छलाह। डॉ. सुभद्र झाक ई विश्लेषण अधिक स्फुट अछि जे विद्यापतिक प्रभाव तुलसीदास सँ कतहु बेसी व्यापक भेलनि जे हिन्दी-पट्टिये धरि नहि अपितु असम, बंगाल आ उड़ीसा धरि कें प्रभावकारी रूप सँ मुग्ध केलक आ तकर असर युग-युग धरि बनल रहलैक। तुलसीदासक प्रभाव धार्मिक नियम जकाँ सहज बुद्धिगम्य छैक, सांसारिक दुख सँ आकुल जनक लेल ओ शास्त्रज्ञ किन्तु सहृदय धर्मगुरु छथि, मुदा विद्यापतिक प्रभाव भिप तरहक अछि। हुनकर कविता हृदय कें चेतावनी नहि दैछ अपितु प्रेम प्रदान करैत अछि, आशाक संचार करैत अछि आ अपन अद्भुत गीत-शैलीक माध्यम सँ से चीज ततेक प्रभावशाली ढंग सँ करैत अछि जे कैक युग धरि हुनकर शैली भविष्यक कवि लोकनिक आदर्श आ प्रेरणा बनल रहलनि।[32]

विद्यापति राधा-कृष्ण कें अपन गीतक पात्र बनौलनि। ई दुनू आइ देवी-देवताक रूप मे पूजित छथि, कैक शताब्दी सँ। मुदा पूजापरक ई स्तुतिभाव विद्यापति मे हमरा लोकनि कतहु नहि देखैत छी। मुदा, जें कि गीत हुनका जीवन मे शामिल छलनि, ओ आवश्यकतानुसार देवी-देवताक स्तुतिपरक गीत सेहो लिखलनि। जे लोकनि शैव आ वैष्णवक युगव्यापी संघर्षक कथा जनैत छथि, ई देखि क' आश्वस्त होइत छथि जे विद्यापति शिवभक्ति आ विष्णुभक्ति दुनूक पद लिखलनि। ओ भगवतीक स्तुति सेहो लिखलनि, जकरा आधार पर श्रीवल्लभ झा, विद्यापतिक सम्प्रदाय-निरूपण-विवाद मे एक पक्ष इहो रखैत छथि जे ओ शाक्त छलाह। शिवप्रसाद सिंह उचिते ई प्रश्न केलनि अछि जे जे 'कोई शैव भला वैष्णव देवताओं के बारे में भक्तिपूर्ण पद क्यों लिखेगा?' विद्यापतिक समक्ष वस्तुतः धर्म एक अधिक व्यापक शक्ति छल। कोनहु धार्मिक मत वा सम्प्रदायक प्रचार-प्रसार लेल ओ कोनो गीत नहि लिखने छलाह। देवी-देवताक पूजा-श्रद्धाक पार जे एक विश्वजनीन मानवधर्म होइत अछि ओहि मे विद्यापति अपन अभिव्यक्ति पबैत छथि, एकरा लेल धर्म कें एक टा विषय बनायब जरूरी नहि होइछ, कोनहु किछु विषय भ' सकैत अछि। भारतीय काव्यपरम्परा मे एही धार्मिक अवस्था कें 'मधुमती भूमिका' कहल गेल अछि। कोनहु क्षण-विशेष मे कविक मानस ओहि भूमिका मे अबैत हो से नहि। ओ ओकरा व्यक्तित्वे मे शामिल रहैत अछि, ओकर समस्त रचना मे अभिव्यक्ति पबैत अछि। ई अवस्था देश-काल-निरपेक्षे टा नहि, धर्म-निरपेक्ष सेहो होइत अछि। एहन व्यक्ति कें धर्म एकेश्वरवादी देखाइत छैक आ पंथ-सम्प्रदाय सब मात्र नानारूप बुझाइत छैक। ध्यान देबाक थिक जे विद्यापति सेहो अपन परिपक्व वयक रचना 'पुरुषपरीक्षा' मे स्पष्ट शब्दें एकेश्वरवादक अपन मान्यता कें व्यक्त केलनि अछि। परवर्ती काल मे विद्यापतिक गीत वैष्णव भक्त लोकनि द्वारा अपनाओल गेल। ई वैष्णव सहजिया भक्त लोकनि बंगाल सँ आसाम, उड़ीसा धरि पसरल छलाह। विद्यापतिक महत्व एही सँ बूझल जा सकैत अछि जे सहजिया लोकनि हुनका अपन सात महाजन (महापुरुष), श्रेष्ठ रसिक भक्तलोकनि मे सँ एक मानैत छथि। एहि मे आन-आन बिल्वमंगल, जयदेव, चंडीदास आदि छथि। सहजिया (रागानुगा) भक्ति मे एहि बातक विशेष महत्व नहि मानल जाइछ जे प्रेम सांसारिक थिक आ कि पारमार्थिक। जे भावना जड़ोन्मुख भ' क' 'प्रेम' कहाबैत

अछि, सैह चिदोन्मुख भ' क' भक्ति बनि जाइत अछि। डॉ. शिवप्रसाद सिंह ई कहैत विद्यापति कें स्मरण केलनि अछि जे 'अत्यन्त शृंगारिक कविता भी कभी-कभी शुद्ध चित्त में भगवान के प्रति अनन्य अनुराग जगाने का कारण बन जाती है।'[33] मुदा दोसर दिस शिव भक्तिपरक गीत सभक प्रचुर संख्या सेहो हमरा लोकनि विद्यापति लग मे देखैत छी। हुनक शक्ति-उपासक हेबाक प्रमाण 'जय जय भैरवि' आ आनो देवी-गीत कें बताओल जाइत अछि। पंडित गोविन्द झा जखन अपन एक लेख मे 'जय जय भैरवि' कें विद्यापतिक नहि, हुनका नाम पर चला देल गेल कोनो आन कविक रचना बतौलनि तँ कतेको लोक लेल एहि तथ्य कें स्वीकार करब कठिन छल। मुदा विद्यापतिक लेल एहि सभक महत्व विषयवत मात्र छलनि। ओ मानवधर्म कें देखि रहल छलाह। हुनक धर्म मानू धर्मातीत छल। तें एहि तथ्यक सत्यता पर संदेह नहि करबाक चाही जे विद्यापतिक शृंगारिक गीत सब अपन मूल स्वभाव मे धर्मनिरपेक्ष अछि।

विद्यापतिक ई सूक्ति 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' जानि नहि कतोक हजार ठाम उद्धृत कएल गेल होयत। आधुनिक भारतीय भाषासभक मानू ई सिग्नेचर ट्यून बनि चुकल अछि। मोहन भारद्वाज अपन लेख मे बहुत नीक जकाँ स्पष्ट कयने छथि जे एहि देसिल बयना कें जकरा समक्ष ठोकि क' ठाढ़ कएल गेल छलैक, ओ संस्कृत कतेक शक्तिशाली, सुपूजित आ वर्चस्वी छल। मुदा, ओ 'दुर्जन' आ 'सज्जन' कें परिभाषित करैत जाहि तरहक चित्र 'कीर्त्तिलता' मे ठाढ़ केलनि, ई बूझब बहुत आसान छैक जे दुर्जन लोकनि के छलाह? ओ संस्कृतक हिमायती लोकनि छलाह। मुदा विद्यापति लिखलनि—'सक्कअ वाणी बहुअण भावइ।' संस्कृत भाषा मात्र विद्वान लोकनि कें नीक लगैत छनि। एहि पदक एक पाठान्तर भेटैत अछि—'सक्कअ वाणी बहुअ ण भावइ।' मने बेसी लोक कें संस्कृत भाषा नीक नहि लगैत छैक। अन्यत्र हम लिखने छी जे यैह पाठान्तर हमरा बेसी ठीक, विद्यापतिक भावनाक लगीच लगैत अछि।34 ओहि काल मे, चाहे धर्मसत्ता हो कि राजसत्ता, दुनूक श्रद्धा संस्कृतेक प्रति रहैक। विद्यापतिक महत्व हमरा लोकनि एहि तथ्य सँ बूझि सकैत छी जे हुनकर परवर्ती कवि तुलसीदास सेहो जखन भाखा मे अपन रचना लिखि रहल छलाह तँ दुर्जनक आतंक सँ भयभीत छलाह—'भाखा भनिति मोरि मति भोरी। हँसिबे जोग हँसे नहि खोरी।' कि पंडित लोकनि हुनकर खिधान्स करतनि, हुनका पर हँसतनि। एतय धरि जे तीन सौ बरखक बाद केशवदास जखन भाखा मे कविता लिखि रहल छलाह, सर्वविदित अछि जे ओ केहन ग्लानि सँ भरल छलाह—'भाखा बोल न जानही, जिनके कुल के दास।' एहि सब सँ हमरा लोकनि विद्यापतिक साहसक, हुनकर दूरदर्शिताक पता पाबि सकैत छी। विद्यापतिक काव्य-विवेक 'बुधजन' आ 'सब जन'क एहि

वर्गीकरणक प्रति कतेक सचेत रहैक, से बूझल जा सकैत अछि।

'मुदा' जेना कि हरेक महान कविक संग होइत अछि जे हुनका मे अनेक परस्परविरोधी सत्यक समावेश रहैछ, विद्यापतियोक संग छलनि। ग्रन्थाकार मे लिखल अपन सब सँ महत्वाकांक्षी रचना 'पुरुषपरीक्षा' ओ संस्कृते मे लिखलनि। तें संस्कृतक प्रति हुनका मे बैरभाव होइनि वा पंडित लोकनिक प्रति उत्कट तिरस्कारभाव, से नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा, प्रतिभाशाली कविक हरेक प्रयत्न नवोन्मेष सँ भरल रहैत अछि। 'पुरुषपरीक्षा'क भाषा मे ओ अनेको एहन प्रयोग केलनि जकरा रूढ़िपंथी लोकनि अशुद्ध कहलनि। रमानाथ झा समेत विद्यापतिक एहन प्रयोग कें अपाणिनीय कहलनि अछि, अर्थात पाणिनि एकर समर्थन नहि करैत छथि तें एकरा अशुद्ध बूझक चाही। ओ (रमानाथ झा) ई बात अवश्य कहलनि जे विद्यापतिक भविष्यदृष्टि मिथिलाक अपन खास संस्कृत अर्थात 'मैथिल संस्कृत' निर्माण दिस छलनि। मुदा, मोहन भारद्वाज एकरहु व्यंग्य करबाक अर्थ मे लेल गेल कहैत छथि, अर्थात 'मैथिल संस्कृत' कहि क' विद्यापतिक भाषा-प्रयोगक खिल्ली उड़ायब। ओ (मोहन भारद्वाज) पाणिनिक भाषा-विवेक कें स्पष्ट करैत लिखलनि अछि जे हुनकर भाषा-सिद्धान्त अत्यन्त उदार छल। विभिप क्षेत्र मे प्रयुक्त विभिप रूपक शब्द कें आधार बना क' पाणिनि शब्दानुशासनक सिद्धान्त निरूपण केलनि। सूत्र बनयबा सँ पूर्व ओ शब्दसंग्रह कयलनि। शब्दसंग्रहक प्रति हुनक भाव आदरक छलनि, अवज्ञाक नहि। परवर्त्ती वैयाकरण लोकनि पाणिनिक एहि मार्ग-दर्शन कें मानलनि। भाषा आगाँ बढ़ैत गेल, मुदा व्याकरण ओतहि खुटेसल रहि गेल।[35] स्वाभाविक जे विद्यापति सदृश सृजेता भाषाविद् कें ई जड़ता स्वीकार नहि भ' सकैत छलनि। ओ वैह, पाणिनि समान उदारवादी दृष्टि अपनौलनि। मैथिलीक देसी शब्द तँ ओ ग्रहण करबे कयलनि, अरबी-फारसी समेत नवागन्तुक भाषा सभक शब्द कें ओ स्वीकार केलनि। कतोक ठाम ओकर संस्कृतीकरण क' देलखिन, जकरा डॉ. मुनीश्वर झा 'क्रांतिदर्शी भाषाविद् विद्यापतिक व्यक्तित्वक अनुपम वैशिष्ट्य' मानैत छथि।[36] तहिना, 'गोरक्षविजय' मे ओ नवीन प्रयोग केलनि जे संस्कृतक नाटक मे मैथिली गीतक समावेश केलनि। रमानाथ झा बहुत दुखक संग लिखने छथि जे 'यदि विद्यापति द्वारा प्रयुक्त भावनाक अनुसरण होइत तँ मैथिली, जेना कि गीतक क्षेत्र मे, ओहिना नाटकोक क्षेत्र मे एक टा शुद्ध परम्परा स्थापित कयनिहार सब सँ पहिल आधुनिक भारतीय भाषा होइत। एकर अगिला डेग मैथिलीए मे सम्पूर्ण नाटकक सर्जन होइत जेना कि आसाम मे शंकरदेव आ हुनक शिष्य माधवदेव द्वारा कयल गेल।'[37] विद्यापति अपने तँ ई प्रयोग नहि क' सकलाह कारण शिवसिंहक लापता भेलाक बाद संभवत: हुनकर सोचक दिशा बदलि गेलनि। मुदा परवत्ती दोसर क्यो क' सकितथि, सेहो नहि भेल। एहि

सँ हमरा लोकनि परवत्ती काल मे मिथिला पर दुर्जन लोकनिक आक्रान्तता आ व्याप्तिक परिचय पाबि सकैत छी।

'बहुविधावाद' आ बहुभाषाकवि

समकालीन मैथिलीक वाचिक आलोचना मे एक टा शब्द प्रचलित अछि—बहुविधावादी। एक्कहि संग विभिप विधा मे रचना क' चुकल अथवा क' रहल रचनाकारक कद छोट करबाक लेल एहि शब्दक प्रयोग एहि आत्मविश्वासक संग कएल जाइत छैक मानू राष्ट्रवाद अथवा मार्क्सवाद जकाँ इहो कोनो विचारधारा होइक। कहब आवश्यक नहि जे एहि कथनक उद्देश्य प्रतिभाशाली आ सार्थक रचनाकार कें उपेक्षित क' क' गदौसक लेल समर्थन जुटाएब थिक, जकर शिकार अपना युग मे कि तकर बादो स्वयं विद्यापति सेहो भेल छलाह। ठीक यैह बात बहुभाषाकविक बारे मे सेहो कहल जा सकैत अछि। अनेक भाषा मे लिखबाक क्षमता रखनिहार लेखकक पंडितजी लोकनि निन्दा करैत छथि। वास्तविकता ई थिक जे मिथिलाक मूल परम्परा मे अनेकभाषाकविक स्थान ऊपर राखल जाइत रहल अछि। विद्यापति अवहट्ठ आ मैथिली मे अपन रचना लिखबाक साहस केलनि, जखन कि हुनकर रचना रसशास्त्रक दृष्टि सँ उच्च गुणवत्ताक परिष्कृत रचना छलनि। ई हुनकर आधुनिकता छलनि। कोनो आधुनिके विचारक कवि परम्पराप्रशंसित काव्यरूढ़ि कें तोड़ि क' एना क' सकैत अछि। हुनकर एहि आधुनिकताक प्रशंसा ने केवल रमानाथ झा आ मोहन भारद्वाज अपितु रामविलास शर्मा सेहो केलनि अछि। मुदा दोसर दिस, अवहट्ठ आ मैथिली लिखबाक बादो ओ संस्कृत रचना लिखैत छथि। भाषा–निष्ठाक प्रश्न उठायब एतय बहुत ओछ बात हेतैक। मुख्य प्रश्न थिक जे जाहि उद्देश्यक लेल हुनका लिखबाक छलनि से की छलैक। उद्देश्यक प्रश्न विद्यापतिक ओतय साहित्य–कर्मक प्रधान प्रश्न छिऐक। प्रबन्धात्मक प्रकृतिक अपन रचना सब मे कैक ठाम तँ विद्यापति ओहि रचनाक उद्देश्यक कथन सेहो कयने छथि। पुरुषपरीक्षोक रचना ओ 'शिशूनां सिद्ध्यर्थम्' आ 'पौरस्त्रीणां मुदे' कयने रहथि। कीर्त्तिलता मे तँ स्पष्ट कहलनि जे 'तिहुअण खेत्तहिं कामि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खरखंभारंभ जौं मंचो बन्धि न देइ।' कि अक्षररूपी खाम्ह कें ठाढ़ कए यदि मचान नहि बान्हि देल जाए तँ त्रिभुवनरूपी खेत मे कीर्त्तिरूपी लता कोना पसरि सकैत अछि? पुरुषपरीक्षाक प्रयोजन जतय पाठक–सापेक्ष छल ततहि कीर्त्तिलताक प्रयोजन विषय आ विषयपुरुषक यश कें पसारब मुख्य छल। कहब आवश्यक नहि जे ग्रन्थक तीनू आयाम—रचना, रचनाकार आ पाठक हुनक दृष्टि मे फड़िच्छ रहैत छलनि। एहना मे स्वाभाविक जे लेखनक विधाक प्रश्न दोयम होयत। से चाहे प्राचीन मैथिली साहित्यक सन्दर्भ हो

कि आधुनिक, हेबाक एहिना चाही। विद्यापति अनेको अर्थें आधुनिक छलाह तकर एक दृष्टान्त एतहु हमरा लोकनि कें भेटि सकैत अछि। एखनहु संसार भरिक सार्थक लेखक एहने दृष्टिकोण राखि क' लेखन–कार्य करैत छथि।

जीवनक चारि अध्याय

रमानाथ झा विद्यापतिक जीवनक चारि प्रमुख कालखंड मानैत छथि, आ से बतबैत ई स्पष्ट कहलनि अछि जे 'जीवनक सब भाग्य–परिवर्त्तन काल, सुदिन आ दुर्दिन मे, एक टा काज एहन छल जे ओ कहियो नहि बिसरलाह, ने बप कयलनि, ओ काज छल लिखब।'[38] जीवनक आरम्भिक बीस बरखक अवधि कें ओ 'तैयारी करबाक समय' कहैत छथि, यद्यपि कि ओहि युगक विख्यात गुरु हरि मिश्रक शिष्य हेबाक बात कहितो ओ यैह सूचना दैत छथि जे 'हुनक मस्तिष्क एतेक तेज, गवेषणशील आ ग्राहकता सँ मंडित छल जे ओ अधिक काल धरि एके विषय पर एकाग्र नहि भ' सकैत छल। आ तें, विद्यापति कें विशिष्ट कहबाक चाही।'[39] बीसम बरखक अवस्थाक आसपास हमरा लोकनि हुनका महाराज देवसिंहक अनुचर लोकनिक संग नैमिषारण्य प्रवास करैत देखैत छी—'देवसिंह निदेशाच्च नैमिषारण्यवासिनः। शिवसिंहस्य च पितुः सूनपीठनिवासिनः।। पमचषष्टिदेशयुतां पमचषष्टि कथान्विताम्। चतुष्खण्डसमायुक्तामाह विद्यापतिः कवि।।'[40] रमानाथ झा स्वीकार करैत छथि जे 'भूपरिक्रमण' अथवा 'भूपरिक्रमा' लिखबाक समय विद्यापतिक आयु बीस बर्ख छलनि। अपन एहि अनुमान पर जे एखन देवसिंहक संग ओ बहुत दिन रहताह आ बहुत तीर्थभ्रमण करताह, एहि पुस्तकक पुष्पिका मे ओ चारि खंड मे 65 देशक वृत्तान्त आ 65 गोट रोचक कथा लिखबाक प्रतिज्ञा कयने रहथि। विद्यापतिक ई संकल्प पूरा नहि भ' सकल आ बिच्चहि मे राजकुमार शिवसिंह, जे तिरहुतक राजकाज सम्हारि रहल छलाह, के बजाहटि पर हुनका तिरहुत घुरय पड़लनि। रमानाथ झाक आकलन छनि जे विद्यापतिक आगामी जीवन ततेक कार्यबहुल रहल जे एहि अपूर्ण पुस्तक कें ओ पूरा नहि क' सकलाह आ आगू जे ओ 'पुरुषपरीक्षा' लिखलनि, ओही मे एहि पोथीक समस्त कथा कें समाहित क' देलखिन। रमानाथ झाक इहो आकलन छनि जे एहि पुस्तकक रचना सँ पहिनहि ओ 'मणिमंजरी' नाटक लिखि चुकल रहथि। एहि आकलनक पाछूक प्रमाण ओ नवतुरिया लेखकक समरूपे एहि रचना सब मे पाओल जाइत अनगढ़पन कें मानैत छथि। जेना, 'मणिमंजरी'क कला–प्रसंग मे ओ कहैत छथि जे 'नाट्यकौशलक दृष्टि सँ तँ ई बहुते अपरिपक्व अछि।'[41] मुदा एहि नाटकक जे गुण सर्वाधिक मूल्यवान अछि से ई जे आगूक 'कविपति विद्यापति मतिमान'क आहटि एहि ठाम स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि। रमानाथ झाक शब्द मे कही

तँ ई नाटक 'नारीहृदयक कार्यप्रणालीक आश्चर्यजनक ज्ञान (विद्यापतिक) प्रदर्शित करैत अछि।' आ दोसर जे ई कृति 'विद्यापतिक प्रेमकाव्यक निश्चित निदर्शक थिक।'[42]

विद्यापतिक जीवनक अगिला छत्तीस बर्ख शिवसिंहक दरबार मे बितलनि। अपन एहि कालखण्ड मे हुनका हमरा लोकनि सर्वाधिक सुखी आ सृजनशील पबैत छी। अपन लगभग सब टा प्रेमगीत ओ एही कालखण्ड मे लिखलनि जकरा लेल ओ अमर मानल जाइत छथि। एहि समय मे हुनकर 'सर्जनात्मक प्रतिभा चरम पर छल।'[43] राजदरबार मे हुनक पद रहनि—राजपण्डित। काज रहनि—पंडित लोकनिक स्वागत, देखरेख, पुरस्कार आ दानक व्यवस्था। राजपरिवार मे जे कोनो पूजा-अनुष्ठान होइक, स्वाभाविके जे ओ अपन नेतृत्व मे तकरा सम्पप करबैत छलाह। मुदा, अपन वास्तविक रूप मे ओ राजाक घनिष्ठ मित्र, ईमानदार परामर्शदाता, अभिप सहचर आ विश्वासपात्र अधिकारी छलाह। रमानाथ झा एहि किंवदन्तीक उल्लेख सेहो करैत छथि जे राजस्व बकायाक कारण जखन एक बेर शिवसिंह कें गिरफ्तार क' लेल गेल छलनि तँ विद्यापति राजधानी पहुँचि अपन कविता सँ नवाब कें प्रसप क' ने केवल हुनका मुक्त करौने छलाह, अपितु एहन विलक्षण कविक आश्रयदाता हेबाक कारण नवाब शिवसिंह कें सम्मानितो कयने रहथि आ विद्यापति कें 'कविशेखर'क उपाधि प्रदान कयने रहथि। देवसिंहक निधनक पश्चात जखन शिवसिंह सिंहासनारूढ़ भेल रहथि तं विद्यापति कें बिस्फी ग्रामक दान कयने रहथि आ 'अभिनव जयदेव'क विशिष्ट पदवी सेहो प्रदान कयने रहथि। ई 'अभिनव जयदेव' पदवी विद्यापतिक सम्मान मे देल गेल कदाचित सब सँ पैघ पदवी छल जे हुनकर कविताक आत्यन्तिक महत्व कें द्योतित करैत छल। जयदेव ताहि दिनुक सर्वाधिक प्रख्यात कवि रहथि जनिकर कविता तँ रहैक संस्कृत मे आ संस्कृत जनसाधारण लेल अबूझ भाषा रहैक, मुदा ओहि मे जे लय छल, ध्वनिक जे एक विरल सम्मोहक बिम्ब ओ रचैत छल सैह ओकर विशिष्टता रहैक, आ सैह जयदेव कें जन-जन मे लोकप्रिय बनौने छल। विद्यापति एहि अर्थ मे 'अभिनव' छलाह जे हुनकर कविताक लय आ ध्वनि तँ तद्वते सम्मोहक छल, ताहि पर सँ खास विशिष्टता ई जे मैथिली मे रचल रहबाक कारण आम लोक ओकर अर्थो बूझि सकैत छल। अर्थ आ लय दुनू मे ओ कृतकार्य भेल छलाह।

रमानाथ झाक मतानुसार अपन प्राय: समस्त प्रेमगीतक अतिरिक्त अपन चारि गोट परम प्रसिद्ध प्रबन्ध-ग्रन्थक रचना सेहो ओ अपन एही सुखी कालखण्ड मे, शिवसिंहक दरबार मे रहैत कयने छलाह। ई पुस्तक सब थिक—अवहट्ठ मे 'कीर्त्तिलता' आ 'कीर्त्तिपताका', संस्कृत गद्य-पद्य मे—'पुरुषपरीक्षा' आ संस्कृत-प्राकृत मे

'गोरक्षविजय।' एहि चारू मौलिक कृति मे कालक्रमानुसारें रमानाथ झा कीर्त्तिपताका कें पहिल मानैत छथि जाहि मे 'मुसलमान पर शिवसिंहक विजयक वर्णन अछि।' रमानाथ झा एकरा स्तुतिकाव्य मानलनि अछि जे अपन मूल स्वभाव मे तँ वीररसात्मक अछि मुदा शृंगारक सेहो विलक्षण वर्णन भेल अछि। दोसर नंबरक कृति ओ 'पुरुषपरीक्षा' कें मानैत छथि जकर रचना ओ 'गोरक्षविजय'क संगहि संग ताहि समय मे कयने छलाह जखन शिवसिंह गद्दी पर आसीन छलाह आ विद्यापति 'अपना निर्णय मे परिपक्व, अपन सिद्धान्त मे पक्का आ एक टा उच्चकोटिक लेखकक रूप मे प्रसिद्ध भ' गेल रहथि।'[45] विद्यापतिक ई कृति अपन प्रभाव मे कतेक निस्सन आ लोकप्रियता मे कतेक आगू छल तकर विवरण अनेको लेखक अनेक दृष्टान्तक संग अपन अपन पुस्तक मे देने छथि। 1815 ई. मे एहि पुस्तकक प्रकाशन हरप्रसाद राय द्वारा बांग्ला मे अनूदित क' क' कएल गेल छल। इस्ट इण्डिया कम्पनीक सेवा मे प्रविष्ट होब'बला अधिकारी लोकनिक लेल फोर्ट विलियम कालेजक पाठ्यक्रम मे एहि पुस्तक कें राखल गेल छल। अनेक दशक धरि यूरोपीय अधिकारी लोकनिक हेतु संस्कृत सिखबाक लेल ई आधारपुस्तक छल। एहि पुस्तकक संस्कृत भाषाक सरलता आ शालीन अभिव्यक्तिक विषय मे बहुतो लोक बहुत गुणगान कयने छथि। 'गोरक्षविजय' सेहो अपन मौलिक भाषा-प्रयोगक मामिला मे विशिष्ट छल, एहि संबंध मे पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि।

रमानाथ झाक अनुसार विद्यापतिक एहि कालखण्डक अंतिम कृति थिक—कीर्त्तिलता। ई कृति मूलत: ओइनवार वंशक आरंभिक दिनक 'ऐतिहासिक वृत्तान्त' थिक जे कोना कीर्त्तिसिंह जौनपुरक शर्की नवाब इब्राहिम शाहक मदति सँ अपन पिता गणेश्वरक हत्याक बदला लेलनि। कीलहॉर्नक अनुसार ई घटना 1371 ई.क थिक मुदा से स्वीकारबा मे अनेक असंगतिक कारणें रमानाथ झा एहि घटना कें 1361 ई. मे घटल बतबैत छथि। ओ तिरहुत मे अराजकता आ अव्यवस्थाक काल रहैक, जेना कि एहि कृति मे वर्णितो भेल अछि। शिवसिंह प्राय: ताधरि शासन-सत्ता नहि सम्हारने रहथि। 'कीर्त्तिलता' कीर्त्तिसिंहक यशोगाथा थिक। नेनपन मे विद्यापति अपन जाहि समतुरिया राजकुमार सभक संग खेलायल-धुपायल रहथि, ओहि मे शिवसिंह, पप्रसिंह, हरिसिंहक संग-संग कीर्त्तिसिंह सेहो छलाह। कतेको विद्वान 'कीर्त्तिलता' कें एहि आधार पर विद्यापतिक आरम्भिक कृति मानलनि अछि जे एहि ठाम कविताक ओ उत्कृष्टता नहि भेटैत अछि जे विद्यापति-काव्यक खास विशिष्टता थिक, मुदा रमानाथ झा एहि सँ सहमत नहि होइत छथि आ तकर प्रमुख कारण ऐतिहासिक विसंगति कें बतबैत छथि जे इब्राहिम शाह 1400 ई. मे जौनपुरक नबाब भेल छलाह आ ई कृति ताहि सँ पूर्वक नहि भ' सकैत अछि। कविता मे तद्वत उत्कृष्टता नहि

पाओल जयबाक मुख्य कारण ओ लिपिकार लोकनिक अशुद्ध आ दुरूह नकल कें मानैत छथि जकरा दुआरे एहि मे अपभ्रंश, अरबी, फारसी आदि समस्त मिलि क' एक टा विचित्र घालमेल उपस्थित क' देने छैक। दोसर जे एहि रचनाक मूल स्वभाव ऐतिहासिक वृत्तान्त थिक। ई विद्यापतिक एक भिपे व्यक्तित्वक परिचायक थिक जकर महिमा महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री आदि विशेष रूपें अंकित कयने छथि जे पहिने कहल जा चुकल अछि। जहाँ धरि 'कीर्त्तिलता'क भाषाक प्रश्न अछि, डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वालक एहि कथन सँ सहमत भेल जा सकैत अछि जे 'विद्यापति की पदावली की भाषा उनके प्रान्त की उस समय की देसिल बयना—देश भाषा है, इसमें संदेह नहीं। कीर्त्तिलता में भी देसिल बयना का ही उपयोग किया गया है परंतु दोनों के देसिल बयना मे भेद है। पदावली विद्यापति के भावों का स्वाभाविक उद्‌गार है, इसीलिए उसमें भाषा की कृत्रिमता की भी आवश्यकता नहीं। परंतु 'कीर्त्तिलता' कीर्त्ति की लता है, एक राजा की कीर्त्ति के वर्णन में लिखी गई है, वह स्वाभाविक कवि की रचना नहीं है, दरबारी कवि की रचना है। दरबारी कवि दरबारी कवायद की भी उपेक्षा नहीं कर सकता, साहित्यिक कवायद की उपेक्षा कैसे करेगा? काव्य दरबार के उपयुक्त गांभीर्य प्रदान करने के उद्देश्य से, साहित्यिक भाषा से उसका एकाएक संबंध-विच्छेद न करना 'कीर्त्तिलता' में आवश्यक समझा गया है। वह देसिल बयना मे है सही, पर ऐसी देसिल बयना में जिसमे अवहट्ट का सहारा लिया गया है।—-पदावली की भाषा व्याकरण के नियमों में जकड़ी न होने पर भी व्यवस्थित है। 'कीर्त्तिलता' की भाषा की अव्यवस्था उसके खिचड़ी होने का परिणाम है। व्याकरण के सजग ढाँचे का सहारा न बनने के कारण प्राकृत और अपभ्रंश के भार के नीचे उस देशभाषा को दब जाना पड़ा है। उसमें प्राकृत अपभ्रंश के शब्द ही नहीं मिलते, क्रियापदों के रूप तक मिलते हैं।'[46]

रमानाथ झा एहि तथ्यक उल्लेख करैत छथि जे शिवसिंह जखन गद्दी पर बैसलाह, चारि वर्षक भीतरे इब्राहीम शाह तिरहुत पर हमला केलक जकर समय ओ प्राय: 1405-06 निर्धारित करैत छथि। मुदा, ई स्पष्ट नहि अछि जे इब्राहीम शाह ककरा विरुद्ध तिरहुत पर चढ़ाइ कयने छल आ शिवसिंह ककरा संग युद्ध करैत, पराजित भ' लापता भ' गेल छलाह। रमानाथ झा एहू अनुमानक लेल पर्याप्त अवकाश पबैत छथि जे राजा गणेश्वरक पुत्र कीर्त्तिसिंह तिरहुतक गद्दी कें अपन पैतृक सम्पत्ति बुझैत छलाह आ संभवत: कीर्त्तिसिंहेक मदति मे इब्राहीम शाह तिरहुत पर आक्रमण कयने हो जाहि मे शिवसिंह पराजित भेला। रमानाथ झाक उपकल्पना छनि जे एहि घटनाक बाद विद्यापति 'कीर्त्तिलता' लिखि आ जौनपुर जा क' नवाब कें प्रसप कयने छलाह जाहि सँ विजयी सेना द्वारा तिरहुत कें नष्ट-भ्रष्ट कयल जेबाक खतरा सँ आ

राज्यविलय सँ बचाओल जा सकय। इब्राहिम शाह जें कि कला आ साहित्यक एक पैघ संरक्षक छलाह, ओ विद्यापतिक ख्याति सँ सेहो परिचित छलाह, रमानाथ झाक एहि उपकल्पनाक आधार बनैत छैक। शिवसिंहक पराजयक बाद तिरहुत कें जौनपुर राज्य मे मिला लेल गेल होइक तकर कोनो साक्ष्य नहि भेटैत अछि। एकर विपरीत साक्ष्य यैह अछि जे शिवसिंहक बाद हुनक अनुज पद्मसिंह तिरहुतक गद्दी पर बैसलाह। एही संग इहो बात ध्यातव्य जे ओइनवार राजा लोकनिक 'नारायण' विरुद धारण करबाक जे इतिहास अछि—'देवसिंह गरुड़नारायण, शिवसिंह रूपनारायण, नरसिंह दर्पनारायण आदि—किन्तु पद्मसिंहक कोनो विरुद नहि भेटैत अछि ताहि सँ रमानाथ झा एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे 'ओ मात्र एक टा राजप्रतिनिधि छला, राजा नहि।'[47] मुदा ई सब उद्यम करैत विद्यापति भीतर सँ अपना कें कतेक आहत अनुभव करैत हेताह, रमानाथ झा तकरो उल्लेख करैत छथि। 'कविक लेल ई अत्यन्त संतापक क्षण रहल हेतनि जे ओ अपन संरक्षक मित्र शिवसिंहक नाश कर'बला आ अपन जीवनक समस्त सपना कें सकनाचूर क' देब' बला सुलतानक प्रशंसा करैत हुनका प्रसप केलनि।' मुदा एकरा ओ विद्यापतिक विलक्षण राजनीतिज्ञता संग जोड़ैत छथि जे 'हुनकर सर्वप्रथम निष्ठा ओहि भूमि एवं जनताक प्रति रहनि जकरा लेल ओ अपन व्यक्तिगत भावना कें बिसरि तिरहुत कें बचयबाक लेल अपन प्रतिभाक तहिना उपयोग कयलनि जेना एक बेर राजस्व बकाया मामिला मे शिवसिंह कें गिरफ्तार क' लेल जयबाक समय कयने छलाह।'[47]

विद्यापतिक प्रति राजा शिवसिंहक विश्वास आ भरोस कतेक निस्सन छल तकर दृष्टान्त ई देल जाइत अछि जे अन्तिम युद्ध लेल प्रयाण करबाक काल शिवसिंह अपन छवो पत्नी कें विद्यापति कें सौंपि हुनका लोकनिक सुरक्षाक दायित्व देने छलाह। विजयी सेना सँ अपमानित हेबाक डर सँ विद्यापति छवो रानी कें शिवसिंहक विश्वस्त मित्र सप्तरीक द्रोणवार राजा पुरादित्यक ओतय रजाबनौली पठा देलखिन आ बाद मे अपनहु ओही ठाम चलि गेलाह। विद्यापतिक जीवनक तेसर कालखण्ड यैह रजाबनौलीक प्रवास-काल छल, जकरा रमानाथ झा हुनकर 'स्वैच्छिक निष्कासन'क काल कहैत छथि। 'रजाबनौली मे स्वैच्छिक निष्कासनक ई बरख सब विद्यापतिक जीवनक सर्वाधिक तमसाछप दिन छल। हुनका समक्ष निराशा आ हताशा छोड़ि क' किछु नहि बचल छल। सर्जनात्मक प्रतिभा मरि चुकल रहनि आ कविता छूटि गेल रहनि।'[49]

रजाबनौलीक एहि कालखंड मे ओ 'लिखनावली' लिखलनि जे एहि अवधिक हुनकर एकमात्र कृति छनि। एही ठाम रहैत ओ श्रीमद्‌भागवतक प्रतिलिपि कयने रहथि। तद्युगीन मान्यताक अनुसार ई एक प्रकारक प्रायश्चित्त छल। कोन पापक

प्रायश्चित्त? रमानाथ झाक शब्द मे: 'ई सोचि जे शिवसिंह आ हुनक विलास-कलाप कें भगवान श्रीकृष्णक समान मानि स्तुति करबाक अनाचारेक ई दण्ड थिक।'[50] शिवसिंहक लापता हेबाक बारह बरख बितला पर जखन शिवसिंहक 'अन्तिम संस्कार' क' देल गेलनि, तकर बादे विद्यापति तिरहुत घुरलाह। ताहि समय हुनकर आयु सत्तरिक करीब छल आ तिरहुत मे तखन पद्मसिंहक पहिल पत्नी विश्वासदेवी शासन क' रहल छलीह।

विद्यापतिक जीवनक चारिम आ अंतिम कालखंड ओ छल जखन ओ सत्तरिक आयु मे एक बेर फेर तिरहुतक दरबार मे आबि शामिल भ' गेलाह आ जीवनक अंतिम बीस-बाइस बरख धरि राजदरबारक लेल काज केलनि—विश्वासदेवी, हरसिंह, हुनक बालक नरसिंह आ तनिक बालक धीरसिंह। विश्वासदेवीक लेल विद्यापति दू गोट ग्रन्थक निर्माण केलनि—'शैवसर्वस्वसार' आ 'गंगावाक्यावली'। एहि ग्रन्थ सब कें रमानाथ झा 'स्मृतिग्रन्थ' कहलनि अछि जे कि मिथिला के नैबन्धिक परम्परा मे लिखल धर्मशास्त्र-संकलन छल। राजा नरसिंहक लेल ओ 'विभागसार' तथा 'व्याडिभक्तितरंगिणी'क रचना केलनि। नरसिंहक पत्नी धीरमतिक लेल 'दानवाक्यावली' लिखलनि। धीरसिंहक राज-काल मे हुनकर भ्राता भैरव सिंहक लेल ओ 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'क रचना केलनि जे कि विद्यापतिक अंतिम कृति मानल जाइत अछि। हुनक एहि कालक रचनाशीलताक प्रसंग रमानाथ झा लिखलनि अछि: 'एहन प्रतीत होइत अछि जे विद्यापति दरबार मे शामिल तँ भ' गेलाह परंच एक टा सक्रिय दरबारीक रूप मे नहि अपितु एक टा वृद्ध राजनीतिज्ञक रूप मे जे कानून, आचार, विचार किंवा नीति सँ सम्बन्धित प्रश्न सब पर परामर्श देबाक लेल तँ सदति प्रस्तुत रहैत छलाह, मुदा कोनो स्वतंत्र उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर पदस्थापित नहि रहथि। किछु विद्वान लोकनिक कहब छनि जे ओ किछु भक्तिगीत सेहो एहि कालखंड मे लिखलनि, विशेषत: ओहन गीत सब जाहि मे वृद्धावस्थाक नैराश्य आ उदासीनता अत्यन्त प्रामाणिकता आ भावुकताक संग वर्णित भेल अछि।'[51]

शास्त्र-चिन्तन में लोकनिष्ठा

विद्यापतिक शास्त्र-लेखनक संबंध मे रमानाथ झा एकठाम लिखने छथि जे अपन जाहि गीतावली कें ल' क' विद्यापति जगत्प्रसिद्ध छथि आ संसार कें मुग्ध कयने छथि, से जँ एको टा गीत नहि लिखने रहितथि आ 'पंडित जकाँ केवल स्मृति, पुराण, तीर्थ ओ व्रत आदिक निबन्ध प्रभृति आओर जे ग्रन्थ सब रचलनि सैह टा लिखने रहितथि तैयो हमरा लोकनि हुनका महापुरुष कहितियनि।'[52] कहब आवश्यक नहि जे बहुतो गोटे कें रमानाथ बाबूक ई मान्यता अतिरंजित लगतनि, कारण वैह रमानाथ झा अन्यत्र इहो लिखने छथि जे 'एहन प्रतीत होइत अछि जे 'पुरुषपरीक्षा'क अतिरिक्त हुनक कोनो ग्रंथ मिथिला मे लोकप्रिय नहि भेल छल। पंडितवर्ग हुनक विचार सभक बहुत अनिच्छाक संग उल्लेख करैत अछि आ हुनका एक अधिकारी विद्वान नहि मानैत अछि। एखनो मिथिला मे दुर्गापूजा विद्यापतिक द्वारा संकलित संहिता (दुर्गाभक्तितरंगिणी)क अनुसार नहि कयल जाइत अछि।'[53]

विद्यापतिक लिखल संस्कृत ग्रन्थ सब मे सँ दस टा कृति धर्मशास्त्र-विषयक अछि, यद्यपि कि एहि मे सँ दू टा—वर्षकृत्य आ गयापत्तलक—के पाण्डुलिपि एखन धरि कतहु नहि भेटल अछि। शुद्ध रूप सँ पारिभाषिक अर्थ मे जकरा धर्मशास्त्र कहल जाइछ, से हुनकर एकमात्र कृति 'विभागसार' छनि। पंडित गोविन्द झा एहि कृतिक संपादन आ अनुवाद केने छथि। ओहि पुस्तकक भूमिका मे गोविन्द झा परिस्थितिक आकलन करैत विवरण देने छथि जे मिथिला मे धर्मशास्त्र-लेखनक क्रम किएक दिनानुदिन पतराइत गेल आ तकरा बदला कर्मकाण्डक रचनशीलता किएक झमटगर होइत गेल। प्राचीन मिथिला मे राजा लोकनि न्याय करथि, जाहि लेल धर्मशास्त्रक ग्रन्थ आ तकर ज्ञाता पंडित लोकनिक खगता होइत छल। इस्लामी शासन-व्यवस्था मे न्यायक अधिकारी अमीन, सदर अमीन, मुंसिफ आदि भ' गेलाह जिनका लेल पंडितक भूमिका बेसी सँ बेसी एक साक्षीक भ' सकैत छल, जे कि पंडित लोकनिक लेल कोनो लाभकारी पेशा नहि छल। आगाँ जखन इस्ट इण्डिया कम्पनीक न्याय-प्रणाली चलन मे आएल, ओ लोकनि हिन्दूक न्याय हिन्दुए लोकनिक धर्मशास्त्रक आधार पर करबाक नियमन केलनि। मुदा ताधरि शास्त्र-लेखनक समुच्चा संसार उजड़ि गेल छल, फलस्वरूप प्राचीन धर्मशास्त्रक संकलन, संपादन अनुवाद आदि टा काज उपयोगी पाओल गेलैक। विद्यापतियोक कृति सब एही बदलल परिवेशक कारण छापाखानाक मुँह देखि सकल। विद्यापतिक संभवत: सब सँ महत्त्वपूर्ण शास्त्रग्रन्थ विभागसारे छियनि। मुदा गोविन्द झा पौलनि जे उत्तरवर्ती ग्रन्थकार लोकनि लेल जेना कि उचित हेबाक छल, विभागसारक प्रति हुनको लोकनिक श्रद्धा कोनो विशेष नहि छल। ओ लिखैत छथि—'नि:संकोच रूपें कहल जा सकैत अछि जे विद्यापतिक अन्यान्य धर्मशास्त्र ग्रन्थक जतबा आदर भेल ताहि हिसाबें विद्वत्समाज मे विभागसारक विशेष आदर कोनहु युग मे नहि देखि पड़ैत अछि।'[54] अन्यान्य धर्मशास्त्र-ग्रन्थक जे आदर छल, तकर दृष्टान्त गोविन्द झा एहि तरहें दैत छथि जे रघुनाथ भट्टाचार्यक 'स्मृतितत्त्व' मे 'गंगावाक्यावली'क 12 ठाम, 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'क 17 ठाम, 'दानवाक्यावली'क 1 ठाम आ 'वर्षकृत्य'क 3 ठाम उद्धरण देल गेल अछि। तहिना, गोविन्दानन्द आ श्रीनाथ (कृत्यतत्त्वार्णव) सेहो एहि ग्रन्थ सभक उद्धरण देलनि अछि। मुदा, स्वयं गोविन्द झा जनतब दैत छथि जे 'ई सब अमैथिल थिकाह।' कोनहु मैथिल

उद्धरणकर्त्ताक उल्लेख नहि करैत एकमात्र जाहि महामहोपाध्याय केशव मिश्र (द्वैतपरिशिष्ट)क चर्चा केलनि अछि, ओ केशव मिश्र 'अतिलुब्धनगरयाचक' कहि विद्यापतिक निन्दा केलनि अछि। मुदा, गोविन्द झाक निष्कर्ष छनि जे 'विद्यापतिक वैदुष्यक ज्योति मिथिला सँ बाहरो पसरल छल।' हुनका तँ 'बाहरो'क बदला मे 'बाहरे' शब्दक प्रयोग करबाक चाहैत छलनि।

विद्यापतिक ग्रन्थ सब मे जे जगजगार विशेषता सब हमरा लोकनि कें देखार पड़ैत अछि, से सब थिक—साम्प्रदायिक एकत्व, सर्ववर्णात्मक धर्मनिष्ठा, लोकपरम्पराक प्रतिष्ठापन, देसिलपनक गंभीर अवधारणा आ तकरा प्रति पक्षधरता, विधाक लोकनिष्ठता आदि। अपने विद्यापति कोन सम्प्रदायक प्रति आस्था रखैत छलाह एहि प्रश्न पर विद्वान लोकनिक बीच बहुतो घमर्थन भ' चुकल अछि। हुनक पदावली कें वैष्णव भक्तिधाराक नेओ मानल गेल मुदा हुनकर सर्वाधिक आत्मनिवेदित भक्तिपद शिवपरक अछि। अपन पहिल पुस्तक 'भूपरिक्रमण'क मंगलश्लोक मे जतए ओ एक्कहि संग गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य आ अम्बिकाक वन्दना करैत छथि ओत्तहि 'लिखनावली'क आरम्भ गणेशक स्तुति सँ तँ 'दानवाक्यावली'क आरम्भ विष्णुक स्तुति सँ केलनि अछि। 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'क आरम्भ उचिते दुर्गाक विनती क' क' भेल अछि आ 'शैवसर्वस्वसार'क शिवक वन्दना सँ, मुदा 'विभागसागर' मे तँ ओ हर आ हरि कें एक मानैत ओहि आदिशक्तिक स्तुति सँ आरम्भ केलनि अछि जे शिवक पूज्या, विष्णुक ध्यानविषया आ ब्रह्माक प्रणम्या छथि। मुदा समस्त साम्प्रदायिक भिपताक अछैत जे मनुष्यताक चरम एकत्व छैक, विद्यापति कें तकरहु नीक जकाँ अवगति छलनि। 'पुरुषपरीक्षा'क हुनकर ई श्लोक जानि नहि कतेको बेर उद्धृत कएल जा चुकल अछि जाहि मे सतर्क मति सँ देखला पर विभिप देवताक नामे टा मे भिपता बताओल गेल अछि आ वास्तव मे एकमात्र ईश्वर हेबाक निर्णय पर पहुँचल गेल अछि—

विष्णुं केऽपि निवेदयन्ति गिरिजानाथं च केचित्तथा
ब्रह्माणं प्रभुमुल्लपन्ति भुवने नाम्नैव भिपं महः।
निर्णीतं मुनिभिः सतर्कमतिभि श्चेद् विश्वमेकेश्वरम्
तच्चिन्तापरमानसे त्वयि पुनर्भिपा कुतो भावना।।

जहाँ धरि विद्यापतिक व्यक्तिगत धार्मिक आस्थाक प्रश्न अछि, हमरा लोकनि यैह पबैत छी जे ओ शिवभक्त छलाह। हुनक बहुतोक संख्या मे जे नचारी आ महेशवानीक प्रकारता मे कोटिबद्ध शिवगीत भेटैत अछि, ओहि ठाम ई व्यक्तिगत धर्मनिष्ठा तँ प्रकट होइतहि अछि, शिवक संग हुनक भक्तिपूर्ण आपकता आ आत्मीयता सेहो भेटैत अछि। एहि बारे मे बहुतो विद्वान बहुत किछु लिखलनि अछि। दोसर दिस

हमरा लोकनि देखैत छी जे 'कीर्त्तिलता' आ 'कीर्त्तिपताका' आदि तँ शिवक आत्मीयतापूर्ण मंगलाचरण सँ आरम्भ करितहि छथि शिवभक्ति पर अपन सम्पूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ 'शैवसर्वस्वसार'क रचना सेहो करैत छथि। हुनक संकलन कएल एक आर पुस्तक 'शैवसर्वस्वसारप्रमाणभूत संग्रह' सेहो कहल जाइत अछि। हमरा लोकनि अवगत छी जे शिवपूजन सँ सम्बन्धित पाशुपत सम्प्रदाय अवैदिक थिक आ शिव स्वयं एक अनार्य देवता मानल जाइत छथि। मुदा जाहि प्रान्तक समाज मे विद्यापति लालित-पालित भेल छलाह, ओतय शिवभक्ति एक सार्वजनीन धर्म छल। समस्त प्रकारक विधि-निषेध शिवक भक्ति लग मे आबि क' विलीन भ' जाइत छल आ ने वर्ण आ लिंगक कोनो भेद नहि कयल जाइत छल। स्वयं शिव आ हुनकर परिवारक बारे मे जे लोकमान्यता छल, ओ (शिव) स्वयं एक अभावग्रस्त आ दुनियादारीक अर्थ मे एक विपप गृहस्थ-सन छलाह। विद्यापतिक गीत सब मे सेहो एहन चित्र अनेको ठाम आएल अछि।

मिथिलाक सर्वाधिक महान धर्मवेत्ता लोकनि मे सँ एक कुमारिल भट्ट (आठम सदी) पाशुपत मत कें वेदबाह्य घोषित क' एकरा अस्वीकार कयने छलाह मुदा तकर बादक चारि-पाँच सय बरखक अवधि मे जे धार्मिक परिवर्त्तन आएल, डॉ. मुनीश्वर झा लिखलनि अछि—'मिथिलाक सामाजिक एवं धार्मिक जीवन कें प्राणवन्त करबाक लेल वेदबाह्य पाशुपत आगम तत्त्वक ग्रहण स्पृहणीय छल। मिथिलाक उदार स्मृतिनिबन्धकार लोकनि एकर पोषण कय अपन प्रगतिशीलताक परिचय देलनि।'[55] एहि परिप्रेक्ष्य मे हमरा लोकनि विद्यापतिक महत्व कें बेसी ठीक सँ बूझि सकैत छी। अपन ग्रन्थ 'शैवसर्वस्वसार' मे ई प्रश्न उपस्थित भेला पर जे शिव-उपासनाक अधिकारी के छथि, विद्यापति लिखलनि: 'सर्ववर्णानां सर्ववर्णस्त्रीणां सर्वाश्रमिणामच शिवपूजायामधिकारोऽवसीयते।' वर्ण, आश्रम आ लिंग तहियाक समाजक मान्यताप्राप्त अनिवार्य कोटि छल, जकर विरुद्ध जाएब सोचलो नहि जा सकैत छल, आ विद्यापति एहि मे सँ समस्त वर्ण, आश्रम आ लिंगक मनुष्य कें शिवपूजाक अधिकारिता लेल उपयुक्त माननलनि।[56] तहिना, ओ मिथिलाक अनार्य मूलनिवासी कोल आ किरात लोकनिक बीच प्रचलित सर्प-पूजा विधान पर 'व्याडीभक्तिरंगिणी' लिखलनि। ओहि समाज मे परंपरित पूजा-स्वरूपक अनुगमन करैत अपन पुस्तक मे ओ विधान केलनि जे ई पूजा नृत्य आ गीतक संग आयोजित हेबाक चाही। एहि सब सँ हुनक उदारता आ बहुल-समादर भावनाक पता लगैत अछि।

अपन पुस्तक 'तापसकवि विद्यापति' मे डॉ. मुनीश्वर झा विद्यापतिक धर्मविषयक रचना-दृष्टिक मादे लिखलनि अछि—'विद्यापतिक धर्मदर्शन वस्तुत: लोकदर्शनक स्वस्थ रूपायन थीक। एहि ठाम एक गोट एहन नीतिदर्शन उपलब्ध होइत अछि जकरा

हम विवृत्त नीतिमान कहि सकैत छीट्ठ एहि मे संवृत्तिक स्थान नहि। हुनक दृष्टिकोण लोकवादी रहल अछि। लोकवाद दर्शन लय हुनक रचना सब मे सामुदायिक ओ वैयक्तिक पोषण आओर उपयन लेल दिग्निर्देश अछि।'[57] निश्चित रूप सँ ई विद्यापतिक पंडित-व्यक्तित्वक यथार्थ निरूपण थिक। कतोक बेर आश्चर्यजनक लगैत अछि जे सनातन धर्मक सभे गोट शर्त्तक पालन करितहु विद्यापति आने पंडित जकाँ अपन विषय-विवेचन मे संवृत्त किए नहि भेलाह? पंडितक एक सुनिश्चित लक्ष्य रहैत छैक, बहुतो बात ओकरा गुप्त राख' पड़ैत छैक, बहुतो कें अपन वाग्जाल पसारि रहस्यमय बना देब' पड़ैत छैक, एहि मे पंडितक अपन वृत्ति-रक्षा, कथित धर्म-रक्षा आदिक योग तँ रहितहि छैक, एक टा गुप्त एजेन्डा सेहो रहैत छैक जाहि सँ ओकर निहित स्वार्थ मे बाधा नहि आबौक। पंडित जँ दरबारी हो तँ ओकर ई प्रवृत्ति दुगूना भ' जाइत छैक कारण ओकरा राजोक निहित स्वार्थक रक्षण मे दासोदास रहय पड़ैत छैक। एकर विपरीत विद्यापतिक प्रवृत्ति विवृत्तिमूलक अछि। कोनो दुराव-छिपाव नहि, ककरो पक्ष मे व्यर्थक बचाव नहि, कोनहु रूढ़िक भार आत्मा पर लदायल नहि जे विचारक नवीन उन्मेष मे बाधक बनैत हो। किछुओ संवृत्त (गुप्त, रहस्यमय) नहि आ ने व्यक्तिगत रुचि कें प्रमाण मानि क' कएल गेल ऐकान्तिक विवेचन आ तदनुसारे निष्कर्ष। लोकवादी दृष्टि भेने बिना ककरो व्यक्तित्व मे ई सब गुण सधब असम्भव अछि। एहने लोकवादी रचनाकार सँ सामुदायिक पोषणक आशा कएल जा सकैत अछि।

विद्यापति 'विभागसार' किएक लिखलनि, ताहि पर रमानाथ झाक मतक खण्डन करैत[58] आ एहि पोथीक विशेषता बतबैत पंडित गोविन्द झा, एकर लेखनक प्रयोजन पर लिखलनि: 'हम नि:संकोच कहि सकैत छी जे दायभाग पर ई 'विभागसार' जतेक संक्षिप्त, सरल अथच सारवान अछि ततेक प्राय: समस्त भारत मे आन कोनो ग्रन्थ नहि अछि।'[59] एहन लिखबाक प्रयोजन की तँ यैह जे जन-साधारणक, गाम-घरक साधारणो जानकारक ओ काज आबि सकय। गाम-घरक साधारण पढ़ल-लिखल पंडितो एहि पुस्तक कें देखि व्यवस्था द' सकथि, ताहि योग्य।

हुनक लोकदर्शनक दोसर रूप हमरा लोकनि देखैत छी जे ओ अखिल आर्यावर्तक समानान्तर मिथिलाक धर्मनिष्ठाक रूप-प्ररूप कें समस्त नवीनताक संग ग्रहण करैत देखल जाइत छथि। दुर्गार्चण-पद्धतिक जखन ओ निर्माण केलनि, ओहि मे मिथिलाक अपन तान्त्रिक विधि-विधानक समावेश तँ भेबे कयल, एतुक्का समाज मे जे शक्तिपूजनक प्रायोगिक प्ररूप सब प्रचलित छल तकरा सेहो शास्त्रीयता प्रदान कयल गेल।[60] ई लोकमत कें शास्त्रक आसन पर विराजमान करबाक तुल्य छल। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे ठेठ मैथिली देशज शब्द सैकड़ाक संख्या मे अपन खास

पारिभाषिक अर्थ मे विद्यापतिक शास्त्रीय लेखन मे व्यक्त भेल अछि। कतोक ठाम तँ ओ संस्कृत शब्दक जे तद्‌भव रूप मिथिला मे प्रचलित छल तकर एनमेन प्रयोग संस्कृत पद्य मे कयलनि—'तत्सूनुना दर्पनरायणेन' अथवा 'नारायणो रूपनरायणो वा'। मैथिल उच्चारण मे नारायण कें नरायण बाजल जाइत छैक, से सब गोटे अवगत छी। मैथिल देसिल परम्परा सभक ने मात्र हुनका नि:सन्दिग्ध जानकारी रहनि, ओकर विकास आ पूर्वाचार्य लोकनिक अवदान धरि सँ सुपरिचित रहथि जकर साक्ष्य हुनकर उद्धरण सब मे भेटैत अछि। उदाहरणक लेल हुनक 'व्याडीभक्तितरंगिणी' कें देखल जा सकैत अछि जाहि मे ओ आन-आन ग्रन्थक अतिरिक्त 'गौड़मैथिलकृत्यसार', 'गौड़मैथिलप्राच्यादिकृत्यसार' 'गौड़ादिसंग्रह' सँ उद्धरण देने छथि।[61] ई 'गौड़मैथिल' एक अद्‌भुत शब्द थिक जकर समुच्चा इतिहास हमरा लोकनि विस्मृत क' चुकलहुँ अछि। के भेला गौड़मैथिल? की ओ लोकनि जे विभिप कारणें मिथिला सँ उपटि क' बंगाल जा बसलाह आ ओहिठामक समाज मे अर्द्धलीन भ' गेला? अथवा ओ जे विभिप कारणें बंगाल सँ मिथिला एलाह आ अपन परम्पराक अनेक जीवन्त पदचाप एहि ठामक माटि पर रोपि गेलाह? अकारण नहि थिक जे गोविन्द झा 'व्याडीभक्तितरंगिणी' मे गौड़ आ मैथिल दुहू सम्प्रदायक अद्‌भुत सम्मेलनक आभास पबैत छथि। इहो अकारण नहि थिक जे एहि पाँतिक लेखकक संग-संग अनेको युवा विचारक विद्यापतिक 'देसिल बयना' कें मात्र एक टा भाषा नहि, संस्कृति-विमर्शक एक अवधारणाक रूप मे देखैत छथि।

विद्यापतिक लोकदर्शनक एक आओर निदर्शन हमरा लोकनि हुनकर शैली मे पाबि सकैत छी। ओ अपन लेखन पुराणक शैली मे केलनि। पुराण कें भारतीय विचारधारा सभक विश्वकोश कहल जाइत रहल अछि। मुदा एक ध्यातव्य बात ई जे ई पुराण सब अपन प्राचीनप्रियताक कारण सेहो 'पुराण' कहल जाइत अछि। विद्यापतिक ग्रन्थ सभक जतेक जे आशय अछि, ओहि ठाम देखल जा सकैत अछि जे प्राचीनता-द्रोही तँ ओ नहि छथि मुदा हुनक ध्यान वर्तमान अथवा अर्वाचीन पर केन्द्रित रहल अछि, जकरा मूल मे मजगूत भविष्य-निर्माणक स्वप्न अछि। ऐतिहासिक दृष्टिकोण सँ जे क्यो विद्वान पुराण सब पर काज केलनि अछि, ई पौलनि जे पुराण-शैलीक रचना विद्यापतिक समये मे नहि हुनका बादो धरि चलैत रहल अछि। विद्यापतिक लेखन हमरा लोकनि धरि पहुँचि सकल, मुदा सैकड़ो एहन पुराण-लेखक रहल हेताह, जिनकर पाण्डुलिपिक प्रतिलिपीकरणक क्रम आगू बाधित भेल आ ओ हमरा लोकनि धरि नहि पहुँचि सकलाह। विद्यापतिक लेल सब सँ उपकारी भेलनि हुनकर लोकवादी विचार, जकर विरोध तँ पंडित लोकनि खूब करैत रहलाह, मुदा रचनाक आन्तरिक महत्व आ सौन्दर्यक कौतूहलवश ओकर प्रतिलिपियो करैत रहलाह।

विद्यापतिक पद जँ कंठहि कंठ पड़ाइत रहल, जेना कि गोविन्ददास कहने छथि, तँ हुनक पुस्तक सब सेहो हाथहि हाथ पड़ाइत चलल आ आइ हमरा लोकनि धरि पहुँचि गेल अछि।

कुल मिला क' देखल जाय तँ विद्यापतिक 'देसिल बयना' वास्तविक अर्थ मे एक टा भाषे टा नहि, अवधारणा आ विचारधारा छल। शास्त्रीय जड़ कर्मकाण्ड मे लोकमत कें शामिल क' क' ओकरा लोकोपयोगी बनेबाक प्रश्न हो, अथवा संस्कृतक सकारण अवज्ञा क' अवहट्ठ मे काव्य-लेखन करब, ओहि समस्त गूढ़ मानवीय हृदयक मर्म कें लोकभाषा मे अभिव्यक्त करब, जकरा लेल कि हुनका परम्परा मे संस्कृते काव्य कें उपयुक्त मानल जाइत छल—ई सब एकर दृष्टान्त थिक। राधा-कृष्ण कें नायक-नायिका बनौलनि तँ हुनको लोकनि कें सामान्य नर-नारीक तल पर उतारि अनलनि, शिवक उपासनाक गीत लिखलनि कि व्यवहार-गीत तँ ओहि मे बाल विवाह, अनमेल विवाह, परित्यक्ताक पीड़ा, अभावग्रस्तताक कचोट ई सब आबि क' अभिव्यक्ति पबैत रहल। तें 'लोक' जँ विद्यापति कें आगू हाथोहाथ लेलक, तं पहिने ई काज 'लोक'क लेल विद्यापतियो केने छला, आ तें निश्चये विद्यापति अपनहु हाथोहाथ लेल जेबाक योग्यता रखैत छलाह। मानू लोक सँ निर्मित विद्यापतिक मूर्त्ति लोकेक लेल बनल छल तें लोकहि मे जा क' ओ निमज्जित भेलाह।

विद्यापति गीतक व्यापकता

विद्यापतिक कीर्त्तिक मुख्य आधार थिक हुनक पदावली। विद्यापति लगभग जीवन भरि गीत लिखैत रहलाह। एकर पता हमरा लोकनि कें हुनक गीतक विषयवस्तु आ बढ़ैत आयुजन्य अनुभवक क्रमिक अभिव्यक्ति सँ लगैत अछि। मुदा हुनकर लिखल गीत सभक कुल संख्या कतेक अछि, तकरा ठीक-ठीक बता पाएब बहुत कठिन अछि। बहुत शोध-मनन कयलाक बाद पंडित गोविन्द झा अपन पुस्तक 'विद्यापति-गीत-समग्र' मे 866 पदक संकलन केलनि अछि। विद्यापति-गीतक सर्वाधिक प्रमुख संकलयिता नगेन्द्रनाथ गुप्तक संकलन मे 936 पद भेटैत अछि। विमानबिहारी मजूमदारक संग्रह मे बंगालक विद्यापति-नामांकित गीत सहित 965 गीत संग्रहीत अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा तीन भाग मे प्रकाशित विद्यापति-पदक कुल संख्या 952 अछि मुदा पूरा विश्वासपूर्वक क्यो नहि कहि सकैत छथि जे दर्जनो संकलन मे संकलित हजार गीत सब मे सँ प्रत्येक विद्यापतियेक लिखल छियनि आ तहिना, इहो नहि कहल जा सकैत अछि जे हुनकर लिखल समस्त गीत संकलित भइये चुकल अछि आ एक्कहु टा छूटल नहि अछि। एहि विचित्र स्थितिक प्रमुखत: दू कारण अछि। एक तँ ई जे अपन लिखल गीत सब कें विद्यापति स्वयं कहियो लिखि क' नहि रखलनि। जेना

हुनकर हस्तलिपि मे भागवत लिखल भेटल, तेना हुनकर कोनो गीत नहि। तरौनी, रामभद्रपुर वा नेपाल सँ भेटल गीतक पोथा सब परवर्ती कालक छल, आन व्यक्तिक उतारल। हुनक गीतक संरक्षण कंठ में भेल, पोथी-पतरा मे नहि।

कवि विद्यापति मे गीत-लेखनक दिस प्रवृत्ति कोना जाग्रत भेलनि, एहि संबंध मे रमानाथ झाक उपकल्पना छनि—'विद्यापतिक कंठ मधुर रहनि आ ओ गायन मे निपुण रहथि। अपन परिवारक नारीगण द्वारा गाओल जाइत गीत सब कें सुनि क' अपन किशोरावस्थे सँ ओ गीत-रचना करय लागल हेताह आ नारीगण कें गयबा लेल दैत हेताह। तें आरम्भ मे ओ सामाजिक उत्सव सब सँ सम्बन्धित गीतेक रचना कयने हेताह जे निजी ढंग सँ प्रसारित होइत रहल छल होयत। युवावस्था मे प्रवेश कयला पर अपन मित्र सब लेल, मित्रगणक पत्नी सब लेल आ स्वयं अपन पत्नी लेल शृंगार रसपूर्ण गीत सभक रचना कयने होयताह, बाद मे राजदरबारक लेल। ओहू मे मुख्यत: रानियेक लेल, कारण जे पुरुष लोकनिक मनोरंजनक साधन तँ संस्कृत काव्य सेहो होइत छल।'[62] विद्यापतिक कंठ मधुर रहनि आ गायन मे निपुण रहथि, बात ततबे नहि अछि। कविता आ संगीतक पारस्परिक संबंधन आ समन्वयनक संदर्भ मे विद्यापतिक दृष्टि ततेक सूक्ष्म रहनि जे हुनकर गणना विश्वक गनल-गुथल विशारद लोकनियें सँ कएल जा सकैत अछि। विमान बिहारी मजूमदार लिखने छथि—'विद्यापति संगीत-विद्या में कितने पारदर्शी थे उसका प्रमाण उनके असंख्य पदों मे है। भारतीय कविकुल में रवीन्द्रनाथ के सिवा किसी अन्य कवि में इस प्रकार की प्रतिभा की बात हमलोगों ने जानी ही नहीं है। विद्यापति के कुछ ही दिनों बाद इटली में इसी प्रकार के प्रतिभाशाली दो कलाकारों का उद्भव हुआ था। वे थे लियोनार्दो द विंचि और माइकेल एन्जेलो। लियोनार्दो (1452-1519) एक साथ ही स्थापित, चित्रकार, गायक, दार्शनिक और इंजीनियर थे। माइकेल एन्जेलो (1475-1564) ने काव्य, स्थापत्य, चित्रकला एवं इंजीनियरिंग विद्या में समान प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। इनलोगों ने केवल एक ही भाषा में ग्रन्थ-रचना की लेकिन विद्यापति ने संस्कृत गद्य और पद्य में, अवहट्ठ भाषा एवं मैथिली में काव्यादि लिखा था एवं इन तीनों भाषाओं में समान पारदर्शिता दिखाई थी।'[63] विद्यापतिक गीत निजी ढंग सँ प्रसारित भेल मुदा तकर व्यापकता ततेक भारी रहल जे ओ पेशेवर ढंग सँ प्रसारित साहित्यो पर भारी पड़ल। तकरा पाछू कारण भेल ओहि गीत सब मे अन्तर्निहित मार्मिकता, जे नारी-मनोविज्ञानक अजगुत आभा सँ जगमगाइत छल। विद्यापति-गीतक प्रचार-प्रसारक व्यापकताक अनुमान हमरा लोकनि एही सँ लगा सकैत छी जे उत्तरवर्ती काल मे विद्यापति-गीतक नमूना पर ने मात्र हजारक हजार गीत लिखल गेल अपितु कवियश:प्रार्थी गीतकार लोकनि अपन गीतक भणिता मे विद्यापतिक

नाम जोड़ैत रहलाह। स्थिति ई रहल जे रमानाथ झाक शब्द मे, 'विद्यापतिक नमूना पर गीत-रचना करब मिथिलाक प्रतिभाशाली पंडितक लेल सेहो एक टा फैशन बनि गेल।'[64] विद्वान लोकनि आशंका व्यक्त केलनि अछि जे आइ विद्यापतिक नाम पर जतेक गीत हमरा लोकनि कें ज्ञात-अज्ञात स्रोत सँ प्राप्त होइत अछि, तकर कवि विद्यापति कम सँ कम पाँच गोट अलग-अलग विद्यापति छलाह। एहना मे स्वाभाविक जे विद्यापतिक लिखल गीतक ठीक-ठीक संख्याक निर्णय एक कठिन काज थिक। ई एहि विचित्र स्थितिक दोसर कारण थिक।

विद्यापतिक कवि-कर्मक ई अभूतपूर्व सफलता थिक जे गीत तँ हुनक व्यापक रूप सँ लोकप्रिय बनल रहल किन्तु हुनकर व्यक्तित्व तिरोहित भ' गेल। हुनका बारे मे मिथिला मे पसरल किम्बदन्ती सब वस्तुत: एही बातक संकेत थिक। जेहन कथा सब शिव आ गंगा कें ल' क' प्रचलित छैक, ताहि सभक निहितार्थ यैह थिक जे मिथिला मे हुनक कविताक यैह दुनू प्रकार (शिवगीत आ गंगागीत) सर्वाधिक लोकहृदयगम्य भेल छल। बंगालक बात अलग अछि। ओहिठाम हमरा लोकनि पबैत छी जे कोना विद्यापतिक नाम मधुर भक्ति उपासनाक इनल-गिनल महान आचार्य (महाजन) लोकनि, जाहि मे सँ एक स्वयं चैतन्य महाप्रभु सेहो छथि, मे अबैत अछि। ई हुनक राधाकृष्ण-विषयक गीत सभक जनप्रियताक प्रसाद थिक। मुदा असल मे ई दुनू दृष्टान्त एहि बातक सरल व्याख्या थिक जे कोनो कविता, जँ ओ वास्तव मे कविता हो, तँ कविक व्यक्तित्वक अतिक्रमण क' जाइत अछि। रमानाथ झा अपन विद्यापति-विषयक लेखन मे एहि बातक लेल नितान्त चिंतित आ आग्रहशील देखल जाइत छथि जे विद्यापति पदावली कि हुनक आनो रचनाक मूल्यांकन हुनकर व्यक्ति आ व्यक्तित्व कें ध्यान मे राखिये क' करबाक चाही। ओ अपन समय आ समाजक उपजा छला, हुनक अपन वंश, कुलाचार, परम्परा आदि रहनि आ अपन रचनाकर्म हुनका एहि सब सीमा मे रहिये क' करय पड़ल छलनि।[65] वस्तुनिष्ठताक हिसाबें रमानाथ झाक कथन भने कतबो तर्कसंगत लागय, मुदा एक व्यक्ति आ एक विधाक बीचक जखन प्रश्न आएत, बिसइवार वंश अथवा ओइनवार लोकनिक आश्रय आदिक तुलना मे ओ काव्यप्रतिभा जकरा बदौलति हुनकर कविता बचलनि आ व्यक्तित्व तिरोहित भ'गेलनि, बहुत बेसी मूल्यवान ठहरैत अछि। विद्यापतिक व्यक्ति-परिचयक, व्यक्तित्वक तिरोहित भ' गेनाइ एक तथ्य थिक, उपकल्पना नहि। आब हमरा लोकनि हुनकर वंश-मूल-गोत्र ताकि क' हुनका स्मरण करियनि से एक भिन्न बात भेल।

अपन उत्कट लोकानुरागक कारण विद्यापति अपन गीत सभक रचना भने देसिल भाषा मैथिली मे कयने होथु, हुनक काव्यक आदर्श संस्कृते कविता सँ गृहीत छल। एतय धरि जे हुनका द्वारा अपनाओल गेल काव्यरूढ़ि आ कविप्रसिद्धि समेत मे एहि बात कें लक्ष्य कएल जा सकैत अछि। विद्यापतिक विद्वान समीक्षक लोकनिक ध्यान एहि दिस गेलनि अछि। रमानाथ झा तँ स्पष्ट लिखलनि अछि जे 'संस्कृत अलंकारशास्त्र सँ चारि प्रकारक नायक आ आठ प्रकारक नायिकाक भेद प्राप्त क' आ ओकरा संदर्भ बना क' विद्यापति अपन गीत सभक रचना कयलनि।'[66] स्वयं विद्यापति अपन 'कीर्त्तिपताका' मे ई मिथक रचैत देखल जा सकैत छथि जतय ओ कहलनि अछि जे त्रेता मे राम सीता केँ परित्याग क' क' जे दुख देने छलाह, तकरे समाधान लेल ओ द्वापर मे गोप बालक भ' अवतरित भेला आ चारि प्रकारक नायक बनि आठ प्रकारक युवती लोकनि संग यौन सुखक उपभोग कयलनि।[67] रमानाथ बाबू एहि कल्पनाक कमनीयता पर मुग्ध छथि आ मानलनि अछि जे साधारणीकरणेक प्रभाववश हुनक काव्य, जगत मे व्याप्त भ' सकलनि। डॉ. मुनीश्वर झा जें कि पदावली कें भिन्न दृष्टियें देखैत छथि, रमानाथ झा सँ सर्वथा भिन्न 'तापसकवि'क रूप मे, तें ओ एहि बात कें दोसर शब्दें कहैत छथि आ अधिक व्यापकता मे जाइत छथि—'विद्यापति विद्वान छलाह। ओ दार्शनिको छलाह। दार्शनिक भए दोसरक अनुभूति कें अपन बुझब कठिन व्रत थिक। मुदा विद्यापति एहि द्विविध साधना मे कृतकार्य भेलाह।'[68] कुठाम पर सँ रचना कें देखबेक ई नतीजा थिक जे डॉ. मुनीश्वर झा अपन निष्कर्ष मे विरोधाभासक शिकार होइत छथि। हुनक एक निष्कर्ष अछि—'भारतीय संस्कृति ओ दर्शनक अनुरूप विद्यापतिक काव्यसाधना अछि। एहि काव्यसाधना मे जीवनक प्रबल आग्रह अछि। तें कविमानसक आत्मद्रव होइतहु ई समष्टिगत आत्मप्रकाश थिक।'[69] जीवनक प्रबल आग्रह जँ विद्यापतिक कविता मे अछि तँ तकर कारण 'परमार्थ'क उद्घाटन कें साध्य' माननिहार भारतीय दर्शन कोना अछि? एकर तँ किछु आर कारण हेबाक चाही, जकरा दार्शनिकताक अपेक्षा लौकिकता सँ बेसी नीक जकाँ फरियाओल जा सकैत अछि। विद्यापतिक कविता मे जे यौनभावना छैक तकरा ओ 'कविमानसक आत्मद्रव' मानैत छथि, सैह आत्मद्रव आत्मप्रकाश कोना भ' सकैत अछि, आ ताहू मे समष्टिगत। एहि सृष्टि मे असंभव तँ किछुओ नहि अछि, तें मानल जाय जे भइयो सकैत अछि मुदा तकरा पाछू कारण आ प्रकिया तं सटीक रखबाक चाही। मुनीश्वर झा ततय धरि नहि पहुँचि सकलाह अछि कारण हुनक यात्रा गलत दिशा मे भेलनि अछि। मुनीश्वर झाक विपरीत रमानाथ झा विद्यापतिक गीत मे कोनहु धार्मिक अथवा आध्यात्मिक अभिप्राय हेबाक बिलकुल विरुद्ध छथि। ओ लिखलनि: 'एहि बात पर जोर देबाक आवश्यकता अछि जे विद्यापतिक शृंगाररसपूर्ण गीत सभक विषय प्रेम थिक, भौतिक प्रेम, स्त्री-पुरुषक यौन-प्रेम, विना कोनो आध्यात्मिक वा रहस्यात्मक दूरस्थ अभिप्रायक। ई हुनक प्रतिभाक महत्ता अछि जे

विभिप लोक हुनक शब्दक विभिप अर्थ लगबैत छथि।'[70] एहने अभिप्राय प्रो. मायानन्द मिश्रक छनि, जे 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे लिखलनि—'बहुतो समीक्षक विद्यापतिक शृंगारिक काव्य कें, अमर्यादाक हीनकाव्य मानि, विद्यापति कें महानता देबाक निमित्तें हुनक राधा ओ कृष्ण सँ सम्बद्ध पद कें कृष्णभक्ति काव्य मानबाक लेल धरती-अकास एक कयने छथि। बहुतो, एहन काव्य पर आध्यात्मिक आवरण चढ़ा क' शुद्ध शृंगारिक काव्य कें रहस्यवादी काव्य मानबाक तर्कक जाल ठाढ़ सेहो कयने छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई दुनू प्रयास निरर्थक, निर्मूल ओ भ्रामक थिक। एहन प्रयास कुंठित व्यक्तित्वक प्रयास थिक। विद्यापति रति-विषयक शुद्ध शृंगारिक काव्यक रचना कयने छलाह, जाहि मे ऐन्द्रिक मांसलता ओ कामकलाक विकास अछि।'[71]

शुद्ध भौतिक यौन-प्रेमक कविता होइतहु विद्यापतिक गीत चैतन्य महाप्रभु आदि मे महाभाव किएक जाग्रत क' दैत छलैक आ किएक ओ वैष्णव परमाचार्य लोकनि मे सँ एक प्रमुख क' क' मानल गेलाह, रमानाथ झा तकरो कारण तकबाक प्रयास केलनि अछि, जखन कि मुनीश्वर झा लग मे एहि प्रयासक अभाव अछि, ओ मात्र तथ्य जमा क' लेलनि अछि आ ओहि पर विश्वास करब जनैत छथि। रमानाथ झा विद्यापतिक प्रेमगीतक तीन गोट विशेषता मानैत छथि—विषयवस्तुक स्तर पर यौन-जीवनक विभिप भावनाक यथातथ्य चित्रण, भाषाक स्तर पर मधुर, लयात्मक आ सुगेय तथा संगीतात्मकताक स्तर पर रागबद्ध। एहि प्रेमगीतक विषय-वस्तुक विवेचन करैत ओ लिखलनि अछि—'ई गीत सब स्त्री-पुरुषक यौन-जीवनक विभिप भावना कें चित्रित करैत अछि। अपन कल्पनाशक्ति सँ विद्यापति स्वेच्छा सँ एक प्रकारक विशिष्ट भावना कें मन मे बसा क' तकरा एतेक सत्यता, एतेक वास्तविकता, एतेक अनुभूतिपूर्वक आ एतेक सहानुभूतिक संग चित्रित करैत छथि कि ओहि मे वर्णित स्थिति मे प्रत्येक व्यक्ति अपने चित्र देखैत अछि।'[72]

एहि बात पर आश्चर्य कयल जा सकैत अछि जे विद्यापतिक प्रेम गीत मे क्यो अध्यात्म कोना देखलनि? ओ तँ शुद्ध क' क' देहक गीत थिक, जतय मनक रश्मि देहक आश्रय ल' क' छिटकैत छैक। मुदा, कारण निहित छैक ओहि चित्रण आ प्रस्तुति मे जे कि मानू एक जीवित संसार आँखिक आगू ठाढ़ क' दैत छैक। पाठकक मन जा क' कविक मन संग जुड़ि जाइत छैक। सोचि क' देखी तँ एहि घटने मे अध्यात्म छैक। लिखलनि ओ मैथिली मे, मुदा आध्यात्मिक मानल गेलनि हुनका बंगाल मे, एहू तथ्य मे किछु संकेत छैक। आध्यात्मिक अर्थबोध लेल भाषाक किछु अबूझ होयब जरूरी होइत छैक। अलग-अलग लोक अलग-अलग तरीका सँ ई अबूझता उत्पप करैत छथि। सिद्ध लोकनिक एक तरीका छलनि, एक तरीका कबीरोक छलनि। विद्यापतिक मैथिली, जकरा बाद मे ओतय ब्रजबुलि कहल जाय लगलैक स्वत: ई काज क' देलक। मिथिला सदा सँ विद्यापति-गीतक आध्यात्मिक अभिप्रायक विरुद्ध रहल अछि, तकर पता हमरा लोकनि विद्यापति-गीतक आदिम स्रोत—नाच आ महिला लोकनिक कोरस—मे पाबि सकैत छी। किछु विद्वानक इहो मत छनि जे मिथिला मे विद्यापतिक राधाकृष्णविषयक गीत सभक प्रचाराभाव रहल, आ तकर कारण कदाचित ओ लोकनि आध्यात्मिक अभिप्रायक निषेधहि मे देखैत छथि। तथ्य से नहि थिक, कारण मिथिला मे प्राप्त पदावली सब मे राधाकृष्णविषयक गीत सभक प्रचुर संकलन भेटैत अछि। मुदा, एतय ओ भक्तिगीतक रूप मे नहि, प्रेमगीत आ शृंगारगीतेक रूप मे प्रचलितो अछि आ प्रसिद्धो अछि। विद्यापतिक मर्म कें अमैथिल, यथा बंगाली विद्वान लोकनि द्वारा बुझबा मे असमर्थ रहबाक प्रसंग 1967 मे रमानाथ झा दुखी भ' क' लिखलनि—'अमैथिल विद्वानक हेतु ई विषय क्षम्य भए सकैत अछि। चैतन्यदेव कें विद्यापति सँ नहि, अपन भक्ति सँ प्रयोजन छनि, ग्रियर्सन कें विद्यापतिकालीन विचारधारा बुझबाक साधन नहि छलनि। हमरा लोकनि तँ ओही देसक थिकहुँ, ओही समाजक थिकहुँ जाहि मे विद्यापतिक प्रादुर्भाव भेल। हमरा लोकनि यदि आनक विचारधारा सँ प्रभावित भए अपन विचार प्रकट करी तँ से कतेक दूर धरि उचित होयत से विचारणीय थिक।'[73] मुदा दोसर दिस मैथिल इतिहासकार लोकनि कने भिप तरहें सोचैत रहलाह अछि। हुनका लगैत छनि जे विद्यापतिक वैष्णव अभिप्राय रहल हुअए, सेहो भ' सकैत अछि, यद्यपि कि सेहो विश्वासपूर्वक कहबा मे ओ लोकनि असमर्थ छथि। मिथिला मे हुनक ई वैष्णव अभिप्राय किएक नहि स्फुट भ' सकलैक, ताहि मादे डॉ. उपेन्द्र ठाकुर लिखलनि अछि—'वैष्णवगीतक लोकप्रियता मिथिला मे नहि भेल तकर कारण मैथिल समाजक संकुचित मनोवृत्ति छल। मैथिल समाजक एक शक्तिशाली वर्ग, जे अपना कें धर्मक ठेकेदार बुझैत छल, एकर कट्टर विरोधी छल, कारण वैष्णव मतक लोकप्रियताक परिणाम होइत—ओहि विशेष सुविधाप्राप्त वर्गक विनाश। बंगाल मे एकर परिणाम ठीक विपरीत भेल—वैष्णव काव्य सँ बांग्ला भाषा ओ साहित्य आओर प्रांजल एवं मुखर भ' उठल।'[74] एहिना ओ सूफी प्रभावक संभावना सेहो देखैत छथि मुदा अन्त मे स्वयं कहैत छथि—'वास्तव मे विद्यापति कोन सम्प्रदायक अनुयायी छलाह, ई कहब अत्यन्त कठिन।'[75]

किसिम-किसिमक गीत

विद्यापति मैथिलीक आरंभिक कवि भेलाह, मुदा हजार सँ ऊपर लिखल अपन गीत सभक द्वारा ओ एहि कविता कें ततेक विशाल आ बहुआयामी बना देलखिन जे से असंभव-सन लगैत अछि। पहिल तँ छनि हुनक विषयवस्तुक प्रगाढ़ता जकरा बदौलत

मानू अपन एक-एक गीत सँ ओ एक-एक संसार रचि देलखिन। हुनकर एहि काव्यवैशिष्ट्य, जे कोना अपन प्रत्येक गीत मे ओ नवीनता प्रस्तुत करैत छथि, रमानाथ झा लिखलनि अछि जे ओहि मे ओ 'अनुभूतिक यथार्थता नहि, वास्तविकताक अनुकृतियो नहि, अपितु एक टा उच्चतर वास्तविकता' रचि जाइत छथि। अपन गीतक लेल ओ एक एहन काव्यभाषा विकसित केलनि जे एक्कहि संग सुमधुर, लयपूर्ण आ गेयता सँ भरल छलैक। विद्यापतिक भाषा मे ह्रस्व स्वर आ तरल व्यंजनक अधिकाधिक प्रयोगक वास्ता दैत विद्वान लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह अछि जे अपभ्रंश कालक समस्त भाषिक रुच्छता कें विद्यापतिक गीत दूर क' देलक। विद्यापतिक काव्यभाषा मे ध्वनि द्वारा अर्थक अनुसरण करबाक अद्‌भुत गुण रहनि, जकरा दुआरे ई संभव भ' सकल जे शाब्दिक अर्थ नहि बुझलाक बादो गीत मे व्यक्त भावना श्रोता धरि त्वरित सम्प्रेषित भ' जाइत छलैक। तखन फेर हमरा लोकनि इहो देखैत छी जे विद्यापति-गीत मे दू तरहक मैथिलीक प्रयोग भेल अछि। किछु गीत सम्मार्जित बोली मे अछि जाहि मे तत्समक बहुलता भेटैछ। एहन गीत सब उच्चवर्ग आ राजसभा मे गाओल जेबाक निमित्त छल। दोसर, गाम-घरक साधारण भाषा मे, जाहि मे तद्‌भव आ देसी शब्दक अधिकता अछि, संरचना मे सरल आ बोध मे सोझ। ई गीत सब ओ आमजनक लेल, कुल-कुटुम्ब लोकनिक लेल लिखलनि। एहन गीत सब मे प्रयुक्त भाषा एहन दुर्लभ शब्द-प्रयोग सब सँ भरल अछि जे एक व्यापक आ सुविस्तृत मिथिलाक मानचित्र उपस्थित क' दैत अछि। आइ हमरा लोकनि देखैत छी जे हुनकर कयल गेल कतेको शब्द-प्रयोग दरभंगा-मधुबनी मे तँ लुप्त भ' गेल मुदा खगड़िया-बेगूसराय दिस एखनहु प्रचलित अछि। मिथिला मे विद्यापतिक अनन्य लोकप्रियता मे एहने गीत सभक भूमिका प्रमुख अछि। आ दोसर इहो जे परवर्ती युग मे जे आन-आन कवि लोकनि अपन-अपन गीत लिखि क' 'भनहि विद्यापति'क भणिताक संग चला देलखिन, ओहो प्रमुखत: एही वर्गक गीत छल। एहि सब कारणें भने विद्वान लोकनि एहि गीत सभक प्रामाणिकता कें संदिग्ध बतबथु मुदा विद्यापति तँ वस्तुकौशल आ चित्रणविधाने सँ बेछप—बेलाग चीन्हल जा सकैत छथि, एहि मे आम लोक कें विद्वानक निर्णयक किनसाइते खगता पड़ैत होइक।

ई बात पहिनहु कहल जा चुकल अछि जे अपन गीत सब कें जे ओ रागबद्ध केलनि से सिद्ध लोकनि आ जयदेवक रागक समाने छल आ एहि राग सभक उल्लेख ज्योतिरीश्वर सेहो अपन 'वर्णरत्नाकर' मे केलनि अछि। विद्यापतिक जीवनकाले मे हुनक गीतक राग सब प्रसिद्ध भ' चुकल छल तकर पता हमरा लोकनि कें लोचनक 'रागतरंगिणी' सँ लगैत अछि। एहि राग सभक समन्वित विशेषता रहैक विलम्बित मे सामूहिक गायन। मिथिलाक संगीत-परम्पराक ई विशिष्ट पहिचान साबित भेलैक।

विद्यापतिक छन्द-प्रयोगक बारे मे लोचन लिखलनि अछि जे विद्यापतिक गीत सभक वैह छन्द थिक जे ओकर राग अछि। रागक उल्लेख हरेक गीतक संग प्राचीन पाण्डुलिपि सब मे भेटैत अछि। रमानाथ झा लोचनक एहि कथन सँ सहमत नहि छथि आ मानैत छथि जे 'गयबाक परिपाटीक अनुसार एके गीत कें भिप गुरु लोकनि अलग-अलग रागक अन्तर्गत रखलनि अछि।' ओ इहो कहैत छथि जे 'विद्यापति अपन गीत सब मे एके रागक भिप-भिप प्रकारक प्रयोग कयने छथि आ जें कि ओहि मे सँ अधिकांश नवीन खोज छल तें ओ सब मात्र विषयवस्तुएक कारण नहि, अपितु अपन नवीन संस्कारोक कारण लोकप्रिय भ' गेल।'[76] ई छोट-छोट मुदा गँहीर विशेषता सब कोना विद्यापतिक अनन्य लोकप्रियता लेल सहायक भेल तकर एक दृष्टान्त रमानाथ झा देलनि अछि, एहि आधार पर आनोआन विशेषता सभक ऊहि कएल जा सकैत अछि। खंडिता नायिकाक चित्रण मे विद्यापतिक अनेको गीत अछि। नायिका कें मनबैत-मनबैत समुच्चा राति बीति गेल, ओ नहि मानल, आब प्रात हेबा लेल छैक, तें एहि गीत सभक राग प्रभाती राखल गेल अछि। वर्णनक मार्मिकता, भोरहरबाक समय आ प्रभाती रागक मोहकता—सब मिलि क' एहन माहौल बनौलक जे प्रभाती राग मे खंडिता नायिकाक चित्रणक गीत मैथिली लोकगीतक एक खास प्रकारे बनि गेलैक जकरा 'मान' कहल जाइत छैक। विद्यापतिक परवर्ती अनेको कवि भेलाह जे हजारक संख्या मे 'मान' लिखलनि। रमानाथ झा कहैत छथि—'विद्यापतिगीतक ठीक-ठीक आनन्द लेबाक लेल ओकरा ओही काल मे सुनबाक चाही जे ओकर गायनक लेल विहित हो।'[77]

विद्यापतिक गीत कें मुख्यत: तीन श्रेणी मे बाँटल जा सकैत अछि—व्यवहारगीत, हरगौरी गीत तथा प्रेमगीत। हुनक कीर्तिक प्रमुख आधार हुनक प्रेमगीत कें कहल जाइत अछि, जे मुख्यत: मिथिला सँ बाहर हुनका लोकप्रिय बनौलकनि। मुदा पहिनहु कहलहुँ जे मिथिला मे एकर प्रचाराभाव छल, से सत्य नहि थिक। एकर जीता-जागता उदाहरण मिथिलाक सामान्य वर्ग मे लोकप्रिय 'बिदापत नाच' थिक जकर मंचन अनपढ़ गँवार शूद्र लोकनि भने करैत होथु, मुदा ओहि मे प्रयुक्त गीत सब विद्यापतिक प्रेमगीते होइत छल। मुदा मिथिलाक समाज मे असल लोकप्रियता जाहि गीत द्वारा हुनका भेटलनि से हुनकर व्यवहारगीत छलनि। मिथिला व्रत-त्योहार-उत्सवप्रधान देस रहल अछि। प्रत्येक आयोजन मे गीत गाओल जाइछ आ ताहि सब गीतक अपन अलग-अलग भास होइत अछि। एहि आयोजन सभक अपन अलग-अलग विध-विधान होइछ मुदा तकर कोनो लिखित संहिता अथवा नियमावली नहि भेटैत अछि। एकर ज्ञाता होइत छथि महिला लोकनि, जिनका विधि-विधान बूझल रहैत छनि आ ताहि बिधक समय गाओल जाइबला गीत कोन थिक आ तकर सुनिश्चित भास कोन

थिक, सेहो हुनके लोकनि कें बूझल रहैत छनि। व्यवहार-गीतक वस्तुत: ओतेक प्रकार अछि जतेक कि मिथिला मे प्रचलित संस्कार, व्रत, त्योहार आ उत्सव अछि। एक-एक संस्कार मे अनेक अनेक बिध होइछ, आ तकर सभक गीत तँ अलग-अलग होइते अछि, ओकर भास सेहो अलग होइछ। पहिनहु चर्चा आएल अछि जे विद्यापतिक रचनाकर्मक आरम्भ अपन पारिवारिक, मित्र आ कुटुम्बी लोकनिक परिवारक महिला लोकनिक लेल गीत लिखबा सँ भेल छल। ई सब गीत विद्यापतिक व्यवहारगीत छियनि। मिथिलाक प्रत्येक परिवार मे गीतक रजिस्टर एखनहु होइत अछि आ ताहि मे समस्त प्रचलित गीत लिखल जाइछ। एहि गीत सब मे विद्यापतिक भणिता संग लिखल जतेक गीत भेटैत अछि, विद्वान लोकनि एकर प्रामाणिकता कें संदिग्ध तँ जरूर मानैत छथि मुदा इहो कहैत छथि जे विद्यापतिक कवि-कर्मक ई चरम सफलता छियनि। 1972 ई. मे रमानाथ झा लिखलनि: 'मिथिला मे विद्यापतिक नाम गीतक अन्त मे जोड़ि देबाक परिपाटी एखनो आम छैक। कतोक छोटको कवि सब अपन गीतक अन्त मे जानि-बूझि क' विद्यापतिक नाम द' देने छथि जाहि सँ कवि-गुरुक रचनाक प्रसिद्धि हुनको प्राप्त जाइन।'[78]

विद्यापतिक शिवगीतक अपन अलगे संसार अछि आ लोकप्रियता मे सेहो ततेक विशेष जे परवर्ती मिथिला कें शैव भक्तिधारा संग जोड़ि क' रखबा मे एकर अतुल्य योगदान ताकल जा सकैत अछि। मुदा मिथिला सँ बाहर ई गीत सब अज्ञाते जकाँ रहल। आरम्भिक बंगाली आ अंग्रेज अध्येता लोकनि प्रमुखत: हुनक प्रेमगीते कें, जकरा ओ सब वैष्णवगीत मानलनि, आधार बनौलनि। शिवगीतक एहि उपेक्षाक प्रसंग रमानाथ झा लिखलनि अछि: 'एहि लोकप्रिय गीत सभक तात्पर्य नीक जकाँ तखने बूझल आ सराहल जा सकैत अछि जखन ओहि विशिष्ट सामाजिक जीवनक पृष्ठभूमिक ज्ञान हो। यैह कारण थिक जे मैथिल समाज सँ बाहर एहि सब पर ओतेक ध्यान नहि देल गेल अछि जतेक कि देल जयबाक चाही।'[79] असल मे मिथिला-समाजक रहन-सहन, विचार-प्रणाली, जीवनदर्शन आदिक जाबन्तो सन्दर्भ विद्यापतिक शिवगीत मे आएल अछि। बहुत आगाँ आबि क' डॉ. शंकरीप्रसाद बसु अपन विद्यापतिविषयक अध्ययन मे शिवगीत कें शामिल केलनि, तखन बाहर एकर किछु वैशिष्ट्य पहुँचि सकलैक।

विद्यापतिक शिवगीत मुख्यत: दू प्रकारक अछि आ से तते प्रसिद्ध आ लोकप्रिय भेल जे मैथिली लोकगीत मे आगू दू भिप कोटिक गीतक रूप मे प्रसिद्धि प्राप्त केलक। ई थिक—नचारी तथा महेशबानी। नचारी शिवक स्तुति मे लिखल गीत सब कें कहल जाइछ। विद्यापतिक एहि गीत सभक विशेषता बतबैत रमानाथ झा लिखलनि अछि—'शिवक स्तुति मे रचल गेल गीत सब अनुभूतिक स्तर पर एतेक निष्कपट, स्वर मे

एतबा अनुतापी, प्रवृत्ति मे एतेक समर्पणात्मक, अभिव्यक्ति मे एतेक सरल, संरचना मे एतेक मधुर आ भासक स्तर पर एतेक मोहक छनि जे ओ सर्वत्र लोकप्रिय अछि, विशेषत: एहू लेल जे वर्ण आ लिंगक भेदभाव सँ पृथक प्रत्येक हिन्दू शिवक उपासना क' सकैत अछि।'[80] विद्यापतिक ई नचारी गीत सब आगाँ ततेक लोकप्रिय भेल जे लखनसेनी (15म सदी) आ अबुल फजल (16म सदी) विद्यापतिक समस्त गीत-साहित्य कें 'नचारी' नाम सँ अभिहित केलनि। एकर लोकप्रियताक एक अनुमान हमरा लोकनि एहू सँ क' सकैत छी जे नचारी वस्तुत: शिवस्तुति-विषयक गीत होइत अछि, मुदा विद्यापतिक बाद अगिला 500 वर्ष मे हजारो एहन नचारी लिखल गेल जाहि मे आन-आन देवी-देवताक स्तुति छल—विष्णुक नचारी, गणेशक नचारी, सूर्यक नचारी, दुर्गाक नचारी आदि। विद्यापतिक रूसी अध्येता वी.बी. कुजिन लिखलनि अछि—'शिवसंबंधी पद अधिक प्रतीकात्मक एवं गूढ़ अछि। ओहि मे भावनाक अंश कम अछि किन्तु कल्पना लेल बेसी गुंजायश अछि। जें कि कवि कल्पनाक सीमा नहि बन्हने छथि, तें विवेचित स्वरूप अस्वाभाविक आ गूढ़ात्मक भ' जाइत अछि। शिवक प्रत्येक नव गुणक स्मरण शिवक बिम्बात्मक अभिव्यक्ति मे सहायक होइछ।'[81] एहने सन अनेक विशेषता कें अकानैत कुजिन अपन लेख 'विद्यापति पदावली मे शिवक स्वरूप' मे एहि निष्कर्ष दिस संकत केलनि अछि जे 'विद्यापतिक सम्पूर्ण जीवनकाल मे शिव हुनक एकमात्र आराध्यदेव छलाह', यद्यपि कि एकरो स्वीकार करबा मे ओ अनेक झोल देखैत छथि।

शिवविषयक हुनकर गीत सभक दोसर प्रकार महेशबानी थिक, जकरा सामान्यत: हरगौरीगीत सेहो कहल जाइत रहल अछि। नेपालक मल्लवंशीय राजा जगज्ज्योतिर्मल्ल (1613-1637ई.)क 'हरगौरीविवाह नाटक' मे प्रसंगानुसार विद्यापतिक शिवगीत सब उद्धृत कएल गेल अछि। इहो गीत सब दू कोटिक अछि। एक तँ ओ जाहि मे शिव-पार्वतीक विवाहक विभिप प्रक्रमक वर्णन अछि। दोसर ओ जाहि मे शिवक पारिवारिक जीवनक वर्णन अछि, विशेषत: ई जे पार्वती कते कठिनता सँ अपन गृहस्थी चलबैत छली। पुरुषक उत्तरदायित्वहीनता आ ताहि कारणें परिवारक घोर विपपताक जेहन जीवन्त चित्र सब एहि ठाम अछि से मध्यकालीन मिथिलाक समाजार्थिक अवस्था, जे हाल हाल धरि बनल रहल अछि, कें स्मरण करा देह सिहरा दैत अछि। डॉ. राधाकृष्ण चौधारी ई बात बहुत ठीक लिखने छथि जे 'विद्यापति ने अपनी नचारी और महेशबानियों में संतप्त मानव आत्मा की आर्तनाद का चित्रण किया है जिसका समर्थन हमें तत्कालीन अन्य साधनों से भी हमें मिलता है।'[82] कतेक भयानक गरीबी आ निरवलंब अवस्थाक बीच पार्वती अपन दुनू बालकक पालन-पोषण करैत छथि तकर वर्णन मिथिलाक वास्तविक जीवन-पद्धति कें नांगट क' दैत छैक। विद्यापतिक

ओ गीत सब मिथिला मे बेस लोकप्रिय रहल अछि जाहि मे गौरी शिव कें खेती करबाक सुझाव दैत छनि, आ भीख माँगब बन्द करबाक चेतौनी। निर्धन रहने की कष्ट होइत छैक, ओहि ठाम सेहो आएल अछि—'निरधन जन बोलि सब उपहासए नहि आदर अनुकम्पा।' ओहि ठाम विष्णु सँ शिवक तुलना करैत गौरी कहैत छथि जे 'तोहे शिव आक धतुर फुल पाओल हरि पाओल फुल चम्पा।' दुनियादारीक व्यवहारक विषय मे मिथिला मे कहबी कहल जाइत छैक जे 'भेखें' भीख भेटै छै—एहि कहबीक ई सरल दृष्टान्त थिक। विद्यापतिक शिवक विशेषता छनि जे ओ एनमेन अपन भक्ते-सन छथि आ अवस्था-साम्यक कारणें भक्त लोकनिक हुनका संग पारिवारिक संबंध छनि। आराध्य देव शिवक एहि प्रकारक छवि मिथिले मे रहल अछि, जकर आदिकल्पक हमरा लोकनि विद्यापति कें मानि सकैत छी। मुदा एहनो ठाम विद्यापतिक सामाजिक पक्ष जगजगार अछि। एहि पारिवारिक दुर्दशा पाछाँ कारण थिक अनमेल विवाह, जे मिथिलाक सम्भ्रान्त समाज मे महामारी जकाँ पसरल छल आ सर्वप्रतिष्ठित पंजी व्यवस्था एकरा वैधानिकता प्रदान करैत छलैक। विवाह प्रक्रमक गीत सब एकर विलक्षण चित्र प्रस्तुत करैत अछि जे कोना एक किशोरी संग कुरूप बूढ़क विवाह सम्पप करा देल जाइत छलैक आ महिला लोकनिक एहि पर केहन प्रतिक्रिया होइत छलनि। विद्वान लोकनि देखौलनि अछि जे एहन गीत सब अधिकांश मे भयोत्पादक एवं हास्यमिश्रित, किछु मे शृंगार सेहो मुदा सर्वत्र कौतुक भाव सँ भरल अछि। शिवप्रसाद सिंह लिखने छथि—'ऐसे पदों में ईश्वरत्व बुद्धि के साथ जन-सामान्य की वैवाहिक रीति-पद्धति का भी समावेश किया गया है। मिथिला के विवाहों में होनेवाले हास-विनोद आदि के सांकेतिक चित्र भी सामने आते हैं।'[83] यैह कारण थिक जे एखनहु मिथिला मे होइ बला विवाह मे ई गीत सब गाओल जाइछ आ ई परिपाटी अछि जे वर पक्षक काल्पनिक कुरूपता आ दरिद्रता बखान क' क' परिहास कयल जाइछ। मुदा एहि सभक कारण थिक कन्याक अहिबाती सौभाग्य, जाहि मामिला मे गौरी आदर्श छथि, ने कि सीता, जिनका मिथिला मे सामान्यत: अभागल मानल जाइछ। विद्यापतिक एहन गीत सभक विशेषता छैक जे समस्त कुरूपता आ वीभत्सताक वर्णनक बीच शिवक प्रति एक ईश्वर-बुद्धि बनल रहैत छैक। यैह कारण थिक जे रमानाथ झा मानैत छथि जे 'ऊपर सँ ओ गीत सब भने जेहन लगैत हो, तत्वत: ओ सब भक्तिगीत थिक।'[84] तकर दृष्टांत सेहो अछि। एक गीत मे गौरी शिव कें खेती करबाक सुझाव दैत छथिन आ तकर कारण आ उपाय बतबैत छथिन। मुदा विद्यापति जनैत छथि जे ओ मात्र शिवक लीलाक गायन क' रहल छथि। भणिताक पंक्ति मे अबैत छैक—'भन विद्यापति सुनहु महेसर इ लागि कएल तुअ सेवा/एतए ज होएत से बरु होअओ ओतए बिसरि जनि देवा।' स्पष्ट

अछि जे बुढ़ारी-जन्य कष्ट सँ सीदित विद्यापति एकरा देहधर्म बूझि स्वीकारि लेलनि, हुनक असली चिन्ता आब परलोक कें ल' क' छनि—ओतए बिसरि जनि देवा। हे देवता, अहाँ ओतए हमरा नहि बिसरब।

विद्यापति अहाँक रूप अनेक

आधुनिक युगक पैघ साहित्यिक लोकनि मे सँ रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्राय: विद्यापतिक कविताक सब सँ पैघ प्रशंसक छथि। एत्तेक जे अपन काव्यलेखनक आरम्भे ओ विद्यापतिक नकल सँ केलनि। विद्यापतिविषयक अपन समीक्षा मे रवि ठाकुर लिखने छथि जे हुनकर कविता स्त्री-पुरुष मिलनक उत्सवक कविता थिक। एहि प्रकृति मे स्त्री-पुरुषक निमितिये मे एहन किछु छैक जे दुनू एक दोसराक संग होअए चाहैत अछि। यैह इष्ट प्रकृतियोक छैक। दुनियादारीक अन्यान्य मसला एकर बादक बात थिक। इतिहासक चपल गतिक बीच स्त्री-पुरुष-संबंधक जे हश्र भेल, रवि ठाकुर लिखै छथि—'जाहि पंछीक पंख सुन्दर होइछ आ कंठस्वर मधुर, मनुष्य ओकरा पिंजरा मे बन्द क' क' विशेष गर्वक अनुभव करैत अछि। सत्तालोलुप मानव ई बिसरि जाइत अछि जे पंछीक सौन्दर्य समुच्चा अरण्यक लेल थिक। स्त्रीक हृदयमाधुर्य आ सेवा-नैपुण्य कें पुरुष सदा अपन व्यक्तिगत अधिकारक कड़ा पहरा मे रखैत आएल अछि। आ ई बात आसानी सँ संभवो भ' गेलैक अछि कारण स्त्री-स्वभाव मे बन्धन कें स्वीकारबाक प्रवृत्ति होइछ।'[85]

विद्यापतिक गीत सभक प्रशंसा मे विद्वान लोकनि बहुतो बात कहने छथि। प्रमुख बात ई अछि जे ओ प्रेम कें सदति नारीक आँखि सँ देखैत छथि। सौन्दर्य कें देखबाक हुनक दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म अछि आ सूक्ष्मग्राहिणी कल्पनाक सहायता सँ ओ ओहि रूप कें दृश्यमान करैत सरल, आकर्षक आ आवेगपूर्ण भाषा मे व्यक्त केलनि अछि। रमानाथ झा अपन पुस्तक 'विद्यापति' मे ओहू एक गीतक चर्च केलनि अछि जाहि मे विद्यापति अपन रचना-प्रक्रियाक संकेत करैत कहैत छथि जे 'नारीक' हृदय मे प्रच्छप रूप सँ प्रवहमान सैकड़ो मूक अभिलाषा आ उत्कण्ठाक अभिकल्पना कयलाक बादे ओ गीत गबैत छथि।'[86] विद्यापतिक पंक्ति छनि—'नारि मनोरथ शत शत अभिमत/रहस निरूप विद्यापति कवि गाओल।' चाहे युवतीक अंगयष्टिक वर्णन हो वा ओकर मनोदशाक अथवा कामेच्छा सँ सम्बद्ध काल, वातावरण वा ऋतुक वर्णन हो, सब ठाम ओ सूक्ष्मता आ नवीनता लेने उतरैत छथि कारण विद्यापति रहस्य कें निरूपिये क' गबैत छथि।

स्त्री, जेहन कि वास्तव मे ओ अछि, आ स्त्रीक ओ छवि जे कि पुरुषवर्चस्वी आ सामंती समाज मे बना देल गेल अछि, एहि दुनूक स्पष्ट आ सूक्ष्म चित्र हमरा

लोकनि हुनकर प्रेमगीत मे पबैत छी। ओतय कुण्ठा नहि अछि। कुण्ठा हेबाक कारणो नहि छल, कारण कामशास्त्र ग्रन्थ सँ ल' क' काव्य मे शृंगारिक पद तथा शिल्प मे कोणार्क, खजुराहो आदि मंदिर मे मैथुनरत स्त्री-पुरुषक चित्रणक सेहो एक स्पष्ट परम्परा एतय मौजूद छल। डॉ. शिवप्रसाद सिंह विद्यापतिक किछु गीत मे आएल उत्तेजक मांसलवर्णनक अप्रशंसा करैत लिखलनि अछि जे 'विद्यापति के काव्य में ऐसे स्थलों की कमी नहीं है, जहाँ वे अस्वस्थ और कई रूपों में अनैतिक वर्णन प्रस्तुत करते हैं। रति के वीभत्स वर्णन, विपरीत रति के अश्लील वर्णन तथा विकृत आलिंगन आदि के प्रसंग स्वस्थ प्रवृत्तियों के विरुद्ध ही कहे जाएँगे। यद्यपि कहीं-कहीं कवि ने ऐसे वर्णनों को रूढ़ अप्रस्तुतों की आड़ में ढँकने की कोशिश की है, किन्तु ऐसे प्रसंग भी उद्देश्य के सस्तेपन के कारण कुरुचिपूर्ण प्रतीत होते हैं।'[87]

अनैतिकताक जहाँ धरि प्रश्न अछि, कामशास्त्रक दृष्टिमो जे परम विधेय अछि, सेहो धर्मशास्त्रक दृष्टि मे आबि क' निषेध्य आ अनैतिक भ' जाइत अछि। श्लील आ अश्लीलक विषय मे तँ आधुनिक सौन्दर्यशास्त्र मे ई मान्यता प्रचलिते अछि जे अश्लीलता दृश्य मे नहि, देखनिहारक आँखि मे होइत छैक। देखनिहार के थिक तकरो बहुत महत्व होइछ। शिक्षकक नजरि मे जे लड़की महाभुसकौल आ गोबरक चोत रहैत अछि, सेहो अपन प्रेमी सहपाठीक नजरि मे लाखो मे एक प्राणवल्लभा होइत अछि। अपन एक लेख 'विद्यापति राधिका' मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विद्यापति आ चंडीदासक राधा-भेद पर विमर्श करैत बहुतो पताक बात कहने छथि। ओ कहैत छथि जे जेना गति आ उत्ताप एक्कहि शक्तिक दू भिप अवस्था होइछ, तहिना एहि दुनू कवि मे प्रेमशक्ति अपन अलग-अलग रूप लेने प्रकट भेल अछि। विद्यापतिक कविता मे प्रेमक भंगी, प्रेमक नृत्य, प्रेमक चांचल्य अछि, जखन कि चण्डीदास मे प्रेमक तीव्रता आ प्रेमक आलोक। विद्यापति मे यौवन के प्रथम आरम्भक आनन्दोच्छ्वास अछि। केवल विशुद्ध सुख एवं अव्याहत संगीत-धवनि। ई नहि जे ओतए दुख नहि अछि, सुख-दुख दुनू अछि मुदा दुनूक बीच एक अन्तराल अछि, व्यवधान अछि। तें ओ पबैत छथि जे विद्यापतिक प्रेम मे यौवनक नवीनता एवं चंडीदास मे प्रौढ़वयक प्रगाढ़ता अछि। ओ लिखैत छथि—'यौवनक प्रेम मे वेदनाक अपेक्षा विलास अधिक होइत अछि। एतए गम्भीरताक अटल स्थिरता नहि, केवल नवानुरागक उद्भ्रान्त लीला-चंचलता अछि। विद्यापतिक एहि पद सब कें पढ़ैत समीर सँ चंचल समुद्रक सतह आँखिक आगू ठाढ़ भ' जाइछ। लहर खेलि रहल अछि, फेन उच्छ्वसित भ' रहलैक अछि, मेघक छाया पड़ि रहल छैक, सूर्यक आलोक शत-शत अंश मे प्रस्फुटित भ' चारू दिस छिड़िया रहलैक अछि, तरंग-तरंग मे स्पर्श एवं पलायन, कलरव, कलहास्य, करताल, केवल नृत्य एवं गीत, आभास एवं आन्दोलन, आलोक एवं वर्ण-

वैचित्र्य। एहि नवीन चंचल प्रेम-हिल्लोलक ऊपर सौन्दर्य कतोक छन्द मे, कतोक भंगी मे विच्छरित भ' उठैत अछि, विद्यापतिक गान मे सैह व्यक्त भेल अछि।'[88] रवीन्द्रनाथ फेर लिखैत छथि जे नवीनाक नवप्रेम जेहन मुग्ध, जेहन मिश्रित, विचित्र कौतूहल सँ परिपूर्ण रहैछ, विद्यापतिक गान ठीक तेहने अछि—कतेको बेरक आएब-जाएब, कहब-सुनब, कतेक छलना, कतेक भावाभिव्यक्ति, कतेक डर, कतेक चिन्ता—अन्त मे एक दिन मधुर वसन्त मे नवीन मिलन, मुदा सेहो निविड़ निगूढ़ निरतिशय मिलन नहि। ओहि मे कतेको आशंका, कतेको आश्वासन, कतेको कौतुक आ छद्म लीला, मान-अभिमान। फेर सखी सँ परामर्श, अपन सुखस्मृति पर विचार। ओ ठीक पकड़लनि अछि जे विद्यापतिक प्रेम अन्ततः एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे—'जनम अवधि हम रूप निहारल/नयन न तिरपित भेल/लाख लाख युग हिय हिय राखत/तबु हिय जरनि न गेल।' नवीन प्रेम एतए आबि लाखों साल पुरातन भ' जाइत अछि। एहना स्थिति मे अश्लीलता वा अनैतिकताक चश्मा सँ एहि सब कथू कें देखब ओछ बात सन लगैत अछि।

प्रो. मायानन्द मिश्र एहि प्रश्न कें दोसर तरहें सोझरेबाक प्रयास केलनि अछि। अपन इतिहास पुस्तक मे बजाब्ता ओ एक परिच्छेद देने छथि जे विद्यापति एहन शृंगारिक काव्य किएक लिखलनि। कहब आवश्क नहि जे एना करैत मायानन्द मिश्र विद्यापति कें एक रसलोलुप भावुक नहि, युगद्रष्टा आ युगचेता कवि मानैत छथि। ओ चारि कारण बतौलनि अछि। पहिल तँ ओ वैदिक परम्पराक प्रवृत्ति-मार्गक चर्च करैत छथि जतय गार्हस्थ्य धर्मक सर्वाधिक प्रधान स्थान अछि आ 'गार्हस्थ्य धर्मक प्राण थिक दाम्पत्य-जीवन जकरा प्रेरित करैत अछि सौन्दर्य, राग ओ रति। कवि कोकिल विद्यापति वैदिक परम्पराक एही राग ओ रतिक महान उद्गाता छलाह।' दोसर कारण ओ मिथिला मे ब्राह्मणधर्मक राज स्थापित भेलाक बाद बौद्ध-प्रभाव कें समाप्त करबाक अभियान कें मानैत छथि। मिथिलाक ब्राह्मणेतर समाज मे बौद्ध प्रभाव तँ परिपूर्ण छलैहे, एहू बातक अनेक लोक-साक्ष्य पाओल गेल अछि जे ब्राह्मण युवा लोकनि मे सेहो ई बेस लोकप्रिय छल। डॉ. रामदेव झा ब्राह्मण लोकनिक जनउ नहि धारण करबाक एक मुख्य कारण एकरा बतौलनि अछि, जकर चर्चा ब्राह्मणक गीत मे होइत रहल अछि। ई प्रभाव जनउए धरि सीमित नहि छल, अपितु वीतरागिता आ संन्यास धरि चलि जाइत छल। मायानन्द मिश्रक मतें 'बौद्धक संन्यास-प्रभाव कें नष्टप्राय करबाक लेल तथा गार्हस्थ्य धर्मक प्रति अनुरक्ति लेल शृंगारिकता तत्कालीन मिथिलाक क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय प्रयोजन छल।' तेसर कारण तकैत ओ विजातीय आक्रमण ओ उत्पातक युग मे सामंजस्य स्थापनाक लेल शृंगार एवं भक्ति सँ बढ़ि कोनो आन विषय कें संघटक तत्व नहि पबैत छथि। ई मिथिलाक 'सांस्कृतिक

आवश्यकता' छल। एहि सभक अतिरिक्त ओ काव्यलेखनक पूर्ववर्ती प्रचलित परम्पराक बात करैत छथि जाहि मे संस्कृत आ देसी, दुनू भाषा मे शृंगार एक प्रमुख विषय छल। एही काज कें विद्यापति अपन भाषा मैथिली मे आगाँ बढ़ौलनि।[89]

विद्यापतिक रचना-आशय कें ल' क' रवीन्द्रनाथ ठाकुरक अर्थबोध आ मायानंद मिश्रक अर्थबोध मे जे एतय एते भारी अंतर देखल जा रहल अछि, ध्यान देबाक बात थिक जे एकर मूल कारण थिक दुनू गोटेक आस्था-केन्द्रक भिप-भिप होयब। रवीन्द्रनाथ लेल मानवता मूल्यवान अछि, जखन कि मायानंदक लेल ब्राह्मणधर्म।

मुदा, डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण मुदा एक भिप कारण बतबैत छथि।

विद्यापति यौवनक कवि छथि। यौवनसंभव भावनाक संग ओ तेना एकमएक छथि जे नीक आ अधलाह के निर्णय करबाक जे युवा-दृष्टि होइत छैक—सुख-दुख, नीक-बेजाय कें ओ अत्यन्त स्वतंत्र रूप मे देखैत अछि, गुण देखितहि सर्वगुणक कल्पना आ दोख देखितहि साक्षात पिशाचमूर्त्ति—से विद्यापतिक प्रेमकविताक स्वभाव अछि। पूर्णत: यौवन-सम्मत। यौवनक प्रशंसा मे ओ स्वयं कतेको बात लिखलनि। हुनक ई गीत तँ प्रसिद्ध अछिये जे—'सरसिज बिनु सर, सर बिनु सरसिज, की सरसिज बिनु सूरे/जौबन बिनु तनु, तनु बिनु जौबन, की जौबन प्रिय दूरे।' हुनकर एहन कविताक प्रशंसा मे वैद्यनाथ मिश्र यात्री लिखलनि अछि—'सृष्टिक सर्वोत्तम अवदान थिक मनुष्य, जीवनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काल थिक यौवन, रचनात्मक दृष्टिमो सर्वोपरि स्थायिभाव थिक नर-नारीक परस्पर प्रीति।' एकर चर्चा पहिनहि भ' चुकल अछि। मुदा किरण जी लिखलनि—'यौवन जीवनक पर्याय नहि थिक। जीवनक बड़ थोड़ अवधि यौवन थिक। सौंसे जीवन कें छोड़ि केवल यौवन कें लेब—ओहू यौवनकालक प्रवृत्ति, महत्वाकांक्षा-संघर्ष आदिक उपेक्षा क' केवल स्वामी-स्त्रीक यौवनोचित केलिविलासक चित्रण विद्यापतिक दृष्टि कें साधारण सँ साधारण बना देत। जखन देशक राजनीतिक स्वाधीनता समाप्तप्राय छल, तखन देश-समाज,भाइ-बन्धु, जाति-धर्मक चिन्ता कें छोड़ि केवल युवक-युवतीक मिलन, विरह, अभिसारक वर्णन मे लागल रहब श्मसान मे शहनाइ बजायबक समान थिक। एहन गीत मे ओ कतबो चमत्कार देखाबथु ओ महान नहि भ' सकताह।'[90] मुदा विद्यापतिक संबंध मे सत्य तँ सैह थिक आ ओ महान सेहो छथि। एकर समाधान किरण जी एहि तरहें निकालैत छथि जे नहि, प्रेमगीतक पद सब ओ सामान्य नर-नारीक परस्पर प्रीतिक विषय मे नहि लिखलनि, अपितु ओ पद सब राधा-कृष्णक भक्तिपद थिक जे भागवत धर्मक आदर्श पर लिखल गेल अछि। असल मे मिथिलाक विद्वान लोकनि मे इहो मान्यता पसरल छल जे विद्यापतिक कृष्ण आर क्यो नहि, विद्यापतिक आश्रयदाता राजा शिवसिंह छलाह, जिनका स्वयं विद्यापति अवतार कहनहु छथि। किरण जीक ई लेख तकरे प्रत्याख्यान लेल लिखलल गेल छल। लेख सँ सूचना भेटैत अछि जे यैह मान्यता रमानाथ झाक छलनि, जे आगू जा क' अपन अभिमत कें संशोधित कयलनि।

अपन एक दोसर लेख मे काञ्चीनाथ झा किरण विद्यापतिक द्वारा कृष्णभक्तिक गीत लिखबाक प्रयोजन पर प्रकाश देलनि अछि। हुनका अनुसार, विद्यापति शिवभक्ति आ कृष्णभक्तिक गीत लिखलनि। शिवक स्त्री गौरी, कृष्णक राधा। शिवभक्ति गीत मे स्त्रीक एकपतिनिष्ठताक समर्थन अछि, आ यैह कारण भेल जे बहुविवाह आ जारकर्मक लुतुक कें वैध माननिहार सामंती मिथिला मे शिवभक्ति बेस लोकप्रिय रहल। ओतय संदेश छैक जे स्त्री-स्वामीक संबंधक लेल सुन्दरता, स्वास्थ्य, विद्या, वैभव आ सुस्वभावक कोनो प्रयोजन नहि, जकरे संग विवाह होइक, हर हालति मे कन्या कें तकरे संग निर्वाह करबाक चाही। राधाकृष्णक चरित्र एकर सर्वथा विपरीत अछि। ओतय प्रेम संबंधक लेल समाजक बन्धन कें, एतय धरि जे वैवाहिक संबंधो कें तोड़बाक संकेत छैक। राधा छलि गोआरि आ कृष्ण क्षत्रिय राजकुमार। राधाक पिता ओकर ब्याह अपन जाति मे करा देने रहथिन, मुदा तकरा स्वीकार नहि करैत, तकरा तोड़ि जाति-प्रतिष्ठा सब कें तिलांजलि दैत राधाकृष्णक मिलन भेल। किरण जीक कहब छनि जे राधाकृष्णक चरित्र जातिवाद तथा प्रचलित वैवाहिक प्रथाक विरुद्ध विद्रोह थिक। वर-कन्याक अपन अभीप्सित प्रेमी संग प्रेम-संबंधक अधिकार, जे अभिभावक द्वारा अपहृत क' लेल गेल छल, तकरा बरजोरी प्राप्त करबाक घोषणा ओतए सुनाइ दैत अछि। किरण जी कहैत छथि—'विदेशी आक्रमण सँ जर्जर देशक एक दूरदर्शी राजनीति-निपुण महामंत्रीक उपयुक्त विद्यापतिक दृष्टि छल। ओ अनुभव कयलनि जे देश कें सबल बनेबाक लेल समाज कें नवीन रूपें संघटित करब आवश्यक। देशक दुर्बलताक मुख्य कारण थिक जातिवाद। लादल बियाह लोकक विकास मे बाधक होइत छैक। अतएव विद्यापति राधाकृष्णक चरित्र कें जनभाषाक द्वारा समाजक सम्मुख उपस्थित कयलनि। हुनक मतक समर्थक विद्वान राधाकृष्णक चरित्र काव्य कें पुष्ट करबाक प्रयत्न करैत रहला।' जँ विद्यापतिक प्रयोजन एतेक आ एहन स्पष्ट तँ मिथिला मे हुनकर ई गीत सब लोकप्रिय किएक नहि भ' सकल? तकर कारण किरण जी बतबैत छथि जे 'विद्वान दिनराति कन्याक अनमेले विवाह करबैत रहैत छला, जातिक अन्तर्गत नव जातिक निर्माण करबै मे पाण्डित्य बुझैत छला, अपन यथावत स्थिति-रक्षा कें देशो सँ पैघ क' क' मानैत छला, अथवा राजनीतिक चेतनाहीन छला, राधाकृष्णक चरित्रक समाज मे प्रचार कोना पसिप करितथि? तें ओ लोकनि राधाकृष्णक काव्य कें पोथी सँ बाहर नहि होबए देलथिन। हमर मतें मिथिला मे विद्यापति, गोविन्ददास आदिक गीतक प्रचार नहि हेबाक कारण यैह थिक।'[91]

मिथिलाक सम्भ्रान्त वर्ग मे विद्यापतिक प्रेमगीतक प्रचाराभावक जे कारण किरण जी बतबैत छथि, निश्चित रूप सँ बात मे दम अछि। कारण, हमरा लोकनि देखैत छी जे निम्न वर्गक मैथिल लोकनि मे एहि गीत सभक खूब प्रचार छल जे नटुआ नाच मे प्रयुक्त होइत छल। 'बिदापत नाच' यैह छल जाहि पर फणीश्वरनाथ रेणु लेख लिखने छलाह आ प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक किताब आएल छल। दोसर जे मिथिलाक निम्नवर्ग मे विवाह-विच्छेद आ पुनर्विवाह स्त्रीक लेल वैध छल आ जारकर्म निषिद्ध जखन कि सम्भ्रान्त वर्ग मे एकर ठीक विपरीत चलन छल। एहि सभक अतिरिक्तो हुनकर अनेको प्रेमगीत महिला लोकनि चतुराइ सँ व्यवहार-गीत मे शामिल क' लेलनि आ ई प्रचलन मे बनल रहल। बाँकी तँ ग्रियर्सन कें जे गीत सब प्रचलन मे भेटल छलनि से वैष्णव आन्हर भिखारि लोकनि सँ, आ ताहि मे प्रेमगीतक बेस मात्र छल।

एहि सब मान्यता आ अभिमत, जकर पर्यवसान अन्ततः पारंपरिक अलंकारशास्त्र लग मे जा क' होइत अछि, ताहि सँ एकदम अलग जा क' सेहो विद्यापति कें देखबाक प्रयास भेल अछि। सैयद हसन अस्करी आ गयासुद्दीन अहमद द्वारा संपादित बहुखंडीय विशाल ग्रन्थ 'कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार' मे स्वतंत्र आलेख विद्यापति आ हुनकर युग पर देल गेल अछि। एकर लेखक स्वनामधन्य विद्यापति-विशेषज्ञ विमान बिहारी मजूमदार छथि। विद्यापतिक मौलिक प्रतिभाक प्रशंसा करैत ओतए कहल गेल अछि जे 'हुनकर मानस आश्चर्यजनक रूप सँ आधुनिक दृष्टिकोण बला छनि।' (Surprisingly modern, in its outlook) ओहिठाम ओ चर्चा कयने छथि जे पूर्वक कवि लोकनि धार्मिक साहित्य लिखबा मे सर्वाधिक रुचि लैत रहथि जखन कि विद्यापति मूल रूप सँ कवि थिकाह, आ धार्मिक आग्रह हुनका लग मे नहि छनि। एहि क्रम मे ओ कन्नड़क बासव, मराठीक ज्ञानदेव, हिन्दीक कबीर, तुलसीदास, सूरदास लोकनिक चर्च केलनि अछि आ हिनका सब कें धार्मिक आग्रहक कवि कहलनि अछि। मजूमदार कहैत छथि जे संस्कृति आ परम्पराक विचार सँ विद्यापति मध्यकालक छथि मुदा अपन समर्थ कल्पना आ व्यापक सहानुभूति तथा वास्तविक भावनाक कारण विद्यापति उत्तर भारत मे सुधारयुगक सूत्रपात करैबला कवि छथि।[92] मजूमदारक एहि विवेचन पर टिप्पणी करैत रामविलास शर्मा लिखलनि अछि—'यदि ये सभी (बासव, ज्ञानदेव आदि) धार्मिक आग्रह के कवि हैं तो उत्तर भारत मे सुधार आन्दोलन के कवि कौन हैं? यह कहना अधिक उचित होगा कि उत्तर भारत मे जो नवजागरण के साहित्य का प्रसार हुआ, उसके अग्रदूत विद्यापति हैं। संस्कृति और परम्परा से वे मध्यकाल के हैं—यह कहना भी बहुत सही नहीं है। वे बहुत सी चीजें अतीत से ग्रहण करते हैं पर उनका विकास भी करते हैं। और इसमें कोई संदेह नहीं

है कि उनके अंदर भावात्मक सत्य है। वह सबसे पहले कवि हैं। धार्मिक आग्रह उनमें नहीं है। उनके अंदर एक चीज और है, जिसका उल्लेख इस निबंध में नहीं किया गया और वह है—यथार्थवाद। नये साहित्य में विद्यापति यथार्थवाद के आदि प्रवर्तकों में हैं।'[93]

अपन अभिमत कें स्पष्ट करैत रामविलास शर्मा ओतए आओर कैक बात कहलनि अछि। ओ महाकवि दाँतेक बारे मे एंगेल्सक ई कथन उद्धृत करैत जे 'दाँते मध्यकालक अंतिम आ आधुनिक कालक प्रथम कवि छथि', कहैत छथि जे एक हद धरि ई बात विद्यापतियोक संबंध मे कहल जा सकैछ। तखन हँ, अन्तर ई रहत जे जतबा मध्यकालीनता दाँते मे छनि, तकर शतांशो विद्यापति मे नहि। ईसाइ धर्मशास्त्र कें बुझने बिना दाँतेक आशय हृदयंगम क' पाएब कठिन अछि, मुदा तैयो ओ अपना युग कें प्रतिबिम्बित करैत छथि आ हुनका सँ यथार्थवादी धाराक आरम्भ होइछ। विद्यापति एहि सँ बहुत आगू छथि। हुनका मे हरेक तरहक धर्मशास्त्रीय आग्रह सँ मुक्ति स्पष्ट छनि। विद्यापतिक दृष्टिकोण आधुनिक छनि, तें हुनका युग कें मध्यकाल नहि कहल जा सकैछ।[94] ओ कहैत छथि—'सामंती व्यवस्था के अंदर जो नई कला और साहित्य का विकास होता है उसमें अक्सर यही देखा जाता है कि ऊपर से आवरण धार्मिक है, लेकिन भीतर की विषयवस्तु सांसारिक है।[95] ठीक-ठीक यैह बात हमरा लोकनि विद्यापतिक गीत मे होइत देखैत छी। ऊपर सँ राधाकृष्णक नाम मुदा भीतर समस्त वस्तु सांसारिक। एहि संदर्भ मे इतिहासकार राधाकृष्ण चौधरीक कथन ओ सटीक उद्धृत कयने छथि—'The religious themes are endowed with worldly Consiousness.'। ऊपर सँ देखबा मे धार्मिक मुदा भीतर सांसारिक चेतना सँ भरल-पुरल।

रामविलास शर्मा विद्यापतिक जाहि आधुनिकता या यथार्थवादक बात कहलनि, ताहि दिशा मे पर्याप्त काज एखनो नहि भ' सकल अछि, जखन कि पारम्परिक विद्वान लोकनि कें लगैत छनि जे विद्यापति पर भला आब कोन काज बाँकी रहि गेलैक अछि! एहना मे विद्यापतिक किछु युवा अध्येता यथा अरविन्द कुमार मिश्र मे एहि दृष्टिमो पदावलिक अध्ययनक रुझान प्रशंसनीय अछि। अरविन्द जी अपन एक पुस्तिका 'विद्यापति पदावली : देह, मन और स्त्री' प्रकाशित करौलनि अछि जे पढ़बा जोग अछि।[96]

विद्यापतिक पदावली एक निश्चिन्त मनक कविता थिक। सुख-सुविधा सँ परिपूर्ण कवि जे अत्यन्त निश्चिन्त मोनें मनुष्य-जीवनक एक जटिल प्रश्न—नर-नारी-संबंधक भवितव्यता पर विन्यासपूर्वक रचि रहल हो। एहि सुख-सुविधाक लेल कवि राजदरबार पर आश्रित छला। सामंती समाज मे राजा ईश्वर बराबर। ओकर

सब दोष गुणवत् आ समस्त जायज-नाजायज इच्छा अनिवार्यतः पूरणीय, अलंघ्य। मिथिला मे राजा शिवसिंहक बेस आदर। एखनो बहुत विद्वान छथि जे विद्यापति सँ पैघ स्थान शिवसिंह कें दैत छनि, तकर कारण मात्र ई नहि जे विद्यापतिक ओ आश्रयदाता छलाह, इहो जे सर्वोच्च कुलक ब्राह्मण छला आ मिथिला मे ब्राह्मण-राज कें अनामति रखबाक हुनक संघर्ष अतुल्य छल। सामंती समाज मे पुरुषक दुइये टा काज—युद्ध अथवा भोगविलास। एहि भोगविलासक केन्द्र मे नारी होइत छलीह। जाहि सामंतक रनिवास मे जतेक स्त्री हो, अथवा जतेक स्त्रीक संग ओकर संसर्ग हो, से तते सम्पप आ प्रशंसनीय मानल जाइत छल। स्वयं शिवसिंहक चारि गोट विवाह छलनि। विद्यापति अपन भणिता मे लखिमाक अतिरिक्तो हुनक अन्य रानीक उल्लेख केलनि अछि। विद्यापतिक कविता मे शिवसिंहक जे छवि सब अंकित भेलनि अछि तदनुसार ओ नीक विलासी आ स्त्री-प्रिय छलाह। जँ कवि हुनका कतहु कृष्णक समतुल्य कहलनि अछि तँ तकर एक सन्दर्भ इहो अछि जे कृष्णक रनिवास मे सोलह हजार रानी छलखिन, आ प्रेमिका तँ ताहू सँ बेसी—दर्शना, अदर्शना, मानिता, अनुमानिता आदि। ओहि युग मे स्त्री स्वात्महीन, पंगु मुदा बहुमूल्य वस्तु होइत छल जे एक दिस जँ वंश-वृद्धि, निजी उपभोग, राज-रक्षा आ राज-प्राप्तिक साधन छलि तँ दोसर दिस शान्तिकालीन विलास लेल बहु उपयोगी सामग्री। अरविन्द कुमार मिश्र ठीक लिखलनि अछि जे ओहि युगक तमाम पारम्परिक शास्त्रीय शृंगारिक कविता एही लग्जरी फीवर (विलासिता-ज्वर)क ताप सँ निर्मित अछि। एहि मे स्त्रीक यौनता कें, ओकर स्वत्व कें दाबि क' एक उपभोग्य आ प्रदर्शनीय वस्तुक रूप मे ओकर अनेकानेक मनोरंजक छवि बनाओल गेल अछि।[97] ओतए स्त्री मात्र एक विपरीत यौनिक इकाइ थिक, जे पुरुषक यौनतृप्ति लेल आनल जाइछ, मुदा जकर अपन कोनो यौनेच्छा विधेय नहि छैक आ ने अधिकार जे ओ अपना अनुकूल यौन पारिस्थितिक माँग क' सकय। दूती, सखी, कुट्टनी आदि द्वारा ओकरा काम-शिक्षा देल जाइछ आ ओहि छवि आ चिह्न सब सँ परिचित कराओल जाइछ जे पुरुषक यौनतृप्ति मे सहायक होइत अछि। स्वयं विद्यापतिक गीत एही परिस्थिति आ वातावरणक उपजा थिक आ हुनकर सैकड़ो एहन गीत अछि जाहि मे एहि सब कथूक डिटेल कएल गेल छैक। एहि सब पर एहि विलासिता-ज्वरक पूरा प्रभाव देखल जा सकैत अछि, यद्यपि कि विद्यापति एक सचेत कवि छथि आ दरबार मे रहितो अपना कें दरबार सँ अलगाएब जनैत छथि तें ई वर्णन सब ततेक अनुभूतिपरक आ भावात्मक अछि जे कामशास्त्रीय नायिका-भेदक परम्परित रचना सब सँ बहुत भिप आ विशिष्ट अछि। अरविन्द लिखैत छथि—'विद्यापति जब स्त्री के कामशास्त्रीय विविध रूप-छवि को उकेरते हैं तो दो तरह से इन समकालीन कला-प्रवृत्तियों से भिप हो जाते हैं। एक तो वे नायिका का सिर्फ

परिभाषित वर्णन नहीं करते वरन हृदय पर उसके रूप का पड़ने वाले प्रभावों को भी उसमें व्यंजित कर देते हैं। दूसरे, वे ऐसा करते हुए नायिका यानी नारी के मन को स्थगित नहीं करते। साथ ही उनकी मानसिक अथवा हृदयगत प्रतिक्रिया को भी पद में व्यक्त कर देते है। इससे शास्त्रीय नायिका भी जीवंत स्त्री-रूप धारण कर लेती है।'[98] एक विशेषता ओ इहो देखैत छथि जे वर्णनक स्वरूप यद्यपि पितृसत्तात्मक अछि, किन्तु दरबारी चाटुकारिताक भाव ओतए नहि अछि। ई स्त्री लोकनि कुलकामिनी छथि, राजदरबार सँ अलग मुदा सुखी आ सामान्य जीवन जीनिहारि। किन्तु विद्यापतिक एहनो पद सब अछि जतय सामंती समाजक निरंकुशतावादी पारिवारिक व्यवस्थाक बीच स्त्रीक यौन उपेक्षाक गम्भीर संकेत भेटैत अछि।

कविमानसक उत्तरोत्तर विकास

विद्यापति साठि वर्ष सँ बेसी समय धरि गीत लिखैत रहलाह। दस-बारह राजाक दरबार मे रहबाक अनुभव प्राप्त कयलनि। सुदिन आ दुर्दिन दुनूक रस चिखलनि। एही अवधिक भीतर जँ एक दिस हुनकर उत्ताल यौवनक गीत अछि तँ दोसर दिस संतप्त बुढ़ारीक गीत सेहो अछि। दुर्योग ई रहल जे जतेक जे कोनो हुनकर गीतक पाण्डुलिपि भेटल, सभक सब एहि समस्त गीत सब कें समघटार कयने अछि। एतय धरि जे पाण्डुलिपि सभक आधार पर जे प्रथम पीढ़ीक विद्वान संपादक लोकनि पदावली मुद्रित करौलनि, ताहू मे एहि पचड़ा मे पड़ने विना या तँ यथावत स्वीकार क' लेल गेल अथवा नायिका भेदादिक अनुसार गीत सब कें वर्गीकृत कयल गेल। नगेन्द्रनाथ गुप्त, जिनका विद्यापति गीत-गंगाक भगीरथ कहल जाइत छनि, ओ तँ मात्र उक्ति-भेदक अनुसार गीत सब कें प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि समस्त संग्राहक लोकनि मे एकमात्र विमान बिहारी मजूमदारे छथि जे एहि गीत सब मे क्रम-विकास तकबाक दिस थोड़े साकांक्ष रहलाह अछि।

अपन संकलन 'विद्यापति' मे मजूमदार पहिने तँ 230 राजनामांकित पद मे ऐतिहासिक दृष्टिमो क्रम-विकास तकबाक प्रयास केलनि फेर इहो कहलनि जे राजाक नामविहीन हुनकर समस्त गीत वृद्धावस्थेक लिखल हो, सेहो बात सही नहि अछि। बाँकीक 703 पद मे सँ मोटामोटी 29 प्रतिशत कें ओ विद्यापतिक युवावस्थाक रचना मानलनि अछि। एहि रचना सभक की स्वभाव अछि? चित्तविनोद, कौतुक, चपलता। ओ कहै छथि—'यह अनुमान करना असंगत नहीं होगा कि ये पद कवि के जीवन के एक रंगकौतुकमय अध्याय में रचे गए थे।' हुनकर दृष्टकूट वा प्रहेलिका, जकरा बारे में शिवप्रसाद सिंह लिखने छथि जे 'ये पद भी इसी (अनैतिक, अश्लील) मनोवृत्ति के परिचायक हैं, हालाँकि यह वस्तुगत नहीं, शैलीगत दोष है।'[99]—सेहो

हुनकर युवावस्थेक लिखल रचना थिक जकरा बारे मे मजूमदारक कहब छनि जे एहि सभक रचना ओ राजा-रानी आ सभासद लोकनिक चित्तविनोद लेल कयने रहथि। विद्यापतिक जीवन मे जे सुखक थोड़ दिन छलनि से राजा शिवसिंहेक काल मे छलनि, एहि मान्यताक पाछू बहुत सार अछि। शिवसिंह नामांकित पद सब मे हमरा लोकनि देखैत छी जे कविक अन्तर्निहित आनन्द स्वत:स्फूर्त्त भ' उठल अछि। एहि गीत सब मे रूप, रस आ वर्णक छटा शृंगारप्रेमी पाठक लोकनि कें गदगद क' दैत अछि। मजूमदारक शब्द मे—'चारों ओर मानो एक सुख की लहर बह जाती है। कवि के पद चपल चंचल गति से, तरलित भंगी से नाच-नाच जाते हैं। कल्पलोक का समस्त सौन्दर्य मानो नायिका में मूर्त्तमान हो उठा है।'[100] एकर ठीक विपरीत रुद्रसिंह नामांकित पद सब कें जँ देखी तँ विरहिनी लोकनिक मर्मभेदी क्रन्दन ओहि ठाम प्रमुख अछि। शिवसिंहक समय मे विद्यापतिक द्वारा प्रयोग कयल गेल उपमान प्रचलित परम्परित अलंकारशास्त्रीय छल, तकर स्थान आब देसी स्वभावजात भावना आदि ल' लैत अछि। स्त्रीक जुझारूपन अपन देहक प्रति आ अपन सम्मानक प्रति, बेस मात्र मे बढ़ि जाइत अछि। तकरहु परवर्ती काल मे अर्जुन रायक नामांकित समरूप पद सब कें देखी तँ पबैत छी जे ओहि ठाम आन्तरिकता आओरो अधिक गँहीर भ' गेल अछि। मजूमदार एहि गीतक दृष्टांत देलनि अछि—' निअ पहु परिहरि संतरि बिखम नरि/आंगरि महाकुल गारी/तुअ अनुराग मधुर मदे मातलि/किछु न गुनल वरनारी/ई रस रसिक विनोदक विंदक/सुकवि विद्यापति गावे/कामपेम दुहु एकमत भए रहु/कखने की न करावे। राजनामविहीन एहि पदक संदर्भ दैत मजूमदार कहने छथि जे एहि पद मे भावक प्रगाढ़ता आ अनुरागक तीव्रताक जे चित्र कवि अंकित केलनि अछि, ई वस्तु राजसभाक वातावरण मे लिखित एक्कहु कोनो पद मे नहि पाओल जा सकैत अछि। एहना स्थिति मे, रमानाथ झा जेना कहने छथि, 'स्त्रीक हृदय आ ओकर संवेदन-प्रणालीक अद्‌भुत ज्ञान विद्यापति कें रहनि', के बावजूद जँ आजुक पारिभाषिकीक अनुसार उच्छृंखला, अनैतिकता वा अश्लीलताक तत्व किनको देखार पड़ैत छनि तँ एकरा लेल केवल विद्यापतिक युवावस्था कें दोष नहि देल जा सकैछ, सामंतक राजदरबारक ओ वातावरण, जाहि मे बाध्यतावश ओ नौकरी करैत छलाह, के अंशदान सेहो ताकल जेबाक चाही। शिवसिंहक दरबारक माहौल एहि सब मे सँ सर्वाधिक मारुख छल जकर कल्पना हम सब एही सँ क' सकैत छी जे तहिया यदि ओ विरहगीत लिखबाक चेष्टा करबो केलनि तँ चिराचरित कविरूढ़िक आश्रय लैत रीति-अनुयायी भ' क' रहि गेला जतय भावक प्रगाढ़ता बिलकुल नहि अछि। 'सुख और सौन्दर्य में मानो कवि दुख का सुर पकड़ ही नहीं सका है।'[101] ओहिठाम उपमा-वैचित्र्य आ शब्द-झंकार तते आक्रान्त कयने अछि जे भावक

गंभीरता कें स्फुटे नहि होब' देलकैक अछि। अर्जुन रायक आश्रयत्व मे लिखल पद सब मे शब्द कम छैक, भाव अधिक—'हृदयक बाउलि कहिय पर जनु/तोंहौ कहौ सयानी/बिनु माधव रे मधु-रजनी जाइति/मीन कि जिब बिनु पानी।' आ, शिवसिंहक पौत्र-कोटिक राजा राघव सिंहक समयक गीत सब तँ एहन अछि जतए वसन्त, मलयानिल, चान, कोकिल एहि सब विरहउद्दीपक बाह्य वस्तुक खगातो धरि खतम भ' गेलैक अछि। एकर एक चित्र राजनामविहीन एहि पद मे देखल जा सकैत अछि—'अनुखन माधव माधव सुमिरैत माधव भेलि मधाई/ओ निज भाव सोभाबहि बिसरल आपन गुन लुबुधाई/माधब अपरुब तोहर सिनेह/अपनेहि बिरहे अपन तनु जरजर जिबइते भेल सन्देह।'

कवि-मानसक उत्तरोत्तर विकासक बीच एक जे वस्तु विद्यापति मे निरन्तर बनल रहल से छल हुनक नैसर्गिक काव्य-प्रतिभा। डॉ. जयदेव मिश्र ठीक लिखने छथि जे 'विद्यापतिक विशालता प्राविधिक नाप-तौल सँ परे छल। प्राविधिक निपुणता हिनक सौन्दर्यबोध कें आओर चमका देलक ई सत्य किन्तु हिनका संबंध मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात थिक हिनक अलौकिक, स्वत:स्पष्ट काव्य-प्रतिभा। राजदरबार सँ सम्बद्ध रहबाक कारण राजनीतिक परिवर्तनक आलोड़न-विलोड़नक साक्षात प्रभाव प्रचुर मात्र मे हिनका पर पड़ल, ई सत्य भेनहु हिनक कवित्वशक्ति कखनहु कुंठित नहि भेल, कखनहु एकर संतुलन एवं शृंखलाबद्धता मे व्याघात नहि पड़लैक।'[102]

भक्ति बनाम शृंगार

नगेन्द्रनाथ गुप्त आ हुनक अनुवर्ती लोकनिक आलोचना करैत विमान बिहारी मजूमदार लिखलनि अछि जे हरेक गीतक शीर्षक 'राधाा की उक्ति' 'सखी की उक्ति', 'माधव की उक्ति' आदि राखि क' ओ वैष्णव भक्त लोकनिक दृष्टि मे विद्यापति कें रसाभास-युक्त पद लिखबाक दोषी ठहरा देलनि अछि। असल मे पूर्व पीढ़ीक आने बंगाली अध्येता जकाँ मजूमदार सेहो विद्यापति कें वैष्णव कवि मानैत छथि आ गीत-लेखनक प्रमुख प्रयोजन राधाकृष्ण-भक्ति बुझैत छथि। मुदा, नगेन्द्रनाथ गुप्त कें दोषी ठहरेबाक पाछू जे कारण अछि, तकर समाधान तकबा मे मजूमदार सेहो ओझरा गेलाह अछि। कारण की? कारण ई जे हजार सँ ऊपरक संख्या मे उपलब्ध विद्यापतिक पद सब मे सँ मात्र 428 पद अछि जाहि मे कृष्णक अनेक नाम मे सँ कोनो एक नाम आएल अछि। राधाक जाहि मे नाम आएल हो, एहन पदक संख्या तँ आरो कम अछि। एहि गीत सब मे, जकरा नगेन्द्र बाबू राधा वा कृष्ण संगे जोड़लनि अछि, अनेक एहन विषय आ प्रसंग आएल अछि जे कृष्णभक्तिक पैमाना पर खरा नहि उतरि पबैछ। जेना, भक्त लोकनिक विश्वास छनि जे राधाक प्रेम एकनिष्ठ छलनि आ ओ मृत्युक

समक्ष भेलो पर कखनहु परपुरुषक कामना नहि क' सकैत अछि। एकर विपरीत विद्यापतिक अनेको पद एहन अछि जाहि मे विरह सहन नहि भेने परपुरुषक अंकशायिनी भ' जेबाक चर्च आयल छैक। एतए धरि जे प्रेम मे धोखा देनिहार पतिक स्त्री कें सुपुरुषक संग पुन: प्रेम लेल प्रोत्साहन धरि व्यक्त भेलैक अछि। स्वयं मजूमदार लिखैत छथि—'विद्यापति के पदों की आलोचना के लिए यह जानना विशेष आवश्यक है कि उनके कौन-कौन से पद राधाकृष्णविषयक हैं और कौन-कौन शुद्ध शृंगाररस के। विद्यापति की पदावली में केवल श्रीराधा की बात नहीं है। उसमें स्वकीया, परकीया और साधारणी (बारवणिता) नायिका की बातें जिस प्रकार हैं उसी प्रकार बाला, तरुणी, युवती और वृद्धा की बात है। कुट्टनी और प्रगल्भा कुलटा तक है।'[103]

स्वयं मजूमदार ई बात स्वीकार करैत छथि जे राधाकृष्ण एवं हुनका सँ सम्बद्ध लीलाद्योतक चिह्न यमुना, गोप आदि विद्यापतिक प्राय: पचासे प्रतिशत पद मे अबैत अछि, तखन ओ इहो स्वीकार करैत छथि जे अपन आरंभिक जीवन मे ओ ठीके एक शृंगारी कवि रहथि जे सामान्य नायक-नायिका कें आधार बना शृंगारिक गीत लिखल करथि। मुदा ओ एक नव आग्रह ई रखैत छथि जे रजाबनौली मे अपन दुखद दिनक निर्वाह करैत, परिणतवय मे ओ वैष्णवीय साधनाक राधाकृष्ण-लीलागान केलनि। तकर प्रमाण मे ओ विद्यापति द्वारा भागवतक प्रतिलिपीकरण कें रखैत छथि। अपन मान्यताक बारे मे ओ कहैत छथि—'रजा बनौली में उपेक्षाकृत दारिद्र्य और विपद में वास करते और श्रीमद्‌भागवत की प्रतिलिपि प्रस्तुत करते समय उनके मन में एक ऐसा परिवर्त्तन आया कि उसके फलस्वरूप उनके पदों के भाव और भाषा में अनेक रूपान्तर हुए और इसी रूपान्तर को दिखाने की मैंने चेष्टा की है।'[104] मुदा, एहि प्रश्नक हुनका लग कोनो उत्तर नहि छनि जे आरंभिको कालक हुनक गीत सब मे राधा-माधवक उल्लेख किएक भेल अछि। विद्यापतिक वद्धावस्थाक किछु प्रसिद्ध पद मे आएल 'माधव' पदक उल्लेख करैत एकरो ओ एक प्रमाण मानलनि अछि। कहैत छथि—'यौवनकाल में वे शृंगाररस में निमग्न थे और उसी विषय की पद-रचना की थी, इसी को लेकर वृद्ध वयस में आक्षेप करते हैं—यावत जनम हम तुअ पद न सेवल/युवति मति ममो भेलि।'[105] किन्तु एहूठाम उद्धरण चुनबा मे हुनका सँ केहन भूल भेल! एतय विद्यापति केवल अपन युवावस्थाक बात नहि कहैत 'यावत जीवन'क बात कहैत छथि। हमर समझ अछि जे वद्धावस्थाक पश्चात्तापक जे हुनक पद सब अछि, से स्वयं अपना मे एक साक्ष्य थिक जे ओ एक सामान्य मैथिल गृहस्थ जकाँ जीलाह आ तहिना अंत मे वृद्धावस्थाजन्य कष्टक आवेगें हरि-स्मरण केलनि। ओ वैष्णव साधक होइतथि तँ हुनक ई पद सब आन तरहें लिखल जाइत। जहाँ धरि भागवतक प्रतिलिपीकरणक प्रश्न अछि, रमानाथ झाक अभिमत हमरा बेसी समीचीन

बुझना जाइत अछि जे प्रायश्चित-स्वरूप ई काज ओ कयने छलाह, जकर परम्परा मिथिला मे पछिला शताब्दी धरि प्रचलित छल।

विद्यापतिक स्त्री

अर्द्धनारीश्वरक प्रसंग पर नगेन्द्रनाथ गुप्त विद्यापतिक एक दुर्लभ गीत संकलित कयने छथि।[106] आन-आन संग्रह मे ई गीत नदारद अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक 'विद्यापति-पदावली' भाग एक मे एहि गीत कें अन्य कविक पद कहि क' संदिग्ध बताओल गेल अछि।[107] तकर कारण ई जे एहि पदक भणिता मे 'भने कविरतन' भेटैत अछि, मानू कि 'कविकंठहार' 'सरसकवि' 'कविशेखर' सँ सब तरहें भिप कोनो अजूबा शब्द 'कविरतन' होइक आ एहि नामधारी कोनो आन प्राचीन कवि हेबाक अकाट्य प्रमाण भेटल होइक। अस्तु! यात्री नागार्जुन अपन संग्रह 'विद्यापति के गीत' मे सेहो एहि गीत कें शामिल कयने छथि। कोन पद विद्यापतिक थिक कोन नहि थिक, एकर निर्णयन वास्ते विमान बिहारी मजूमदार सूत्र देने छथि—'विद्यापति का नाम न रहने पर भी उसको विद्यापति की रचना पहले अनुमान करके पीछे भाव और भाषा-विचारपूर्वक सिद्धान्त करना कर्त्तव्य है।'[109] पण्डित गाविन्द झा तँ एहि निर्णयन वास्ते एक तकनीकी कसौटी बनौने छथि, जकर आधार अछि—(1) भाषा (2) शब्द (3) शैली (4) अन्त्यानुप्रास (5) भनिता मे पुनरुक्ति (6) भाव आ (7) महाभाव।[110] ई बात भिप थिक जे एहि कसौटी पर जाहि गीत सब कें ओ पहिने अप्रामाणिक घोषित क' चुकल छलाह, बाद मे अपन संग्रह 'विद्यापति-गीत समग्र' मे ओहू गीत सब कें संकलित क' लेलनि अछि। अस्तु! ओ गीत की अछि, देखल जाय—'जय जय संकर जय त्रिपुरारि/जय अध पुरुष जयति अध नारि/आध धवल तनु आधा गोरा/आध सहज कुच आध कटोरा/आध हड़माल आध गजमोति/आध चानन सोह आध विभूति/आध चेतनमति आधा भोरा/आध पटोर आध मुँजडोरा/आध जोग अध भोग विलासा/आध पिधान आध दिगबासा/आध चान आध सिन्दुर सोभा/आध बिरूप आध जगलोभा/भने कविरतन विधाता जाने/दुइ कए बाँटल एक पराने।'

स्त्री-पुरुषक संबंधक विषय मे विद्यापतिक बुनियादी समझ की छलनि, एकरा देखबाक लेल एतय हम एहि गीत कें उद्धृत कयलहुँ अछि। खास क' अंतिम पाँती जे विधाते जनैत हेताह जे एकप्राण कें दू क' क' ओ किएक बँटलनि। स्त्री-पुरुष एकप्राण होइत छथि आ जे वस्तु दुनू कें एकप्राण बनबैत अछि जे थिक प्रेम। विद्यापतिक ई बुनियादी समझे जिम्मेवार रहल हेतनि जे ओहि दारुण सामंती-युग मे जखन कि चहुँदिस स्त्री-देहक खुला खेल चलि रहल छल, ओ चुपचाप अपन रचनाक भीतर प्रेमक बीया बाउग क' सकलाह। एहि कारणें हम सब देखब जे हुनकर

गीतक संसार मे प्रेमक जँ ज्वाला जरैत छैक तँ ओहि सँ केवल स्त्री नहि, पुरुष सेहो बराबर-बराबर झरकैत अछि। ओतय यदि राधा व्याकुल अछि तँ कृष्ण सेहो ओतबे व्याकुल छथि। पुरुषक जँ सम्मान छैक तँ ठीक-ठीक ओतबे सम्मान स्त्रियोक छैक। एहि मे बाधा भेला पर ओतए हम सब स्त्री कें बाघिन होइत देखि सकैत छी। पुरुष जँ स्त्री सँ निष्ठा चाहैत अछि तँ ठीक वैह निष्ठा स्त्रियो पुरुष सँ चाहैत छैक। मुदा समय मध्यकालीन थिक। स्त्री कें ओकर छवि मे कैद क' क' पिंजरबद्ध कयल जा चुकलैक अछि। विद्यापतिक जे आश्रयदाता थिकाह सैह लोकनि एहि पिजराक निर्माता आ नियंत्रक सेहो थिकाह। ओ एक दरबारी जरूर छथि मुदा कवि पहिने छथि। ओ तमाम जंजालक पार जा क' सत्यक साक्षात्कार क' सकैत छथि। ई हुनकर काव्य-विवेक छियनि, आ एकरे कारण ओ आगू 'आधुनिक' आ 'यथार्थवादी'क हैसियतो बना पबैत छथि आ मिथिलाक लाखो-करोड़ो स्त्रिगणक सुप जीवन मे आशाक इजोत जरौने राखि सकैत छथि जकरा बदौलत दुर्जन लोकनिक लाख-लाख उपेक्षा आ अवमाननाक बादो ओ आइ ने केवल हमरा लोकनि धरि पहुँचि पाबि रहल छथि, अपितु एकैसम शताब्दीक एहि जटिल समय मे सेहो अपन रचनाक प्रासंगिकता बनौने राखि सकैत छथि।

मध्यकालीन काव्य-परिपाटीक बीच आ पुरुषवर्चस्वी समुदायक देह-लोलुपताक मध्य 'प्रेम' कें निर्णायक तत्वक स्थान प्रदान करब, आ एहि निर्णयक बागडोर स्त्रीक हाथ मे सौंपब—एहन विशेषता थिक जे विद्यापति कें अपना समय सँ बहुत आगू ल' जाइत छनि। विद्यापति आदर्श स्त्री-पुरुष-संबंधक आधार प्रेम कें मानैत छथि। हुनक एक गीत अछि जाहि मे कवि स्वयं स्त्री कें सम्बोधित करैत छथि, स्पष्टत: एहि गीतक प्रकृति हुनक आन गीत सब सँ भिप अछि। गीत अछि—'ए धनि कामिनि सुनु हितबानि/प्रेम करब जब सुपुरुष जानि/सुजनक पेम हेम समतूल/दहइत कनक दुगुन होअ मूल/टुटइत नहि टुट पेम अद्‌भूत/जइसन बढ़ए मृनालक सूत/सबहु मतंग मोति नहि मानि/सकल कंठ नहि कोइल बानि/सकल समय नहि रीतु बसन्त/सकल पुरुष नहि होअ गुनवन्त/भनइ विद्यापति सुनु बरनारि/पेमक रीति अब बुझह विचारि।'

जेना कि स्वयं गीतहि मे स्पष्ट अछि, कामिनी धनि कें, एहन स्त्री कें जकर जीवनक लक्ष्य कामक मार्ग पर चलैत जीवनक साफल्य कें हासिल करब अछि, हितबानि सुनौलनि अछि। सुपुरुष कें परखि क' ओकरा संग प्रेम करबाक सुझाव देल गेल छैक। एहन पुरुषक प्रेम केहन होइत अछि ताहि पर किछु मार्मिक काव्यात्मक टीप छैक। सुपुरुषक प्रेम सोना सन होइत अछि जकरा जँ आगि मे झरकाओल जाय, अर्थात् विपरीत परिस्थितियो मे जँ द' देल जाय तँ ओकर मूल्यवत्ता आर बढ़िये जाइछ। एहन प्रेम कें तोड़बाक भनें जते जतन क' लियए दुनिया, ओ नहि टुटैत अछि।

ओ तँ एहन होइत अछि जेना मृणालक सूत, जेना-जेना कमलिनी विकसित भेल जाइछ, मृणाल आगू बढ़ल जाइछ, ओकर जड़ि कें धयने ओहो तहिना बढ़ैत रहैत अछि। स्त्री-पुरुषक सहजीवनक ई अनुपम चित्र थिक आ यैह विद्यापतिक आदर्श छियनि। हमरा लोकनि अवगत छी जे स्त्रीक अभ्युपति पुरुषक तुलना मे कतेक बेसी फलप्रद होइत छैक। सामान्यत: कहल जाइछ जे एक स्त्रीक शिक्षित होयब एक परिवारक शिक्षित हेबाक समान थिक आ एक स्त्रीक संवेदना सँ परिचालित होयब जानि नहि कतेको अनर्थकारी परिणाम सँ बचबाक उद्यम थिक। टुटइत नहि टुट पेम अद्‌भूत, जइसन बढ़ मृनालक सूत।

मोन पाड़ी, विमान बिहारी मजूमदार जखन विद्यापतिक मानस कें आश्चर्यनजक रूप सँ आधुनिक कहने रहथिन तँ हुनकर संकेत छलनि जे हुनकर पयर भने मध्यकालक जमीन पर ठाढ़ हो, मानस आधुनिक छनि। रामविलास शर्मा संशोधन करैत कहने रहथिन जे नहि, हुनकर पयर सेहो मध्यकालीन जमीन पर छनि, इहो कहब सही नहि होयत। अर्थात हुनका ओत्तहु यथार्थवादक दर्शन होइत छनि। एहि गीत मे आगू विद्यापति कहैत छथि जे हे धनि, इहो जनु बुझिहह जे समाज मे जतेक पुरुष छथि सब सुपुरुषे छथि। सब हाथीक मस्तक मे गजमुक्ता नहि पाओल जाइछ, आ ने जतेक कंठ संसार मे अछि से कोइलिये सन अछि। जेना हरेक मौसम बसन्त नहि होइत छैक तहिना हरेक पुरुष सुपुरुष नहि। तें, विचार क' क' आगू बढ़ह। प्रेमक यैह रीति थिक, यैह मर्म।

'सुपुरुष' आ 'विचार' ई दुनू टा अवधारणा मानू विद्यापतिक काव्य-मर्म कें बुझबाक लेल कुंजी शब्द थिक। सुपुरुषक अनेक पर्याय ओ अलग-अलग ठाम प्रयोग कयने छथि। 'सुजन' आ 'गुनवन्त' शब्द तँ एत्तहि प्रयुक्त अछि। आनो ठाम साधु, सुपिय, सज्जन, सुपहु, मतिमान आदि-आदि कहने छथि। ठीक यैह बात स्त्रीक बारे मे सेहो अछि। सुपुरुषक प्रेमक प्रशंसा मे जे विभिप ठाम ओ उक्ति सब कयने छथि, ताहि पर एक नजरि देल जा सकैछ—सुपुरुषक वचन पखानक रेह। सुपुरुषक वचन समय बेबहार। सुपुरुष प्रेम जीब रह ओल। सुपुरुष पेम अन्त नहि होए। दिने दिने बाढ़य सुपुरुष नेह। सुपुरुष भासा चौमुख वेद। सुपुरुष वचन अफल नहि होए। सुजन वचन खोटि न लाग। सुपुरुष प्रेम हेम अनुमान। सुपुरुष जन हो गुणक निधान। सुपुरुष सह अवसाद लो। सुपुरुष वचन करिअ बिसबास। से सुपुरुष जे परहि निबाह। आदि आदि। तहिना एहि ठाम ओ 'वर नारि' के प्रयोग कयने छथिन। हुनक कल्पना श्रेष्ठ नारी, जे विचार करब जनैत अछि, एकरे लेल आन ठाम-ठाम ओ गुनमति आ कलामति शब्दक प्रयोग केलनि अछि। एहि गीतक आरंभ मे जे 'कामिनि' शब्द आएल अछि तकर पाठान्तर सेहो भेटैत छैक। गोविन्द झा अपन संग्रह मे 'पहुमिनि' पाठ देलनि अछि, तकर

अर्थ तँ पंडित जी अलंकारशास्त्रीय नायिका भेद 'पद्मिनी' देलनि अछि मुदा विद्यापतिक जे भाव रहल हेतनि तकर अनुमान हमरा लोकनि एहि कविताक वितान सँ पाबि सकैत छी। निश्चय ओ स्त्री 'गुनवति' 'कलावति' रहल होयत जे विचार क' सकब जनैत अछि। जे क' सकैत अछि तकरे विश्वासपूर्वक करबा लेल कहलो जा सकैत अछि—पेमक रीति आब बुझह बिचारि। विद्यापतिक स्त्रीक लेल एहि 'विचार'क मोल कतेक भारी रहैक तकर अनुमान हमरा लोकनि एहि पद मे पाबि सकैत छी—'ततहि दूर जा जतहि विचार/दीप देलें नहि रह घर अन्हार।' पूरा प्रसंग छैक जे दुर्जनक वचन ताबे धरि चलि सकैत अछि जाबे परिणाम नहि आबि गेल रहैत छैक—'दुरजन वचन लहए सब ठाम/बुझल न रहए जाने परिनाम।' बाँकी तँ जहिना विचारक अवतरण भेल कि ओ दूर जा खसैत अछि। सामान्य जीवन कोना विद्यापति मे अयलनि अछि—दीप देलें घर न रहए अन्हार। विचार एक दीप थिक, जकर रोशनी मे पूरा जीव-जगत साफ-साफ देखल जा सकैत अछि। एक पदक उल्लेख पहिनहु कयल जा चुकल अछि जे 'पाए विचार हार कओन नारि।' अप्पन पुरुष मे विचार टा जँ भेटि जाय तँ कोन नारी होयत जे हारत? ई स्त्रीक परम हाहाकार अवस्थाक गीत थिक। ओकर सब टा सपना सकनाचूर भ' गेलैक अछि। मुदा, विद्यापति एहन रचना-संसार रचलनि अछि जाहि मे चरम आशावाद छैक। ओतय निराशा जँ कतहु छैको तँ मृत्यु नहि छैक। जीवनक प्रति इच्छा, जिज्ञासा अन्त धरि बनल रहैत छैक। एक ठाम विद्यापति लिखने छथि—वैभव गेलें रहए विवेक/तैसन पुरुख लाख मह एक। संभव जे मृणाल परक कोंढ़ी आब कोंढ़ी नहि रहि गेल हो, भकरार फूल बनि गेल हो, संभव जे ओकर पंखुरी सब आब झरबा पर आबि गेल हो। ई वैभवक जायब थिक। मुदा तखनहु मृणालक सूत ओकरा टिकौने आ बढ़ौने रहए, से दृष्टान्त प्रकृति मे तँ खूब उपलब्ध अछि, मुदा मनुष्य मे दुर्लभ अछि। वैह सुपुरुष थिक। लाख मे एक। मुदा सुपुरुष वैह थिक। ओ निमाहब जनैत अछि—से सुपुरुष जे परहि निबाह। विद्यापतिक स्त्री जँ कतहु हारियो जाइत अछि तँ ओकरा आत्मदया कि अवसादक भावनाक शिकार भेल नहि देखल जा सकैत अछि। ओ जिम्मेवारी बला ढंग सँ सोचैत अछि—ओ बिचारि क' तँ करबे केलक, ओकर कोन दोख? एकठाम हुनकर स्त्री अपन अनुभवक कटुता सुनबैत कहै छथि—'कएल विचारि अमिअ के पान/होएत हलाहल ई के जान।' ओ तँ पूरा विचार क' क' देखिये लेने छल जे ई अमृत थिक। ओ तँ जानि-बूझि क' अमृतक पान कयने छल। मुदा वैह अमृत बाद मे हलाहल साबित होयत से के जनैत छल? ओ पुरुष ओकरा धोखा देलकैक तँ एहि मे एकर कोन दोख भ' सकैत अछि? कतहु पुरुष जातिक प्रति ओकरा मन मे घृणा उपजैत छैक तँ ओ तकर मूल तकैत अछि—'लोभक खानि पुरुष थिक जाति।'

मुदा विद्यापति मे कतहु वास्तविक पराजय नहि छैक। हुनक स्त्री धूरा झाड़ि

क' फेर उठि अबैत अछि। विद्यापति अपनो एहि लेल ओकरा पूरा प्रोत्साहन दैत छथिन। समुच्चा पदावली मे विद्यापतिक सहानुभूति स्त्रीक प्रति छनि। ओ 'खेलन कवि' सेहो थिका, मने सामंती संगत मे कहियो खेलियो लेलनि, ताहू मे सराहनीय बहरेलाह मुदा हुनक मूल सहानुभूति स्त्रीक संग छनि। खास क' क' ओहि अन्याय सभक प्रति जे स्त्रीक संग जारी रहैक, आ ओहि संघर्ष संगें, जे स्त्री लोकनि क' रहल छली। ई अस्मिताक संघर्ष छल। ई आधुनिक मूल्यक संघर्ष छलैक। ओ संघर्ष आइ आबि क' धरातल पर ठाढ़ भेलैक अछि, मुदा तकरो स्वप्न देखनिहारक, प्राचीनोकाल मे कमी नहि छलैक। विद्यापति साक्षात प्रमाण छथि। विद्यापतिक स्त्री हारब नहि जनैत अछि। एकर बावजूद कि ओकरा लग अस्त्रक रूप मे मात्र प्रेम छैक, आ विचार। एक ठाम ओ कलावति स्त्री कें परिभाषित केलनि अछि—'गेल भाव जे पुनु पलटाबए/सेहे कलामति नारि।' बुझनिहार बूझि सकैत छथि जे प्रेमक मनोविज्ञान मे गेल भाव कें फेर सँ पलटा क' ल' आनब कते कठिन काज थिक! मुदा विद्यापतिक कसौटी छनि—'सेहे कलावति नारि।'

ई प्रश्न उठि सकैत अछि जे एते कठिन भार ओ कलावती कें देलखिन, लगभग समुच्चे भार, तँ प्रकारान्तर सँ ओ 'सुपुरुष'क पतित भ' जेबाक छूट नहि देलखिन? हमर समझ अछि जे ई छूट ओ नहि दैत छथिन। हुनक गीत मे जँ एहन छूट देल जाइत जँ कतहु देखाब दैत हो किनको कोनो ठाम, तँ ओतए उनटि क' देखि लेबाक चाही जे छूट द' के रहल अछि? स्वयं कवि आ कि ओकर समय, ओकर समाज? कवि अपन परिवेशक उपजा होइछ। वैह ओकर सीमा सेहो निर्धारित क' दैत छैक। विद्यापतिओक एक सीमा छनि। सीमा छनि जे हुनकर समय हुनका काव्य मे देखार पड़ि जाइत छनि। मुदा कवि अपना समयक संग मुठभिड़ान सेहो करैत अछि। ओ समय-सत्ताक झंडाबरदार भ' क' नहि रहि जा सकैत अछि। हरेक महान साहित्यकारक साहित्य मे हुनकर समय देखार पड़ैत छैक। महत्व छैक मुठभिड़ानक। हरेक महान रचनाकार अपन समय सँ मुठभिड़ान लैत अछि। से विद्यापतियो कें करैत हमरा लोकनि देखि सकैत छी।

सुपुरुष आ कुपुरुषक प्रश्न एहि मे सँ एक महत्त्वपूर्ण पक्ष छिऐक जाहि पर बात कएल जा सकैत अछि। एक स्त्री कें अपन पुरुष सँ जे अपेक्षा रहैत छैक, एक पद मे विद्यापति स्त्रीक एहि अपेक्षा कें पुरुष-जीवनक सार कहैत छथि—'विद्यापति ता जीवन सार/जे पददोस लुकाबए पार।' ओकरे जीवन सार्थक छैक जे परदोष कें नुकाएब जनैत अछि। परदोष मने अपन जोड़ीदारक दोष। दोष सँ रहित किछुओ नहि, क्यो नहि भ' सकैत अछि मुदा सुपुरुष कें ओकरा संग आत्मबुद्धि रखबाक होइत छैक। प्रेयसीक दोष ओकर अपन दोष सन देखाइत छैक। कुपुरुष मे ई गुण

नहि पाओल जाइछ। कुपुरुष संग गठजोड़ सँ कलामती स्त्रीक जे दुर्दशा होइछ, एक पद मे विद्यापति कहैत छथि—'गुण अगुण सम कय मानए/भेद न जानए पहू/निमा चतुरिम कत सिखाउबि/हमहुँ भेलिहु लहू।' स्त्रीक गुण आ अगुण मे भेद करब जँ पुरुष नहि जनैत हो तँ एकर की अर्थ थिक? अर्थ थिक जे अपन सामंती सोच मे ओ स्त्री कें ओकर पुरुषनिर्मित छवि सँ बाहर नहि देखि सकैत अछि। पुरुषनिर्मित छवि अर्थात् स्त्री मात्र एक देह थिक, यौनतृप्तिक साधन थिक। ओकरा मे की गुण आ की अगुण? मुदा स्त्री जँ सचेत अछि तँ सब टा नरक असगरे भोगबाक लेल अभिशप्त होइत अछि। ओ जनैत तँ अछि सब चतुराइ, मुदा एहन पुरुषक संगति ओकर अस्तित्व कें लघु क' दैत छैक। गहन सपाटाक बीच कतोक बेर ओ मन मे विचार करैत अछि—'की हमे साँझक एकसरि तारा/भादब चौठिक चन्दा।' की हम साँझक एकसर तारा छी कि भादवक चौठिक चान, जकर देखब वर्जित मानल जाइछ? मुदा, कुपुरुषक संवेदना एतय धरि पहुँचबा मे समर्थ नहि होइत अछि। ओ तँ बस कोनो दोसर स्त्री कें देखि लेलक अछि जकरा पर ओकर जी टांगल छै—'पुरुषक चंचल सहज सुभाब/कए मधुपान दसो दिस धाब।' एहि ठाम विद्यापति पुरुषक पहिने 'कु' लगायब सेहो जरूरी नहि बूझल मानू सहज स्वभाववश तँ एहन होइतहि अछि, 'सु' लगाब' योग्य व्यक्तित्व ओकरा अर्जित करय पड़ैत छैक। पुरुषक छल-छद्म, धोखा आ बेवफाई के बहुत प्रामाणिक जानकारी विद्यापति लग मे छनि। मुदा स्त्री अपन प्रेममयी भावना मे, जनितो बुझितो ई धोखा खेबाक लेल मजबूर देखल जाइछ।

विद्यापतिक युग परदा-प्रथाक युग रहैक से हमरा लोकनि कें स्मरण रखबाक चाही। मध्यकालीन सामाजिक जीवनक परिदृश्य पर विचार करैत इतिहासकार सतीश चन्द्र लिखलनि अछि—'इस काल में उच्च वर्गों में स्त्रियों को अलग रखने और उनके बाहरी व्यक्तियों की मौजूदगी में अपने चेहरे को ढंकने की प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित हुई। यह उच्चवर्गीय हिन्दुओं में स्त्रियों को दूसरों की वासनामय दृष्टि से दूर रखने की प्रथा थी। यह समाज के उच्चतर वर्गों की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया था। इसके लिए धार्मिक औचित्य भी ढूँढ़ लिया गया।'[111] मुदा विद्यापतिक ओतए प्रेमक मूल्य ततेक बेसी अछि जे हुनकर स्त्री, सब बन्धन कें तोड़ि सकैत अछि, ओकर खोज प्रेम आ विचारक खोज थिक। ओ धोखा खा सकैत अछि मुदा अपन अभियान कें स्थगित नहि क' सकैछ। हुनक एक गीत अछि जाहि मे प्रेमीक लेल स्त्री अपन पति कें त्यागि दैछ, विकराल नदी कें हेलि क' पार करैछ। समाज द्वारा, जकरा कि अधिक ठाम विद्यापति 'दुर्जन' कहैत छथि, कतेक गारि ओकरा पड़ैत अछि मुदा अपन प्रेम मे मातलि ओ प्रेमी लग मे पहुँचि जाइत अछि—'निअ

पहु परिहरि सन्तरि विषम नरि आंगिरि अपन कुल गारि/तुअ अनुराग मधुर मदे मातलि किछु ने सुनल बर नारि।' एहिठाम हमरा प्रख्यात हिन्दी कवि आलोकधन्वाक कविता 'भागी हुई लड़कियां'क पाँती मोन पड़ि जाइत अछि।[112] विद्यापति एहि गीत मे एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे 'काम पेम दुहु एकमत भए रहु कखने की न कराबे।' एहन स्त्रीक संग जखन धोखा होइत छैक तँ सत्ते बहुत विक्षोभ उत्पप करैत अछि। कैक बेर तँ ओकर आहत मन वाणी मे प्रकट भ' जाइछ—'ताके निवेदिअ जे मतिमान/जानहि गुण फल, के नहि जान/तोरे वचने कएल परिछेद/कौआ मूँह न भनिअए वेद/तोंहे बहुवल्लभ हमहि अमाानि/तकराहुँ कुलक धरम भेल हानि/कएल गतागत तोहरा लागि/सगरिओ राति गमाउलि जागि/धन्ध बन्ध सफल भेल काज/मोहि अबे तन्हिकि कहिनि बड़ि लाज।' जकरा ओ सुपुरुष परेखि क' भरोस कयने छल आ अपन कुलमर्यादा कें तोड़ि गतागत (असंभावित) काज सब केलक, ओकर धन्ध-बन्ध (छल-कपट) आखिर जाहिर भेल, ककरा की कहल जाय? कहबो मे लाज होइत अछि। एक ठाम स्त्री कहैत अछि—'साजनि, कि कहब पुरुषक काज/कौसल करिते तन्हि नहि लाज।' एक आर ठाम कहैत अछि—'कपट बुझाए बढ़ओलन्हि दन्द/बड़ाक हृदय बड़ेओ हो मन्द।' एहि ठाम स्पष्ट कहल गेल अछि जे दुनिया जकरा जतेक पैघ, भद्र, सम्भ्रान्त कहैत छैक, तकर हृदय ततबे बेसी गन्दा होइत अछि। विद्यापतिक कुपुरुष-लक्षण पढू तं 'मैथिल' संस्कृतिक वास्तविक स्वरूप आँखिक आगू ठाढ़ भ' जाइछ जतय प्रेम तं निषिद्ध छैक मुदा छिनरपन मान्य। अपन कविता मे एक ठाम तँ विद्यापति कृष्ण कें घेरि लैत छथि। प्रसंग छैक एक एहन स्त्रीक जकर प्रेमी ओकरा तँ पूरा चाहैत अछि मुदा अनुबंध नहि गछैत अछि। संबंध भ' जाय तँ अनुबन्धक मादे सोचल जेतैक, मने से। स्त्रीक सोचब दोसर अछि। अछि जे 'सरुप निरूपिय कए अनुबन्ध'। स्त्री कें पाबए चाहैत छह तँ अपनो दहक, ओहो पाबए चाहैछ। लैह तँ दहक। स्त्री बराबरीक संबंध चाहैत अछि। आ एहि अनुबन्ध के ततबा महत्व छैक जे— जे स्त्री काठ होइत अछि ने, लकड़ीक सिल, सौन्दर्य-अनभिज्ञा, सेहो जँ नाना बन्ध कएल जाय तँ रस दैत छैक। सुपात्र (कलावती) स्त्री कें क्यो विना अनुबंधक पाबि लेत, से तँ नहि हेतै। विद्यापतिक स्त्री कहैत अछि—'केओ बोल माधव केओ बोल कान्ह/ममो अनुमापल छुच्छ पखान।' कलावती कें जँ ओ चिन्हिये नहि सकल तँ ओकर सब महत्ता बेकार छै। एहि गीत मे कोनो राजनाम अंकित नहि छैक। ओहि मे प्रत्यक्ष विरोध छैक। कोनो रंगीला सामन्त रहल हेतैक, मुदा आरोपण समूचा पुरुष जाति पर अछि। एक ठाम तँ मामिला जेन्डर-डिस्कोर्स धरि पहुँचि जाइत अछि—'जानल पुरुष निठुर थिक जाति'। मने, पुरुषक समुदाय एहन प्रजाति नहि थिक जकरा सँ स्त्रीक संग न्यायक उम्मीद कएल जा सकय। एक

गीत मे पुरुषक विवेकस्तर कें चिह्नित करैत तँ मानू अलंकारक झड़ी लगा देल गेल अछि—'मानिक पड़ल कुबानिक हाथ'। 'गुंजा रतन करए समतूल'। 'नीर खीर दुहु करए समान।' पुरुषाकारक लोलुपता एहन दारुण छैक जे अगिला उपमान ताकय लेल हुनका जंगली पशु धरि पहुँचय पड़ैत छनि—'बानर-कंठ कि मोतिम माल'। 'बानर-मुँह कि सोभए पान'। जाहि कृष्ण कें ल' क' विद्यापति मे ईश्वरबुद्धि हेबाक संशय कएल जाइत अछि, ओहि कृष्ण कें साफ-साफ शब्दें ओ 'अनुचित' करार दैत छथि—माधव, ई नहि उचित विचार/जनिक एहन धनि काम-कला सनि से किअ कर बेभिचार/...भनइ विद्यापति सुनु मथुरापति ई थिक अनुचित काज...आदि।

एहि तरहें हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे रूढ़ि आ वर्चस्व कें लगातार प्रश्नांकित करबाक साहस हुनका मे छनि, आ से ओ अपन स्त्रिगण सँ प्राप्त करैत छथि, जिनका लोकनिक संग हुनक तादात्म्य एहन छनि मानू आत्मबुद्धि होइक। उपन्यासकार लोकनि सेहो एहि बात कें पकड़लनि अछि। पंडित गोविन्द झा तँ अपन उपन्यास 'विद्यापतिक आत्मकथा' मे हुनका साड़ी धरि पहिरबाक संदर्भ रचलनि अछि।

पदावली मे जतेक रूपक स्त्रिगण आएलि छथि, ई कहब एक असंभव आ हुंठ समाधान ताकब होयत जे ओ सभक सभ राधा छथि, मुदा ई असंभवता हमरालोकनि विद्वान लोकनिक अध्ययन मे संभव होइत देखैत छी। यैह सब कारण थिक जे विद्यापति पर आर-आर लगातार काज करबाक आवश्यकता बनल अछि। ने विद्यापतिक स्त्री कोनो एक स्त्री थिकी आ ने हुनकर परिवेश आ परिस्थिति कोनो एक छनि। मुदा जे वस्तु एहि समस्त स्त्रिगण कें सामूहिकताक अछैत एक व्यक्तित्व (व्यक्ति गुण) प्रदान करैत अछि ओ थिक ओकर विचारशीलता। दृष्टान्त ल' क' देखी तँ बात कदाचित बेसी स्पष्ट भ' सकैत अछि। प्रेमक अनुभव सुनबैत स्त्री हुनक कविता मे कैक ठाम आएल अछि। हुनक ई गीत बेस प्रसिद्ध छनि जे 'सखि की पूछसि अनुभव मोय'। एहि ठाम प्रेमक तिल-तिल नूतन हेबाक, सौंसे जीवन निहारैत रहलाक बादो नयन तिरपित नहि हेबाक आ लाखो लाख युग धरि हृदय मे प्रेमी कें अंगेजने रहलाक बादो जरनी शान्त नहि हेबाक बात कहल गेल अछि। रवीन्द्रनाथ कें एहि ठाम मुग्धाक नवीन प्रेम मे प्रेमानुभवक लाख बरस पुरान प्राचीनताक रूपक देखार पड़लनि। मुदा जाहि तन्मयताक संग एहि ठाम प्रेमक विविध अनुभवक आख्यान कएल गेल अछि निश्चित रूप सँ ई एक सुखान्त अनुभव सुनबैत स्त्री थिक। एक ठाम तँ ओ स्पष्ट कहैत छथि जे 'जे सबे सुखद ताहि मह ताप।' जकरा सब क्यो सुखद कहैए ताहि मे बड़ ताप अछि। विद्यापतिक लग मे प्रेमक दुखान्त अनुभव सुनबैत स्त्री सेहो छनि। एक ठामक अनुभव अछि—'कबहु रसिक से दरसन होअ जनु/दरसन होअ जनु नेह।'

मुदा ई अनुभव तँ मानू बराबरीक अनुभव थिक—'के बोल पेम अमिमा के धार/ अनुभवे बूझिअ गरड़ अंगार/खएले बिख सखि हो परकार/बड़ मारुख ओ देखितहि मार।' के कहैए जे प्रेम अमृतक धार थिक? हमर तँ अनुभव थिक जे ई गरल थिक, अंगार थिक। बिख लोक खा लियए तँ जीवित बचबाक किछु संभावना भइयो सकैत अछि, प्रेम मे तँ सेहो नहि अछि। कहब आवश्यक नहि जे ई सब प्रतीति विचारशीलताक प्रतीति सब थिक।

अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाह, बहुविवाह आदिक प्रत्याख्यान मे विद्यापतिक लग मे बहुतो रास कविता छनि। तकर एतए विशेष कोनो विवरण नहि देल गेल अछि कारण अपन अभिप्राय मे ओ बिलकुल स्पष्ट अछि आ ओकरा सभक बारे मे विद्वान लोकनि प्रभूत लेखन कयने छथि। जे वस्तु विद्यापतिक स्त्रीक लेल अभिप्रेत अछि, से थिक—विचारशीलता, जे गुण ओकरा अपना मे छैक सैह ओ पुरुष मे चाहैत अछि। एहनो निराशामय क्षण मे जखन कि ओ एतय धरि कहि जाइत अछि जे 'जुबती भए जनमओ जनु कोइ'। अर्थात स्त्री-योनि मे जन्म नहि हेबाक चाही। ओहू ठाम अन्तिम आश्रय ई विचारशीलते छिऐक जे ओकरा अंतिम मरण सँ बचबैत छैक—'परबस होइह बुझिह विचारि/पाए विचार हार कओन नारि।' निष्कर्ष तँ विद्यापतिक यैह छनि जे 'हृदय सरिस जन न देखिए जतिखन/ततिखन सयर अन्हार।' समान हृदय बला लोक जँ नहि भेटि पाबय तँ जीवन अगबे अन्हार थिक।

विद्यापतिक व्यक्तित्व मे प्रश्नात्मकताक कारण, आ निश्छल मैथिल स्वभाव (जाहि मे अपन विश्वासक बात व्यक्ति विकुंठ भाव सँ वर्णित क' सकैत अछि, सतत एहि स्वभाव)क कारण विद्यापतिक कविता अपन एक स्पष्ट पहचान बनौने राखि सकल। ई वस्तु मध्यकालक आन कवि लोकनि मे तँ नहिमो छलनि, आधुनिको कविता मे कोनो कम ठाम अनुपस्थित नहि अछि। एहि कारण इहो संभव भेल जे कविक कालातीत व्यक्तित्व हुनका रचना मे हुलकी दैत प्रतीत होइत अछि। विद्यापतिक विषय छलनि स्त्री, आ स्त्रीक संग मानू ओ एकाकार भ' गेल छलाह। एहि कारण इहो संभव भेल जे स्त्री-अस्मिताक जते फड़िच्छ रूप हुनका लग मे छनि से आन ठाम दुर्लभ अछि। कहब आवश्यक नहि जे ई सब आधुनिक मूल्य छल जकरा अपन वर्तमान स्वरूप मे अयबा मे एखन बहुत देरी छलैक।

पुरुषक श्रेष्ठताबोध आ स्त्रीक अधीनस्थताक स्थिति विद्यापति-युगक एक मान्यताप्राप्त चलन छल। हुनकर कविता मे एहि चलन कें लगातार अस्वीकार कयल गेल अछि। दरबारी कवि हेबाक हुनकर अपन सीमा जरूर छनि जकरा कारण कतहु तँ ओ शिवसिंह कें, कतहु कोनो दोसर राजा कें, वा कतहु समुच्चा पुरुषवर्ग कें एहि

मे छूट दैत देखल जा सकैत छथि, मुदा एहनो ठाम एकर आकलन क' सकब बेसी कठिन नहि अछि जे कविक सहानुभूति वास्तविक रूप सँ ककरा संग छैक। संस्कृति, नैतिकता, शालीनता आदिक नाम पर जे वर्जना स्त्री पर लादल गेल छैक ओ निश्चये ओकर आत्मविकास कें बाधित आ व्यक्तित्व कें कुंठित करैत अछि। विद्यापतिक स्त्री कें एहि वर्जना सब कें तोड़ैत देखल जा सकैत अछि। एहि बातक चर्च ऊपर भ' चुकल अछि जे विद्यापतिक दृष्टि मे सुन्दर स्त्री ओ थिक जे अपन बुद्धि सँ परम्पराक संग संवाद करबा मे सक्षम अछि। सुन्दर स्त्री लेल अधिकतर ओ कलामती आ गुणमती शब्दक प्रयोग कयने छथि। राजदरबारक दबाव मे भने कतहु ओ एहनो लिखने होथि जे 'सुन्दरि, रूप गुणहु समाो सार', मुदा हुनकर सम्पूर्ण रचनाशीलताक आग्रह गुण आ विचार आ व्यक्तित्वक पक्ष मे अछि। एहन स्त्री कें हुनक प्रोत्साहन सेहो लगातार जारी रहैत छैक।

विद्यापतिक कविता मे स्त्री-पुरुषक मिलनक, ओकर काम-केलिक, ओकर आवेग, उच्छ्वास, क्रीड़ा, मुद्रा आदिक भरपूर प्रसंग आएल छैक। मुदा, एहि ठाम एक बात ध्यातव्य। कतेको बेर एहि बात कें दोहराओल जा चुकल अछि जे विद्यापतिक रचनानुभूति असल मे एक स्त्रीक अनुभूति थिक। आइ स्त्रीवादी साहित्य सब मे स्त्री-देहक प्रसंग अनंत तथ्य आ अनुभव सब आबि रहल अछि। कतोक बेर तँ एहन जोरदार जे अजुको पुरुषर्चस्वी समाज मे हाहाकार मचा दैछ। अश्लीलता आ अनैतिकताक आरोप केनिहार एहू ठाम, आइयो ढेरी छथि। गौर करबाक बात थिक जे चाहे आवेग-उच्छ्वास हो अथवा मुद्रा वा क्रीड़ा, ओ पुरुषक रसरंजन लेल नहि थिक ओ स्वयं नारीक अपन तृप्तिक लेल थिक। विद्यापतिक स्त्री जखन कहैत अछि जे 'नयन न तिरपित भेल' तँ पुरुषक नयनक मादे नहि, निज अपन नयनक मादे कहैत अछि। अथवा जँ ओ कहैत अछि जे 'सरूप निरूपिअ कए अनुबन्ध', अपन आत्मसमर्पण सँ पहिने पुरुषोक तेहने समर्थन चाहैत अछि तँ भीतर ई भाव छैक जे रसरंजन केवल पुरुषक नहि, स्त्रियोक बराबरीक हक थिक। हिन्दूधर्म मे काम कें संतानोत्पत्तिक साधनक रूप मे देखल जेबाक आदर्श छैक। एकर विपरीत, विद्यापतिक स्त्री कें एकर किपहु परबाह नहि करैत देखल जा सकैत अछि। एकरा ओ अपन आनन्दक स्रोत बुझैत अछि एहि मे धोखा पौला पर पहिने तँ आहत होइत अछि मुदा गरदा झाड़ि क' फेर तुरंते उठि क' ठाढ़ भ' जाइत अछि। 'साजनि, अपद न मोहि परबोध/तोड़ि जोड़िअ जहँ गाँठ पड़िअ तहँ तेज-तम परम विरोध।' (हे सखि, बेकार बात मे हमरा नहि ओझराउ। जे संबंध बोझ भ' गेल हो, गाँठे-गाँठ हो जाहि मे, तकरा तोड़ि देबाक चाही कारण इजोत आ अन्हार परस्परविरुद्ध होइत अछि। एहन संबंध कें तोड़ि देबाक चाही। ओकरा ऊघब निरर्थक थिक।

परम्परित भारतीय समाज मे स्त्रीक विकास ओही पुरुषवर्चस्वी दमनकारी व्यवस्थाक तहत भेलैक अछि जाहि मे पुरुष एक साथी, एक सखा, एक सहभोक्ता नहि, अपितु दमनकर्त्ताक रूप मे पेश होइत अछि। एहि वर्चस्ववादी शक्ति सँ विद्यापतिक स्त्री कें लगातार लड़ैत देखल जा सकैत अछि। ओकरा लेल आत्मसम्मानक प्रश्न एक मुख्य प्रश्न थिकैक—'मान बेचि यदि प्राण राखिए, ता ते मरण भला।' एक ठाम अपन सखी कें दैन्य संभाषण नहि करबाक चेतावनी दैत अछि—'उचित बोलइते जे होअ से होअ दैन भाखह जनू।' (उचित बजबाक फल चाहे जे होअए, मुदा दीनतापूर्ण नेहोरा बिलकुल नहि करह।) तखन ई छैक जे स्त्रीक ई संघर्ष संवादधर्मी छैक, एहि मे संवाद आ सामंजन के पूरा गुंजाइश छैक। विद्यापतिक गीत सब मे 'नहि नहि कए न पतियाएब' अर्थात् स्त्रीक 'नहि' कें नहि पतियाएब, मने ओकरो 'हँ' बूझब एकाध ठाम आएल अछि। ई अधिकतर लोलुप पुरुष कें दूती द्वारा बढ़ावाक उद्देश्य सँ अछि। मुदा, एकर विरुद्ध एहनो प्रसंग आएल अछि जतए स्त्री बलात् करबा पर आक्रामक भ' उठैत अछि—'जमाो डिठिअओलए, ई मति तोर/पुनु हेरसि हो खापरि मोर।' स्त्रीक रजामंदी बिना पुरुषक कामचेष्टाक स्थिति मे खापड़ि ओकर हथियार थिक। हाल-हाल धरि मैथिल स्त्रीक मुख्य अस्त्र खापड़ि छल, जाहि सँ चोट भने कम लगैत हो, पुरुषत्वक मानमर्दन पूरे भ' जाइत छलैक।[113]

हमरा लोकनि देखैत छी जे विद्यापतिक गीत सबमे भाग्य बहुत बेसी ठाम आयल अछि। हिन्दू जीवन—पद्धतिक नियामक अवधारणा सब मे ओ कदाचित भाग्ये थिक जकर सब सँ बेसी दुहराव विद्यापति कयने छथि। ई कैक नामें आएल अछि—भाग, अभाग, दैब, विहि, विधाता आदि। मुदा जेना कि हमरा लोकनि देखैत छी, विद्यापतिक कवि-मानसक हिसाबें हुनकर एहि धारणा मे सेहो उत्तरोत्तर परिवर्त्तन होइत एलनि अछि। एकर आरंभिक चरण जँ 'हमर अभाग हुनक नहि दोख' टाइपक छनि—'तसु दूषण नहि हमहि अभागी'—तँ एकर अगिला चरण मे हमरा लोकनि 'विधिक विरोधें मन्दा समो भेंट' मे देखैत छी। कुपुरुषक संग संबंध भाग्यक विरोधे रहला पर होइत छैक। मुदा लगले हमरा लोकनि इहो देखैत छी जे एहि धारणाक विरुद्ध स्त्री विद्रोह क' देलक अछि। हुनकर एक टा गीत छनि—'एखने पाबमाो ताहि विधाताहि बाँधि मेलामाो अंधकूप/जकर नाह सुचेतन नाहि ताके कके दिअ रूप/इ रूप हमर बैरी भए गेल देअ बहु दिठि साल/अनका ई रूप हित पए होअए हमर ई भेल काल।' कहल गेल अछि जे एखन यदि ओ दुष्ट विधाता हमरा भेटि जाय तँ ओकरा बान्हि क' अन्धकूप मे खसा देबनि। ओकर असल क्रोधकामलोलुप पुरुष-समाजक ओहि कुदृष्टि पर छैक जकरा कारणें ओकर सुन्दर रूप ओकरा लेल काल भेल देखाइत छैक। मुदा, विद्यापति स्वयं अथवा हुनक स्त्री कतहु भाग्यक एहि धारणा

सँ बहरा जाइत देखाइत हो, अन्ततः बहरा नहि पबैत अछि, ने कवि ने हुनकर स्त्री। कतेक गोटे कें एहि ठाम विद्यापतिक आधुनिकताक जनाजा उठैत देखार पड़तनि, मुदा असल मे ई मध्यकालक सीमा थिक। स्त्री कें यौन अधिकार वा ओकर स्वतंत्रता, निर्णायक बिन्दु नहि थिक। निर्णायक बिन्दु थिक एकरा संग-संग आर्थिक आ राजनीतिक अधिकार जकरा दृश्यमान हेबा मे एखन बहुत देरी छल, जे कि आब हमरा लोकनिक युग मे, बीसम शताब्दी मे आबि क' संभव भेल अछि। ई ओ बाट छल जकरा विद्यापति अपन मध्ययुगीन सीमाक कारण ताकि नहि सकैत छलाह। एकर भरपाइ ओ आशावाद सँ करैत छथि जकर चर्चा पहिनहु बेर-बेर कएल गेल अछि। विद्यापतिक स्त्रीक अस्मिता-संघर्ष एक अविश्रान्त निरंतरताक माँग करैत संघर्ष थिक। हमरा लोकनि अनेको ठाम देखि सकैत छी जे विद्यापतिक स्त्री हारैत तँ अनेको ठाम अछि मुदा सदति गरदा झाड़ि क' उठि ठाढ़ होइत अछि। आत्महत्याक प्रसेग विद्यापतिक काव्य मे कत्तहु नहि भेटत, भने धमकी देबाक लेल कतहु वचनक स्तर पर आएल हो तँ आएल हो। अपन पथहीनताक भरपाइ विद्यापति अपन एहि चरम आशावाद सँ करैत छथि—'कुदिना सब दिन नहि रह रे/सुदिवस मन हरखाओ।'—एहि उक्ति मे मानू कवि विद्यापतिक, स्त्रीक प्रति आशीष छियनि आ एहिठाम विधाता कें सेहो एक नियम मे बान्हबाक उपक्रम करैत ओ देखल जाइत छथि—'दिवस मंद भल न रहए सब खन/विहि न दाहीन रह वाम लो।' (दिन चाहे अधलाह हो कि नीक, ओ सब दिन नहि ठहरल रहत, आ ने विधाता सब दिन दहीने रहता आ कि वामे। समय बदलत। अवश्य बदलत। एहना मे, सुपुरुष आ कि गुनमन्ती नारी वैह थिक जे धैरज ध' क' अपन अभियान मे लागल रहब जनैत अछि)। मानू तँ अजुका एकैसम सदीक भविष्यक झलक विद्यापतिक आँखि मे छलनि जखन स्त्री आर्थिक आ राजनीतिक हैसियत सेहो प्राप्त क' लेत!

अपन पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका'क उपसंहार मे पुरान साहित्य आ नवीन साहित्यक अंतर कें अलगाबैत हजारी प्रसाद द्विवेदी किछु रोचक बात कहलनि अछि। ओ कहै छथि जे पुरान युगक कवि एक शान्तिमय जगत मे निवास करैत छलाह जतय दुख-कष्ट, हास्य-क्रन्दन सब कथू एक सामंजस्यपूर्ण व्यवस्थाक परिणाम बूझल जाइत छल। एहन नहि जे दुख कष्ट किछु छलैहे नहि, मुदा कवि स्वयं एहि सब सँ विचलित नहि होइत छल। एहि युगक कवि मे समाज-व्यवस्थाक प्रति कोनो प्रकारक विद्रोहक भावना, पददलित समुदायक प्रति सहानुभूतिमय असन्तोषक भाव एकदम्मे नहि पाओल जाइत छल। एहनो बात नहि जे ओहि युगक कवि अपने दरिद्र वा दुखी नहि होइत हो। दरिद्रताक जेहन करुण आ हृदयस्पर्शी वर्णन संस्कृत काव्य मे भेटैत अछि से अन्यत्र दुर्लभ अछि। मुदा ई सब कथू जेना एक बेबसीक प्रयत्न

थिक, कवि जेना एहि सब कथू कें अवश्यम्भावी आ ध्रुव मानि बैसल अछि, से अनुभव होइत अछि। ओतए अहाँ करुणाविगलित हृदयक संग विधवाक मर्मस्पर्शी रोदन पढ़ि जाएब, अपमानिताक साश्रुक्रन्दन सुनि लेब, निर्दलित के उच्छ्वासपूर्ण आवेग बर्दाश्त क' लेब, मुदा ई बात कतहु नहि पायब जे एक्को बेर, अहाँ कें बोल-भरोस देबाके लेल सही, कवि कतहु विद्रोहक संग कहने हो जे ई अन्याय थिक, हम एकर विरोधकरैत छी। हजारी बाबू लिखै छथि—'व्यक्तित्व की इतनी जबर्दस्त उपेक्षा संसार के साहित्य में दुर्लभ है, क्योंकि संस्कृत का कवि अपने आपको, अपने सुख-दुख को अभिव्यक्त करने के लिए कविता करने नहीं बैठता था। उसका उद्देश्य कुछ और ही होता था।'[114]

हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे परम्परा आ मान्यताक हिसाबें प्राचीन कवि भेलाक बादो विभिप अध्येता लोकनि विद्यापति कें आधुनिक आ यथार्थवादी कवि किएक मानैत छथि!

सन्दर्भ

1. आईना-ए-तिरहुत/ कल्याणी फाउन्डेशन संस्करण/ पृ. 6
2. उपर्युक्त/ पृ. 53
3. पं. गोविन्द झा/ विद्यापतिक परिचय/ विद्यापति-गीत-समग्र/ पृ. XXVI
4. पं. श्रीवल्लभ झा/ विद्यापति-विवरण/ पृ. 92
5. राजकृष्ण मुखोपाध्याय/ विद्यापति/ नाना प्रबन्ध/ पृ. 23
6. उपर्युक्त/ पृ. 21
7. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन/ मैथिली क्रिस्टोमैथी एंड वोकेबलरी/ पृ. 34
8. उपर्युक्त/ पृ. 35-36
9. आचार्य रमानाथ झा/रचनावली/ खंड-प् / पृ. 45
10. मोहन भारद्वाज/ कविपति विद्यापति मतिमान/ पृ. 22
11. प्रो. जयदेव मिश्र/ मैथिली साहित्यक भमिका/ मैथिली साहित्यक रूपरेखा/ पृ. 17
12. प्रो. जयदेव मिश्र/ चन्दा झा/ मोनोग्राफ/ पृ. 29
13. डा. काञ्चीनाथ झा किरण/ किरण समग्र/ पृ. 129
14. पं. गोविन्द झाक ई लेख 'विद्यापतिक-प्रसंग' हुनकर पुस्तक 'अनुचिन्तन' में पढ़ल जा सकैए।
15. आचार्य रमानाथ झा/ मैथिली मे कृष्णकाव्य/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 116-17
16. डॉ. अणिमा सिंह/ आमुख/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 11-12
17. राम इकबाल सिंह राकेश/ प्राक्कथन/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 13
18. उपर्युक्त/ पृ. 11
19. राधावल्लभ शर्मा/ प्रस्तावना/ मैथिली संस्कारगीत/ पृ. ज

20. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 75
21. नागार्जुन/ विद्यापति के गीत/ पृ. 7
22. यात्री/ यात्री समग्र/ पृ. 356
23. उपर्युक्त/ पृ. 356
24. हिन्दी साहित्यकोश/ ज्ञानमंडल/ भाग 1/ पृ. 258
25. अपन विनिबन्ध 'विद्यापति' मे आचार्य रमानाथ झा ठाम-ठाम एहि बातक उल्लेख केलनि अछि—'एहन प्रतीत होइत अछि जे पुरुष परीक्षाक अतिरिक्त हुनक कोनो ग्रन्थ मिथिला मे लोकप्रिय नहि भेल छल।' पंडितवर्ग हुनक विचार सभक बहुत अनिच्छाक संग उल्लेख करैत अछि आ हुनका एक अधिकारी विद्वान नहि मानैत अछि।' (पृ. 31) 'स्पष्टत: विद्यापतिक विचार अपना समय सँ बहुत आगू रहनि अत: पुरातनपंथी पंडित वर्ग हुनका उचित सम्मानक दृष्टि सँ नहि देखैत रहनि।' (पृ. 3)
26. ग्रियर्सन/ मैथिली साहित्यक इतिहास (डॉ. जयकान्त मिश्र) में उद्धृत/ पृ. 76
27. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 18
28. डॉ. शिवप्रसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 43
29. श्रीवल्लभ झाक पुस्तक 'विद्यापतिविवरण' मे उद्धृत/ पृ. 95—96
30. डॉ. शिवप्रसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 19
31. उपर्युक्त पृ. 24
32. डा. सुभद्र झा/ सांग्स ऑफ विद्यापति/ पृ. 179-193
33. डॉ. शिवप्रसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 35
34. हमर ई लेख 'विद्यापति आ देसिल बयनाक अवधारणा' 'कर्मधारय' (निबन्ध-संग्रह) मे संकलित अछि।
35. मोहन भारद्वाज/ काव्यपाठ/ पृ. 53-54
36. डॉ. मुनीश्वर झा/ तापसकवि विद्यापति/ पृ. 72
37. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 23
38. उपर्युक्त/ पृ. 32
39. उपर्युक्त/ पृ. 13
40. डॉ. मुनीश्वर झा/ भूपरिक्रमण/ पृ. 1
41. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 14
42. उपर्युक्त/ पृ. 14
43. उपर्युक्त/ पृ. 32
44. उपर्युक्त/ पृ. 21
45. उपर्युक्त/ पृ. 22
46. डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल/ रचना-संचयन (साहित्य अकादेमी)/ पृ. 303-4
47. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 28
48. उपर्युक्त/ पृ. 25
49. उपर्युक्त/ पृ. 26
50. उपर्युक्त/ पृ. 27

51. उपर्युक्त/ पृ. 28
52. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-1/ पृ. 68
53. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 31
54. पं. गोविन्द झा/ भूमिका/ विभागसार/ पृ. 21
55. मुनीश्वर झा/ तापसकवि विद्यापति/ पृ. 52
56. डॉ. इन्द्रकान्त झा/ शैवसर्वस्वसार/ पृ. 16
विभागसारक महत्व प्रतिपादित करैत पं. गोविन्द झा लिखलनि अछि—'धर्मशास्त्रक जे सब सँ महत्त्वपूर्ण अंग थिक, व्यवहार ओ विवाद अर्थात् विधि ओ न्यायप्रक्रिया, ताहि पर मैथिल सम्प्रदायक अन्तिम ग्रन्थ प्राय: यैह 'विभागसार' थिक। एकरा बाद धर्मशास्त्रक नाम पर मिथिला मे जे किछु लिखल गेल से प्राय: कर्मकाण्डे धरि सीमित रहल। धर्मशास्त्र मे सामाजिक तत्व घटैत गेल ओ धार्मिक तत्व चरम सीमा पर पहुँचैत गेल।' (पृ. 19)
55. डॉ. मुनीश्वर झा/ तापसकवि विद्यापति/ पृ. 52
56. डॉ. इन्द्रकान्त झा/ शैवसर्वस्वसार/ पृ. 16-18
प्रसंगवश, शिवभक्त लोकनिक लेल जे वर्जनीय कर्म सब अछि, ताहि प्रसंग मे विद्यापति लिखलनि अछि—

हिंसा परकलत्रमच निष्ठुरानृतां गिरम्।
स्तेयं केशवनिन्दामच शिवभक्तो विवर्जयेत्।।

(शिवभक्त लोकनि कें जे नहि करबाक चाही से कर्म सब थिक—हिंसा, परस्त्री-सेवन, निष्ठुर वाणीक प्रयोग, झूठ बाजब, चोरि करब, विष्णुक निन्दा करब।) (पृ. 370)
57. डॉ. मुनीश्वर झा/ तापसकवि विद्यापति/ पृ. 44
58. रमानाथ झाक उपकल्पना छनि जे राजा भवसिंहक समय मे जेना महाप्रश्न उत्पप भेला पर जे ब्राह्मण राजा कोना होथि आ जे दिल्ली सुल्तानक अधीन करदाता छथि से स्वयं राजा कोना कहाय सकैत छथि, भवसिंह सप्तरत्नाकरकार चण्डेश्वर सँ 'राजनीति रत्नाकर' ग्रन्थ लिखबाय व्यवस्था प्राप्त कयने छलाह, ठीक ताही तरहक समस्या विद्यापतिक समय मे सेहो उपस्थित भेल। रमानाथ झा लिखने छथि—'राजा नरसिंह कें समस्या छल। से की तं हुनका अपने भाइ राज्यक बँटवाराक प्रश्न उठौने छलथिन अथवा हुनका अपन पुत्र लोकनि सँ एहि रूपक विवादक आशंका छलनि। तथ्यविषय बूझल नहि होइत अछि, परन्तु एहने कोनो समस्या छल जाहि प्रसंग विद्यापति सदृश बूढ़ ओ प्रतिष्ठित पंडितक व्यवस्था अपेक्षित छल ओ यैह कारण भेल जे नरसिंह विद्यापति कें नियुक्त क' विभागसारक निर्माणक कराओल।'

पं. गोविन्द झा एहि उपकल्पनाक खंडन एहि प्रकारें केलनि अछि—'इतिहास साक्षी अछि जे राज्य बाहुबल पर अविभाज्य होइत अछि, धर्मशास्त्रक बल पर नहि। धर्मशास्त्र तं मुक्तकंठ सँ कहैत अछि जे राज्याधिकार जेठ पुत्र कें छैक। परन्तु ओइनवार राजवंश मे अधिकतर भ्राता कें उत्तराधिकारी होइत देखैत छी। एहि वास्तविक स्थिति कें देखैत अनुमान कयल जा सकैत अछि जे एहि प्रकारक विवाद राजा लोकनि वा सामन्त लोकनिक घर मे, मिथिले मे नहि, प्राय: समस्त संसार मे होइत आयल अछि। ओ तकरा शान्त करबाक हेतु दरबारक कोनो पंडित सँ पोथी लिखायब कुशकाशावलम्बन मात्र प्रतीत

होइत अछि। वस्तुत: यदि पंडितेक कहला सँ राज्यक बँटबाराक प्रश्नक समाधान भ' जाइत तं एहि हेतु पंडित सँ व्यवस्थापत्र लिखाओल जाइत, पोथी नहि।'

(भूमिका/ विभागसार/ पृ. 25–26)

59. पं. गोविन्द झा/ भूमिका/ विभागसार पृ. 28
60. डॉ. मुनीश्वर झाक पुस्तक मे विस्तृत विवरण आएल अछि। इस्लामक आगमन सँ जे सनातन धर्म स्तब्ध आ दोलायमान भ' उठल छल, आब की आवश्यक छल ताहि प्रसंग मुनीश्वर बाबू लिखैत छथि—'एहन स्थिति मे धर्मनिबन्धन कें व्यापक बनायब अनिवार्य छल। आवश्यकता छल पुराण सँ पोषित व्यामिश्र धर्मक प्रतिष्ठा। ई कार्य तंत्रगमक प्रचार सँ भेल।' (पृ. 47) विद्यापति अपन दुर्गाभक्तितरंगिणी मे जे केलनि, ताहि प्रसंग—'विद्यापति मातृचक्रपूजा, त्रिशूलिनीपूजा, अपराजितापूजा, कुमारिकापूजा आदिक कल्प मे बलिदान, नीराजन, रेवन्त, छत्रा कुन्त-ध्वनादि पूजन आदिक विधान केलनि अछि ताहि मे तान्त्रिक मतक समर्थन भेल अछि।' (तापसकवि विद्यापति/ पृ. 49)
61. डॉ. राधाकृष्ण चौधरी/ द मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति/ परिशिष्ट II/ पृ. 556–564
62. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 40
63. विमान बिहारी मजूमदार/ भूमिका/ विद्यापति/ पृ. 1–2
64. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 63
65. हमर पुस्तक 'बहुवचन' मे संकलित लेख 'रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना' मे रमानाथ बाबू विद्यापति-विषयक अध्ययनक सीमाक एक प्रसंग आएल छैक। से द्रष्टव्य—'विद्यापतिक संबंध मे ओ प्रभूत लेखन केलनि। तकरा सब कें पढ़ि क' परम्परित मैथिल ब्राह्मण समाजक प्रामाणिक (जकरा आइ-काल्हि वैज्ञानिक कहबैक ताहि रीति सं) अध्ययन कएने संसार मे हमहि टा छी, दोसर ककरो प्रवृत्तियो नहि देखैत छिऐक।' से, हुनक एहि विशाल मैथिली लेखन कें देखैत कतेको बेर हमरा लागल अछि जे एक साधारण व्यक्ति ई सब पढ़ि क' यैह निष्कर्ष निकालत जे जाहि विशिष्ट जाति-गोत्र, कुल-मूल मे विद्यापति जन्म लेने छलाह, जाहि विशिष्ट नैष्ठिक नेमधारी लोकनिक हुनका संगति भेटलनि, जाहि पुण्य धराधाम पर ओ अवतरित भेल रहथि, जाहि पुण्यात्मा राजाक हुनका शरण प्राप्त रहनि, जाहि महिमाशाली देवी-देवतागणक ओ उपासक छलाह, आदि आदि जतेको अभिजात-कुलक परम्परित दिव्य आलोक सँ ओ सिक्त भेल छलाह, हुनका तं विशिष्ट अतिविशिष्ट हेबाके छलनि। ई निष्कर्ष निकालब कतेक भयानक अछि से अनुमान कयल जा सकैत अछि। मुदा, साधारण लोक से निष्कर्ष बहार करत, कारण हुनक मैथिली लेखनक यैह रुझान छनि। हँ, साहित्य अकादेमीक लेल अंग्रेजी मे (विद्यापति) लिखैत ओ अवश्य अपना कें संतुलित राखक प्रयास केलनि। एहि सँ हुनक एक आर अन्तर्विरोध सामने अबैत अछि। हुनका दृष्टि मे, मैथिली भाषा मे रचना करबाक अर्थ सनातन मैथिल ब्राह्मणधर्मक पोषण रहल हेतनि आ सैह आशा ओ रचनाकार-वर्ग सँ करैत छल हेताह, से प्रकट होइत अछि। विद्यापति लोकधर्मी प्रकृतिक व्यक्ति छलाह आ परम्परित पण्डित-समाजक दिव्य आलोकक जादू कें तोड़ि क', उल्लंघन क' क' आगू बढ़ि सकलाह आ तें विशिष्ट छथि, तें आजुक भारतीय साहित्यक परिप्रेक्ष्य मे प्रासंगिक

छथि, ई रुझान हुनक मैथिली लेखनक नहि छनि। तें आइयो, हुनका द्वारा एतेक काज संपादित भेलाक उपरान्तो, विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकनक बेगरता छै, से हमरा लगैत अछि।' (बहुवचन/ पृ. 201–202)
66. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 51
67. कीर्त्तिपताका/ पृ. 8–9
68. डॉ. मुनीश्वर झा/ तापसकवि विद्यापति/ पृ. 136
69. उपर्युक्त/ पृ. 140
70. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 50
71. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 92
72. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 48
73. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-1/ पृ. 47
74. डॉ. उपेन्द्र ठाकुर/ मिथिलाक सारस्वत साधना/ पृ. 45
75. उपर्युक्त/ पृ. 47
76. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 49
77. उपर्युक्त/ पृ. 50
78. वैह/ पृ. 36
79. वैह/ पृ. 45
80. वैह/ पृ. 43
81. वी ?बी ? कुजिन/ विद्यापति पदावली मे शिवक स्वरूप/ कविपति विद्यापति मतिमान/ पृ. 135
82. डॉ. राधाकृष्ण चौधरी/ विद्यापति:अनुशीलन एवं मूल्यांकन/ सं. वीरेन्द्र श्रीवास्तव मे संकलित लेख
83. डॉ. शिवप्रदसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 74
84. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 46
85. रवीन्द्रनाथ ठाकुर/ रचनावली/ खंड-36/ पृ. 185–86
86. आचार्य रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 54
87. डॉ. शिवप्रसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 184
88. रवीन्द्रनाथ ठाकुर/ रवीन्द्रनाथ के निबन्ध/ भाग 3/ पृ. 210
89. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 91–92
90. काञ्चीनाथ झा किरण/ विद्यापतिक राधा-कृष्णक व्यक्तित्व-निरूपण/ किरण-समग्र/ पृ. 45
91. काञ्चीनाथ झा किरण/ राधाकृष्ण-काव्यक प्रचाराभावक कारण/ किरण-समग्र/ पृ. 58
92. विमान बिहारी मजूमदार/ कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार/ खण्ड-2/ भाग-1/ पृ. 366
93. रामविलास शर्मा/ विद्यापति का युग/ भारतीय साहित्य की भूमिका/ पृ. 151
94. वैह/ पृ. 152
95. वैह/ पृ. 159
96. विद्यापति पदावली : देह, मन और स्त्री/ लेखक अरविन्द कुमार मिश्र/ प्रकाशक—

कॉन्फ्लुएंस इंटरनेशनल, 203/ई–588, ग्रेटर कैलाश–प्ए नई दिल्ली (2008)

97. वैह/ पृ. 29
98. वैह/ पृ. 32
99. डॉ. शिवप्रसाद सिंह/ विद्यापति/ पृ. 185
100. विमान बिहारी मजूमदार/ भूमिका/ विद्यापति/ पृ. 96
101. वैह/ पृ. 98
102. प्रो. जयदेव मिश्र/ मैथिली साहित्यक भूमिका/ मैथिली साहित्यक रूपरेखा/ पृ. 11
103. विमान बिहारी मजूमदार/भूमिका/ विद्यापति/ पृ. 94–95
104. वैह/ पृ. 102
105. वैह/ पृ. 103
106. विद्यापति पदावली/ नगेन्द्रनाथ गुप्त/ पृ. 429
107. विद्यापति पदावली (राष्ट्रभाषा–परिषद)/ भाग–1/ पृ. 375
108. विद्यापतिक जाहि पदवी सभक उल्लेख प्राचीन स्रोत सँ प्राप्त भेल अछि, ताहि मे कविरतन वा कविरत्न नहि अछि। एकमात्र यैह आधार थिक जे मध्यकाल मे कविरतन नामक कोनो अन्य कवि हेबाक कल्पना क' लेल गेल। एहि गीतक भाषा, शब्द, शैली, अन्त्यानुप्रास, भाव, महाभाव आदि सब टा स्पष्ट बता रहल अछि जे ई विद्यापतिक रचना थिक। जँ मानि ली जे विद्यापतिक नहिये थिक, तखन वाजिब प्रश्न उठैत अछि जे ई कविरतन के छला, कहिया भेला, हुनकर कोन–कोन रचना अछि? एहि प्रश्न सभक उत्तर इतिहासकार आ अध्येता लोकनि लग मे तं नहिये छनि, स्वयं रमानाथो झा लग मे नहि छनि। आचार्य रमानाथ झा पंजी–ग्रन्थक गहन अध्ययनक आधार पर दर्जनो अज्ञात मध्यकालीन मैथिली कविक खोजकर्त्ता एवं उद्धारक मानल जाइत छथि, मुदा कविरतनक बारे मे ओ किछुओ पता नही लगा सकलाह।

    एक तं कविरतन नामक क्यो आन कवि मिथिला मे भेला तकर कोनो साक्ष्य नहि अछि। दोसर, एहि गीतक प्रकृति स्पष्ट बता रहल अछि जे विद्यापतिक थिक। प्राचीन स्रोत जाहि सँ विद्यापतिक पदवी सभक विवरण प्राप्त भेल अछि, क्यो विश्वासपूर्वक ई नहि कहि सकैत छथि जे सब टा स्रोत भेटिये गेल अछि, कोनहु लुप्त नहि भेल अछि।

    हमरा लोकनि कें नहि बिसरबाक चाही जे शताब्दियो सँ मिथिला मे दुनू चीज होइत एलैए—अपन लिखल साधारण गीत कें अमर बनेबाक लोभ मे कवि लोकनि विद्यापतिक लिखल असाधारण गीत कें अपन बनेबाक लेल ओहि मे अपन नामक भणिता भिड़ा देलनि। एहि पर शोध होयब एखनहु बांकी अछि।

    (सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका शुभा मुद्गल एहि गीत कें गौने छथि। हुनक गाओल एहि गीतक यूट्यब लिंक कें फेसबुक पर शेयर करैत उक्त टिप्पणी शिवरात्रि, 11 मार्च 2021 कें हम लिखने रही।)
109. विमान बिहारी मजूमदार/ भूमिका/ विद्यापति/ पृ. 73
110. पं. गोविन्द झा/ विद्यापतिक प्रसंग/ अनुचिन्तन/ पृ. 74–76
111. सतीश चन्द्र/ मध्यकालीन भारत: राजनीति, समाज और संस्कृति/ पृ. 131
112. कवि आलोकधन्वाक सुप्रसिद्ध कविता 'भागी हुई लड़कियां'क संदर्भित पाँती छैक—

    'क्या तुम्हारे लिए कोई लड़की भागी?
    क्या तुम्हारी रातों में
    एक भी लाल मोरम वाली सड़क नहीं?
    क्या तुम्हें दाम्पत्य दे दिया गया?
    क्या तुम उसे उठा लाए?
    अपनी हैसियत अपनी ताकत से?
    तुम उठा लाए एक ही बार में
    एक स्त्री की तमाम रातें
    उसके निधन के बाद की भी रातें?
    तुम नहीं रोए पृथ्वी पर एक बार भी
    किसी स्त्री के सीने से लगकर?
    सिर्फ आज की रात रुक जाओ
    तुमसे नहीं कहा किसी स्त्री ने?'

    नोट—सोचि क' देखी तं साफ देखाइत अछि जे परवर्ती काल मे, आइयो, जकरा हमरा लोकनि 'मैथिल संस्कृति' कहैत छिऐक, से वास्तव मे विद्यापतिक काव्य–लोक के कते विपरीत ध्रुव पर विद्यमान छैक!
113. एहि पूरा प्रसंग मे विद्यापतिक जे पदांश उद्धृत कयल गेल अछि, तकरा मैथिल विद्वान आ आलोचक लोकनि सेहो अपन अपन पुस्तक आ लेख मे खूब उद्धृत कयने छथि। मुदा प्रायः समस्त ठाम ई उद्धरण कुपाठ आ दुर्व्याख्या सँ मूर्च्छित अछि। तकर कारण अछि जे एकर अर्थ ओ लोकनि सन्दर्भ सँ काटि क' केलनि अछि। जाहि पाँती सँ स्त्रीक संघर्ष, ओकर विवेक, ओकर हृद्गत हाहाकार, ओकर वंचना देखायब विद्यापति कें इष्ट छलनि, उद्धरण सब मे देखब जे एकर सभक उपयोग विद्वान लोकनि मिथिलाक महत्ता, एकर साहस, एकर बौद्धिक उत्कर्ष आदि देखेबाक लेल उदाहरणक रूप मे केलनि अछि। वास्तविक अर्थ मे ई अर्थक अनर्थ करब थिक, असत्य कें सत्य घोषित करब थिक। जाहि पाँती मे स्त्री अपन पीड़ा आ वंचनाक अभिव्यक्ति केलक, से आखिर पुरुषवर्चस्वी मैथिल संस्कृतिक अभ्यर्थना मे कहल गेल सूक्ति कोना भ' सकैत अछि? ओ तं एहि संस्कृतिक निन्दा कहौतैक। मुदा मैथिल विद्वान लोकनिक यैह चालि रहलनि अछि। एकर सब सँ सटीक उदाहरण काञ्चीनाथ झा किरणक लेख 'विद्यापतिक गीत कें चिन्हबा लेल मैथिल आँखि चाही' (किरण–समग्र) मे देखल जा सकैत अछि। ई 'मैथिल आँखि' शब्दावली आगू बहुत लोकप्रिय भेल, मुदा एहि लेख मे विद्यापतिक गीतक संग सह–अनुभति रखैत वा सान्दर्भिक अर्थ करैत किरण जी कत्तहु नहि देखाइत छथि।

    एहि सूक्ति सभक अर्थ करैत किरण जी लिखैत छथि जे एहि सँ 'शौर्य विवेक आ उत्साह संग काज करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।'
114. हजारी प्रसाद द्विवेदी/ रचनावली/ खंड 3/ पृ. 137

कबीरक मैथिली पदावली आ मिथिला मे कबीरपंथ

मैथिली साहित्यक इतिहासकार आ आलोचक लोकनिक ई बद्धमूल धारणा रहलनि अछि जे विद्यापतिक बाद जे मैथिली कविता आगू बढ़ल से हुनक परिपाटी मे, हुनके अनुसरण करैत आगू बढ़ल। डॉ. श्रीश अपन इतिहास मे लिखलनि अछि—'विद्यापति सँ लए महाराज महेश्वर सिंहक शासनक अंत धरि जे कोनो पदरचना भेल, से सब विद्यापतिक अनुसरण मे। कवि लोकनिक प्रतिभाक अनुसार उच्च कोटिक वा निम्नकोटिक जे काव्य-रचना भेल हो, भाषा-प्रयोग मे जे किछु अन्तर आएल हो, मुदा काव्य-प्रवृत्ति धरि ओएह विद्यापति-सम्प्रदायक रहल।'[1] ई तथ्य रखैत इतिहासकारक निर्णय मे जे दृढ़ता देखाइत अछि तकर कारण यैह थिक जे विद्वान लोकनिक बीचक ई सार्वजनीन मत थिक।

मुदा, व्यापकता मे जँ मैथिली कविता-परम्पराक अवलोकन करी आ गहराइ सँ एहि विषय मे कएल गेल शोध सब कें देखी तँ वास्तविक तथ्य एकर विपरीत अछि। कबीरदासक काव्य-परम्परा ने केवल मैथिली मे विस्तारपूर्वक आएल, अपितु समुच्चा मध्यकाल मे अपन निरंतरता बनौने रहल आ आधुनिक युगक जखन सूत्रपात भ' रहल छलैक, तखनहु मैथिली मे एक दिस जँ 'विद्यापति-सम्प्रदाय'क काव्य-रचना मैथिली मे भ' रहल छलैक तँ दोसर दिस कबीर-सम्प्रदायक भक्त कवि लोकनि सेहो क्रियाशील छला। तें अधिकतर ई जे मानल जाइत अछि जे मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन सँ मिथिला आ मैथिली बाहर रहल, से सत्य नहि अछि।

कबीरपदक जे सर्वाधिक प्रामाणिक पदावली सब छपल अछि, हमरा लोकनि देखैत छी जे ताहू सब मे हुनकर मैथिली पद आएल छनि। कबीर-सम्प्रदायक कवि लोकनि कबीरक बाद जे मैथिली मे भेला हुनको सभक पद भेटैत अछि। ई लोकनि निर्गुणपंथी रहथि। कबीर भने अपन पद मे सिद्धइ के मखौल उड़ौने होथि, हुनकर आध्यात्मिक विचारक जे आधार-भित्ति रहनि से ओही सिद्धसाहित्यक परम्परा सँ जा क' जुड़ैत रहैक। मिथिला मे एहि परम्पराक विकास मे निरंतरता बनल रहल। कबीरक चारि प्रमुख शिष्य सब मे सँ एक जागूदास मैथिल छला। अपना होती मे ओ अंधराठाढ़ी मे अपन आश्रम बनौने छला तखन फेर विदुपुर (वैशाली) गेलाह जे कबीरपंथक चारि शाखा मे सँ एक प्रमुख शाखा थिक। मिथिलाक हृदयस्थली जकरा कहैत छिऐक—मधुबनी, दरभंगा,—ताहू जिला सब मे अनेकानेक कबीरमठक अस्तित्व अछि। ओ मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, सुपौल, सहरसा, पुर्णियाँ, भागलपुर, मुंगेर, सीतामढ़ी जिला मे सेहो अछि। एक-एक जिला मे कैक-कैकटा अछि। ओकर अपन विशाल अनुयायीवर्ग छैक। प्राय: प्रत्येक मठ लग कबीर पदावलीक पाण्डुलिपि छैक। विद्यापति गीतक जे प्राचीन पाण्डुलिपि मिथिला मे दू-तीन ठाम भेटल, खोज कएल जाइत तँ कबीर पदावलीक पाण्डुलिपि पचासो ठाम भेटि सकैत छल। तकर कारण छल मठक संरक्षण-व्यवस्था, जखन कि विद्यापति कें ई सुविधा उपलब्ध नहि छलनि। एहि प्रसंग मे श्रमपूर्वक जतन क' क' डॉ. कमलाकान्त भंडारी जे संचयन आ विश्लेषण अपन शोध-पुस्तक 'संत कबीरक मैथिली पदावली' मे केलनि अछि, ओकरा अवश्य देखल जेबाक चाही।[2]

इतिहासकार आ आलोचक लोकनि मुदा, एहि इच्छाशक्ति सँ पूर्णत: शून्य रहलाह अछि। तकर कारण भेल ब्राह्मणधर्म-सापेक्षता। जे रचना ब्राह्मणधर्मक आदर्शक अनुकूल नहि रहल तकरा एतय कात क' देल गेल। एहन प्रतीत होइत अछि जे मध्यकालो मे जेना मैथिली रचनाकार हेबाक लेल ओकर ब्राह्मण होयब अपरिहार्य होइक। श्रीशजी लिखलनि अछि—'अठारहम शताब्दीक मध्य मे नवीनताक समावेश अवश्य भेल—शृंगारिक पद सँ अधिक भक्तिपद लिखल गेल एवं रहस्यात्मक रचना सेहो भेल। किन्तु, ताहू मे विद्यापति-सम्प्रदायक मुख्य गुण संगीत-सम्मित होएब एवं भणिताक प्रयोग करब, रहबे कएल। भक्तिपदक रचना तँ विद्यापतिहिक समय सँ होइत आबि रहल छल, किन्तु रहस्यवादी काव्य-रचना नवीन छल। एहन कविता कएल साधुसन्त लोकनि जे साम्प्रदायिक दृष्टिएँ विष्णुक उपासक छलाह। एहन कविगणक मध्य महात्मा साहेब रामदास एवं लक्ष्मीनाथ गोसाँइ प्रमुख छलाह। ई महात्मा लोकनि अधिकांश उच्च जातिक छलाह, किन्तु, संसार सँ विरक्त भ' गेल छला।'[3] विद्यापति सँ ल' क' लक्ष्मीनाथ धरिक भक्तिपदक सारांश एतय मात्र किछु वाक्य मे अँटा देल गेल अछि। विद्यापति-सम्प्रदायक जे प्रमुख दू गुण ओ बतौलनि अछि, मैथिली कविता-परम्पराक अध्ययन व्यापक कयने हमरा लोकनि लग स्पष्ट अछि जे संगीत-सम्मित होएब कोनो विद्यापतियेक नहि, ई समुच्चा मैथिली कविता-परम्पराक गुण छल। मिथिलाक लोक-कविता सँ विद्यापति एकरा ग्रहण कयने छला, जकरा लोक-परम्परे सँकहियो पहिने सिद्ध लोकनि सेहो ग्रहण कयने रहथि। इहो स्पष्टे अछि जे भणिताक प्रयोगक आरंभकर्ता सेहो विद्यापति नहि रहथि, सिद्ध लोकनि सेहो भणिताक प्रयोग कयने छथि। उच्च जातिक महात्मा लोकनि यदि संसार सँ

विरक्त भ' जाथु तखनहु हुनका लेल मैथिली साहित्य मे आसन सुरक्षित रहतैक। वैष्णव भ' जाथु तैयो। समस्या ई रहल जे एहि सब मे सँ कबीर कथू मे नहि रहलाह। वैष्णवो जँ रहलाह तँ वैष्णव सभक गंजन करैत रहलखिन। कबीर आ हुनकर परम्पराक लेल मैथिली साहित्य मे जगह नहि रहल तँ तकर कारण एहि सब सँ बुझबा मे आबि सकैत अछि।

की कबीर मैथिल छलाह?

डॉ. सुभद्र झा पहिल एहन अध्येता भेला जे मैथिली भाषाक निर्मिति बुझबाक लेल आन कथूक संग-संग कबीरक पद के अवलोकनक सेहो आवश्यकता बुझलनि। कहब आवश्यक नहि जे मैथिली विषयक अध्ययन मे कबीरक पद कें शामिल करब वैश्विक आ वस्तुनिष्ठ दृष्टिये राखि क' संभव भ' सकैत छल जकर अभाव सामान्यत: मैथिल विद्वान सब मे रहलनि। कबीरक प्रति निश्चिते एकरा सुभद्र बाबूक आत्मबुद्धि कहल जेतैक जे ओ ने मात्र कबीरक मैथिली पदावलीक गहन अध्ययनक आवश्यकता बुझलनि अपितु एहि अध्ययन लेल अपना दिस सँ पहल सेहो केलनि।

डॉ. सुभद्र झा 1956 मे, जाधरि कि हुनकर विश्वविख्यात पुस्तक 'फॉरमेशन आफ मैथिली लैंगुएज' छपलो नहि रहनि (ई पुस्तक 1958 मे लंदन सँ छपल), ओ कबीर पर एक विचारोत्तेजक लेख लिखलनि, आ लेख मे कबीरक दस गोट मैथिली पद उद्धृत करैत संकेत केलनि जे कबीर मिथिलाक छलाह। कबीर मे रुचि हेबाक कारण दुनिया भरि मे कबीर कें ल' क' जे अध्ययन भेल रहैक ताहि सँ ओ अवगत रहथि। तहिया आद्य साहित्यिक इतिहासकार रामचन्द्र शुक्ल तुलसी कें प्रमुख स्थान द' चुकल रहथि आ कबीर कें छाँटि चुकल रहथि। हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीरक अध्ययन मे लागल रहथि आ एहि निष्कर्ष पर पहुँचि रहल रहथि जे भक्तिकालक सब सँ महत्त्वपूर्ण अवदानी कवि कबीर छला। आन-आन विद्वान लोकनि, पुरानो विद्वान लोकनि, कबीरक पद सब कें संकलित क' पदावली छपबा रहल रहथि। बंगाली लोकनि जाहि तरहें विद्यापति पर काज केने छला, लगभग वैह आकर्षण एम्हर हिन्दी-क्षेत्र मे कबीरक प्रति रहैक। कबीर कें ल' क' अनेक प्रश्न मुँह बौने ठाढ़ छल, जे हुनकर चमत्कारी महात्माक छवि तर मे पिचाएल छल। एहि मे सँ एक प्रश्न हुनक जन्मभूमिक निर्णय करब छल। हुनकर कार्यक्षेत्र काशी छल, से तँ निर्विवाद रहय मुदा जन्मभूमिक मादे ओ अपनो कतहु साफ-साफ नहि लिखने छला। भारतक चारू कोन हुनका अपन मानैत। सब ठामक भाषा मे हुनकर कविता। सब ठाम हुनकर आश्रम। सुभद्र बाबू प्रश्न उठौलनि जे कबीर जँ कतहु आन ठामक भ' सकैत छथि, तँ हुनक मैथिल हेबाक संभावना कतहु बेसी भ' सकैत अछि। तकरा

लेल, मैथिली मे हुनक पदावली होयब मात्र एकाकी प्रमाण नहि छल। ओ देखौलनि जे अपना सम्प्रदायक संबंध मे जे हुनकर मूल धारणा सब रहनि, जकर अभिव्यक्ति हुनकर कविता सब मे बेर-बेर भेल अछि, से हुनका मिथिलाक निवासी साबित करैत अछि। आइ जखन कबीरक विद्वान लोकनि हुनकर जन्मभूमिक समस्या हल क' रहल होइत छथि, तँ हुनका लोकनि कें एक अनिवार्य सामना सुभद्र बाबू सँ सेहो कर' पड़ैत छनि।

कबीरक जन्म कतय भेल छलनि, एहि विषय पर सुरुहे सँ बहुत विवाद रहल अछि। हुनकर जन्मस्थानक संबंध मे जे विविध तर्क सब विद्वान लोकनि प्रस्तुत केलनि, हुनकर जन्मस्थान कें ल' क' चारि गोट मत प्रचलित अछि—मगहर, बेलहरा, काशी आ मिथिला। अन्तत: ई मुद्दा तते जटिल विषय भ' उठल जे विद्वान लोकनि कबीरक कविता आ हुनकर दर्शन, आध्यात्मिक आ सामाजिक संदेश धरि अपना कें सीमित क' लेब निरापद बुझलनि आ जन्मभूमिक विवादक निर्णय कबीरपंथी लोकनिक विश्वास आ मान्यता पर छोड़ि देल गेल। परम्परित मान्यता ई अछि जे काशी सँ तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम अवस्थित लहरतारा नामक पोखरिक भीर पर शिशु कबीर पाओल गेल छला तें यैह हुनकर जन्मस्थान छनि। स्वयं कबीरक स्थिति ई छनि जे अपन परिचय, पहचान आदिक विवरण देब ओ कतहु जरूरी नहि बुझलनि, सतत् ओहि सामाजिक आ आध्यात्मिक प्रश्न सब पर एकाग्र रहलाह जे हुनका समक्ष उपस्थित छलनि। अपना बारे मे जतबा जे बात कतहु-कतहु कहनो छथि से एक अपूर्व व्यंग्य संग, मार्मिकता भरल सन्दर्भ संग अछि, तें ओ कोनहु विशेष विश्वस्त साक्ष्यक रूप मे उपयोग करबा योग्य नहि अछि। तखन एतबा पता अवश्य चलैत अछि जे काशी हुनकर कार्यक्षेत्र छलनि। इहो पता चलैत अछि जे सब दिन सँ ओ काशी मे नहि रहैत छलाह, पहिने अन्यत्र रहैत छलाह बाद मे काशी पहुँचलाह, जे कि तमाम संकट आ संघर्षक बादो हुनकर प्रिय स्थान रहलनि। एक टा बात इहो पता चलैत अछि जे जीवन भरि काशी रहलाक बादो अंतकाल मे ओ काशी छोड़ि देलनि। ई स्पष्ट नहि अछि जे ओ अपना विवेक सँ काशी छोड़लनि, यद्यपि कि एकरहि समर्थन मे बेसी साक्ष्य अछि, अथवा कर्मकाण्डी लोकनिक उत्पात आ राजदंड सँ हुनका काशी छोड़' पड़लनि। काशी छोड़ि क' ओ मगहर गेल छलाह एहि बात पर अध्येता आ श्रद्धालु लोकनि एकमत छथि। ओतहि हुनकर निधन भेलनि। एहि बारे मे एक मत इहो अछि जे मगहरे हुनकर जन्मस्थान छलनि, तें स्वाभाविक मातृभूमि-प्रेमवश वा मोहवश मरण लेल ओ मगहरे कें चुनलनि, मुदा एहि मतक खंडन लेल सेहो अध्येता लोकनि लग मे पर्याप्त तथ्य छनि आ अन्त:साक्ष्य तं अछिये।

कबीरक जन्मस्थानक निर्णय हेतु अध्येता लोकनि कोन-कोन प्रकारक तर्क

देलनि अछि, ताहि दिस एक नजर देखि लेल जाय तं डॉ. सुभद्र झाक तर्कक मर्म खुलि सकैत अछि। कबीरक जन्म मगहर मे भेल छलनि, एहि मतक समर्थक प्रमुखत: डॉ. रामकुमार वर्मा तथा डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत छथि। डॉ. वर्मा अपन पुस्तक 'संत कबीर'क प्रस्तावना मे लिखने छथि—'कबीर की एक पंक्ति ऐसी है जिससे ज्ञात होता है कि वे मगहर में ही उत्पप हुए थे। 'पहले दरसन मगहर जाइओ पुनि कासी बसि आई'—यथेष्ट संकेतपूर्ण है। मृत्यु के समय उनका मगहर लौट जाना मनुष्य की उस स्वाभाविक प्रेरणा का भी प्रतीक हो सकता है जिससे वह अपनी जन्मभूमि या उसके समीप ही आकर मरना चाहता है। अत: मेरे दृष्टिकोण से कबीर का मगहर में जन्म मानना अधिक युक्तिसंगत है।'[4] डॉ. वर्मा एहि संबंध मे अलग सँ कोनो तर्क नहि राखलनि। 'पहले दरसन मगहर जाइओ' मे जे 'दरसन' शब्द आएल अछि तकर अर्थ जन्म मानल जाय आ कि ईश्वर-दर्शन वा ज्ञान-प्राप्ति, से एक अलग संकट अछि। एहि बात कें एहि मतक दोसर समर्थक डा. त्रिगुणायत पकड़लनि अछि। मुदा ओ अपन अभिमत यैह बतबैत छथि जे 'मुझे पहला अर्थ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।'[5] मुदा किएक आ कोना? तकरा लेल ओ छव गोट तर्क देलनि अछि—(1) मगहर मे मुसलमान लोकनिक बस्ती बहुत अधिक अछि आ ओ लोकनि अधिकतर जोलहा छथि। तें आश्चर्य नहि जे कबीर एही मे सँ कोनो जोलहा परिवार मे उत्पप भेल होथि। (2) कबीर अपन रचना मे मगहरक उल्लेख अनेको बेर कयने छथि जकर तात्पर्य थिक जे मगहर सँ हुनकर घनिष्ठ संबंध छलनि। एत्तेक अधिक श्रद्धा केवल जन्मस्थानक प्रति भ' सकैत अछि। (3) मृत्युक समय समीप अयला पर कबीर मगहर चलि गेल रहथि। काशी मे रहब हुनका उचित नहि लगलनि। ई मानव स्वभाव थिक जे ओ जतय उत्पप होइत अछि ततहि जा क' मरय चाहैत अछि। (4) कबीर स्वयं लिखने छथि जे सब सँ प्रथम ओ मगहरे कें देखने छलाह आ तकर बाद काशी जा क' बसि गेलाह। एहि उक्ति मे खीच-तान क' क' दोसर अर्थ लगायब मात्र हठधर्म होयत। (5) कबीर लिखने छथि—'तोरे भरोसे मगहर बसिऔ मेरे तन की तपन बुझाई।' एहि पंक्ति सँ स्पष्ट अछि जे अपन जन्मभूमि पर पहुँचि क' कबीर कें बहुत शान्ति भेटल रहनि। जन्मभूमि मे पहुँचि क' एहि तरहक शान्ति अनुभव करब स्वाभाविक अछि। (6) आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया मे उल्लेख अछि जे मगहर (जिला बस्ती, उत्तरप्रदेश) मे तत्कालीन एक राजपुरुष बिजली खाँ 1507 संवत् मे रोजाक निर्माण करौने छलाह।

ध्यान देबाक बात थिक जे ऊपरक पांच टा तर्क काशीक समीपवर्ती मगहरक संबंध मे अछि जखन कि छठम तर्क ओहि ठाम सँ दूर बस्ती जिलाक एक भिप मगहरक विषय मे अछि। कबीर आ तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोदीक मिलनक

घटना सँ स्पष्ट अछि जे कबीर संवत् 1507 मे जीवित छलाह। बिजली खाँ हुनक एक भक्त रहल हेता जे जीबैत जी हुनकर स्मारक बनबौलकनि जकरा हुनकर निधनक बाद रोजाक रूप मे प्रसिद्धि भेटल। एहि सब मत कें आपस मे मिला देलाक बाद डॉ. त्रिगुणायत निष्कर्ष दैत छथि जे 'कबीर का जन्मस्थान मगहर काशी का समीपवर्ती मगहर था।'[6]

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा अपन पुस्तक 'कबीर: एक विवेचन' मे डॉ. त्रिगुणायतक तर्क सब कें अत्यन्त निर्बल कहलनि अछि आ ओकर कटु आलोचना कयने छथि। जेना मगहर मे मुसलमानक बस्ती अधिक होयब आ ताहि सब व्यक्तिक जोलहा होयब। डॉ. शर्मा कहैत छथि जे आखिर एहि सँ ई निष्कर्ष कोना बहार कयल जा सकैछ जे उक्त-स्थानक नाम 'मगहर' कबीरक समकालीन थिक आ दोसर जे ई जोलहा लोकनि कबीरक जन्म सँ पहिनहि सँ एहि स्थानक वाशिन्दा छथि। तहिना, इहो कोना सिद्ध होइछ जे कबीरक जन्म एही जोलहा लोकनिक कोनो परिवार मे भेल हेतनि आ तहिना इहो जे ओ व्यक्ति, जे कबीरक माता-पिता छलाह, एही बस्तीक निवासी रहथि, से कोना सिद्ध होइत अछि? डॉ. त्रिगुणायतक दोसर तर्कक संबंध मे डॉ. शर्माक कहब छनि जे जन्मस्थानक मोह जँ एहने हो तं क्यो काशी, मथुरा, द्वारका कोना जायत, जखन कि एकर तमाम दृष्टान्त भरल पड़ल अछि। हुनकर तर्क छनि जे कबीर अपन रचना सब मे मगहरक चर्चा बारम्बार एहि लेल नहि केलनि अछि जे ओ हुनकर जन्मस्थान छलनि, अपितु एकर विपरीत एहि लेल केलनि अछि जे ओ 'मगहर पर थापे हुए निर्मूल कलंक को अन्धविश्वास के सिर मढ़ना चाहते थे। कबीर की मगहर-चर्चा में श्रद्धा-भावना की सपद्धता न होकर रूढ़ि एवं अन्धविश्वास की उन्मूलन कारिणी प्रवृत्ति की सतर्कता मात्र है।'[7]

तेसर तर्कक विषय मे डॉ. शर्माक कथन छनि जे कबीर-समान निर्मोह ममत्वहीन व्यक्तिक संबंध मे ई कहब बिल्कुल अनुचित अछि जे अन्तकाल मे ओ जन्म-स्थानक ममत्वक संवरण नहि क' सकलाह, तहिना इहो कहब निरर्थक जे मानव-स्वभावक अनुकूले ओ मृत्युकाल समीप अबितहि अपन जन्मस्थान मगहर चलि गेल छलाह। उचित यैह मानब होयत जे सत्यक अनुसन्धान सँ प्राप्त अपन निजी विश्वासक अनुकूले ओ मगहर गेल हेताह। ओ अपन कर्तृत्व तथा दृष्टांत द्वारा एहि अन्धविश्वास पर कुठाराघात करय चाहैत छलाह जे मगहर मे मुइने गदहाक योनि मे जन्म होइत अछि वा नरक जाय पड़ैत अछि।

डॉ. त्रिगुणायतक चारिम तर्क सेहो निरापद नहि अछि। कोनहु पांडुलिपि मे जँ ई पाठ भेटैत अछि जे 'पहले दरसन मगहर पाइओ पुनि कासी बसे आई', तं कोनो दोसर पांडुलिपि मे इहो पाठ भेटैत अछि जे 'पहले दरसन कासी पाइओ पुनि मगहर

बसे आई।' हुनकर कहब छनि जे पंक्ति कें आधार बना क' अपनाओल गेल हठधार्मिता अनावश्यक थिक, एहि विषय पर आर अधिक गहन शोधक आवश्यकता अछि। तहिना, हुनकर पांचम तर्क कें तं ओ साफे निराधार कहैत छथि कारण ओहि पदक ओ भाव अछिये नहि, जे ग्रहण कयल गेल अछि। ओतय तं ओ स्पष्टत: यैह कहैत छथि जे हे परमात्मा, तोरे भरोस पर हम मगहर आबि बसल छी आ एहि विश्वास सँ हमर शरीरक तपन मिझा गेल अछि। एहि ठाम इहो बात प्रकारान्तर सँ भासित भइये जाइत छैक जे कलंकित प्रसिद्धिक कारण लोक मगहर मे आबि बसबा सँ डेराइत रहथि। तहिना, छठम तर्कक विषय मे हुनकर कहब छनि जे एक पुरातत्ववेत्ताक द्वारा व्यक्त कयल गेल अनुमान कें कोनो प्रमाण वा साक्ष्यक रूप मे प्रस्तुत नहि कयल जा सकैछ, ताहू मे तखन, जखन ओहि दुनू स्थानक बीच पर्याप्त भौगोलिक दूरी हो। एहि तरहें डॉ. सरनाम सिंह शर्मा स्पष्ट कहलनि जे मगहर कबीरक जन्मस्थान नहि छलनि।

प्रश्न उठैत अछि जे डॉ. शर्माक अपन अभिमत की छनि? ओ लिखैत छथि 'फिर भी डॉ. त्रिगुणायन का 'मगहर' (जो काशी के समीप है) वही मगहर है जो रूढ़ मान्यता के लांछन से लांछित है और जहाँ 'लहर तालाब' भी है, तो मुझे यह मानने मे कोई आपत्ति नहीं है कि कबीर यहीं पैदा हुए थे।' (पृष्ठ 33) तात्पर्य जे ओ काशी मे कबीरक जन्मस्थान मानबाक पक्ष मे छथि।

स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे काशी कें कबीरक जन्मस्थान मानबाक पाछू की तर्क अछि? कबीरक आरंभिक अध्येता लोकनि सँ ल' क' अद्यतन शोधकर्त्ता धरि यैह मानि क' चलैत छथि जे ओ काशीवासी छलाह। एकरा पाछू एकमात्र आधार जनश्रुति आ लोकमान्यता थिक। कारण, कबीरक जे पद सब अधिकतर एहि बात कें प्रमाणित करबाक लेल अन्त:साक्ष्यक रूप मे प्रस्तुत कयल जाइछ—जेना, 'तू ब्राह्मण मैं काशी का जुलहा, चीह्न न मोर गियाना', 'सकल जनम शिवपुरी गंवाया, मरनी बार मगहर उठि धाया' 'काशी में हम प्रकट भए हैं रामानन्द चेताए', 'पहले दरसन कासी पायो, पुनि मगहर बसि आई', 'बहुत बरस तप कीया कासी, मरनु भइया मगहर को बासी'—ताहि मे सँ वास्तविक रूप सँ हुनकर अपन लिखल पाँती कोन छियनि आ कोन हुनकर परवर्ती लोकनि द्वारा लोकमान्यताक आधार पर रचित, तकर निर्णय करब महाकठिन अछि। प्राय: एते कठिन जे आब अध्येता लोकनि एहि विषय पर विचार करब धरि छोड़ि चुकल छथि।

डॉ. सुभद्र झा कोन तरहक गंभीर अध्येता छलाह तकर प्रमाण हुनकर ग्रन्थ 'द फोरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' अछि। अपन शोधक क्रम मे हुनका कबीर पदावलीक एक पांडुलिपि हस्तगत भेलनि, जे प्राचीन तिरहुता आ कैथी लिपि मे

लिखल छल आ जाहि मे कबीरक 739 गोट पद संकलित रहैक। एहि पांडुलिपिक सूक्ष्म पर्यवेक्षणक बाद ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे एहि मे सँ 97 टा पद विशुद्ध मैथिली अछि आ अपन बोध, विचार आ अभिव्यक्ति मे एतबा सुस्पष्ट जे ओ कबीरेक लिखल होयब संभावित। ई बात 1950क दशकक थिक जहिया कि सम्पूर्ण मिथिला मे कबीरक सैकड़ो मठ क्रियाशील छल आ लाखोक संख्या मे मिथिलाक पिछड़ल दलित वर्गक लोक कबीरपंथी छलाह। ओ अवगत रहथि जे कबीरदासक साक्षात् शिष्य लोकनि मे सँ एक जागू दास मिथिला मे कबीरपंथक चारि गोट प्रधान मठ (आचार्य गादी) मे सँ एक टाक स्थापना कयने छलाह। आगूक तीन सय वर्ष मे ने मात्र आनो-आन आचार्यगादी सब अपन-अपन प्रमुख मठ मिथिला मे स्थापित केलक, अपितु कृष्णकारख दासक रूप मे मिथिलाक कबीरपंथ आर अधिक देसिल, आर अधिक तेजस्वी रूप धारण केलक। जाहि रुचिक शोधार्थी डॉ. झा रहथि, स्वत: अनुमानित अछि जे एहि पांडुलिपि सँ बाहरोक सैकड़ो मैथिली पद कबीरक भणिता लागल, ओ सुनि चुकल हेताह। कबीरक दसटा प्रतिनिधि मैथिली पदक विश्लेषण करैत एक टा लेख ओ 'सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' लिखलनि जे 1956 मे बिहार युनिवर्सिटी जर्नलक भाग-2 मे प्रकाशित भेल। ई प्रसंग भिप अछि जे हुनकर कबीरपदक मूल पांडुलिपि म. म. उमेश मिश्र मांगि क' ल' गेलाह जे एकरा छपबैत छी, डॉ. जयकान्त मिश्र तखन मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक उपक्रम मे छलाह। दुर्भाग्यवश ने तं ओ छपल ने इतिहासे मे एक्को पाँती जगह ल' पौलक।[8] एकर दुख सुभद्र झा कें सब दिन रहलनि।

अपन लेख मे डॉ. सुभद्र झा सब सँ पहिने तं एही मान्यता कें प्रश्नांकित केलनि जे कबीरक जन्मस्थान काशी (लहरतारा) छल। काशीक पक्ष मे कहल गेल एक-एक उक्ति कें ओ उद्धृत केलनि आ कहलनि जे एहि समस्त कथन, भने ओ वास्तविक रूप सँ कबीरक होइन वा किनको आनक, मात्र एतबे पता लगैत अछि जे हुनक जीवनक अधिकांश भाग काशी मे बितलनि, ने कि ई जे काशी मे हुनकर जन्म भेलनि। 'जनम जनम हम कासी सेइया' अथवा 'सकल जनम शिवपुरी गंवाया' के ई अर्थ कदापि नहि होइछ जे ओतहि हुनकर जन्म भेल छलनि, अभिप्रेत एतबे होइछ जे ओ काशी मे रहैत छलाह। प्राय: सब अध्येता ई मानैत छथि जे कबीरक एहन कोनो नि:संदिग्ध पद नहि भेटैत अछि जाहि सँ काशी हुनकर जन्मस्थान प्रमाणित होइत हो। पहिनहि कहल जा चुकल अछि जे ई निर्णय केवल जनश्रुति आ लोकमान्यताक आधार पर कयल गेल अछि। कतेको गोट अध्येता प्रश्न उठौलनि अछि जे जाहि लहरतारा कें कबीरक जन्मस्थान मानबाक प्रसिद्धि अछि, तकर सर्वप्रथम उल्लेख आधुनिके युग मे लिपिबद्ध कयल गेल पांडुलिपि सब मे भेल अछि। डॉ. पारसनाथ

तिवारी तं अपन पुस्तक 'कबीर वाणी-सुधा'क जीवनवृत्त अध्याय मे एहि सब कथनक उल्लेखो केलनि अछि। ओ लिखैत छथि—'लिखित रूप में इसकी परम्परा 20वीं सदी से पूर्व की नहीं मिलती। कबीर के जन्मस्थान के रूप में लहरतारा का उल्लेख सर्वप्रथम परमानंद दास के 'कबीर-मंशूर' (सं. 1966), बाबू लहना सिंह कृत 'कबीर-कसौटी' (सं. 1971) तथा स्वामी युगलानन्दकृत 'कबीरचरित्र-बोध' (सं. 2007) में मिलता है। रामानन्दी सम्प्रदाय के 'प्रसंग पारिजात' में भी लहरतारा को कबीर का जन्मस्थान बताया गया है और यद्यपि इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं. 1515 दिया हुआ है लेकिन इसमें महात्मा गांधी तक का उल्लेख मिल जाने से इसे अत्याधुनिक ग्रन्थ मानना चाहिए और इसके साक्ष्यों पर भी आंख मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए।'[9] काशीक उल्लेख भेटब अपेक्षाकृत बेसी पुरान अछि, मुदा ओहो सं. 1800 सं. पाछू नहि जा पबैत अछि।

लहरतारा आ काशीक संभावना कें डॉ. सुभद्र झा सर्वथा व्यर्थ मानैत छथि। अपेक्षाकृत बेसी मान्य आधार हुनका मगहरक पक्ष मे भेटैत छनि। 'पहिले दरसन' बला जे दू-दू टा सर्वथा विपरीत भूगोलक पद भेटैत अछि, परस्पर-विरोधी, ताहि मे सँ सुभद्र झा एहि रूप कें प्रामाणिक मानलनि अछि—'पहिले दरसन मगहर पाइओ पुनि काशी बसि आई।' काशीक बाद कोनो दोसर नगरक जँ कबीरक लेल महत्व रहनि, तँ से मगहर छल। मगहर केवल ओ मरण लेल नहि गेल छलाह, पहिनहु सँ एकर महत्व छल। मुदा, सुभद्र झा मानैत छथि, 'दरसन' के अर्थ एहिठाम स्पष्ट रूप सँ ज्ञानक प्रत्यक्षीकरण थिक। एहिठाम हुनका ज्ञानक उपलब्धि भेलनि। सुभद्र झा लिखैत छथि—'कबीरदास को ज्ञान की उपलब्धि सर्वप्रथम मगहर में हुई थी, इसलिए मगहर भी उनकी जन्मभूमि नहीं थी।'[10]

अनुमानात्मक अथवा बौद्धिक तर्क भिड़ा क' कबीरक जन्मस्थानक मामिला कें हल कयल जाय, एकरा तुलना मे सुभद्र झा कें ई चीज बेसी उपयुक्त लगलनि जे कबीरक कविता मे हुनकर व्यक्तित्वगत अवधारणा सब जे प्रकट भेल अछि, जे कि सीखल ज्ञान सँ सर्वथा भिप थिक, ओकरा आधार पर विचार हो। कबीरक कविता मे एहन जे चीज प्रकट भेल अछि ओ या तं प्रेम थिक, अथवा समानताक संघर्ष, पिंड-ब्रह्माण्डक एकत्व। मुदा किछु ठाम हुनकर उत्कट घृणा सेहो व्यक्त भेल अछि। कैक पद मे एकरा देखल जा सकैत अछि। सुभद्र झा एकरा विशेष मानलनि अछि। ई घृणा शाक्तक प्रति अछि, जकरा कि अधिकतर ओ 'साकत' अथवा 'साकट' कहैत छथि। कबीरक कविताक मर्मज्ञ अध्येता पुरुषोत्तम अग्रवाल सेहो एहि चीज कें विशेष मानलनि अछि। ओ एकर साक्ष्य सेहो देलनि अछि। अपन सुप्रसिद्ध पुस्तक 'अकथ कहानी प्रेम की' मे ओ एकठाम कहैत छथि—'शाक्तों से कबीर की चिढ़ शाक्त-

साधना से उनके गहरे परिचय का संकेत करती है। अनन्तदास 'कबीर-परिचई' (1590 लग ?) में स्पष्ट कहते हैं कि कबीर शुरू में शाक्त रहे थे—'बहुत दिन साकत मैं गइया, अब हरि के गुन लै निरबहिया।'[11]

कबीर मुसलमान छलाह, आ तखन शाक्त सेहो छलाह, ई बात आइ हमरा लोकनि कें उकडू लागि सकैत अछि। शाक्त सम्प्रदाय हिन्दूक एक सम्प्रदाय थिक, ई आइ हमरा लोकनिक समझ अछि जे कि किताबक, पंडितक मान्यताक आधार पर बनल अछि। धर्मक ग्रन्थ 'की हेबाक चाही' तकरा आदर्श बना क' चलैत अछि, वास्तविक रूप सँ समाजक की यथार्थ अछि—ई धर्म-ग्रन्थक चिन्ता सँ बाहरक बात थिक। शाक्त एक जीवनशैलीगत धर्म-धारणा छल, जेना कि आनो आन सम्प्रदाय होइतहि अछि। समाज जें कि अलगे-अलग नहि रहैत अछि, मिलितो अछि, पारस्परिकता बनौने रखैत अछि, तें ग्रन्थ मे उल्लिखित आदर्श ओकर ठीक-ठीक परिचिति नहि भ' सकैत अछि। मिथिला मे हमरा लोकनि हिन्दूक घर मे मुसलमान लोकदेवताक प्रतिष्ठा चहुंदिस देखि सकैत छी, तहिना मुस्लिम समाज मे हिन्दू पर्व-त्योहार मनबैत। ई समाजक यथार्थ थिक आ से कबीरोक समय मे छलनि, कारण भारतीय समाजक यैह ढाठी अछि। तें, कबीर बहुत बरस धरि साकत रहल हेताह, एहि मे कोनो आश्चर्यक बात नहि अछि। वर्णव्यवस्था-विद्रोही वैष्णव-भक्त रामानन्द कें ओम्हर हम सब कबीरक गुरु होइत देखैत छियनि, एम्हर शाक्त-साधना लेल शुरूआती जीवन मे हुनका कोनो गुरु शाक्त भेटल होइन जिनकर कतहु उल्लेख करब हुनका निरर्थक लागल होइन, ई असंभव बात नहि भ' सकैत अछि।

सुभद्र झाक कहब छनि,—'संभव अछि, कबीरदास कें अन्य प्रान्तक लोकक दशाक ज्ञान तखने भ' गेल होइन जखन ओ मिथिला मे रहैत छलाह। बाहरी परिस्थितिक प्रभाव हुनका मन पर ततेक पड़लनि जे मैथिलक शक्तिपूजा आ एहिठाम प्रचलित कर्मकाण्डक महत्ता सँ हुनकर विश्वासे उठि गेलनि।' सुभद्र झा 'बाहरी प्रभाव' कें उत्तरदायी मानब निरापद बुझलनि अछि, जखन कि वर्णव्यवस्था मे गछारल मिथिलाक संभ्रान्त जनक जे उद्दंड आ आक्रामक जीवनशैली छल, जे अन्ततः जा क' शाक्त जीवनशैली संग जुड़ैत छलाह, सैह स्वयं एतेक पर्याप्त छल जे अवर्ण-अजाति सँ आएल एक स्वतंत्रचेता व्यक्तिक तेज सहन नहि क' सकय। कबीर कें अपमानित भ' क' मिथिला सँ भागय पड़ल हेतनि, तकर सहज अनुमान कएल जा सकैत अछि आ सुभद्र झाक लेख मे सेहो एहन संकेत आयल अछि। षटकर्मी पंडित, बलिपूजक, मिथ्याचारी, लोकद्रोही ब्राह्मण-पुरहित लोकनिक जतय कतहु जिक्र कबीरक कविता मे अबैत अछि, ओकरा मिथिला मे अर्जित कयल पूर्वानुभवक रूप मे देखबाक चाही। हुनका भीतर एहि वर्गक प्रति ततेक घृणा रहनि जे कबीरक तमाम तत्वज्ञताक बावजूद

हुनकर कविता सब मे व्यक्त भ' जेबा सँ नहि बचि सकल अछि। जे चिढ़ कबीर कें शाक्त लोकनिक प्रति छलनि, प्राय: तेहने चिढ़ तुलसीदास मे हमरा लोकनि निर्गुणपंथी सभक प्रति पबैत छी, जखन कि तुलसी कें शारीरिक-मानसिक रूप सँ परेशान करैबला वर्ग निर्गुणपंथी नहि, ब्राह्मण आ ब्राह्मणवादिये लोकनि छलाह जकर संकेत हुनकर कवितावली मे आएल अछि। तें तुलसीक चिढ़ मात्र साम्प्रदायिक छल, कबीरक चिढ़ हुनकर निजी अनुभव सँ उत्तप्त रहनि। सुभद्र झाक मान्यता छनि जे कबीर मिथिला छोड़बा सँ पहिनहि वैष्णव भ' गेल छलाह। एहि पर सहमत होयब कठिन अछि कारण अनेक प्राचीन साक्ष्य भिप संकेत दैत अछि। जेना अनन्तदासक 'परिचई'। कबीरक निधनक थोड़बे दशकक बाद (प्राय: 1590क आसपास) ई 'परिचई' लिखल गेल छल जकर विशेषता ई अछि जे कोनो अलौकिक-अतिलौकिक अवतारक रूप मे नहि, एक संत पुरुषक रूप मे ओ कबीरक जीवनी अपना तरहें निरूपित करैत अछि। 'परिचई' मे पहिले पाँती एहि तरहें अबैत छैक—'कासी बसे जुलाहा ऐक/हरि भगतन की पकड़ी टेक/बहुत दिन साकत मैं गइया/अब हरि का गुण ले निरबहिया।' एहि सँ एहन लगैत अछि जे काशी बसबा सँ पहिने तं निश्चिते, ओकर बादो ओ शाक्त रहल छलाह। कबीर-पदक प्राचीनतम स्रोत मे सँ एक 'गुरुग्रन्थ साहिब' (संकलन-समय 1604 ई.) थिक। ओहिठाम आयल एक पद मे कबीर अपन जीवन-क्रमक विवरण दैत देखाइत छथि जे कते दिन ओ अशुद्ध साधना मे लागल रहला आ कहिया हुनका जीवन मे भक्ति-रसायनक उद्रेक भेल। पाँती अछि—'बारह बरस बालपन मे बीते, बीस बरस कछु तपु न कीओ/तीस बरस कछु देव न पूजा, फिरि पछुताना बिरधि भइओ।' तात्पर्य जे तीस वर्षक अवस्था मे ओ वैष्णव भेल छलाह। शाक्तक प्रति जे कबीरक उत्कट घृणा रहनि, तकर कारण तकैत पुरुषोत्तम अग्रवाल लिखलनि अछि—'जिस समूह से जुड़े रहकर आप कट जाएं, उसके साथ आपके संबंध कुछ ज्यादा ही तनावपूर्ण हो जाते हैं। नापसन्दगी में सैद्धान्तिक से कहीं ज्यादा मानीखेज व्यक्तिगत आयाम जुड़ जाता है। भूतपूर्व स्वयंसेवक संघ के कठोरतम आलोचक होते हैं, और भूतपूर्व कामरेड, कम्युनिस्ट पार्टी के।'[12]

वैष्णव आ शाक्तक प्रति कबीरक जे मूल अवधारणात्मक समझ छलनि, तकरा बारे मे सुभद्र झा लिखैत छथि—'कबीरदासक 'वैष्णव'क ओ अर्थ नहि अछि जे आन वैष्णव लोकनि करैत छथि, अर्थात् विष्णुक भक्त। ठीक एही तरहें हुनका मत मे 'शाक्त'क अर्थ सेहो शक्तिक उपासक नहि अछि। यदि एतेक भेद हुनका शब्दक अर्थ मे रहैत तं ओ शाक्तक प्रति जाहि उग्रताक संग अपन घृणा व्यक्त केलनि अछि, से नहि कयने रहितथि। ओ तं शाक्त सँ मत्स्यमांस-भोजी तथा वैष्णव सँ शाकभोजी बुझलनि अछि। यैह अर्थ आइयो मिथिला मे वैष्णव तथा शाक्त पदक हेतु प्रचलित अछि। दक्षिणदेशीय वैष्णव, शाक्तक घर मे भोजन धरि नहि करैत छथि जखन कि बंगाली वैष्णव खूब माछ खायल करैत छथि। कतेको शक्तिपूजक मैथिल छथि जे माछ-मांस नहि खाइत छथि तथा भोज आदिक अवसर पर हिनका 'वैष्णव' कहल जाइत छनि, यद्यपि कि हुनका गरदनि मे ने तुलसीक माला रहैत छनि ने ओ वैष्णव जकां चन्दने करैत छथि।'

डॉ. पारसनाथ तिवारी सुभद्र झाक एहि मान्यता कें निराधार मानलनि अछि। ओ लिखैत छथि—'कबीर की दृष्टि में 'साकत' वह है जो भक्त न हो, राम का नाम न लेता हो, जिसमें सज्जनता का लेशमात्र न हो, बल्कि जो दम्भी, विषयासक्त, भ्रष्टाचारी और निंदक हो। इसके विपरीत 'वैष्णव' वह है जो राम का भक्त हो, सज्जन-सदाचारी हो और कामिनी-कंचन के जाल से मुक्त हो। दोनों के विभाजन में कबीर का सबसे अधिक बल उसके रामभक्त होने या न होने तथा विषय-वासना के भोग अथवा त्याग पर जान पड़ता है, न कि मछली खाने अथवा न खाने पर।'[14] काश, कि मामला एते आसान होइतय! वास्तविक रूप मे 'शाक्त'क ने ओ लक्षण थिक जकर ऊपर वर्णन भेल ने वैष्णवेक वैह लक्षण थिक। सुभद्र झा मूलभूत धारणाक बात कहलनि अछि, जे कि आमजन मे प्रचलित अछि आ एकर पर्याप्त साक्ष्य अछि जे कबीर कें से बूझल रहनि। आगू कबीरक कतेक विकास भेलनि, तकरा पर ध्यान देने बात साफ भ' सकैत अछि। पुरुषोत्तम अग्रवाल कहैत छथि जे कबीरक जिज्ञासा-यात्रा आरम्भ भेल छलनि शाक्त-साधना सं। एहि साधनाक मूल मान्यता छल 'वामा भूत्वा यजेत् परम्'। साधना मे प्रेम आ नारीत्वक साधनाक पुनर्वास कबीर केलनि। ओ घोषणा केलनि 'काम मिलावे राम सूं' आ चेतावनी सेहो देलनि जे 'जो कोई जाणे साधि'। 'वामा भूत्वा यजेत् परम्' पर अमल करैत ओ अपन कविता मे नारीरूप धारण करैत छथि आ सामाजिक घरातल पर ठेठ विरक्त मुहावरा मे नारी-निन्दा सेहो करैत छथि। नारी-निन्दाक एहि तिक्खपनक पृष्ठभूमि मे शाक्त लोकनिक संग कबीरक अपन संबंधक तिक्खपन सेहो मौजूद अछि।[15] शाक्त-साधना कबीरक जिज्ञासाक आरम्भ वा पहिल पड़ाव मात्र भ' सकैत छलनि, परिणति नहि। ओतय सँ शुरू क' क' ओ नाथ आ सूफी लोकनिक बाट सँ सेहो गुजरलाह। मुदा आखिरकार जे पहचान हुनका संग चललनि, से वैष्णवे छल। जाति-कुल-सम्प्रदाय निरपेक्ष वैष्णवताक संग कबीर अपन संबंध स्वयं सेहो स्वीकार करैत छलाह, दोसरो लोक स्वीकार करैत छलनि।[16]

कबीरक समय मे वैष्णवक ठीक-ठीक अर्थ समाज मे की प्रचलित छल, एकरा बूझब आधुनिक 'विद्वान' लोकनिक लेल सम्भव नहि छनि। कारण, बकौल पुरुषोत्तम जायसवाल 'औपनिवेशिक आधुनिकता में रचे-बसे विद्वानों की स्मृति से वैष्णव शब्द

का वह व्यापक अर्थ गायब हो गया जो आरम्भिक आधुनिक काल (कबीरक युग) में अर्थमान्य था, और लोक-प्रचलन में आज भी मान्य है।'[17] जेना, डॉ. पारसनाथ कहैत छथि जे वैष्णव होयबा लेल कबीरक सब सँ बेसी जोर रामभक्त होयबा अथवा नहि होयबा पर अछि। जखन कि वास्तविकता एकर एकदम उनटा अछि। कबीरक सब सँ बेसी जोर एहि प्रश्न पर अछि जे जखन प्रेम सँ राम भेटि सकैत छथि तं रामक बनाओल एहि संसार मे मनुष्य एक-दोसर सँ प्रेम सँ किएक नहि मिलि सकैत अछि? किएक नहि प्रेमपूर्वक एक दोसरक संग आत्मीय व्यवहार करैत जीवन-निर्वाह क' सकैत अछि? ई असमानता किएक अछि जे क्यो तं पांडे अछि क्यो अछूत। कबीरक अध्यात्म अगब अध्यात्म कत्तहु नहि अछि, ओ सार्वत्रिक समानता कें सब ठाम संग लेने चलैत अछि। एक शब्द मे कहल जाय तं कबीरक सम्पूर्ण काव्य-रचनाक दुइए टा सार अछि। एक, जे ब्रह्माण्ड थिक सैह पिण्ड थिक, दोसर पृथ्वी पर जतेक मनुष्य अछि, सब समान अछि। तखन तं कबीरक रचनाशीलता ततेक विराट छनि आ संघर्ष आ आनंद ततेक बहुआयामी जे कतेको परस्पर विरुद्ध बात सब हुनका कविता मे आबि-आबि शोभा पबैत अछि। ग्रन्थावलीक एक साखी मे ओ कहैत छथि 'कबीर मेरे संगी दो जण, एक वैश्नो एक राम।' स्पष्ट अछि जे वैष्णव आ रामक इयत्ता ओ अलग-अलग मानलनि अछि। ग्रन्थावलियेक एक दोसर साखी मे ओ कहैत छथि—'वैश्नो भया तौ क्या भया, बूझा नहीं विवेक/ छापा तिलक बनाइ करि दग्ध्या लोक अनेक।' विकट ई अछि जे ई छाप-तिलक बला वैष्णव लोकनि केवल अपने टा जीवन नष्ट नहि करैत छथि, अनेक 'लोक' कें दग्ध करैत छथि, अर्थात् मानव-द्रोह। मुख्य जोर कथी पर छनि, ताकल जाय!

पुरुषोत्तम अग्रवाल वैष्णवताक कबीरकालीन व्याप्ति आ औपनिवेशिक आधुनिकताक बाद उत्पप एकर अर्थसंकीर्णता पर पर्याप्त विचार कयने छथि। आइ वैष्णव हेबाक अनिवार्य शर्त्त गौड़ीय सम्प्रदायक सदस्य, पुष्टिमार्गक पथिक अथवा स्मार्तमतक अनुयायी होयब थिक। तुलसीदास स्मार्त वैष्णव छला से सर्वजानित तथ्य थिक। मुदा कबीरक समय मे आ कि तकर बादो, कि आइयो धरि जाहि साधनापरक मार्गक संग कबीरक संबंध जोड़ल जाइत अछि सेहो अंततः वैष्णवे मत थिक। पुरुषोत्तम लिखैत छथि—'उस समय उपलब्ध साधनापरक पहचानों में से किसी के साथ कबीर जुड़ाव-लगाव महसूस कर सकते थे, तो जाति-कुल-सम्प्रदाय-निरपेक्ष वैष्णवता से ही। यह पहचान कबीर को ही नहीं, सभी, सभी को छूट देती थी कि अपनी-अपनी वैचारिक और साधनापरक विशिष्टताओं के साथ वैष्णव के रूप में पहचाने जा सकें, शर्त्त एक ही थी-जन्मजात ऊँच-नीच और जीवहत्या के विचार से दूर रहें।'[18]

ई 'जीवहत्या' केवल माछ-मांस खयला पर खतम नहि होइत छल, बरु एहि ठाम सँ तं शुरूहे होइत छल। एकर अपन विशिष्ट जीवन-शैली छलैक जे अपन वास्तविक स्वरूप मे जँ शाश्वत जीवनक द्वार छल तं अपन विकृत स्वरूप मे धार्मिक अहंकार सँ पूरे भरल-पुरल छल। ओना तं शाक्त-साधना मे सेहो वर्ण आ लिंगक आधार पर असमानताक पूरे निषेध छलैक, मुदा 'जे हेबाक चाही' ई से थिक। वास्तविक रूप सँ जे कबीरक समय मे मौजूद छल कि आइयो, औपनिवेशिक 'आधुनिकता'क कृपा सँ आबाद अछि, से एकर बिलकुल विपरीत आ घृण्य अछि। एहि पर रोष व्यक्त करैत कबीर लिखलनि—'का सुनहा को सुमृत सुनायैं/ का साखित पैं हरिगुन गायैं/ का कउवा को कपुर खवायैं/ का विषहर को दूध पिलायैं/ साखित सुनहा दोनों भाई/ वौ नींदै वौ भौंकत जाई/ अमृत ले ले नींव सिंचाई/ कहै कबीर बाकी बांनि न जाई।'

डॉ. सुभद्र झा कहैत छथि—'मिथिलाक ई चालि अछि जे जे व्यक्ति माछ नहि खाइत अछि तकर बहुत निन्दा कएल जाइत अछि। संभवतः कबीरदास हुनका लोकनि सँ परास्त भए एहि तरहें हुनका लोकनि कें गारि पढ़ब आरंभ कयने होथि। आइयो जँ कोनो मैथिलक ओतए कोनो कण्ठीधारी जूमि जाइत छैक तं लोक ओकरा खोंझबैत छथि। अतएव, जे माछ नहि जाइत छथि से मैथिल लोकनि सँ दूर रहय चाहैत छथि।'[19] ओ कबीरक पद स्मरण करबैत छथि—'बैस्नो की छपरी भली ना साकत का बड़ गांव', 'साकत बाभन मति मिलै, बैस्नो मिले चंडाल, अंकमाल दै मीलिए मानौ मिलै गोपाल'। सुभद्र झा प्रश्न करैत छथि—'की भगवान महावीरक अनुयायी जैन लोकनि कें छोड़ि क' कोनो आन सम्प्रदायक लोक मत्स्यभक्षणक एहन जोरदार खण्डन केलनि अछि?' कहैत छथि—'काशी वा मगहर मे उत्पप सन्तक एहि प्रकारक उक्ति संभव नहि अछि। निश्चिते कबीरदास जतय जन्म लेने छलाह, ओहिठाम ब्राह्मण लोकनि मत्स्यभोजी रहथि। जतय मत्स्यभक्षणक परम्परा नहि रहतैक ओहिठामक सन्त कें ओकर विरुद्ध एहि तरहें कहबाक कोनो आवश्यकतो नहि रहतैक। की सूर, तुलसी, मीरा, नामदेव आदिक पद मे एहि तरहें मत्स्यभक्षणक खण्डन भेटैत अछि? कारण, हुनका लोकनि कें एना कहबाक बेगरते नहि छलनि।'[20] कहब आवश्यक नहि जे कबीरक ओतए 'वैष्णव के अर्थ कंठी, माला, छाप, तिलक आदि प्रतीक चिह्न सँ किपहुं नहि छनि, जखन कि कबीरपंथी साधू लोकनिक कोन कथा, कतेक अध्येता लोकनि सेहो एहि चिह्न सब कें वैष्णवता मानैत देखल जाइत छथि। कहबे केलहुँ, कबीर तं साफ कहैत छथि—'वैष्णव भया तौ क्या भया, बूझा नहीं विवेक/ छापा, तिलक बनाइ करि, दग्ध्या लोक अनेक।' मने नाश ओ अपने 'आत्म' टा के नहि केलनि, अनेको लोकक, समाजक जीवन बर्बाद केलनि।

डॉ. सुभद्र झाक अपन दोसर तर्क कबीरक एक प्रसिद्ध पदक संकेत करैत देलनि अछि। कबीरक ई पद 'बीजक' मे संकलित छैक जकरा बारे मे विश्वास कयल जाइछ जे ई हुनकर अन्तिम कालक रचना छियनि। एहिठाम ओ मिथिला आ मगहर कें एक संग स्मरण कयने छथि। पद अछि—'लोगा, तुमही मति के भोरा/ ज्यों पानी पानी मे मिलि गो/ त्यों दुरि मिल्यो कबीरा/ ज्यों मैथिल को सच्चा वास/ त्योंहि मरण होय मगहर पास।' सुभद्र झाक संकेत छनि जे मिथिलाक निवासी, मैथिल होयब कोनो साधारण बात नहि थिक, आत्म के सार मे अवगाहनक पारंपरिक साक्षीभाव सँ युक्त होयब थिक। एहि चित्तदशा मे काशी आ मगहर मे कोनो भेद नहि रहि जाइत छैक। हुनकर किछु आर पद सब जहाँ-तहाँ भेटैत अछि जकर तात्पर्य थिक जे अन्तकाल मे हुनका तीन गोट स्थानक विशेष स्मरण भेल छलनि—मिथिला, काशी आ मगहर। डॉ. सुभद्र झा एकरा आत्म-दर्शनक रूप मे देखलनि अछि, जे कि सन्त लोकनि मे सेहो कालवश उदित होइते छैक। ध्यान देबाक बात थिक जे एहिठाम जाहि अर्थ मे ओ मिथिलाक उल्लेख केलनि अछि से सर्वथा सकारात्मक अछि।[21]

डॉ. पारसनाथ तिवारी 'ज्यों मैथिल को सच्चा वास' पाठ कें भ्रष्ट आ भ्रमात्मक मानैत छथि। हुनक कहब छनि जे अनेको पाण्डुलिपि मे 'वास'क स्थान पर 'व्यास' पाठ भेटैत अछि।[22] अन्यत्र एहू पुस्तक मे कहल गेल अछि आ ज्ञाता लोकनि नीक जकां जनैत छथि जे मध्यकाल मे मूलप्रतिक प्रतिलिपि केनिहार 'लेखक' लोकनि केहन-केहन अजोध अयोग्यताक लोक होइत छलाह, आ अशुद्ध लेखनक पाठोद्धार प्राचीन साहित्यक अध्ययन मे कतेक भारी चुनौती थिक। एहना मे कोनो एक टा पाठ कें सही मानब आ बांकी कें भ्रमात्मक, निश्चित रूप सँ ई एक अतिवादी मानसिकता थिक। डॉ. केदारनाथ द्विवेदी अपन पुस्तक 'कबीर आ कबीरपन्थ' मे एहि पदक एक आर पाठ देलनि अछि—'जो मैं थीकों सांचा व्यास/ तोर मरन हो मगहर पास।'[23] अपना जनैत 'ल' कें लुप्त क' क' द्विवेदी जी मिथिला सँ निचैन तं भ' गेला मुदा ई नहि ख्याल रहलनि जे 'थीकों' के की करताह, जे कि अपन मैथिलीत्व आ मिथिलाक प्रतिनिधित्व तखनहु करैत भेटि जाइत अछि जेना यात्री जीक कविता मे एकसर ताड़क गाछ।

डॉ. सुभद्र झाक तेसर तर्क 'सर्वज्ञसागर' ग्रन्थ मे आएल एक पद सँ सम्बन्धित अछि। 'सर्वज्ञसागर' निश्चित रूप सँ कबीरपंथक परवर्त्ती कालक रचना थिक। एकर रचना हुनक पंथक आचार्य लोकनि मे सँ क्यो केलनि मुदा अध्येता लोकनि ठीक-ठीक निश्चय नहि क' सकल छथि जे एकर रचयिता वास्तव मे के थिका। ग्रन्थ कबीरक जीवन-प्रसंग सहित हुनकर चिन्तन आ सिद्धान्तक विषय मे अछि। ओहि मे प्रसंग अछि जे अपन शिष्य धनी धर्मदास कें सम्बोधित करैत एक बेर कबीर की

कहलनि। पदांश अछि—'सावन भादव बरिसे मेहा/ एते सबद हम कह्यो विदेहा।' एहिठाम विदेह शब्द आएल अछि। विदेहक अर्थ सामान्यत: 'जीवन्मुक्त' लगाओल जाइत अछि। डॉ. सुभद्र झा विश्लेषणपूर्वक ई प्रश्न उठौलनि जे कबीरक दर्शन मे 'जीवन्मुक्त' के कोनो अवधारणा अछिये नहि। एहि तर्कक समीचीनता एहि आधार पर स्पष्ट देखल जा सकैत अछि जे कबीर अपन कविता मे अलग सँ ने तं कतहु आध्यात्मिक हेबाक दाबी करैत छथि आ ने मुक्ति के दार्शनिक अवधारणा आ प्रश्न-प्रतिप्रश्न सब मे कतहु ओझरेलाह अछि। हुनक कविता-संसार पूर्णत: मूर्त्त अछि जकरा चहुंदिस पसरल देखल जा सकैत अछि। नैहर, सासुर, बियाह, गौना, पिया, दुलहिन आदि हुनकर सुपरिचित उपमान छियनि जकरा द्वारा ओ अपन तत्व कें स्पष्ट केलनि अछि। कबीरक अनेक पद एहन भेटैत अछि जाहि मे ओ वर्ण आ जातिक उल्लेख केलनि अछि—'आइ हमारे कहा करोगी, हम तो जात कमीना।' ओ अपन जाति सँ कतहु भागैत नहि छथि, आ ने ब्राह्मणादि जकां अपन पूज्यताक दाबा करैत छथि। ओ एक एहन समाजक स्वप्नद्रष्टा थिका जतय मनुक्खक मोल ओकर जाति, धर्म, नस्ल वा राष्ट्रीयताक आधार पर नहि, ओकर साधनाक आधार पर परखल जायत। हुनकर कविता एकायामी कतहु नहि अछि। हुनका ओतय सामाजिक लक्ष्य, आध्यात्मिक साधनाक संग-संग चलैत रहैत अछि—'हम वासी उस देस के जहँ बारह मास विलास/ प्रेम झरै विकसै कंवल तेज पुंज परकास/ हम वासी उस देस के जहं जाति बरन कुल नाहि/सबद मिलाबा होइ रहा देह मिलावा नाहि।' जेना कि पहिनहु कहल, कबीरक महत्वाकांक्षा कोनो सम्प्रदाय वा पंथक प्रवर्त्तन नहि छलनि, वरन एहि सँ बहुत उच्च छलनि—प्रजाति-सार (जकरा मार्क्स स्पेसीएसेन्स कहैत छथि) आ जकर तात्पर्य थिक जे अनन्त ब्रह्माण्डक सुख-दुख आ समाजक सुख-दुख एक्कहि संग जुड़ल अछि, आ दुनूक वहन संग-संग करब सहजावस्था थिक। यैह कारण थिक जे कबीरक ओतए मृत्यु एक उत्सव थिक जे अनेक-अनेक मनोरम रूप ल' क' प्रकट होइत अछि। कतहु नैहर छूटि जाइत अछि, कतहु घैल फूटि जाइत अछि, कतहु पानि मे पानिक मिलन भ' जाइत अछि।

डॉ. सुभद्र झाक मत छनि जे 'एते सबद हम कह्यो विदेहा' पद मे आएल विदेह शब्दक अभिप्राय जीवन्मुक्त होयब नहि थिक। एकर सामान्य अर्थ थिक जे ई सब बात हम मिथिलाक भूमि पर ठाढ़ भ' क' कहि रहल छी। विदेह मिथिलाक एक सुप्रसिद्ध नाम थिक जकर पाछू ज्ञानकर्म-समुच्चय सँ परिपूर्ण आध्यात्मिकताक एक उज्ज्वल परम्परा पाओल जाइत छैक, कहबाक आवश्यकता नहि।[24]

हिन्दीक अध्येता लोकनि एहि आधार पर सुभद्र झाक तर्कक प्रतिवाद करैत छथि जे 'सर्वज्ञसागर' परवर्ती रचना थिक जकर रचयिता धरिक कोनो स्पष्ट पहचान

नहि अछि। कहब आवश्यक नहि जे शुद्ध विद्वत्तेक आधार पर एना तर्क देल जा सकैत अछि, कबीरपंथक परंपराक आधार पर नहि। कबीरपंथक परम्परा, जाहि मे गुरुक अपन सर्वोपरि महत्व तं छलहे, श्रुति-परम्पराक सेहो अपन पैघ स्थान छल, एकरा सब कें ध्यान मे रखैत सुभद्र झाक कथन कें हरसट्टे उड़ा देल जायबला तर्क नहि मानल जा सकैत अछि। दोसर काट ई बताओल गेल जे कबीरक एहन अनेको पद भेटैत अछि जाहि मे जीविते मुक्तावस्थाक गुणगान कएल गेल अछि। डॉ. पारसनाथ तिवारी अपन पुस्तक मे ई पद उद्धृत केलनि अछि—'अब मन उलटि सनातन हूवा/ तब जाना जब जीवत मूवा।'[25] अर्थात् ओ जीवन्मुक्त अवस्था कें मानैत छथि। तें 'विदेह'क अर्थ मिथिला नहि थिक, अवस्था थिक। अज्ञानिये लोक ई कहि सकै छथि जे सुभद्र झा कें नहि पता रहल हेतनि जे विदेहक अर्थ जीवन्मुक्त होइत छैक। ओ संभावनाक एक नव द्वार खोलैत छथि। ओम्हर पारसनाथ तिवारी विदेहक अर्थ मिथिला-वासी लगाएब कें 'हास्यास्पद' कहैत छथि।

जहाँ धरि कबीरक लग मे जीवन्मुक्त अवस्थाक अवधारणा हेबा अथवा नहि हेबाक प्रश्न अछि, ई ततेक आसान नहि अछि जतेक डॉ. पारसनाथ तिवारी कें लगलनि अछि। साधनाक पथ विद्वत्ताक पथ सँ सर्वथा भिन्न होइत छैक। ओतय विरोधाभास कतोक बेर अनिवार्य भ' जाइत छैक, जकरा बिना ओहि अनुभूति कें व्यक्त करबे असंभव रहैत छैक। कोनो ठाम जँ कबीर ई कहैत छथि जे 'तब जाना जब जीबत मूआ' तं इहो कथन कबीरेक छनि जे 'कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाति/ तेल घट्या बाती बुझी, तब सोवैगा दिनराति।' बौद्ध लोकनिक निर्वाण-अवधारणा सँ कबीरक ई कथन तुलनीय अछि। जहिया दीपक तेल समाप्त भ' जाएत आ बाती बुझा जाएत, तकर बाद तं बस, दिन-राति सुतले रहबाक अछि, आरामे करबाक अछि। मने मृत्यु। कबीरक ई परम प्रसिद्ध दोहा सेहो एतय स्मरण करबाक चाही जतय वास्तविक मृत्युक बादे पूरन परमानन्द संग मिलनक कामना छैक—'जा मरने से जग डरै, सो मेरो आनंद/ कब मरिहूं कब देखिहूं पूरन परमानन्द।' चाहे लोकप्रचलित कबीर-पद हो कि प्राचीन समय सँ संकलित पदावली मे सम्मिलित, दुनू ठाम अधिकतर तं हमरा लोकनि मृत्यु कें वास्तविक मृत्युएक अर्थ मे लेल जाइत देखैत छी। नैहरक छूटब, सासुरक गवना आदि यैह तं थिक। एक ठाम कबीर कहैत छथि- 'कहै कबीर अंत की बारी/ हाथ झाड़ि जैसे चले जुआरी।' जूआ मे सर्वस्व हारि गेलाक बाद जेना जुआरी हाथ झाड़ि क' विदा भ' जाइत अछि, ठीक तहिना एहि संसारक खेला मे एक दिन मृत्युक दिन होइत अछि। तखन, हमरा लोकनि कबीरक इहो पद पबैत छी जे 'हम न मरब, मरिहै संसारा/ हम का मिलल जियावन हारा।' एही पद मे इहो पाँती अबैत छैक जे 'साकत मरै संतजन जीबै।' ओ स्पष्ट कहैत

छथि जे 'तेइ मुए जिन राम न जाना।' केवल वैह मरैत अछि जे राम कें नहि जनैत अछि। राम के जानब आ राम पर विश्वास करब, दू अलग-अलग बात थिक, कहब जरूरी नहि। इहो कहब जरूरी नहि जे कबीरक 'राम' दशरथनंदन राम नहि थिका। (कबीरक एक टा पद भेटैत अछि जतय ओ चारि रामक उल्लेख करैत छथि—'एक राम दशरथ का जाया/ दूजा घट घट व्याप समाया/ तीजे राम का सकल पसारा/ चौथा राम सबहु ते न्यारा।' न्यारा मने अव्याख्येय, केवल अनुभूतिगम्य।) हुनकर एक प्रसिद्ध पद छनि—'राम निरंजन न्यारा रे भाई/ अंजन सकल पसारा रे।' अंजन मने अंधकार। एहि पद मे ओ ब्रह्मा-विष्णु-महेश, ओंकार, वेद-पुराण, सब कथू कें अंजन कहैत छथि। कबीरक राम आ तुलसीक राम मे जे भेद छैक ताहि पर सैकड़ो पृष्ठक सामग्री एखन धरि लिखल-छापल जा चुकल अछि। एहि मे कबीर इहो कहने छथि जे 'हरि मरिहें तं हमहूं मरिहें/ हरि न मरै हम काहे मरिहें?' कते विकराल शर्त्त छैक! स्वयं परमात्मा मरि जाथि तखनहि टा हम मरि सकैत छी! एहि पदक अंतिम पाँती मे किछु समाधान भेटैत अछि—'कहै कबीर मन मनहि मिलावा/ अमर भये सुखसागर पावा।' स्पष्ट अछि जे परमात्मा संग एकात्म भ' जेबाक ई ध्यानानुभव थिक। ई जे अमरता छैक जे सद्य:वर्तमान अस्तित्व-आधारित थिक। कोनो खास क्षणक अनुभव थिक ई, कारण दोसर दिन जँ एहन अवस्था घटित नहि होइत छैक तं कबीरक व्यग्रता देखबा योग्य होइत छनि। ध्यानक अनुभव राखनिहार लोक एहि बात कें बेहतर बूझि सकैत छथि।

एहू बात कें बिसरबाक नहि चाही जे सामाजिक लक्ष्यक बिना कबीरक लेल अध्यात्मक कोनो अर्थ नहि छलनि। हरेक अंधविश्वास, पुरोहितवाद, मुल्लावाद सँ ओ ढाही लेने घुरैत छलाह। मृत्यु तं जहिया होइतनि तहिया, जीबैत जी तं जेना ई सामाजिक लक्ष्ये हुनका लेल करबा योग्य काज छल। की कबीर हिन्दू-मुस्लिम एकताक पैरोकार छला? एहि प्रश्न पर पुरुषोत्तम अग्रवाल कहैत छथि—'हर तरह का सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक सत्तातंत्र जस का तस दनदनाता रहे, लोग विवेक को तिलांजलि देकर अस्मिता, आस्था और भावना की राजनीति के शिकार बने रहें, और उनकी एकता के दावे किये जाते रहें-ऐसी एकता कबीर नहीं चाहते थे।'[26]

ध्यान देबाक बात थिक जे बांकी जे विवाद सब छल से हुनकर कर्मभूमिये कें ल' क' छल। ओहुना पोखरि-कात मे फेकल बच्चाक रहस्य-कथा के कहि सकैत अछि जे ओ कोन गामक छल! इहो हमरा लोकनि कें सही-सही पता नहि अछि जे पोखरि-कात मे फेकल बच्चा बला किंवदन्ती मे कतय धरि यथार्थता छै! महापुरुषक बचपनक कथा प्रायश: बाद मे गढ़ल जाइत छैक। विपरीत परिस्थिति

मे पलल-बढ़ल लोक जखन सफल भ' जाइत अछि तं ओकर बचपनक खिस्सा गढ़ि लेल जाइत छैक। कर्मभूमि तं कबीरक मगहर आ काशी रहबे कयल हेतनि, सुभद्र झा ई संभावना प्रस्तावित केलनि जे मिथिला सँ भागि क' कबीर मगहर गेला आ तकर बाद काशी। लम्बा आयु धरि सक्रिय रहलाक बाद जखन हुनका लगलनि जे आब ओ ढलान पर छथि, घुरि क' ओ मगहर तँ जरूर आबि गेला, मुदा मिथिला नहि एलाह। मिथिला हुनका लेल सुकूनदेह नहि भ' सकै छलनि। हुनकर पद सभक कालक्रमानुसार परिशीलन करब जरूरी छैक, तखने हमरा लोकनि बुझि सकैत छी जे कखन ओ कोन तरहें सक्रिय छला, आ अन्त मे केहन कविता लिखलनि। अपना कें कवि नहि कहितो ओ महान कवि छला। हुनका निर्माण मे मिथिलाक योगदान नगण्य रहल, मुदा कबीरक चित्त सँ ओ (मिथिला) नहि उतरि सकल। हुनका बाद जे चारि टा आचार्यगादी निर्मित भेल ताहि मे सँ एक टा मिथिला-क्षेत्र मे छल। हुनकर साक्षात् शिष्य लोकनि कें एहि सत्यक जानकारी रहल हेतनि आ एहि क्षेत्रक तहियाक लोक कें सेहो, जिनका कि स्वयं कबीर बतौने हेथिन। एक भूतपूर्व अनाथ सही-सही कतय के छल, ई बात निर्विवाद रूप सँ आइ के कहि सकैत अछि? तखन तं आस्था आ विश्वास संबल, जे कि स्वयं कबीर कें कहियो पसिप नहि रहलनि।

सुभद्र झा जाहि मार्मिक ढंग सँ स्वीकार क' रहल छला, ओ अद्‌भुत छल। मैथिल ब्राह्मण भ'क' ओ गछि रहल छला जे मिथिला मे हुनका संग ज्यादती भेलनि। कबीरक निर्माण मे मिथिलाक योगदान नगण्य छैक से स्वयं हुनको सामने स्पष्ट छलनि मुदा मिथिला मे जे कबीर-पदक पोथा सब उपलब्ध छल तकर पाठ उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि मे भेटल पद सब सँ भिप छल। एतय धरि जे ई पद सब बाहरोक कैकटा संकलन मे तद्वते पाओल जाइत छैक। ई के कहि सकैत अछि जे अमुक ठाम भेटल पोथाक पाठ विशुद्ध छैक आ तमुक ठाम भेटल के भ्रष्ट! ई कहब कबीरक वास्तविक महत्वक प्रति अनवधानता होयत। कबीर जनतेक उठाओल कवि थिकाह। वैह हुनका एतय धरि पहुँचौलकनि। जनताक स्मृति पर भरोस करबाक चाही। तें हमरा ई बात नीक लगैत अछि जे पुरुषोत्तम अग्रवाल आन कवि द्वारा कबीरक नाम पर लिखल गेल पद कें 'कबीरक उपरचना' मानलनि अछि। ओतय छथि तं कबीर अवश्ये, मुदा बीज-रूप मे छथि। मुदा इहो बात ठीक-ठीक के कहि सकैत अछि जे ओहि उपरचना मे सँ बहुतो वास्तव मे कबीरेक लिखल होइन। कबीर कोनो लीखि क' तं नहि रखैत छला। घुमैत रहै छलाह, पद जोड़ैत रहै छला। सही माने मे ओ जनताक कवि छलाह। हुनक कहल पद कें जनता कोना संरक्षित क' रहल अछि, पात पर लिखि क' आ कि मोनक सिलेट पर, स्मृतिक कोष मे संचित क' क',

कबीर कें कोन मतलब भ' सकैत छलनि? जाहि इलाका मे जा क' जे पद लोकप्रिय भेल, ओ ओहि इलाकाक स्मृति मे बसि गेल।

एक ठाम जँ कबीर ई कहैत छथि जे 'तब जाना जब जीवत मूवा' तं दोसर ठाम ओ इहो कहैत छथि—'हम न मरब मरिहें संसारा/हमका मिलल जियावनहारा।' ओतय जँ जीवित मृत्युक प्रसंग अछि तं एतय मरियो क' नहि मरबाक संकल्प छैक। मनुष्य एक्कहि संग दू गोट संसारक वासी होइत अछि, एक तं ई भौतिक संसार, जे दृश्यमान अछि आ जकरा आमतौर पर सृष्टि कहल जाइत अछि। दोसर मनुष्यक मानसिक संसार, जाहि मे आन बहुतो वस्तुक अतिरिक्त धर्म आ अध्यात्म बसैत अछि। मानसिक संसारक व्याख्या मने भौतिक उपकरण ल'क' जतेक क' लेल जाय, अंतिम रूप सँ ओहि बारे मे कथन करब हमेशा गलत हेबाक संभावना सँ भरल रहैत अछि। संतकवि कबीरक जे मानसिक निर्मिति हमरा लोकनि लग मे स्पष्ट होइत अछि, तकर एक चित्र डॉ. विद्यानिवास मिश्र एहि शब्द मे बनबैत छथि—'कभी उन्हें लगा कि सांई के घर जाने की तैयारी करनी है; कभी लगा कि सांई से बिछुड़न असह्य हो रही है, कभी लगा कि हमारी एक पीड़ा में सब पीड़ित हैं। कभी लगा, मैं अकेला पड़ गया हूं। सबकी पीड़ा में डूबकर अपने में सबको समाकर अकेला पड़ गया हूं। यह यात्रा अनवरत चलती रही। जब लगा कि अनुभव के उन्हें साझीदार चाहिए, तो उन्होंने साधुओं को, सन्तों को पुकारा, कभी लगा कि साझीदारी के लिए कोई सामने आ नहीं रहा तो अवधूत को, भीतर के अवधूत को पुकारा। कभी उन्हें लगा कि ऐसा सामान्य अनुभव है, साधारण से साधारण के लिए लभ्य है, तो लोगों को पुकारा। अलग-अलग पुकार की अलग-अलग भाषा है। साधुओं व सन्तों के सम्बोधन वाली भाषा बराबरी वाले व्यवहार की भाषा है, अवधूत सम्बोधन वाली भाषा भीतर डूबने की भाषा है। लोगों को सम्बोधित भाषा लोक-व्यवहार की लेन-देन की भाषा है, और एक भाषा और है जहाँ सम्बोध्य कोई नहीं है, कबीर और उनके सम्बोध्य, उनके प्रियतम एक हो गए हैं। वहाँ भाषा अत्यन्त सरल हो गयी है। कबीर की रहस्यानुभूति निर्गुण होने के कारण असम्भव है।'[27]

डॉ. सुभद्र झाक एक अन्य तर्क कबीरक एहि कथन कें ल'क' अछि जे 'बोली हमरी पूरबी, हमें लखा नहि कोय/ हमको तो सोई लखै, धुर पूरब का होय।' सुभद्र झाक कहब छनि जे एहिठाम 'पूरबी'क अर्थ मैथिली अछि, पूर्व देसक भाषा। हिन्दीक अध्येता लोकनि एहू तर्क कें गछै लेल तैयार नहि भेलाह। पारसनाथ तिवारी लिखलनि जे प्राचीने काल सँ मध्यदेश सँ पूर्व दिशा मे बाजल जाइ बला भाषा सब कें 'पूर्वी' कहल जाइत छल।[28] तात्पर्य जे मैथिलीक संग-संग आनो अनेक पूर्वी भाषा एकर दावेदार भ' सकैत अछि। एहि तरहें प्रकारान्तर सँ ओ मैथिलीक दावेदारी स्वीकारे

केलनि। सुभद्र झा मुदा, बेस तर्कसंगत ढंग सँ अपन बात रखने छलाह। हुनक कहब छलनि जे दिशाक निर्धारण सदति सापेक्ष होइत अछि आ बजनिहार कोन स्थान पर ठाढ भ' क' कहि रहल अछि एकर बेस महत्व रहैत अछि। कबीर काशी मे रहैत छलाह। काशी मे रहैत जें कि धुर पूरब के बात ओ कहलनि, तं एकर तात्पर्य धुर पूरब मे अवस्थित मिथिलाक भाषा मैथिली होयब संभावित अछि। अर्थात्, भोजपुरी क्षेत्र सँ बाहर।[29]

कबीरक काव्य-भाषा जें कि गँहीर आध्यात्मिक निहितार्थ लेने होइत छलनि, तें एहू साखीक अर्थ आध्यात्मिके आधार पर अधिकांश अध्येता करैत गेलाह। तकर अपन अलग औचित्य छैक। कबीरपंथी अध्येता लोकनिक कहब छनि जे कबीरक आशय जें कि पारमार्थिक होइत छलनि तें एकरा बूझब सामान्य सांसारिक व्यक्ति बुतें संभव नहि अछि। कबीर-साहित्यक गहन अध्येता विद्वान परशुराम चतुर्वेदी, कबीरक आन-आन पदक सन्दर्भ सब कें देखैत कहलनि जे पूर्व दिशा द्वारा एहिठाम ओहि मौलिक स्थितिक संकेत कयल गेल अछि जतय जीवात्मा आ परमात्माक बीच कोपहु टा अंतरक अनुभूति समाप्त भ' जाइत अछि। जें कि ई बोध मात्र साधना सँ प्राप्त होयब संभव अछि तें एकरा विरले पुरुष बूझि सकैत अछि।[30] मुदा एहि ठाम एक बेर मोन पाड़ि देबाक आवश्यकता बुझैत छी जे आन कोनो बबाजी जकां कबीर निछच्छ आध्यात्मिक नहि छला, हुनक स्पष्ट सामाजिक लक्ष्य रहनि।

एहि ठाम प्रसंगवश इहो कही जे कबीरक आनो अनेक पद मे पूरब के चर्चा भेल अछि, आ ताहि मे सँ कैकटा स्थानबोधक प्रतीत होइत अछि। उदाहरणक लेल हम एक पद राखय चाहब—'जिउ जल छोड़ बाहर भयो मीना/ पूरब जनम हम, तप का हीना।' पूरब जनम के अर्थ विद्वान लोकनि पूर्वजन्म करैत रहला अछि। ई पद कबीरक अन्तिम समयक पद थिक जखन ओ काशी कें छोड़ि क' मगहर आबि गेल छलाह। एहि पद कें ध्यान सँ देखी तं एतय समस्त प्रमुख शब्द स्थानवाचिये आएल अछि—'तेजल बनारस मति भई थोरी', 'सकल जनम शिपुरी गमाया/ मरती बेर मगहर उठि धाया', 'बहुत बरस तप कीया कासी/ मरन भया मगहर के बासी', 'कासी मगहर सम बिचारी' आदि। प्रश्न अछि, अपन जीवनक समस्त प्रमुख स्थान सभक जतय ओ एके पदक भीतर उल्लेख करैत छथि, ततय पूर्वजन्म कें बीच मे किएक अनितथि? शब्दक वास्तविक अर्थ ओकर सन्दर्भ सँ बहराइत छैक, ई एक सामान्य नियम थिक। सुभद्र झा बेर-बेर कहैत छथि जे काशी आ मगहरक समाने मिथिला सेहो कबीरक जीवन मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छल। इहो पद हमरा एहि कथनक पुष्टि करैत देखाइत अछि। एतबा तं स्पष्ट अछि जे शाक्ते जकां मिथिलाक नाम सँ सेहो कबीर कें भयंकर चिढ़ छलनि, तें ओकर नाम तं नहि लेलनि

मुदा परिचय पूरा खोलि देलनि अछि। मिथिला मे जनमल लोक, कबीरक मतें तप के हीन तं होइतहि अछि। ओ गृहदेवताक पीड़ी निपैत अछि, मंदिर मे जा क' जल ढारि अबैत अछि, बहुत भेल तँ देवी-देवताक गीत गाबि लैत अछि। एहि मे तप कतय छैक? तें जँ कबीर कहैत छथि जे 'पूरब' जनम भेल तें तप के हीन भेलहुँ, तं ई मानबा योग्य बात लगैत छैक। मैथिल लोकनि कें उज्र ई भ' सकैत छनि जे एहि ठाम मिथिलाक निन्दा कयल गेल छैक। मुदा ओहि व्यक्तिक स्मृति मे जँ मिथिलाक निन्दनीय स्मृति छैक तं तकर अहाँ की क' सकैत छी? ओ व्यक्ति तं ककरो बकसै बला नहि छल। मिथिलाक चेतनाहीन जीवनशैली मे बिताओल अपन समयक स्मरण कबीर अपन बुढ़ारी मे एहि शब्दें करैत छथि—'जिउ जल छोड़ बाहर भयो मीना'। माछ कें जेना जल सँ निकालि देल गेल हो आ तखन जीबा लेल बाध्य कयल जाइत हो। कबीरक मैथिली पद सभक अध्येता डॉ. कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—'यदि बोलीक अर्थ मातृभाषा लेल जाय आ पूरबीक बिहारी तं कबीरक जन्मक विषय पर नव प्रकाश पड़ि सकैत अछि।'[31] डॉ. सुभद्र झा यैह करबाक प्रयास कयने रहथि। डॉ. सुभद्र झाक एक तर्क इहो छलनि जे मैथिली मे तं कबीरक पद भेटिते अछि, हुनकर आनो आन प्रामाणिक पद सब मे मैथिलीक स्पर्श देखल जा सकैत अछि। कहले जा चुकल अछि जे हुनका लग जे कबीरपदक पोथा छलनि ताहि मे 100क करीब गीत शुद्ध मैथिलीक छल। डॉ. कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक 'संत कबीरक मैथिली पदावली' जे कि पी-एच.डी. उपाधि लेल डॉ. सुभद्र झाक निर्देशन मे लिखल शोधप्रबन्धक सम्पादित रूप थिक, मे कबीरक पद सभक मैथिली भाषातात्विक अध्ययन सेहो केलनि अछि आ विद्यापति आ कबीरक मैथिली पद सभक तुलनात्मक अध्ययन सेहो। कबीरक मैथिली पक्ष कें बुझबाक लेल ई एक अनिवार्य पुस्तक थिक। विस्तृत विवरण लेल एहि पुस्तक कें देखबाक चाही।

एम्हर, सुप्रसिद्ध वैयाकरण, साहित्यविद् आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक कुलपति डॉ. शशिनाथ झा प्रामाणिक संकलन सभक कबीरपद सब मे मैथिली-प्रयोगक किछु प्रमाण हमरा लिखि पठौलनि अछि—(1) रामक कवन निहोर = एहिठाम संबंधवाचक चिह्न 'क' आएल अछि। (2) आजक काल्हि निस हमें—श्यामसुन्दर दासक संकलन मे ई पद आएल अछि। 'काल्हि' मैथिली शब्द थिक। (3) एक दोसरो उदाहरण ओतहि हुनका भेटलनि—'आज कहै हरि काल्हि भजौंगा, काल्हि कहै पुनि काल्हि/आजहि काल्हि करंतडां, औसर जासि चालि।' (4) सब जग सूता नींद भरि = सूतब मैथिली क्रियापद थिक। (5) कबीरक एक साखी छनि—'रामनाम की पटतरे देबे को कछु नाहि/ क्या लै गुरु संतोषिए हौंस रही मन मांहि।' एहि मे आएल 'पटतरे' शब्दक विश्लेषण करैत ओ लिखलनि—

'पटतर अर्थात् परतर विशुद्ध मैथिली शब्द थिक जकर अर्थ 'सदृश' होइत अछि। आशय छनि जे रामनामक मंत्र जे गुरु देलनि तकर परतर दोसर आन वस्तु हुनका गुरुदक्षिणा मे देबाक लेल किछु छैके नहि।'[32] 'परतर' जकर भिप रूप पटतर वा पटन्तर सेहो छल, के प्रयोग मैथिलीक कवि लोकनि द्वारा कयल जाएब कोन तरहें एक सामान्य बात छल, तकर दृष्टांत लेल शशिनाथ झा कवि भीषम(1500-1600ई.)क लिखल ई पदांश प्रस्तुत केलनि—'ससधर सहस सार बटुराब/ तैयो ने वदन पटन्तर पाब।' तहिना, कबीरक एक पद छनि—'नैया मोरी नीके नीके चालन लागी।' एतय नीक शब्द देखबा योग्य अछि जे कि पूर्णत: एक मैथिली शब्द थिक।

जेना कि डॉ. पारसनाथ तिवारी कहैत छथि, 'कबीर की छाप से न केवल मैथिली में प्रत्युत पंजाबी, मराठी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी अनेक पद मिलते हैं। अत: इसके आधार पर कबीर को किसी प्रान्त विशेष का निवासी सिद्ध करना निरापद नहीं कहा जा सकता। इससे केवल कबीर की लोकप्रियता सिद्ध होती है।'[33] मिथिलाक विद्वान लोकनि कें मुदा एहि सँ बेसी लगैत रहलनि अछि। ओ कबीरक मनोनिर्मिति आ धारणा सब पर बात करैत हुनकर मैथिलत्वक संभावना देखौलनि अछि जाहि पर निष्पक्ष अध्ययन कबीरक अध्येता लोकनि नहि क' सकलाह अछि। डॉ. भंडारी अपन पुस्तक मे विलियम जेम्स डायरक पुस्तक 'कबीर: सिंगर ऑफ द डिवाइन' सँ एक उद्धरण प्रस्तुत केलनि अछि। गूगल बुक्स पर ई पोथी हम देखबो केलहुँ। उद्धरण अछि जे डॉ. सुभद्र झाक लेख 'सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' जखन विलियम डायर पढ़लनि तं हुनकर की प्रतिक्रिया छल। ओ अपन पुस्तक 'सिंगर ऑफ द डिवाइन' मे लिखलनि अछि— 'One recent scholar, seeing how many Kabir manuscripts were in Mithila, tried to prove that Kabir came from Mithila, an effort at least testified to Kabir's influence of Bihar.'[34] डायर अन्त मे जतय 'बिहार' लिखलनि अछि, ततय हुनका 'मिथिला' लिखबाक छलनि। जँ नहियो लिखने छथि तैयो हुनकर भाव तँ मिथिले थिक। अस्सल बिन्दु यैह थिक। सतरहम शताब्दी मे जखन देसक कोनो आन भाग मे कबीर पंथक उदय आ प्रतिष्ठापन भ' रहल छल, तं ठीक ताही काल मे प्रमुखतापूर्वक एम्हर मिथिलो मे भ' रहल छल। विद्यापतिक वास्तविक विकास जेना बंगाल मे ब्रजबुलि कवि लोकनिक द्वारा भेलनि, हुनकर तादृश विकासक मिथिला मे अभाव छल। ओहि तरहें मिथिला मे जाहि कविक वास्तविक विकास भ' रहल छल, से कबीर छला। मुदा मैथिलीक विद्वान लोकनि तकर संज्ञान नहि लेलनि, कारण राजदरबारक हेबाक तं कोन कथा जे ओ ब्राह्मणो नहि छला, सवर्णो धरि नहि। बरु विरोधिये। डॉ. सुभद्र झाक कयल काजक महत्व एहि दृष्टियें बूझल जा सकैत अछि।

कबीरक जाहि पद सब मे मत्स्यमांसभोजी शाक्तक प्रति उत्कट घृणा व्यक्त भेल अछि, तकर भाषा कें द्विवेदी जी 'झकझोरि दैबला भाषा' कहलनि अछि। एकठाम कबीर शाक्त के तुलना कुकूर सँ केलनि, आ कहलनि जे कुकूर जेना व्यर्थ भुकबा मे अपन ऊर्जा खर्च करैत अछि तं ठीक यैह काज शाक्त परनिंदा द्वारा करैए। ई कथन ठेठ मैथिल शाक्तक बारे मे थिक, से चहुंदिस दृश्यमान अछि—'साकत सुनहा दूनो भाई/ एक नींदै एक भौकत जाई।' एक टा मैथिली पद मे कहैत छथि—'बाभन हो, तोहर विकट जनमुआ/ मंदिर जाय बकरबा काटे/रचि-रचि मासु बनाबतु है/ भैंसा काटि ओतहि धय छोड़ा/ तकरहु क्यों नहि खाबतु है।' पितर कें जे ब्राह्मण लोकनि तर्पण करैत छथिन, ताहि पर कबीरक कहब छनि—'जीत पिता कें पानियो ने देलह/ मरल पर उपछै छह पानि/ घर मे बुढ़िया हकन कनै छह/ अपने जाइ छह जगरनाथ/ रामे राम, जीव पड़ल छै माया के जंजाल मे।' गायत्री-सिद्धिक लेल जे जाप कएल जाइत छैक ताहि पर कबीरक कथन छनि—'पंडित होइ के आसन मारे/ लंबी माला जपता है/ अंतर तेरो कपट-कतरनी/ सो भी साहेब लखता है।' देवता, ऋषि आ नररत्न सभक जे पौराणिक चरित्र कबीर कें बूझल भेल छलनि, 'माया के जंजाल' मे ओ समस्त सब कें ओझरायल देखने रहथि। अपना कें आ अपन-सन लोक कें ओ एहि विपदग्रस्तता सँ कतहु नीक अवस्था मे देखि रहल छलाह, यैह दृष्टि हुनका मे आत्मविश्वास भरैत रहनि आ एतहि सँ ओ तेज पबैत छलाह। ओ लिखलनि—'सो चादर सुन-नर-मुनि ओढ़िन/ ओढ़ि कए मैली कीनी/ दास कबीर जतन सै ओढ़िन/ ज्यों की त्यों धर दीनी।' पौराणिक देवी-देवताक चरित्रक मादे हुनकर ई मैथिली पद प्रसिद्ध छनि—

प्रथमहि छलहुँ हम आदि-पुरुष संग तब हम रहलहुँ कुमारि हे
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल मोर बियाह हे
पांच संग रमलहुँ पचीस संग बसलहुँ तीन संग कएलहुँ घरुआर हे
संगहि मे देश-देशाउर घुमलहुँ, एक पुरुष एक नारि हे
साँपिन रूप हम शहर बसलहुँ डँसलहुँ मञे चारू वेद हे
ससुर-भैंसुर मिलि एक मत कएलहुँ अचरज कहलो ने जाइ हे
एक आद्या तीनि रूप धराए छल-मति बुद्धि विस्तार हे
कहए कबीर सबके मन मोहे सन्त कोइ उतरए पार हे।

मुदा, आब एकरा सुभद्र बाबूक अकादमीशियन हेबाक अनुशासन मानी, आ कि हुनकर मैथिलत्वक सीमा जे ओ घरक एक महत् प्रश्नक समाधान तकबाक बदला बाहरक दुनिया लेल एक अरजी-दाबी पेश करब बेसी जरूरी बुझलनि। महत् प्रश्न ई छल जे कर्मकाण्डशासित मिथिला मे एतेक व्यापकताक संग कबीरक मैथिली पदक

भेटब मैथिली साहित्यक लेल कते भारी बात छल। ओ गीत सब मैथिलक एक विशाल संख्याक धार्मिक विश्वासक प्रतिनिधित्व करैत छल। धार्मिक विश्वास ओहि लोकक जीवन-दर्शन आ जीवन-पद्धति मे मूर्त्तिमान रहैक। मैथिली भाषाक साहित्य एकवर्गीय आ एकसम्प्रदायी नहि रहैक, जेना कि अज्ञानतावश वा कि अवमाननावश ओकरा वास्तव मे साबित कयल जाइत रहलैक। ई प्रचलित धारणा मिथ्या रहैक जे मिथिला मे भक्ति आंदोलनक कोनहु प्रभाव नहि पड़लैक। पूरा प्रभाव पड़ल छलैक आ से एक टा सातत्यपूर्ण परंपराक रूप मे जीवित छल। मिथिला मे एतेक पैघ स्तर पर कबीरक मैथिली पद पाओल जेबाक कते-कते निहितार्थ भ' सकैत छल। मुदा, सुभद्र बाबू मैथिल लोकनिक एहि अज्ञानता-निवारणक बदला बाहरक ज्ञानी लोक सब लग अरजी-दाबी पेश करब बेसी जरूरी बुझलनि। फल सामने अछि जे शोध भ' क', पुस्तक छपि क' टेबुल पर राखल अछि आ तकर सभक बिनु कोनो परवाह कयने मैथिली साहित्यक इतिहास ठीकमठीक अपन नाकक सोझे चलल जा रहल अछि।

कमलाकांत भंडारी (सिनुवारा-अरेड़, मधुबनी) डॉ. सुभद्र झाक मार्ग-निर्देशन मे कबीरक मैथिली पद पर शोध केलनि। अपन लेख मे सुभद्र बाबू एहू दिस संकेत कयने छला जे कबीरक मैथिली कनेक्शन पर खोज हेबाक चाही। सुभद्र बाबूक मतक सम्यक पुष्टि भंडारी जी नहि क' सकलाह, कारण विश्वविद्यालय सँ डिग्री लेबाक अपन घोषित-अघोषित अनुशासन होइत अछि। एतबे कम नहि थिक जे अपन प्रबन्ध कें ओ प्रकाशितो केलनि अछि। सुभद्र बाबूक लग मे मिथिलाक कबीरपंथी गीतक पाण्डुलिपि छलनि। एक मोट अध्ययन ओकर ओ कयने रहथि आ इच्छा छलनि जे क्यो एकर विस्तृत अध्ययन करय। भंडारी जीक शोध-यात्रा मे ओहू सँ महत्त्वपूर्ण एक पाण्डुलिपि 'आदिसंदेशा सन्त कबीर' बरहीटोल, अरेड़ मे सहजयोग सत्संग केन्द्रक महात्मा मुनीन्द्र साहेब लग मे भेटलनि जाहि मे सैकड़ो मैथिलीपद छल। एकर अतिरिक्तो, आन-आन मठक पोथा सब सँ आ मौखिक स्रोत सँ ओ 'विशुद्ध मैथिली पद' जतबा इकट्ठा क' सकलाह, तकर संख्या सेहो 200 सँ अधिक अछि। इन्टरनेटक सोशल मीडिया पर जे कबीरक सैकड़ो आन मैथिलीपद उपलब्ध छैक, से अलगे अपन संख्या रखैत अछि। कबीरक गीत लोकस्मृति के अमिट अंग बनि गेल अछि। आब ई 'लोकगीत' थिक। 'साहेब कबीर गाओल हो' एहि समस्त पद मे, अलग-अलग शब्द मे, भेटैत अछि।

मिथिला सँ बाहर जे कबीर-पदक संकलन भेल, से पद सब तीन प्रकारक अछि—दोहा, मुक्तक आ गीत। गीत कें ओतय पद कहल गेलैक अछि आ नाम देल गेल अछि—साखी, रमैनी आ पदावली। पहिनहि कहि आयल छी जे दोहा वा कोनो वर्णिक-मात्रिक छन्द मैथिली लोकभाषाक काव्य-माध्यम नहि रहलैक। जे छल से

गीत मात्र छल। सिद्ध लोकनिक कविता कें हमरा लोकनि राग मे निबद्ध लिखल पाबैत छी। ई देसी राग सब थिक। ठीक यैह प्रवृत्ति विद्यापतिक गीत-लेखन आ प्रतिलिपीकरण मे अपनाओल गेल अछि। मिथिला सँ बाहर जे कबीरक गीतावली भेटलनि अछि, ओहू मे रागक उल्लेख पाओल गेल अछि। मुदा, मिथिला मे प्राप्त गीतावली सब मे से नहि अछि। डॉ. भंडारी कबीरक मैथिली पदावली कें आठ भाग मे विभाजित केलनि अछि—1. मंगल 2. सोहर 3. झुम्मरि 4. लगनी 5. बसन्त 6. समदाउन 7. निर्गुण 8. सबद। पाण्डुलिपि सब हुनका एही रूप मे भेटल रहनि। आइ जे ई पद सब लोक मे प्रचलित अछि सेहो एही रूप मे अछि। लोकगीतक वर्णित भास सब मे ई पद सब गाओल जाइत अछि। लोकगीतक भास कबीरपदक पहचान बनि गेल अछि। एतेक धरि जे डॉ. सुभद्र झा जे जर्नल मे अपन कबीर-विषयक लेख प्रकाशित करौने छलाह आ तकरा संग हुनकर दसटा मैथिली पद देने छलखिन, ताहि मे दू टा मंगल, दू टा सोहर, एक टा झुम्मरि, एक टा समदाउन, तीन टा भजन आ एक टा चेतौनी (निर्गुण) रहैक। सुभद्र बाबूक संकलनक समदाउन एहि प्रकारें अछि—

मिलि चलु सखिया दिवस भेल रतिया चित भेल जग सञे उदास
पाँच भइया के एक बहिनि दुलहिन, निस दिन फिरय उदास
सासुर हमरो दुरि बसु साजन, नैहर नहि भेल वास
लालेलाले डोलिया सबुजी रंग ओहरिया लागि गेल बतीसो कहार
गोड़ लागु पैयाँ पड़ु अगिला कहरिया तिल एक डोली बिलमाए

मिथिलेतर संकलन सब मे कबीरक पदावलीक खंड रागक नाम पर कएल गेल अछि यथा—राग गौड़ी, रामकली, आसावरी, केदार, ललित, सारंग, मलार, घनाश्री आदि। ओतय कबीरक जे रमैनी छनि सेहो दुपदी, चौपदी, सतपदी, अष्टपदी, वाराहपदी आदि प्रकार मे विभाजित अछि।

लोकगीत पर विचारक प्रसंग मे ई आबि चुकल अछि जे 'लोक'क रचना-संसार मे कोन-कोन करतब होइत रहैत छैक। कतोक बेर एहन होइत छैक जे शिष्टसाहित्यक कोनो रचनाकार लोक-प्रसिद्धि पेबाक लेल अपन रचना लोक मे छोड़ि दैत छैक। किछु समय धरि लोक ओकरा चलबैत रहैत छैक, यथासंभव 'प्रयोग' सेहो करैत रहैत छैक। अन्ततः एक समय ओ लोक सँ निष्कासित क' देल जाइछ आ अपन अस्तित्व शिष्ट साहित्ये मे जा बचा क' राखि पबैत अछि। मुदा एकर ठीक विपरीतो होइत छैक जखन 'शिष्टसाहित्य' कहेबा दिस अग्रसर रचना कें ओ अपना बीच घीचि अनैत अछि। ओहि पर प्रयोग-दर-प्रयोग करैत अछि आ अपना प्रयोजन लेल उपयुक्त बना लैत अछि।

कबीरक साहित्य कें मिथिला मे कहियो शिष्टसाहित्यक बीच स्थान नहि देल

गेल। कबीरपंथी महात्मा लोकनि कें लोक-समाज मे स्थान अवश्य छल, सब दिन सँ, कारण से जँ नहि रहैत तँ मिथिलाक सैकड़ो कबीरमठ मे हजारो बीघा जमीन जमींदार नहि द' सकैत छलाह। लोक-समाज मे हुनका सभक प्रभाव रहनि ततबे नहि, एहि प्रभाव कें जमींदारो अनुभव क' पबैत छल हेताह। मुदा, ओहि समाज मे बांकी की कोना होइत छैक ताहि पर कान-बात देब मैथिली साहित्यक इतिहास मे जरूरी नहि मानल गेल। कारण धार्मिक मताग्रह छल, पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि।

शिष्टसाहित्य हुनका छाँटि देलकनि मुदा लोकसाहित्य जिया क' राखि लेलक, ई कबीरक मिथिला-कनेक्शन के एक टा नि:सन्दिग्ध प्रमाण भ' सकैत अछि। तुलसी आ सूरदासक भणिता भने सगुण भक्तिगीत सब मे चलि अबैत हो, कबीर-सन के स्वीकार्यता हुनका लोकनि कें मिथिला मे कहियो नहि रहलनि। कबीर-पंथक चारि गोट सम्प्रदाय—छत्तीसगढ़ी, कबीरचौरा, धनौती आ जागू मे सँ एक टा—जागू शाखाक तँ मुख्यालये मिथिला-क्षेत्र मे छल, हमरा लोकनि देखैत छी जे बाँकी जे तीन टा शाखा अछि, ताहू सभक अनुयायी मठ मिथिला मे रहलैक। एखनहु अछि। कबीरक मिथिला-कनेक्शन के ई एक टा आर आधार मानल जा सकैत अछि। बोधगया मे जेना बौद्ध मतानुयायी अनेको देश अपना लेल परिसर माँगि अपन-अपन मठ बनौने अछि, से एही आशयक एक भिप उदाहरण भ' सकैत अछि। भंडारी जी लिखने छथि—'सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक संपुष्टि एहू तथ्य सँ होइत अछि जे मिथिला मे सन्त कबीरक प्रचार जन-जन मे अछि। ब्राह्मणेतर मैथिलवर्ग मे कबीरपन्थक विशेष प्रचार रहबाक कारण एकर विशिष्ट अध्ययन एखन धरि नहि भ' सकल अछि, तथापि मिथिलाक एहन कोनो व्यक्ति नहि भेटताह जे सन्त कबीरक निर्गुण भजन सँ परिचित नहि होथि। कबीरपंथ मिथिला मे ततेक प्रचारित भेल जे नहि केवल मिथिला मे कबीरपंथी मठक स्थापना ओ विकास भेल, प्रत्युत अनेक स्थलक नाम कबीरक आधार पर राखल गेल यथा कबीरपुर, कबीरचक इत्यादि। सम्प्रदायक रूप मे कबीरपंथी होइतहु एहि ठामक कबीरपंथी सामान्य मैथिल जीवन व्यतीत करबाक कारणें गामघर मे देखार नहि बुझना जाइत छथि, मुदा आचार-पवित्रता ओ दासत्व तथा कबीरमतक प्रति निष्ठा एहि ठामक कबीरपंथी मे विशेष रूपें देखल जाइत अछि।'[35]

मध्यकालीन भारतीय भक्ति आन्दोलन मे कबीरक कतेक महान योगदान रहनि, ताहि पर पैघ-पैघ विद्वान आलोचक लोकनि प्रभूत लेखन क' चुकल छथि। मैथिली मे एहि सब कथूक सर्वथा अभाव भेटैत अछि, तकर कारण स्पष्टे अछि। 1957 मे डॉ. सुभद्र झा ई आशा व्यक्त कयने रहथि जे विद्वान लोकनिक ध्यान एहि दिस आकृष्ट हेतनि। यैह आशा डॉ. कमलाकांत भंडारी 1998 मे व्यक्त कयने रहथि। आशा बन्ध्या

साबित होइत रहल अछि। आइयो हम भविष्यक विद्वान सँ यैह आशा करैत छी।

हजारीप्रसाद द्विवेदीक अनुसार, भारत मे इस्लामक आगमन एक अभूतपूर्व घटना छल। एहि सँ पहिने कतेको जाति हूण, पुलिंद, पुक्कस, शुंग, यवन, खस, शक आदि आबि चुकल छल आ भारतीय समाज ओकरा सब टा कें कालान्तर मे अन्तर्भुक्त क' चुकल छल। तखन इस्लामक आगमन अभूतपूर्व किएक ? द्विवेदी जी कहैत छथि—'भारतीय संस्कृति एतेक-एतेक अतिथि कें अपना सकल, तकर कारण छल जे शुरुहे सँ एकर धर्म-साधना वैयक्तिक रहल अछि। प्रत्येक व्यक्ति कें अलग सँ धर्मोपासनाक अधिकार छैक। झुंड बान्हि क' उत्सव भ' सकैत अछि, भजन नहि। प्रत्येक व्यक्ति अपन कएल कर्मक जिम्मेदार स्वयं अछि।'[36] तें कोनो व्यक्ति जँ कोनो देवताक वा पद्धतिक वरण करैत अछि तँ ओकरा लेल एक स्वीकार-भाव रहलैक। देवता जँ चाहैत होथि जे हुनकर पूजा कोनो विशेष जातियेक हाथें कराओल जाय तँ एहू मे आपत्ति नहि रहलैक। ब्राह्मणो जँ मातंगी देवीक पूजा करय चाहथि, आ विधान हो जँ मातंगीक पूजा मातंगे (चाण्डाल) क' सकैत छथि, तँ हुनके माध्यम सँ करबाओल जायत। ग्रहण मे दान पेबाक अधिकारी डोमे रहताह। एहि तरहें समस्त जातिक लेल एक स्थान एहि ठामक संस्कृति मे नियत क' देल गेल छलैक। इस्लाम अभूतपूर्व एहि दुआरे छल जे ओ कोनो 'धर्म' नहि, 'मजहब' छल, संघटित धर्म-मत। एहि ठाम धर्म-साधना व्यक्तिगत नहि, समूहगत होइछ आ धार्मिक आ सामाजिक विधि-निषेध एक-दोसर संग गूथल रहैत अछि। द्विवेदी जीक शब्द अछि—'मुसलमानी समाजक विश्वास छल जे इस्लाम जाहि धर्म-मतक प्रचार कयने अछि, ओकरा स्वीकार क' लेबैए बला व्यक्ति टा अनंत स्वर्गक अधिकारी अछि, जे एहि धर्म-मत कें नहि मानैत अछि, से अनंत नरक मे जेबाक लेल बाध्य अछि। भारतवर्ष कें एखन धरि एहन मत सँ पाला नहि पड़ल छलैक। ई कहियो विश्वास नहि क' सकैत छल जे एहनो कोनो धर्म-मत भ' सकैत अछि जे आन धर्म-मत कें नष्ट करब, अर्थात कुफ्र तोड़ब, अपन परम कर्त्तव्य मानैत हो।'[37] तें इस्लाम जखन भारत आएल आ हरेक संभव साधनक उपयोग करय लागल तँ 'किछु दिनक लेल भारतवर्षक समन्वयात्मक बुद्धि कुंठित भ' उठल। ओ विक्षुब्ध-सन भ' उठल। किंतु विधाता कें ई कुंठा आ विक्षोभ पसिप नहि छलनि।'[38]

इस्लामक आगमन सँ पूर्व भारतवर्षक एहि विशाल जनसमूहक कोनो एक नाम नहि छल। आब ओकर नाम 'हिन्दू' पड़ल। हिन्दू अर्थात् भारतीय, गैरइस्लामी मत। एहि जनसमूह मे अनेकानेक धर्म-मत छल—ब्रह्मवादी, कर्मकाण्डी, शैव, वैष्णव, शाक्त, स्मार्त, आओरो अनेक, हजारो। परंपराप्राप्त मत सभक एक जंगल ठाढ़ छल जाहि मे सँ रास्ता बहार करबाक छल। स्मार्त पंडित लोकनि एही दुष्कर

कार्य कें केलनि। मुदा आब जे स्वरूप सामने आयल ओ आचार-प्रधान धर्म छल। तीर्थ, व्रत, उपवास आ होमाचारेक परंपरा आब ओकर केन्द्रबिन्दु छल। ओम्हर सिद्ध आ नाथपंथी लोकनि एहि सब कथूक कते प्रबल विरोधी छला आ बादो मे निर्गुण देवता (शिव?) तत्त्वक अनुयायी रहथि, एहि सभक किछु झलक पहिने आबि गेल अछि। दोसर दिस, इस्लामक भीतर सँ एक धर्म-मत फूटि बहरेलैक जे सूफी छल, हुनका लोकनि कें भारतीय साधना संग कोनो आपत्ति नहि छलनि, ने कोनो अनचिन्हपन। हिनका सभक मार्ग प्रेम-मार्ग छलनि। द्विवेदी जी लिखैत छथि—'देश मे पहिल बेर वर्णाश्रम-व्यवस्था कें एक अननुभूत विकट परिस्थितिक सामना करय पड़ि रहल छल। एखन धरि वर्णाश्रम व्यवस्थाक क्यो प्रतिद्वन्द्वी नहि छल। आचारभ्रष्ट व्यक्ति समाज सँ अलग क' देल जाइत छल। ओ भने अपन अलग समाज बना लियय, आ एहि तरहें सैकड़ो जाति-उपजाति प्रचलन मे आबि जाइक, मुदा वर्णव्यवस्था अपन गति मे चलैत रहैत छल। आब सामने एक जबरदस्त प्रतिद्वन्द्वी मजहब छल, जे प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति कें अंगीकार क' लेबाक लेल बद्धपरिकर छल।'[39]

कहब आवश्यक नहि जे एहि नवागत प्रतिद्वन्द्वीक सामना स्मार्त्तधर्म तँ नहिमो क' सकैत छल, योगमार्गीय निर्गुण साधना सेहो एहि मे सक्षम नहि छल, ने प्रेममार्गी सूफी मत। ठीक एहने समय मे भक्ति आन्दोलनक आरंभ भेल छल। ग्रियर्सनक शब्द मे कही तँ 'बिजलौकाक चमक जकाँ एहि समस्त धर्ममतक अन्धकारक बीच मे एक वस्तु चमकि उठल रहैक। ओ भक्तिक आन्दोलन छल।'

ई भक्ति दू टा रूप लए प्रकट भेल—पौराणिक अवतार सब कें केन्द्र क' क' सगुण भक्ति आ योगमार्गीय निर्गुण परब्रह्म कें केन्द्र बनाक' निर्गुण भक्ति। पूर्व प्रचलित बाह्याचार (कर्मकाण्ड) सँ सगुण भक्ति कोना अलग छल? बाह्याचारक शुष्कता कें ई आंतरिक प्रेम सँ सराबोर क' रसमय बनौलक। निर्गुणमत बाह्याचारक निषेध पर बल देलक, जखन कि आंतरिक प्रेम सँ सराबोर करबाक गुण ओहू मे ओहिना रहैक। सगुणक बाट शास्त्र आ श्रद्धाक बाट रहैक तँ निर्गुणक अनुभव आ ज्ञानक। प्रेम मुदा दुनूक ध्येय, शुष्कता दुनू कें अग्राह्य, आंतरिक प्रेमनिवेदन दुनू कें अभीष्ट, अहैतुक भक्ति दुनू कें काम्य। सगुण भक्त लोकनिक लेल एना क' सकब कतेक भारी छल से एही सँ बूझल जा सकैत अछि जे 'समस्त शास्त्रक प्रेम-भक्ति-मूलक अर्थ करबा मे हुनका लोकनि कें नाना अधिकारी आ नाना भजनशैली सभक आवश्यकता स्वीकार करय पड़लनि, शास्त्रग्रन्थ सभक तारतम्यक से कल्पना करय पड़लनि। यद्यपि अन्त मे आबि क' हुनका भागवत महापुराणे कें सर्वप्रधान प्रमाणग्रन्थ मानय पड़लनि।'[40]

कबीरक रस्ता मुदा एहि सब कथूक विपरीत छलनि। द्विवेदी जीक शब्द मे—

'हुनका सौभाग्यवश सुयोग सेहो बड़ नीक परि लागल रहनि। जतेक जे कोनो मार्ग विहित छल संस्कार पड़बाक, ओ सब टा हुनका लेल बप छलनि। मुसलमान भइयो क' ओ असल मे मुसलमान नहि छलाह, हिन्दू भइयो क' हिन्दू नहि, साधु भइयो क' साधु (अगृहस्थ) नहि, वैष्णव भइयो क' वैष्णव नहि आ ने योगी भइयो क' योगी। ओ जेना भगवानेक घर सँ सब सँ न्यारा बना क' पठाओल गेल छला, मानू नृसिंहावतार—ने पशु न मानव। सगुण साधक लोकनि सब कथू कें स्वीकार क' लेने छलाह, कबीर ओहि सब कथू कें त्यागि देने रहथि। प्रथम श्रेणीक भक्तक महिमा ओकर अथक परिश्रम आ अव्यय धैर्य मे होइत छैक, कबीरक महिमा हुनकर उत्कट साहस मे छनि।'[41]

कबीरक मैथिली पदावली

कबीरक कविताई के जे कोनो विशेषता आन-आन ठामक अध्येता लोकनि लक्ष्य केलनि अछि, ओ सब टा विशेषता सब हुनक मैथिली पद मे सेहो पाओल जाइत अछि। कबीर एक बहुत पैघ लक्ष्य ल' क' चलल छलाह, ओहि ठाम निश्चयत: भाषाक प्रश्न दोयम छल, मूल चिन्ता मानवताक छलैक। आचार्य रामनन्दन दास लिखने छथि—'युगीन परिस्थिति सँ बाध्य भए सन्त कबीर कें भाषिक वि शृंखलता कें अपनाबए पड़लनि। ओ समय मुसलमानी सत्ताक छल। विद्यालय-पुस्तकालय नष्ट क' देल गेल छल। संस्कृतेतर भाषा अपनेबाक अतिरिक्त दोसर कोनो चारा नहि छल। यैह सोचि क' कबीर मध्यममार्गीय हिन्दी भाषा कें अंगीकार कयने हेताह जाहि मे संस्कृत, फारसी, बांग्ला, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मगही, मैथिली, गुजराती, इत्यादिक समावेश छल। संत कबीर कविक रूप मे तँ आयल छलाह नहि, अतएव ओ जनसाधारण कें मुक्ति दिअयबाक हेतु ओकरा बुझबा योग्य भाषा कें अपनौलनि।'[42]

कबीरक मैथिली कविता मे यद्यपि लोक-समाजक हबगब सबतरि बनल रहैत अछि, मुदा ओ अपन मूल अभिप्राय मे अद्‌भुत क्रांतिकारी अछि। जे क्यो हुनका समन्वयवादी वा समन्वयकारी सुधारक बुझैत छथि, ओ सम्यक नहि छथि कारण कबीरक बाट कौखन समझौताक बाट नहि भ' सकैत छल। ओ तं बाह्याचारक समस्त जंजाल आ संस्कार कें काटि-काटि खसौलनि। सब प्रकारक बाहरी धर्माचार कें अस्वीकार करबाक साहस, से चाहे शासित हिन्दू धर्मक मामला मे हो कि शासक मुसलमानक मामला मे, ई कोनो साधारण साहसक बात नहि छल। रूढ़ि आ कुसंस्कारक विशाल वाहिनीक संग आजीवन ओ जूझैत रहलाह। कमजोर स्नायुक व्यक्ति एतेक भार बरदास्त नहि क' सकैत अछि, जकरा अपन मिशन पर अखंड विश्वास नहि हो से तँ कदापि एहन उद्दाम साहसी नहियें भ' सकैछ— ई बात कहैत द्विवेदी जी

लिखलनि अछि—'जातिगत, कुलगत, धर्मगत, संस्कारगत, विश्वासगत, शास्त्रगत, सम्प्रदायगत बहुतेरो विशेषताक जाल कें छिन्न कइये क' ओ आसन तैयार कएल जा सकैत अछि जतय एक मनुष्य दोसर सँ एक मनुष्यक हैसियत संग मिलि सकय। जाधरि ई नहि भ' जाइछ, अशांति रहत, मारामारी रहत, हिंसा-प्रतिस्पर्द्धा रहत। कबीरदास एहि महती साधनाक बीज-वपन कयने छला। फल की भेल, से प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहि अछि। महिमाक एकमात्र कसौटी सफलता नहि थीक।'[43]

कबीर ओहि पांडित्य कें व्यर्थ बुझैत छलाह जे मनुष्य कें जड़ बना दैत छैक आ ओ केवल ज्ञानक भार उघने फिरैत अछि। पंडित लोकनि पर हुनक कटाक्ष बहुतो ठाम अत्यन्त बेधक भाषा मे प्रकट भेल अछि। प्रेम, भगत्प्रेम कें ओ सर्वाधिक मूल्यवान बूझथि आ जे कथू एहि मार्ग मे बाधक होइत छल, कबीर तकरा पर प्रहार केलनि। अपन एक पद मे ओ कहैत छथि—

अवधू, अमल करय से गाबए।
आंधर हाथ लेअ कर दीपक, करि परकास देखाबए
अओरन आगे करए चांदना आपु अंधेरे धाबए।
आंधर आप आंधर दस गोहने, जग मे गुरू कहाबए
मूल महल के खबर न जानए, अओरन को भरमाबए
लागि आगि जरए घर आपन, मूरख घूर बुताबए
पढ़ि गुनि कए जे पंडित भूलए, ओकहि कओन समुझाबए।।

अपन एक आन पद मे ओ कहैत छथि जे पंडित कें किछुओ सत्य नहि बुझल रहैत छैक, ओ वस्तुत: मूर्ख होइत अछि—

सोहं सोहं सुनि लेहु साजन सोहं बसए कओने देश हे
जे सतगुरु मोहि सोहं लखाओत होएब मञे तनिकर चेरि हे
कायानगर ओ सोहं बसतु हए हृदय पएं करए निवास हे
तों मूरख कछु मरम ने जानहु सोहं तोहरे पास हे।

कतहु-कतहु तँ ओ पंडित सँ प्रश्न पूछि-पूछि क' हुनका हलकान कयने रहैत छथि। एहन पद सब मे हुनक रहस्यवादक मरम कें देखल जा सकैछ—

बुझु बुझु पंडित मनचित लाए, कबहु भरल बहए कबहु सुखाए
खन उगए खन डूबए खन आह, रतन न मिलए पाबए नहि थाह।

तीर्थ, व्रत, वेदपाठ, अवतारोपासना, कर्मकाण्ड, पवित्रता-ग्रंथि (अस्पृश्यता)—ई समस्त कबीरक दृष्टि मे निघेंस छल। ओ लिखलनि—

मानुष जनम सुधारहु साधो, धोखे काहे बिगाड़हु हो।
तीरथव्रत आओर जपतप संजम, जे करनी मति भूलहु हो

करम फन्द मे जुग जुग पड़बह, फिरि फिरि जोनि मे झुलबहु हो
नहि कछु नहाए ना कछु धोएलह, ना कछु घण्ट बजाबहु हो
ना कहु नेती ना कहु धोती, ना कहु नाचए गाने हो
सिंगी सेल्ही भभूत ओ बटुआ, साँई स्वांग सञे न्यारा हो
कहए कबीर मुक्ति जञो चाहहु, मानहु शब्द हमारा हो।।

केहन मर्मान्तक चोट छैक! जे परमात्मा सकल जगत सँ न्यारा अछि तकरा ठकबाक लेल पंडित तरह-तरह के स्वांग करैत अछि। किसिम-किसिम के रूप बनबैत अछि, तरह तरहक ध्वनि सँ अनघोल कयने रहैत अछि। कबीर अपन बात मानबाक अनुरोध करैत छथि। आत्महितक बात रहितय तं पंडित मानियो जइतथि, मुदा ओ तं पुरहिताइक व्यवसायी थिका। एक ठाम कबीर कहैत छथि, प्रेमक रसायन एतेक सहज छैक मुदा तकरो छोड़ि क' मनुष्य बेबाट मे भटकैत अछि, कते दुखक बात थिक!—

अमृत छोड़ि विशय रस पीबए धृग धृग तिनकर ताई
हरी बोल की कोरि तुमड़िया सब तीरथ करि आई
जगन्नाथ के दरसन करिकए अजहु न गेल कड़ुआई
जइसन फल उजाड़ के लागी, बिन स्वारथ झड़ जाई।।

सही माने मे तीर्थ तं वैह भेल जतय गेने व्यक्तिक जीवन रूपान्तरित भ' जाय। मुदा, विचित्र वंचनाक शिकार छथि पंडित लोकनि, जे 'उजाड़ के फल' फड़ल अपन धर्म-साधना मे देखाइत छनि से वस्तुत: पूर्णत: निस्सार छैक—एहि सँ हुनक मुक्ति (स्वारथ) सिद्ध नहि हेतनि। कतहु कतहु तँ परम शक्तिशाली देवतो लोकनि कें ओ एहि वंचनाक शिकार बतबैत छथि—

ब्रह्मा विष्णु पीबि नहि पाओल
खोजत शंभू जनम गमाओल
सुरत निरत कर पिबए जे कोई
कहए कबीर अमर होए सोई।

हँ, मुदा कबीर ई बात बता देब नहि बिसरैत छथि जे जाहि निष्कर्ष पर ओ पहुँचला अछि से हुनकर कठिन श्रम सँ अर्जित अनुभव थिक—

तीरथ बरत मे ढूंढ़ि हम अयलहुँ
कि बुझए वेदक सोर
सत शब्द सञे परिचय भेल
घटल जे मनकी जोर।

सुरत निरत (आध्यात्मिक अनुभूति) के बेर-बेर चर्चा कबीर करैत छथि।

ओकरा सगुण-निर्गुण आदि मे सँ कोनो विशिष्ट नामें अभिहित करब निरर्थक थिक कारण ने तँ ओ सगुण मे अविद्यमान अछि, ने निर्गुण मे असूचितव्य। कबीरक कविता मे ओहि अनुभूतिक अनेक दृश्य आएल अछि—

पहुप-वितान बनल एक उत्तम हंसन के विश्राम हे
वृक्षा एक अमृत फल लागल सन्तन के सुखधाम हे
पूरन उदित उदयपुर पाटन सहज ज्योति परकास हे
हीरा-लाल झलामल झलकए अष्टकमल गुरुवास हे
चान नहि उहमा सुरुज नहि उहमा उहाँ नहि वरन-विचार हे
कहहि कबीर जे ओहि घर पहुँचए सेहो जन संत हमार हे

नितान्त आध्यात्मिक अनुभूति कें वाणी मे प्रकट करबाक उद्यम करैत कबीर कें इहो कह' पड़ैत छनि जे 'उहाँ नहि वरन-विचार हे' (ओहिठाम वर्णविचार अर्थात् वर्णव्यवस्थाक कोनो अस्तित्व नहि छैक), एहि मर्म कें वैह लोकनि बूझि सकैत छथि जिनका एहि पीड़ा सँ गुजरबाक अनुभव भोगय पड़लनि अछि। कबीर लग मे पीड़ा तं छनि मुदा उदात्त भ' क' ओ ओहि धरातल पर पहुँचि गेल छथि जतए लाग-लपेट किछु नहि बचल रहैत छैक। ओहि ठाम तँ वर्णव्यवस्थाक आग्रही लोकक प्रति एक अन्तर्निहित करुणा छैक—

गरभ-वास महि कुल नहि जाती
ब्रह्म-बिन्दु ते सभु उतपाती
कहु से पंडित बाभन कबके होए
बाभन कहि-कहि जनम मत खोए
जो तूँ बाभन बाभुनी जाया
तउ आन बाट काहे नहि आया?
तुम्ह कत बाभन हम कत सूद
हम कत लोहू तुम्ह कत दूध?
कह कबीर जो ब्रह्म बिचारे
सो बाभन कहियतु है हमारे।

जे व्यक्ति ब्रह्म-विचार मे लीन छथि तिनका तं स्वयं कबीर आगू बढ़ि ब्राह्मण मानबा लेल तैयार छथि, मुदा बांकी जे असंख्य लोक अपना कें ब्राह्मण कहि-कहि मानव-जन्म निरर्थक गमा रहल छथि तिनका प्रति रोष की कहबै, करुणे कहल जा सकैत अछि। बेधड़क तर्क छनि कबीरक—ब्राह्मण जँ जन्मे सँ ब्राह्मण होइत छथि तं ओहो आने वर्ण जकां स्त्रीक योनि सँ किएक बहराइत छथि? हुनका तं कोनो आन बाट ताकि लेबाक चाहैत छलनि।

कबीरक मैथिली पद सब मे चारि टा मुख्य धारणा अबैत छैक—साहेब, आनन्द, विरह आ माया। साहेब भेला परमात्मा, किछु पद मे हुनका राम सेहो कहने छथिन। अनेक ठाम पिया आ बालम सेहो कहने छथिन। वैह परम आनंददाता थिका आ एक दिन वैह संसार-सागर सँ पार उतारताह। हुनका लग मे क्यो ने पैघ छथि, ने छोट। हुनका पर चित्त लगेबाक चाही। एक ठाम कहैत छथि—'अद्‌भुत रूप अखंडित साहेब आबए बास सुवास हे/ श्वेतकमल पुरुष विराजए असंख्य जोति परकास हे।' ओहिठाम अनहद नाद गूंजैत रहैत छैक।

एक ठाम कहैत छथि—

'जगमग जोति झलामल लौकए
आबए बेलि सुवास हे
घटिया उपर एक बंगला छेबाओल
सबरन सेज लगाइ हे।'

एक आर पद मे साहेब संग रमबा के भावदशाक प्रतीति एहि रूप मे व्यक्त भेल अछि—

चुअए अमीरस भरत ताल जहं शब्द उठए असमानी हो
सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोंखए नहि किछु जाय बखानी हो
चाँद सुरुज तारागन नहि उहाँ नहि उहाँ रैन बिहानी हो
बाजा बजे सितार बाँसुरी ररंकार मृदुवानी हो।

ध्यान देबाक बात थिक जे कबीर हुनका पुरुष कहलनि अछि। बरु एक वैह पुरुष अछि, बाँकी के पुरुष अछि? सौंसे सृष्टि हुनकर लीलाभूमि छियनि। हुनकर प्रेयसी होयब साधनाक चरम साध्य छैक। भक्त ओहि पुरुष सँ प्रेम करैत छैक। ओकरा सँ मिलनक आनन्द अद्‌भुत छैक। कबीरक पद सब मे ठाम-ठाम ओहि आनन्दक वर्णन भेल अछि। मिलन केहन छैक? एक ठाम कबीर कहैत छथि—

चढ़लहुँ ममो कनकपहाड़ साजनगढ़ देखल हो
देखलहुँ ममो गुरु केर धाम सुफल कए लेखल हो
चारू कोन चउमुख दिअरा से मंडिल सोहाओन हो
बिनु अप लागल बजार दया गुरु राखल हो।

दृढ़व्रती नारीक महत्व कबीरक पद मे सर्वाधिक। ओ अपन बालम के प्रेम मे एकनिष्ठ अछि। बाटक सब माया कें काटबा लेल साकांक्ष अछि। बाटक प्रमुख माया दू टा छैक—एक तँ अपना कें ज्ञानी कहाब' बला पंडित, दोसर संसारक बनिज-प्रवृत्ति। ई दुनू कोनो ने कोनो बहपें जीव कें भरमा दैत छैक। कबीरक कविता मे एहि वर्ग कें ठक कहल गेल अछि। हुनक एक प्रसिद्ध पद छनि—'कओने ठगबा

नगरिया लूटल हो'। ओही पद मे आगू लिखलनि अछि—'बिचहि मिलल ठकिहार ताहि लेपटाएल हो'। तात्पर्य छैक जे एना नहि हेबाक चाही। माया मे लपटेबाक नहि छैक। कारण, जखन क्यो ठक ठकैत अछि तँ अधिक सुख देबाक लोभ दइये क' ठकैत अछि, जे कि ओ वास्तव मे द' नहि सकैए। से द' सकब ठकक साधंस मे नहि छैक। कारण—'साहु बसथि पुरपाटन, साहुनि गुणसागरि हो/ जेहो रे गहलि निजधाम सेहो धन आगर हो/' परमसुख देनिहार तँ साहु थिकाह जे पाटनपुर मे रहैत छथि। ठक गलत पता बता क' कोना ठकि सकैत अछि! ठक कें तं पहिनहि चीन्हि लेबाक चाही।

कबीरक कविता मे एहि साहेब, राम कि बालम, जे कहल जाय, सँ विवाह करबाक कल्पना छैक। एक मंगलगीत मे साहेब संग विवाहक वर्णन एहि तरहें आएल अछि—

अगर चंदन लए घर निपाओल गज मोती चौका पुराएल हे
अलस कलस केरा पुरहर बैठाओल मानिक लेसु अहलाद हे
साखी रहु साखी रहु चाँद सुरुज मनि हंसा-पुरुष के बियाह हे
अमर देस सँ सेनुरा मंगाएल हंसा पहिराएत माँग हे
सइत सइत चलु दुलहिनी राम के सेन्दुरा लिलार हे
अओन-पओन के डोलबा फनाओल अमर लागल ओहार हे।

चौका, पुरहर, साक्षी, सिन्दूर, वर-कन्या, डोली—सब कथू विवाह संस्कारक हिसाबें यथावत छैक मुदा ओहि मे चेतना-भरल अर्थ समायल छैक। सिन्दूर तं जरूर अछि मुदा ओ अमर देसक मंगाओल थिक। साक्षी छथि के तं चान-सुरूज। वर जे थिका से स्वयं हंसा पुरुष थिका।

एक पद मे निर्गुण संग विवाहक सुख बताओल गेल छैक—

चन्द्र लगन सिर हे सेन्दुर यम केर मरदहु मान
कोहबर बैठहु कामिनि गुरु-मुख कन्यादान
निर्गुण सासुर जाओल अरपमो दोनहु कर जोरि
अजर अमर वर पाओल अजर अमर ओ देश।

एहि विवाह मे एहन सिन्दूरक प्रयोग कयल गेल छैक जे यमराज के समस्त मान मर्दित भ' गेलैक, मृत्युक आब कोनो भय नहि अछि। ई निर्गुण सासुर हेबाक प्रताप थिक, जतय अजर-अमर वर संग गठबंधन होइछ। मुदा, सोहागिन हेबाक जे ई परमसुख छैक तकरा पाछू शिकारी सेहो कोनो कम नहि लागल छैक। पल-पल के सावधानी चाही, सुरति सदा बनल रहबाक चाही। पिया जे उपहार द' गेलाह अछि, से अनमोल अछि, ओकर सुरक्षा पल -पल बहाल रहबाक चाही।

पूरन भाग हमारो साहेब कोटि भानु छवि आए हे
सोवत मे सहतेजि गए चुनरी पिया पहिराए हे
एहि चुनरी मे हीरा-मोती झालर लागल किनार हे
एहि चुनरी मे लाल धरै है लागल चोर बटमार हे
घूँघट मे जे चाँद सुरुज हए गगन जोति उजियार हे
चुनरी पहिर मने मन डोलए एहि मन काल शिकार हे।

कबीरक कविता मे मुदा प्रेम जतेक झलामल, विरह सेहो तेहने दाहक। थोड़बे बेतिरेक हो कि पिया संग साहचर्य बाधित भ' जाइत छैक। एकरा सुरति-निरतिक साधना मे मायाक हस्तक्षेपक रूप मे बुझबाक चाही। 'एकहि पलंग सेज पिया संग बैठलहुँ/ कि आहे सुनू सजनी, मोरा लेखे बसए दुरंतर रे की/ एक हम सुन्दरि नारी दोसरे ममो पिया के पियारी/ कि आहे सुनू सजनी, कओन औगुन पिया परितेजलि रे की।' एक पद मे एहि दशाक वर्णन किछु एहि तरहें कएल गेल अछि—'रोइ रोइ नएना भेल झांझर/ जमुनमा मे बाढ़ि आएल हे/ केकरी ओहरिया हम लागब दिवस गमाएब हे/ अलप वयस दुख भारी विरह उर सालए हे।' कबीरक मैथिली कविता मे नैहर आ सासुरक चर्चा बारंबार अबैत छैक। ई संसार नैहर थिक आ ओ पुरपाटन, जतय पिया बसैत छैक, सासुर। कबीरक पद सब मे ई विरह कैक रूप मे अबैत छैक—'रिमझिम बुंद बरिसए दिनरतिया/ कासौं कहौं दिल के बतिया/ सखिया हे, सरोवर गेल सुखाय/ कमल कुम्हलाएल रे की।' नैहरक एहि रहनी मे अनेक प्रकारक संकट छैक। 'जइसे पुरइन पत्र नीर/ चित डोलत सखिया' एहना मे जँ कौखन पियाक प्रति मन मे अन्यथा-भाव अबैत छैक, सुरति बाधित होइछ तं कबीर एकरा नितान्त अनुचित ठहरबैत छथि। दोष अपन छैक, पियाक नहि। एकठाम आयल अछि—'एक तं नारी अलप सुकुमारी/ चिलरे ढिलबा समो रचलु घमारी/ कि आहे सजनी, अपने रहनियाँ नहि, काहे गारी पारहु रे की।' कबीर लग मे मुदा 'जीवन्मुक्त' के कोनो अवधारणा नहि छैक। गौना होयत तखनहि सुन्दरी सासुर बसए जाएत। एक टा पद मे सांसारिक मायाक बीच लोकलाजहुक चर्च अयलैक अछि—'एक तँ रमनियाँ दोसर बिरहिनियाँ/ देओरा बैठल जंघा जोड़िया/ कि आहो राम हो/ विना रे गौना कइसे जाएब/ जगत्र लोक हँसत रे की।' एहना मे पिया कें समाद पठा क' गौना शीघ्र करेबाक नेहोरा कएल जाइत छैक—'बाट रे बटोहिया कि तोंही मोर भैया आब के आनत मनाए हे/ हमरो समदिया पिया आगू कहिहह पलको न लाबहु बार हे/ कहए कबीर सुनहु हे सुन्दरि सुनहु सुलच्छन नारि हे/ एमरि गौना होएतहु सासुर साजन कन्त पिया पास हे।' गौना अर्थात् निर्वाण, तकर आगू फेर आवागमनक चक्कर नहि छैक। मुदा एहि गौना कें शुभ-शुभ निर्बाहि लेब कठिनो कोनो कम नहि छैक। समूचा नैहरे

मानू विघ्नकर्त्ता बनि ठाढ़ छैक। एहि समस्त खतरा सँ अपन प्रेम कें सुरक्षित निकालि लेबाक छैक। कबीरक एक पद छनि—

जाहु हे कोइली अमरपुर देसबा जहाँ बसे पिया हमार हे
हमरो समाद पियाजी कें कहबनि एमरी लगन बड़ी जोर हे
चुनरी भरम हम किछुओ न जानल पेन्हतै-ओढ़ैतै भेल मैल हे
अमरपुर के मनसा धोबी कपड़ा धोबैए बड़ी साफ हे
ऐसन कपड़ा धोइहे धोबिनियाँ दुविधा के दाग छुटि जाइ हे
साहेब कबीर मुख मंगल गाओल शब्द परेखु टकसार हे
एमरी के गौना बहुरि नहि अओना फेरू न मनुस अवतार हे।

गौनाक वर्णन एक दोसर पद मे एहि प्रकारें भेलैक अछि—'भवजल नदिया अगम बहुधरबा/सूझत आर न पार हे/ केवट बेदरदी पारो न उतारे/दरदो न बुझए हमार हे/ सखि सब चललनि अपन ससुरबा/ बाबा घर धूम मचाय हे/ अपन अपन गेंठ सम्हारि बान्हल/ उहाँ नहि पैंच भेटाय हे/ एमरी के गौना बहुरि नहि अओना/ फेरु न मनुस अवतार हे।' मृत्युक उत्सव मनबैत काल कबीरपंथी लोकनि समदाउन गबैत छथि। मैथिली लोकसंगीत मे समदाउनक योगदान कबीरपंथिये लोकनिक छनि, कारण विद्यापति आदिक कविता मे समदाओनक अभाव भेटैत अछि। हुनकर भणिता धरा क' जे थोड़ेक गीत प्रचलितो अछि तकरा अध्येता लोकनि अपर विद्यापतिक रचना मानलनि अछि। लोकगीत मे आइयो जे समदाउन-संगीत अछि से वाद्यविहीन गाओल जाइत अछि, जेना कि स्त्रीप्रयोज्य आनो संगीत गाओल जाइछ। कबीरपंथीक समदाउन पुरुष गबैत छथि, वा स्त्री-पुरुष मिलि क'। ओ संगीत विलंबितक विपरीत द्रुत होइछ। संग मे वाद्ययंत्र बजैत छैक। खँजरी एकर खास वाद्य थिक, ढोलक आ झालि सेहो। एहि मृत्यु उत्सवक एक समदाउन कबीरक छनि—

मिलि चलु सखिया दिवस भेल रतिया
चित भेल जग सञो उदास
पाँच भइया के एक बहिन दुलहिन
निसिदिन फिरए उदास
सासुर हमरो दुर बसु साजन
नैहर नहि भेल बास
लाले लाल डोलिया सबुजी रंग ओहरिया
लागि गेल बतीसो कहार
गोड़ लागु पैमाा पड़ु अगिला कहरिया
तिल एक डोली बिलमाए।

मिथिला मे मृत्यु कें अमंगल मानल जाइछ तें मृत्युपरक गीतक अभाव भेटैत अछि, एहि अवसर कें उत्सव मानबाक तँ कोनो प्रश्ने नहि। कबीरपंथ मे ई मृत्यु एक महान उत्सव थिक, कारण संसार कें ठीक-ठाक निमाहि लेबाक बाद ई पियाक संग शाश्वत मिलनक अवसर थिक। तें स्वाभाविक थिक जे कबीरपंथक जीवनपद्धति ब्राह्मण जीवनपद्धति सँ सर्वथा भिप छैक। विवाह आदि संस्कार ओकर भिप प्रकारक छैक आ नैतिकताक मानदंड सेहो। मृत्यूपरान्त शव कें जराओल नहि जाइछ अपितु गाड़ल जाइत छैक। पूजा-विधि सँ ल' क' शुद्धाशुद्धि-विवेक धरि भिप छैक। एहि विषय मे जी ?आर ? वेस्टकॉट एक आद्य अध्ययन 'कबीर एण्ड कबीरपन्थ' (1907) प्रकाशित करौने छलाह जाहि मे कबीरपंथी जीवनपद्धतिक पहिलबेर विश्लेषण भेल अछि। मैथिली कबीरवाणीक जहाँ धरि प्रश्न अछि, एकर तँ टेक छैक जे—

पाँच सखी मिल अयलहुँ हो, एक भवन लेल वास
अपन अपन अपनौलक हो, कोइ नहि भेल हमार
एहि भवसागर नैहर हो, निरगुन सासुर मोर
अबइत बटिया भुलाएल हो, केकरा दुख कहब रोय
के अब निज घर जाएत हो, केहि बिन रहल अचेत
केकरा बस जीव पड़ि गेल हो, कउन मिरगा खा गेल...

कबीरक काव्य-तत्व

कबीरक कविता पर जे प्रमुख अध्येता लोकनि अपन विचार रखलनि अछि से अद्‌भुत रोचकता सँ भरल छैक। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जखन कबीरक काव्यत्व कें 'फोकट के माल' कहने रहथिन, कबीरक अध्येता लोकनि कें स्मरणे हेतनि। पूरा बात ओ एहि शब्द मे कहने रहथिन—'रूप के द्वारा अरूप की व्यंजना, कथन के जरिये अकथ्य का ध्वनन काव्य-शक्ति का चरम निदर्शन नहीं तो क्या है? फिर भी वह ध्वनित वस्तु ही प्रधान है, ध्वनित करने की शैली और सामग्री नहीं। इस प्रकार काव्यत्व उनके पदों में फोकट का माल है—बाई प्रोडक्ट है।'[44] एम्हर, अद्यतन कबीर-अध्येता डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल कें सुनी तं ओ कहैत छथि—'कबीर घट-साधक, 'मिस्टिक' होने के पहले, स्वभाव से ही शब्द-साधक कवि हैं'[45] अर्थात जाहि वस्तु कें द्विवेदी जी फोकट के माल कहैत छथिन, पुरुषोत्तम अग्रवालक दृष्टि मे वैह हुनकर मूल तत्व थिकनि। अग्रवाल जीक ओतय तं हमरा लोकनि स्वयं भक्तिये कें दू भाग मे विभाजित देखैत छी—शास्त्रोक्त भक्ति आ काव्योक्त भक्ति। काव्योक्त भक्तिक परतर शास्त्रेक्त भक्ति कोन्हु जन्म मे नहि क' सकैत अछि, स्वयं भक्तिकालीन कवि लोकनिक सगुण-निर्गुण पद एकर साक्षात् उदाहरण थिक।

कबीरक पद मे भक्ति प्रधान थिक कि कविता, एहि प्रश्न कें पुरुषोत्तम अग्रवाल कविताक प्राथमिक शर्त्त सब संग जोड़ि क' देखैत छथि। हुनकर आकलन छनि जे कविताक प्राथमिक पहचान थिक–भाषाक सर्जनात्मकता। दैनिक प्रयोग सँ ल' क' दार्शनिक विमर्श धरि मे व्यवहार कयल जाइ बला शब्द सब कें ल' क' एक टा एहन प्रयोग करब जे किछु अनपेक्षित सन घटित क' दिअय। जे शब्द अपन अर्थ हेरा चुकल अछि तकर पुन: अनुसंधान। जाहि शब्दक अर्थ पारिभाषिकता धरि सीमित कयल जा चुकल अछि, ओहि मे बहुलार्थकताक पुन:स्थापना। मानवीय वेदना, बिगूचन, प्रश्नाकुलता, रूपासक्ति, सामाजिक संवेदनशीलता आ अस्तित्वगत बेचैनीक अपन निजी अनुभव कें एहन मोहाबरा आ कथन मे व्यक्त करब जे ओ देशकालक समस्त सीमा कें तोड़ैत हरेक ओहि मन मे गूंजि उठय, जे सुनबाक लेल तैयार हो–ओ बेचैनी, ओ दर्द, ओ आनंद!

पुरुषोत्तम अग्रवाल भक्ति–आन्दोलनक संत कवि सब कें स्मरण करैत प्रश्न करै छथि जे एहि सब मे सँ किनका ककरो सँ कम कहबैक? मुदा लोकवृत्त मे मात्र सहज पर बल देनिहार कबीरे एक एहन शब्द–साधक मानल गेलाह जिनकर स्थान समस्त संत कवि लोकनि मे सर्वोपरि रहलनि। लोकवृत्तक एहि मान्यताक कारण तकैत पुरुषोत्तम लिखैत छथि–'यह मान्यता घोषित करती है कि कबीर की कविता कोरा उपदेश नहीं, जबर्दस्त भावोन्मेष करती है। भावोन्मेष जीवन की आलोचना का भी, जीवन के पार की कल्पना का भी। भावोन्मेष प्रेम के अत्यन्त निजी क्षणों की अनुभूतियों और स्मृतियों का। उल्लास, कामना, अधिकार, आशंका, ईर्ष्या, मादकता, वेदना, मान, मनुहार, खीझ, विश्वास–अविश्वास... का भी। अलग–अलग कौंध का भी और इन सबसे बननेवाले कोलाज का भी। प्रेमानुभव का कौन–सा पहलू है, जिसका स्वर कबीर की कविता में नहीं गूंजता! फिर, भावोन्मेष सामने मौजूद जिन्दगी के परे भी झांकने की हिम्मत का। मौत की आंखों में आंखें डालकर बात करने के साहस का। उन्मेष जीवन के बहुरंगी उत्सव का, और उसके अन्त का। देह के होने के रोमांचक, मादक अहसास का, और उसकी अनिवार्य नश्वरता का। उन्मेष जमकर बोलने के उत्साह का, और अन्तत: मौन की ओर जानेवाली विवशता का। पाखंड को पांडित्य के दुर्ग से बाहर खीच लानेवाली ताकत का, अन्याय को हरि–इच्छा बतानेवाली सोच से जिरह करनेवाली प्रखरता का।'[46]

पुरुषोत्तम अग्रवाल ई बात सही लक्ष्य कयने छथि जे सामाजिक आलोचना आ दार्शनिक विमर्श सेहो तखनहि कविताक रूप ल' सकैत अछि जखन ओ अमूर्त्तन कें छोड़ि मूर्तिमान रूप धारण करय। कबीरक वाणी मे हमरा लोकनि कें धर्मगुरु वा पैगंबरक उपदेश नहि सुनाइ पड़ैछ, ओतय तं हम सब एक सामान्य मनुष्यक आवाज

सुनैत छी जे कतहु अपन उपलब्धि पर खुशी सँ झूमि रहल अछि तं कतहु विरह सँ तड़पि रहल अछि, कतहु अन्याय आ मूर्खता पर तिलमिला रहल अछि। कतहु बुझौवलि आ उलटबांसी सुना–सुना लोक कें खौंझा रहल अछि, कतहु घरक रस्ता बता रहल अछि। एतय धरि जे कतहु जँ स्वयं नारीक रूप धारण क' लैत अछि तं कतहु नारी कें नरकक द्वार ठहरा रहल अछि। हरेक बात कें अनुभव आ विवेकक कसौटी पर परखबाक कतहु सुझाव द' रहल अछि तं कतहु गुरूक प्रति संपूर्ण समर्पणक। एकरा एक शब्द–साधकक कविता नहि कहल जेतै तं की कहल जेतै?

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कबीरक कविता कें मुख्यत: दू कोटि मे विभाजित करैत छथि। एक तं तखनुक, जखन ओ कुलक्रमागत रूप सँ जोगी अथवा साकट रहथि। एहि कालावधिक हुनकर कविता सब बेसी तिक्ख छनि। दोसर, गुरु रामानन्द सँ दीक्षित भेलाक बादक। स्मरण रहय जे कबीरक गुरु ई रामानन्द एक भिन्न रामानन्द छलाह जे सार्वजनिक भक्ति–पथ बनेबाक हेतु वर्णव्यवस्था पर अपन निर्णायक प्रहारक कारण जानल जाइत छथि। दीक्षाक बाद कबीरक कविता मे मृदुलता आ शीतलता तं अयबे कयल, भाव–विह्वलता, सरलता आ सहजता सेहो पूरमपूर आयल। मैथिली मे जे हुनक अधिकांश पद भेटैत अछि, से एही उत्तरार्द्धक कबीरक छनि। पूर्वक भाव बीज रूप मे बनल रहल अछि अवश्य, मुदा ओ उत्तरोत्तर नव–नव पल्लवन प्राप्त करैत रहल।

कबीरक मैथिली कविता मे प्रेम प्रमुख प्रतिपाद्य बनि क' अबैत अछि। आधार ओतय स्त्री थिक जे अपन प्रेमीक प्रेम मे कतहु विभोर, कतहु विरह मे तलफैत प्रकट भेल अछि। रूप सर्वत्र लौकिक छैक। मिथिलाक लोक–व्यवहारक, जे कि मुख्यत: ब्राह्मणेतर वर्ग मे प्रचलित छैक, सर्वांगपूर्ण चित्र एतय देखल जा सकैत अछि। विद्यापतिक कविता जकां विवाहेतर के नहि, एहिठाम वैवाहिक प्रेम के स्थान छैक— 'साखी रहु साखी रहु चाँद सुरुज मानि हंसा–पुरुष के बिआह हे', 'दुलहिन मनसमो आनन्द रहहु निर्गुण समो होएत बिआह', 'नैहरबा हमरा नहि भाबए/ सांइक नगरी परम अति सुन्दर, जहं कोइ जाए न आबए', 'सांई मोरे गोसांई तुम सब लाऐक हो', 'पिआ कें पबितहु ममो करितहुं नेहोरबा/ निरभय भए सुतितहुं भरि कोड़बा'। लोकक यथार्थ चेहरा ल' क' एक सँ एक तात्विक प्रश्न सब, हुनका कविता मे सहजतापूर्वक प्रकट भेल अछि। ओहिठाम ज्ञान आ कलाकारीक अद्‌भुत समन्वय भेटत। लोक परंपराक जाबन्तो विडम्बना हुनका कविता मे आबि क' एक–एक रूपक बनि गेल अछि।

ठाम–ठाम हम कहैत रहल छी जे विद्यापतिक अनुसरण आसान छल, कारण ओहिठाम बद्धमूल संस्कारक संग कोनो झंझटि नहि छलैक। एक साधारण मैथिल

जेहन संस्कार, धार्मिक सँ ल' क' काम-वासना धरिक, रखैत अछि, कमोबेश सैह संस्कार विद्यापतियो मे छलनि, जे कि हुनका कविता सब मे पूर्णतया प्रकट भेल अछि। एकर विपरीत, कबीरक नकल करब बहुत कठिन छैक, कारण एहि लेल अपन एहि बद्धमूल संस्कारे कें झाड़ि देब' पड़ैत छैक। ओहि समस्त मान्यता, जकरा कि सबतरि सामाजिक स्वीकृति प्राप्त छैक, से सब कबीरक कविता मे आबि क' प्रश्नांकित हुअय लगैत अछि। एहि बद्धमूल संस्कारक अंतर्गत भक्तिक अर्थ अपन देवी-देवताक नियमपूर्वक अनुष्ठान करब मात्र अछि, ओतय सबतरि कर्मकाण्ड प्रधान अछि। कबीर सुरुहे मे एहि कर्मकाण्ड कें ध्वस्त क' दैत छथि। हुनका ओतय चेतनाक सर्वोपरि महत्व छैक जे भक्त दिस सँ करणीय छैक। कर्मकाण्डीय मान्यता मे नीक-अधलाह कें सम्हारबाक जिम्मा देवता पर रहैत छैक, जखन कि कबीर स्वयं भक्त कें एकर जिम्मेदार बनबैत छथि। आने भाषाक कविता जकां कबीरक मैथिली कविता मे सेहो चेतनाक ई प्रश्न प्रमुख प्रश्न छैक। कबीर जाहि जीवनक गान गबैत छथि, से कर्मशील जीवन थिक। निम्न सँ निम्न मानल जाइबला काज मे सेहो कबीर एक गरिमापूर्ण संभावना देखैत छथि। आब ई मनुक्ख पर अछि जे अपन कर्म, जकर कि सही तात्पर्य श्रम बुझब होएत, द्वारा कतय धरि अपन चेतनाक उदात्तीकरण क' पबैत अछि। कबीरक पदावली मे एक टा गीत आएल अछि जाहि मे मनुष्य-जीवनक समस्त श्रम-गतिविधिक वर्णन अछि आ स्पष्ट संकेत अछि जे ओहि ओहि कर्म कें करैत मनुक्खक साध्य की हेबाक चाही। जँ से साध्य सदतिकाल लक्ष्य बनल रहय तँ मुक्तिक पूरा संभावना अछि, भने कर्म कतबो मलिन किएक ने हो। कबीरक गीत छनि—

'सहज समाधि न जम सौं डरिहूं।
कुम्हरा होइ करि बासन धरिहूं, धोबी होइ मल धोऊं
चमरा होइ करि रंगो अधोरी, जाति पाति कुल खाऊं।
तेली होइ तन कोल्हू करिहूं, पाप पुप दोउ पेरूं
पंच बैल जब सूध चलाऊं, राम जेबरिया जोरूं।
छत्री होइ करि खड़ग सम्हारूं, जोग जुगति दोउ साधूं
नौआ होइ करि मन कें मुड़ूं, बाढ़ी होइ कर्म बाढ़ूं।
अवधू होइ करि यहु तन धूतौं, बधिक होइ मन मारूं
बनिजारा होइ तन कें बनिजूं, ज्वारी होइ जम हारूं।
तन करि नौका मन करि खेबट, रसना करूं बड़ारूं
कह कबीर भवसागर तरिहूं, आप तिरूं वपु तारूं।।

एतय ध्यान देबाक बात थिक जे कबीर ओछ सँ ओछ मानल जाय वला जाति

मे जनमियो क' लक्ष्यसिद्धिक संभावना देखि रहल छथि किन्तु पंडित कि मुल्ला आदिक कर्मकाण्ड मे हुनका कोन्नहु टा संभावना नहि देखाइत छनि। असल मे हुनका हिसाबें, कर्मकाण्डक ई धंधे चेतना कें तोपने रहबाक षडयंत्र-स्वरूप थिक। कबीरक कविताक लक्ष्य एकर सर्वथा विपरीत थिक। जाहि कोनो कारणें वा जाहि कोनो तरहें चेतना कें तोपबाक, जतन कबीर कें देखार पड़ैत छनि वा अचेत-सन दुनिया बनौने रखबाक कपट देखार पड़ैत छनि, कबीर ओकरा अनावृत्त करैत छथि, विरोध सँ विद्रोह धरि जाइत छथि। ओ साफ कहैत छथि—'हम परदेसी पंछी बाबा, एही देस के नांही हो/ एही देस के लोक अचेता पल-पल पर पछताई, भाई संतो/ एही देस के नांही हो।'

कबीरक काव्य-भंगी आ कविता-भाषा मे हमरा लोकनि ठीक-ठीक वैह प्रतिबद्धता देखैत छी जे सिद्ध लोकनिक कविता मे छलनि। ओ आम जन कें संबोधित होइत छथि आ अपन भाषा, भाषा मे निहित दृश्य आ स्वर कें ओहि आम जन कोटि धरि उतारि लबैत छथि। कहि नहि, कबीर ठीके 'मसि-कागद छूआ नहीं' छला आ कि जनभाषाक एतादृश प्रतिबद्धताक कारण हुनका पर ई लांछन लगाओल गेल, यद्यपि कि एकरा ओ आभूषण जकां धारण केलनि। चेतनाक उन्नयनकामिता आ जनमुखी काव्यभाषा-ई दू टा एहन ऐकान्तिक विशेषता साबित भेलनि जे हुनकर कविताक नकल करब कठिन भ' गेल। मिथिला मे विद्यापतिक नकल मे पांच सौ वर्ष धरि कविता लिखल गेल। एहि पर विस्तृत विवरण पहिनहि आबि चुकल अछि। ई एते आसान एहि दुआरे छल जे विद्यापतिक नकल लेल कवि कें चेतनाक स्तर पर कोनो झंझटि नहि छलनि। हुनका लग जे आदर्श, जे जीवन-मूल्य, जे काव्य-परिपाटी छलनि, सैह एहू कवि लोकनिक छलनि। विषयक रूप मे राधा-कृष्णक प्रेम आ काव्य-रूपक रूप मे गीत-बस, एही दू टा वस्तुक नकल करबाक छल। कबीर एतेक आसान नहि रहथि। हुनकर आदर्श सेहो भिप छल आ जीवनमूल्य सेहो। हुनका ढंगक कविता मात्र वैहटा कवि लिखि सकैत रहथि, जिनकर जीवन-परिस्थिति भिप रहल हो, ओ अलग तरहें ब्रह्माण्ड आ संसार कें देखैत होथि। अलग तरहक परवरिश हासिल कयने होथि। ब्राह्मणवादक विरुद्धे जा क' एहि तरहक काव्यादर्श प्राप्त कयल जा सकैत छल। भने प्राप्तिकर्त्ता जात्या ब्राह्मणे किए ने होथि। ई बात चकित करबा योग्य अछि जे मैथिली मे 'कहे कबीर' भणिता संग जतबा गीत उपलब्ध होइत अछि, तकर संख्या विद्यापति-गीतो सँ बेसी अछि। मिथिलाक संग कबीरक संबंध, से भने आत्मिक मात्र हो जेना कि हिन्दीक पंडित लोकनि कहैत छथि, आ कि भौतिक सेहो, जेना कि मिथिला (डॉ. सुभद्र झा आदि) मानैत अछि, संबंध मुदा

छल धरि निश्चित। विद्यापतिक सरलीकृत नकल भने मिथिलाक कवि लोकनि कयने होथि मुदा विद्यापतिक असल जे विकास भेल, सब गोटे अवगत छी, से बंगाल मे भेल। ओतय ओ एक खास सम्प्रदायक परमाचार्य धरि मानल गेला, पूजित भेला। एम्हर मिथिला मे हुनकर एहन कोनो चला-चलती नहि रहलनि, से स्पष्ट अछि। स्वयं रमानाथ झाक लेखन सँ हम सब अवगत होइत छी जे विद्यापतिक गीत मात्र स्त्रिगण, शूद्र नटुआ लोकनि आ ब्राह्मण-अब्राह्मण कीर्तनियां लोकनिक समूह मे गाओल जाइत छल। कबीरक संग एना नहि छलनि। हुनकर एक पंथ बनलनि आ तकर विकास मिथिला मे भरपूर भेल। ब्राह्मणवादक विरुद्ध चिन्तन आ तकर चेतना राखनिहार आमजनक एक पैघ संख्या कबीरपंथक संग जुड़ल रहल। दोसर ई छल जे हिनका लोकनिक भाषा मैथिली छलनि। कोनो भाषाक बरक्कति एहि बात पर निर्भर करैत छैक जे ओहि भाषाक प्रयोग केनिहार एकभाषिक समुदाय (जिनका मैथिली छोड़ि आर दोसर कोनो भाषा बाजय नहि अबैत होइन) के कते सम्मान अछि। पंडित आ कवि लोकनिक एकभाषिक हेबाक कल्पनो नहि कयल जा सकैत अछि, आजुक युग मे आ कि चाहे कोन्हु युग मे। एहि बात मे सन्देह नहि जे मिथिला मे कबीरक आदर्श बला जन जँ छल तं विद्यापतियोक आदर्श बला लोक छला। विद्यापति मे जे विधेय तत्व छलनि से जीवन-राग छल, एकर खगता कोन्हु समाज कें कहियो खत्म होइबला नहि छलैक। अन्तर यैह रहल जे कबीरक पंथ रहलनि मिथिला मे, विद्यापतिक नहि रहलनि। मैथिली मे जे हमरा लोकनि कबीरक पद एक पैघ संख्या मे पबैत छी, तकर साक्षात संबंध मिथिला मे कबीरपंथक विकास संग छैक। मैथिली साहित्यक इतिहास वा आलोचना मे जँ कबीर आ हुनकर पंथक विवेचनक अभाव भेटैत अछि तं तकर कारण आधुनिक मैथिली विद्वान लोकनिक संकीर्णता थिक, जे ब्राह्मणवाद संग अनुकूलित अपन मनोनिर्मिति सँ एको रत्ती बाम-दहीन नहि भेला आ ओहि एकभाषिक बहुजन समाज कें मैथिलीक मंदिर मे प्रवेश निषेध कयने रहलाह, जे कि एहि भाषाक असली ताकत छलाह।

मैथिली कविता मे कबीरक महत्व बहुमुखी अछि। एक दिस जँ मैथिली मे निर्गुण भक्तिधाराक काव्य-लेखन हुनका संग आरम्भ भेल तं दोसर दिस एक वृहत्तर मैथिली समाज कें अपन आत्माभिव्यक्ति लेल भाषिक मंच प्रदान केलनि। आगू, मध्यकालक परवर्ती ब्राह्मण सन्त कवि लोकनि कें सेहो हमरा लोकनि निर्गुण लिखैत देखैत छी जे स्पष्टत: कबीरक प्रभाव थिक। मैथिली मे जीवनक तैयारी, ओकर राग-विरागक कविता पहिने सँ छल, कबीरपंथक संग मृत्युक तैयारी, आ ओकर चेतनागत उपादेयताक आगमन भेल जे आगां सर्वग्राह्य भेल।

मिथिला मे कबीरपंथ

कबीरक देहान्त 1518 ई. मे मानल जाइत अछि। हुनकर कनिष्ठ समकालीन पीपा (गागरोनक राजा) हुनकर महत्व कें दरसबैत जे पद लिखने छला, ताहि मे अबैत अछि—'जो कलिनाम कबीर न होते/ लोक, बेद और कलिजुग मिलिकरि भगति रसातल देते।' तात्पर्य जे ओ कबीरे छलाह जिनका बदौलत कलियुगो मे भक्ति टिकल रहि सकल अन्यथा चेतनाविहीन लोक, कर्मकाण्डप्रधान वेद आ स्वयं कलियुग मिलि क' भक्ति कें रसातल पहुँचा देने रहितथि। कबीरक देहान्तक पचास वर्षक भीतरे हरिराम व्यास हुनकर गुण-कीर्तन केलनि। 1582 में 'पद सूरदास जी का' संकलन तैयार कयल गेल जाहि मे अन्य संत लोकनिक संग-संग कबीर सेहो शामिल छला। अनन्तदासक 'परिचई' 1588 सँ 1620 ई.क बीच लिखल गेल। 1604 मे 'आदिग्रन्थ' (गुरुग्रन्थ साहेब)क संकलन भेल जाहि मे कबीर संकलित कयल गेलाह। राघवदासक 'भक्तमाल' अठारहम सदीक ठीक शुरूआत मे आएल। एवम्प्रकारें हमरा लोकनि देखैत छी जे अपन देहान्तक सौ वर्षक भीतरे भीतर कबीर एक व्यापक समुदाय मे पूज्यता प्राप्त क' लेने छला आ एक चमत्कारी शख्सियत के हैसियत हासिल क' लेने रहथि। एहि सब दृष्टांतक आधार पर कबीरक अध्येता लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे 'कबीर को हाशिये की आवाज कहना ठीक नहीं है।'[47]

एम्हर मिथिला मे सेहो कबीर हाशियाक आवाज नहि छलाह। कबीरपंथक विकास के शुरूआती दू शताब्दी (सतरहम आ अठारहम)क भीतरे कबीरपंथक चारू शाखा मिथिला मे आबि क' पसरि गेल। अध्येता लोकनिक अध्ययनक अनुसार, मिथिला मे पसरल प्राचीनतम शाखा जागू शाखा थिक। चारि शाखा ई सब अछि—कबीरक एक शिष्य जागूदासक चलाओल जागूदासी। दोसर शिष्य भागूदासक चलाओल भागूदासी, जकर मुख्यालय धनौती (भोजपुरी भाषीक्षेत्र) छल। तेसर शिष्य सुरतगोपालक चलाओल कबीरचौरा, काशी। चारिम शिष्य धर्मदास वा धनीधर्मदासक चलाओल छत्तीसगढ़ी। भारत मे वा बाहरो कबीरपंथक जतेक कोनो आश्रम अछि, सब एही चारू मे सँ कोनो एक के उपशाखा थिक। एहि पंथ कें अखिल भारतीय व्याप्ति देब'बला उत्साही गुरु प्रचुर संख्या मे सब पंथ मे भेला।

जागूदासक बारे मे ई जानकारी भेटैत अछि जे ओ कबीरक निधनक बाद कटक (उड़ीसा) मे अपन आश्रम बनौलनि। ओतय काज पूरा भ' गेलनि तं सीधे मिथिला पहुँचला। ओ स्थान अंधराठाढ़ी छल, जतय हुनक प्रथम पदार्पण भेल। अंधराठाढ़ीक जमींदार हुनका प्रशस्त कुटी बनबा देलखिन। मुदा जागूदासक काज एतहु पूरा भ' गेलनि आ फेर ओ अपन स्थान बदलि लेलनि। आगां जतय ओ कुटी बनौलनि ओ स्थान छल समस्तीपुरक निकट शोभनवसन्तपुर गाम। ओतय हुनका अपन आश्रम

बनेबा मे जमींदार 28 बीघाक अधिकार देने रहनि। मुदा ओतहु हुनकर काज पूरा भ' गेलनि। तखन ओ विदुपुर (वैशाली) आबि गेला। एतय हुनकर मन रमि गेलनि। विदुपुर कें प्रधान स्थानक गौरव एहि लेल प्राप्त छैक जे ओतय गुरु जागूदास रमि सकलाह।

जकरा हमरा लोकनि 'मिथिलाक संस्कृति' कहैत छिऐक, से असल मे दू भिन्न संस्कृतिक मेल सँ बनल अछि। एक विदेह, दोसर लिच्छवि। अंधराठाढ़ी वा शोभनबसंतपुरक संस्कृति विदेहक असर बला संस्कृति छल। विदेहा: गुणगर्विण:। लिच्छविक लेल विद्या आ गुण टा पर्याप्त नहि छल, सांसारिक सफलताक सेहो मोल छल। ई दूनू प्राचीन गणराज्य एक दोसरा धरि पूरा सांस्कृतिक प्रसार पौलक। मिथिलाक संस्कृति अपना मे लिच्छविक गुण अपनेबा मे कतहु शास्त्र-विरोध नहि पौलक। असल झंझटि ठाढ़ केलनि आधुनिक विदेह पंडित सब, जे दोसर कें महत्वहीन घोषित क' देलनि। ओ मिलि क' नहि रहय चाहैत छला, जखन कि जनता मिलि क' रहि रहल छल। संस्कृति अपन भाषा लेने विकसित भ' रहल छल। ओहो मैथिली छल। पंडित अपना मे कुकराकटौंझ करैत रहथु जे अंगिका आ वज्जिका छै कि नै छै, जनता अपन सांस्कृतिक प्रवाह कें बनौने रहत, बिना एकर परवाह कयने जे भाषाक कोनो मोलो भ' सकै छै, ओकरा समझ मे भाषा अनमोल चीज थिक। ओ तं होइतहि छैक, ओकरा बिना काज चलतै कोना? तात्पर्य जे जागूदास, बसबा योग्य 'मिथिला' जाहि स्थान कें बुझलखिन से छल लिच्छवि संस्कृतिप्रधान मिथिला -बिदुपुर। बिदुपुरक गुरुगादी (मुख्यालय-प्रधान) पर आगू एक सँ एक साधक आ उत्साही गुरु लोकनि उत्तराधिकारी होइत रहलखिन। एहि शाखाक विस्तार मिथिलाक अनेको क्षेत्र मे भेल।

जागूदासक स्थापित कयल अन्धराठाढ़ी आश्रम मे हुनकर साधनाक प्रबलताक बारे मे एक प्रसिद्ध किंबदन्तीक उल्लेख भंडारी जी केलनि अछि।[48] दरभंगाराजक सहज संस्कारें उद्दंड कर्मचारी लोकनि एकबेर महंथ हाथीराम कें बहुत सतौलकनि। गिरफ्तार क' क' घर मे बंद क' देलकनि आ भोजन मे गाछक डारि-पात ध' देलकनि जे अहाँक नाम हाथीराम अछि तं हाथीक भोजन करू। प्रसिद्धिक मोताबिक, भोर मे हाथीराम कैद सँ गायब पाओल गेला आ कारागार मे हाथीक लीद पड़ल छल। ठीक एही प्रकारक किंबदन्ती आगू हमरा लोकनि लक्ष्मीनाथ गोसांइक बारे मे (नेपाल राजाक सन्दर्भ मे) सेहो प्रचलित देखैत छी। संस्कृति मे वर्चस्व आ प्रतिरोधक जे उठापटक चलैत रहैत छैक, ताहि संदर्भ मे एहि दृष्टान्त कें देखल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि पबैत छी जे वैह हाथीराम दास बाद मे बिदुपुर चलि गेलाह। गुरु परम्पराक सातम आचार्यक कालखंड चलैत रहैक। ई सातो आचार्य भेल रहथि— जागूदास, गरभू दास, वल्लभ दास, शिरोमणि दास, धरणी दास आ हरिदास। हाथीराम

दासक गुरुगादी प्रभार-ग्रहणक समय भंडारी जी 1729-30 ई. (संभवत:) मानैत छथि। मुदा, एक परस्पर विरोधी मतक उल्लेख सेहो भंडारी जी केलनि अछि। एहि मतक अनुसार, विदुपुर मठक संस्थापके हाथीराम दास छला। एहन प्रतीत होइत अछि जे ओहि काल मे गुरुगादीक व्यवस्था शिथिल भ' चुकल छल जकरा मे नव ऊर्जा भरि एकरा पुनर्गठित करबा मे हुनक योगदान प्रमुख छलनि। जागूदासे जकां हाथीरामक प्राचीन वृत्त कटक (उड़ीसा) सँ जुड़ल छल। ओही ठाम सँ ओ एम्हर आयल छला। अंधराठाढ़ीक कबीर जागू आश्रम सेहो एक मजगूत मठ बनि क' सोझां आयल। एकर उपशाखा मदनेश्वरस्थान, सिसवारि, एकडारा, जगतपुर, फुलवरिया, बथनाहा, महिनाथपुर (मधुबनी) फारबिसगंज, हरिपुर, रामपुर, डुमरिया, पहसी, कुआरी, लालपुर, तामगंज, औराही हिंगना (जाहि आश्रमक अन्तर्कथा फणीश्वरनाथ रेणुक 'मैला आंचल' मे आएल अछि)। ई सब पूर्णियां प्रमंडलक गाम सब थिक। तहिना सहरसा आ सीतामढ़ी मे सेहो एकर उपशाखा बनल। मिरचैया, जमालपुर, बन्नी आदि गामक उल्लेख भंडारी जी कयने छथि।

'Kabirpanth in Mithila' पुस्तकक लेखक डॉ. पूर्णेन्दु रंजन किछु भिप बात कहैत छथि। हुनकर मानब अछि जे कबीरपंथक सब सँ प्राचीन गुरुगादी भागूदासी अछि, जकर मुख्यालय धनौती (सीवान) थिक। भागूदास अथवा भगवान गोसांइक संबंध मे ई प्रसिद्धि अछि जे कबीरक छव सौ सबद आ साखीक संकलन 'बीजक' ओ तैयार कयने छलाह। जें कि ओ अपन आन गुरूभाइक संग-संग कबीरक सापिध्य मे रहैत रहथि, स्वाभाविकतया एहि 'बीजक' पर सब क्योक समान अधिकार छल। मुदा प्रसिद्धि अछि जे कबीरक देहान्तक बाद ई बीजक ल' क' ओ भागि पड़ेलाह, प्राय: एही दुआरे हुनका भागूदास अथवा भागोदास कहल जाइत छनि। आगू जखन कबीरक अनुयायी लोकनिक सक्रियता बढ़ल, एहि बीजकक रक्षा कोना यत्र-तत्र पड़ा-पड़ा क' विभिप लोक सभक सहयोग ल' क' ओ कयने छलाह, पूर्णेन्दु रंजन अपन पुस्तक मे तकर पूरा विवरण देने छथि।[49] धनौती भोजपुरी भाषी क्षेत्र थिक। स्वयं पूर्णेन्दु अपन किताब मे एकरा मिथिला मे अवस्थित नहि अपितु मिथिलाक दक्षिण-पश्चिम मे अवस्थित निकट-क्षेत्र कहलनि अछि। तें, जागूदासी गुरुगादीक संबंध मे जे तथ्य डॉ. केदारनाथ द्विवेदी अपन पुस्तक 'कबीर और कबीरपंथ' मे तथा डॉ. कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक 'सन्त कबीरक मैथिली पदावली' मे लिखने छथि, मिथिलाक सन्दर्भ मे प्रथमदृष्टया समीचीन तं सैह बुझना जाइत अछि। मुदा एहि संबंध मे पर्याप्त मतभेद अछि जे जागूदास स्वयं बिदुपुर अयलाह वा हुनकर आठम पीढ़ीक शिष्योपशिष्य प्रथमहि बेर अन्धराठाढ़ी आ शोभनबसन्तपुर होइत बिदुपुर मे आबि जमलाह। जहाँधरि स्वयं कबीर मठ, बिदुपुर द्वारा मान्यताप्राप्त तथ्यक

प्रश्न अछि, ओ लोकनि सेहो एही तथ्य पर विश्वास करैत छथि जे सन 1729-30 मे हाथीराम दास बिदुपुर मठक स्थापना कयने छलाह।[50] एहि मान्यताक अनुसार जागूदासक बाद के सात पीढ़ी कटक (उड़ीसा) मे कबीर-मठ चलौलनि। हाथीराम दासक कटक छोड़बाक मुख्य कारण राजनीतिक अव्यवस्था छल, जेना कि अध्येता लोकनि कहैत छथि।

कबीरपंथक भागू शाखा जकरा भगताही शाखा सेहो कहल जाइत अछि, के प्रसार-क्षेत्र मिथिला मे बहुत कम पाओल जाइत अछि। कबीर आश्रम, तुर्की (मुजफ्फरपुर) तथा कबीर आश्रम (समस्तीपुर) मात्र एकर मठ अछि जकर एक उपमठ समस्तीपुरक नवादा मे हेबाक सूचना भंडारी जी दैत छथि।[51] पूर्णेन्दु रंजन सेहो स्वीकार करैत छथि जे भगताही शाखाक प्रसार मिथिला मे नगण्य अछि। कबीर आश्रम तुर्कीक संस्थापक चतुर्भुज गोस्वामी मानल जाइत छथि। ज्ञात हो जे भगताही शाखा मे कबीरक जाहि एकमात्र कृति कें पूज्य मानल जाइछ से बीजक थिक आ एकर आचार्य लोकनि गोस्वामी कहबैत छथि। भगवान दास उर्फ भागूदासक परवर्ती 19 पीढ़ीक आचार्य लोकनिक विवरण विभिप स्रोत सं, भंडारी जी अपन पुस्तक मे देने छथि।[52] मुदा एहि मे चतुर्भुजक नाम नहि अछि। तें, एहन संभावना बनैत अछि जे कबीर आश्रम तुर्की कोनो प्राचीन मठ नहि, सर्वथा अर्वाचीन मठ थिक जकरा 51 बीघा जमीन द' क' हथुआ महाराज संरक्षित कयने छलाह।

मिथिलाक अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्राचीन मठक रूप मे एक नाम कबीरमठ, सतमलपुर (समस्तीपुर)क उल्लेख पूर्णेन्दु रंजन करैत छथि।[53] एहि मठक संस्थापक कुतकीलाल अथवा कुतकिया लाल दास छलाह। ई मठ कबीरचौरा आचार्यगादी सँ संबद्ध अछि। कुतकीलाल स्वयं सतमलपुर अयबा सँ पहिने कबीरचौरा गुरुगादी (काशी)क आचार्य छलाह। भंडारी जी सूचित करैत छथि जे कुतकीलाल दास कबीरचौराक पांचम आचार्य रहथि आ ओतय अपन उत्तराधिकारी नियुक्त क' क' ओ सतमलपुर आबि गेल रहथि, जकर समय ओ संवत 1631 लिखैत छथि।[54] एहि शाखाक प्रसार मिथिला मे भरपूर भेल जकर विवरण भेटैत अछि। समस्तीपुर, खगड़िया, सहरसा, सुपौल, पूर्णियां, अररिया, भागलपुर, मुंगेर, बेगूसराय, दरभंगा, मधुबनीक अनेकानेक कबीर आश्रम अपना कें सतमलपुर मठक संग संबद्ध करैत अछि।[55] एहि मठ मे मुगल बादशाह अकबर द्वारा प्रदान कयल गेल फकीरनामा एखनहु संरक्षित बताओल जाइत अछि। 'श्री सद्‌गुरु कबीर' तथा 'मुक्तिपथ' आदि पुस्तकक प्रकाशनो एहिठाम सँ भेल अछि।

कबीरमठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, रोसड़ा (समस्तीपुर) मिथिलाक एक प्रमुख गुरुगादी रहल अछि। ई छत्तीसगढ़ी अपरनाम धर्मदासी शाखा सँ संबद्ध छल किन्तु बहुत पहिनहि, अपना कें स्वतंत्र घोषित कए आचार्यगादीक स्थिति हासिल क' लेलक। धर्मदास वा धनीधर्मदास एहि शाखाक आदि प्रवर्तक बताओल जाइत छथि, जिनका संबंध मे मान्यता अछि जे कबीर हुनका स्वप्न मे दर्शन देने छलखिन आ ताही काल हुनका गुरु कबूलि ओ दीक्षित भ' गेल रहथि। धर्मदासी शाखा मे आचार्यगादी पैतृक होइत अछि, आचार्य लोकनि पारिवारिक जीवन व्यतीत करैत छथि, स्त्री कें दीक्षा देबा मे वा मठ मे रहबा मे कोनो प्रतिबन्ध नहि रहैछ। मुनीश्वर राय मुनीश लिखने छथि—'कबीरपंथीय साहित्यक अधिकांश ओ अंश जे पौराणिक कथा, कर्मकाण्ड, गोष्ठी, संवाद आदि सँ वास्ता रखैछ, निश्चय बुझबाक चाही जे ओ सब धर्मदासी शाखाक अनुयायी लोकनिक रचना छियनि। एहन रचना सब मे सुखनिधान, गुरुमाहात्म्य, अगरमूल, गोरखगोष्ठी, अनुरागसागर, निरंजनबोध, कबीरमंशूर आदि उल्लेखनीय अछि।'[56] लक्ष्मीपुर बगीचा वा बगीचा मठक स्थापना प्रमोद गुरुक समय मे भेल छल, जिनकर गुरु-परम्परा मे पांचम स्थान छनि। छत्तीसगढ़ी शाखाक मुख्यालय बान्धवगढ़ सँ आब एकर संबंध तं नहि अछि मुदा धार्मिक एवं कर्मकाण्डीय नियम छत्तीसगढ़ेक चलैत अछि। गुरुगादी पैतृक हेबाक कारण गद्दी पर कब्जा लेल षडयंत्र आ संघर्ष सेहो चलैत रहल अछि। अठारहम शताब्दीक प्रसंग लिखैत पूर्णेन्दु रंजन ओहि संघर्षक विवरण अपन पुस्तक मे देलनि अछि, जकरा कारणें ई मठ विभक्त भेल छल। अठारहम सदीक मध्य अबैत-अबैत एहि मठ पर ब्राह्मण साधू लोकनिक सर्वाधिकार भ' गेल। ओहि ठामक पूजा-पाठ तथा कर्मकाण्ड पर पूर्णत: ब्राह्मणवादी पद्धति हावी भ' गेल। सब सँ असहनीय तं छल जे अन्यान्य निम्न जातिक साधू आ गृहस्थ संगे ब्राह्मण-पद्धतिक समरूप जातिगत भेदभाव राखल जायब नियम भ' गेल छल। कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—'उच्च जातिक महंथ होइत छलाह जे निम्न जातिक संत सँ भेदभाव रखैत छलाह जखन कि कबीरपंथ मे जातिपातिक भेदभाव सर्वथा अक्षम्य मानल जाइत रहल अछि। एहि भेदभाव सँ प्रभावित भ' किसुनदास जे परवर्ती काल मे कृष्णकारख दास नामे विख्यात भेलाह, एहि मठ सँ संघर्ष कय रोसड़ा मे स्वतंत्र मठक स्थापना कयलनि। ई निम्न जातिक छलाह आ जातिभेदजन्य व्यवहार सँ खिप रहैत छलाह। परवर्ती काल मे कृष्णकारखी शाखा कबीरपन्थक एक टा विशिष्ट शाखाक रूप मे प्रवर्तित भेल।'[57]

कृष्णकारख दासक संबंध मे सूचना भेटैत अछि जे समस्तीपुरक रोसड़ा मे हुनक जन्म 1782 ई. मे भेल छलनि। 1806 मे जखन कि ओ मात्र 24 वर्षक रहथि, बैरागी भ' गेलाह। बगीचा मठक एक लोकप्रिय सन्तक रूप मे हुनक प्रसिद्धि बहुत जल्दिये पसरि गेलनि, आ से हुनक उत्तरदायित्वपूर्ण संघर्षक एक नव बाट खोलि देलकनि। ब्राह्मण महंथक विरुद्ध ओ बहुमतपूर्वक नियम बदलबा लेल दबाव बनौलनि,

दंडस्वरूप पंथ सँ निष्कासित क' देल गेला। आ अन्तत: ओही रोसड़ा मे महादेवमठ नामक स्थान पर अपन अलग मठ बनौलनि, जे आइ मिथिलाक कबीरपंथी समुदायक कदाचित सब सँ प्रशस्त आ लोकप्रिय आश्रम मानल जाइत अछि। एकर पूरा विवरण पूर्णेन्दु रंजन एहि तरहें देने छथि—'Krishna Karakh was one of the eminent disciples who did not get as much respect from the authorities there as he deserved. Consequently, Krishna Karakh and his supporters were quite unhappy about the increasing arrogance of upper caste Mahants at Bagicha Math till then. Krishna Karakh should be chosen as the next Mahant, but their attempts were failed by the concerted counter-measures taken by Bagicha math's authorities, most of whom came from upper castes. Frustrated, Krishna Karakh initiated another Kabirpanthi branch in Mithila in 1814. To legitimize the foundation of his math, he accepted one of the Mahants in Orissa as his guru who, in turn, authorized him to run a math. It is presently known as Krishna Karakhi Vachan Vanshi Mahadeo math at Rosara.[58] महादेवमठक गुरुप्रणालीक अनुसार कृष्णकारखक आचार्य गादी-आरोहणक वर्ष 1814 नहि, अपितु 1806 थिक।[59] कमलाकान्त भंडारी लिखैत छथि—'वचन वंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठ, रोसड़ा कबीरपंथक सर्वथा स्वतंत्र शाखा मानल जाइत अछि। मिथिलाक संपूर्ण क्षेत्र मे एहि शाखाक प्रचार-प्रसार आन शाखा सँ बेसी भेल अछि। मिथिलाक अधिकांश मठ आ शिष्य एहि वचनवंशीय आचार्य गादी सँ अपना कें सम्बन्धित कयने छथि। कृष्णकारख एहि शाखाक आदिप्रवर्तक मानल जाइत छथि। एहि मठक महत्वक कारण स्वयं एकर संस्थापक कृष्ण कारख साहेब थिकाह।'[60]

जेना कि पूर्णेन्दु रंजन विवरण देने छथि, आ आनो स्रोत सँ स्पष्ट अछि, 'वचनवंशीय' मे वचन शब्दक सामान्य अर्थ छैक शब्द। अर्थात ओ शब्द, जे कोनहु शिष्य कें अपन गुरु सँ प्राप्त होइत अछि, जेना धर्मदास कें कबीर सँ प्राप्त भेलनि। कोनहु मठक संचालन करबाक लेल ई वचन अधिकारिता वा अनुज्ञप्ति-स्वरूप बुझल जाइत अछि। मिथिलाक कबीरपंथ मे मठ सेहो कैक तरहक होइत अछि। मठ, जगह आ स्थान एहि मे प्रमुख अछि। मठ अधिकतर प्राचीनतर तथा साधु-संतक उपस्थिति सँ भरल रहय बला स्थान होइत अछि, जकर संबद्धता अपन आचार्यगादी सँ प्राप्त रहैत अछि। 'जगह' अर्वाचीन होइछ जतय बैरागी अपन महंथक संग निवास करैत छथि। 'स्थान' ओ भेलैक जतय साधु-संतक स्थायी आवासनक व्यवस्था नहि रहैछ,

महंथ मात्र निवास करैत छथि। एकरे 'पारिवारिक' सेहो कहल जाइत छैक।[61]

पहिनहि एहि बातक चर्चा भ' चुकल अछि जे धर्मदासी शाखा मे महंथक पद वंशानुक्रमी होइत छल। एहि शाखा मे ई मान्यता छलैक जे स्वयं कबीर धनी धर्मदास कें 42 पीढ़ी धरि गुरुआइ करबाक अधिकार देने छलाह।[62] एहि कारणें पंथ मे कतेको तरहक अव्यवस्थाक संभावना जे शताब्दी धरि बनल रहल, तकर साक्षात प्रमाण बगीचा मठ सेहो छल। कृष्णकारख दासक सब सँ पैघ योगदान यैह रहलनि जे परमगुरु धर्मदासक प्रति पूर्ण श्रद्धा रखितहु ओ एहि वंशानुगत महंथी कें बंद करौलनि आ अपेक्षाकृत न्यायसंगत व्यवस्था कायम केलनि जे सद्‌गुरु अपन जाहि शिष्य कें वचन द' देथि, ओ महंथ पदक अधिकारी भ' जाइत छथि। कृष्णकारखक उदार आ विशाल हृदयक परिचय हम सब एहि दृष्टान्त मे पाबि सकैत छी जे स्वयं महादेवमठक आचार्य हेबाक बाद आरंभिक जाहि चारि मठक स्थापना ओ मिथिलाक अलग-अलग क्षेत्र मे करबौलनि, तकर महंथी लेल जातिक तं कोन कथा जे धर्मो धरिक सीमा कें अस्वीकार केलनि। पहिल आश्रम ओ समस्तीपुरक हरदिया मे बनौलनि, जतय खुसियाल गोसांइ कें महंथ बनाओल गेलनि। खुसियाल जातिक मुसहर छलाह। दोसर आश्रम दरभंगाक बिशनपुर मे बनौलनि, जतय एक मुस्लिम संत कादिर बख्श महंथ बनाओल गेलाह। तेसर आश्रम दरभंगाक निशिहारा गोरा मे बनल जतय देवदत्त दास वा देवीदास (जाति राजपूत) महंथ बनाओल गेलाह। हुनकर चारिम आश्रम सहरसाक नवला गाम मे बनल जतय सनफूल दास (जाति यादव) महंथ बनाओल गेलाह।

कृष्णकारख दास जन्मत: मैथिल, मिथिलाक निवासी छलाह। जातिगत भेदभाव सँ संघर्ष करैत आगू बढ़ल छलाह। श्रमजीवी समाजक दुख-दर्द सँ वाकिफ रहथि। ब्राह्मणधर्म आ एकर दबंगता कतेक अन्याय आ अनीतिपूर्ण निर्णय ल' सकैत अछि, तकर हुनका प्रत्यक्ष अनुभव रहनि। ब्राह्मणधर्मक आलोचक कबीरपंथी समाज कें एकजुट, सचेत आ जागरूक होयब कतेक जरूरी छैक, से नीक जकां हुनका बूझल रहनि। समाज-संगठन केनिहार नायक मे स्वप्नदर्शी हेबाक जे गुण वांछित होइत छैक, से हुनका मे पूरा भरल रहनि। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे कबीरपंथक कृष्णकारखी शाखा, जे शतप्रतिशत मिथिला मूलक शाखा छल, मिथिला मे भरपूर पसरल। पूर्णेन्दु रंजन अपन पुस्तकक एक अध्याय मे एहि प्रश्न पर विचार केलनि अछि जे की कबीरपंथी मठ आ आश्रम सब कें जाहि तरहें कृष्णकारखी लोकनि गाम-गाम, टोल-टोल धरि प्रसारित क' देलनि, की वास्तव मे एकर आवश्यकता छल? इतिहासक अनेक घटनाक्रमक उदाहरण दैत ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचला अछि जे वास्तविक रूप मे एकर अत्यन्त आवश्यकता छल। प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता भोगेन्द्र झाक इंटरव्यू मे कहल एक बातक स्मरण पूर्णेन्दु बारंबार करैत छथि। ई पुछला पर जे कतय सँ

हुनका प्रगतिशील (वामपंथी) आंदोलनक प्रेरणा भेटलनि, भोगेन्द्र झा कहने रहथिन जे अपना गामक कबीरपंथी आश्रम मे नेनपने सँ जाइत-अबैत हुनकर संस्कारक निर्माण भेल रहनि। कबीरपंथ केवल विचारधारा नहि, जीवनपद्धति आ जीवन-दर्शन थिक। नरक बनल चेतनाहीन धार्मिक क्रिया-काण्डक बीच ई अपन समसोची लोकक संगठन कयल एक समाज-निर्माण थिक। मिथिला मे प्रगतिशील आंदोलन, से चाहे सामाजिक हो कि सांस्कृतिक, के जखन इतिहास लिखल जायत, कबीरपंथ कोनो चमकैत सितारा-सन पृष्ठभूमि मे नजरि आएत। मिथिला भने एक जबाना मे कबीर कें अपमानित क' देसनिकाला द' देने हुअय, कबीरक करुणा आ विद्रोह हजार गुना प्रभावी भ' क' मिथिला मे व्याप्त होइत गेल।

चेतना सँ दीप्त कर्मठ पुरुषक सक्रियता कोना अपन पुरखा धरिक उद्धार वा उपकार क' जाइत अछि, तकरो एक बड़ नीक दृष्टान्त हमरा लोकनि कें कृष्णकारख दासक जीवन-प्रसंग मे देखना जाइत अछि। कृष्णकारख मूलतः बगीचा मठक ब्रह्मचारी छला। बगीचा मठ छत्तीसगढ़ी वा धर्मदासी शाखा सँ संबद्ध छल। कबीरपंथी लोकनिक बीच प्रचलित मान्यता अछि जे कबीर चौरा हुनका लोकनिक 'बाप शाखा' तथा छत्तीसगढ़ी 'माइ शाखा' छियनि। एही माइ शाखा संग कृष्णकारखक संबद्धता छलनि। अपन परमगुरु धर्मदासक प्रति हुनक श्रद्धा अंत धरि बनल रहलनि, हुनकर अनुयायी लोकनि मे एखनहु धरि बनल अछि। कृष्णकारखक प्रयासें जखन कबीरपंथ मिथिलाक गाम-गाम मे पसरल, कबीरक संग-संग धर्मदासक नाम-जस सेहो गाम-गाम पसरि गेल। परवर्ती कालक सैकड़ो मैथिली गीत एहन भेटैत अछि जाहि मे कबीरक संग-संग धर्मदासक नाम सेहो आएल छनि। डॉ. कमलाकान्त भंडारी लिखने छथि—'एहि शाखाक ई विशिष्टता अछि जे कबीरपंथक प्रसारक हेतु विपुल साहित्यक ई प्रकाशन-प्रसारण करैत रहल अछि। मिथिला मे ई शाखा अत्यन्त प्रबल कहल जा सकैछ। खास कय एहि ठामक लोकजीवन ओ कबीरपंथी ग्रन्थ मे विपुल मैथिली पदावली मे धर्मदासक भणितायुक्त पदावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ। वस्तुतः धर्मदासक भणिता सँ युक्त मैथिली पदावली धनीधर्मदासक छियनि वा परवर्ती कोनो मैथिल कबीरपंथी धर्मदासक, से अनुसन्धेय अछि। इहो भए सकैछ जे मैथिल कबीरपन्थी सन्त परवर्ती काल मे जे रचना करैत छल हेताह ताहि मे आदरक दृष्टियें धर्मदासक भणिता, साहेब आदि जोड़ि दैत छल हेताह।'[63]

धर्मदासक नाम पर जे गीत मिथिला मे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि, से ई थिक—

जब हम रहली आदिपुरुष संग तब हम रहली कुमार हे
भैया हमर भतारक जनमल ताही संगे भेलै मोर प्यार हे
कवन संग बसलहुँ कवन संग रसलहुँ कवन संग केलहुँ घरबार हे

किनका संग देस देसावर घुमलहुँ कवन पुरुष कवन नार हे
पांच संग बसलहुँ पचीस संग रसलहुँ तीन संग केलहुँ घरबार हे
सतगुरु संग देस देसावर घुमलहुँ ओहि पुरुष हम नार हे
सांपिन होइ हम सहर समेलहुँ डसलहुँ ममो चारू वेद हे
एक नहि डसलहुँ सतगुरु साहेब जिनकर नाम अधार हे
घर सँ बहार भए अंगना मे ठाढ़े लख आबक लख जाय हे
ससुर भैंसुर हम एक संग सुतलौं अचरज कहलो ने जाय हे
धर्मदास एहो मंगल गाबे संतजन लेहु ने विचार हे
एबरी के गवना फेरू नहि अवना फेरू नहि मनुष अवतार हे।[64]

स्मरण हो जे ठीक यैह पद, अथवा से कहब जँ उचित नहि हो तं एही भाव आ शब्दावली सँ मिलैत-जुलैत, एकरे पूर्ववर्ती पाठ, कबीरक सेहो छनि जे ऊपर उद्धृत क' चुकल छी। कबीरक ओ पद महत्त्वपूर्ण एहू दुआरे अछि जे ई सुभद्र झाक लेख मे उद्धृत छनि, आ भंडारीक किताब मे सेहो संकलित छनि। तखन, दुनू पद मे अन्तर जे छैक सेहो कोनो कम नहि छैक। कबीर ब्राह्मणधर्मक विचित्र चरित्र बला देवता सभक बखिया उघार केलनि अछि जखन कि धर्मदास ओहि समस्त भाव कें रखैत हिन्दूधर्मक जाबन्तो विडम्बना धरि एकरा पसारि देलनि अछि। ओहि मे बुझौअलि तत्वक चमत्कार सेहो बढ़ि गेलैक अछि। प्रश्नोत्तर शैली एकरा उत्तरोत्तर अधिक ग्राह्य बनौलकैक अछि। एतय हमरा लोकनि कबीरक कोनो रचना कें हुनकर उपरचना बनैत साफ-साफ देखि सकैत छी, जखन कि भणिता धर्मदासक आयल छनि।

धर्मदासक एक गीतक उल्लेख भंडारी जी अपन पुस्तक मे कयने छथि, से गीत एहि प्रकारें अछि—

अजहु न आयल पिया मोर हे, अंदेसबा हमरा लागले रही।
जहिया से पिया ब्याहि के गेला, तब से गेला विदेस हे
पिया पिया हम रटते रहलौं, कबहु न आयल संदेस हे
शील सम्मत के चोली पहिरलौं, कसमस रंग लगाइ हे
ज्ञान के तेल से मंछिया समारब, सुरति के सिंदूर लगाइ हे
धर्मदास एहो अरजि करतु है, सुनि लियौ विनती मोर हे
एमरी के बेरिया आएब पियबा, बान्हब सुरतिया के डोर हे।[65]

मैथिलीक कोनहु कविता-संग्रह मे धर्मदासक कोनो कविता संकलित नहि भेटैत अछि, जे कि संकलयिता लोकनिक संकीर्णता कें देखैत स्वाभाविके कहल जाएत। 'हिन्दी साहित्य और बिहार' (संपादक आचार्य शिवपूजन सहाय)क द्वितीय

खंड मे धर्मदासक एक मैथिली पद संकलित अछि। शिवपूजन सहाय एहन कवि लोकनिक समूह मे धर्मदास कें रखलनि अछि जिनका बारे मे एतबा तं सुनिश्चित अछि जे ओ उनैसम शताब्दी मे भेलाह मुदा हुनका जीवन-प्रसंगक संबंध मे किछुओ जानकारी नहि भेटैत अछि। सहाय जी द्वारा संकलित गीत (जकर स्रोत सरसकवि ईशनाथ झा छथिन) निम्नलिखित अछि—

'आब की करै छी धनि, बैसू श्रवण सुनि
अमृत नाम अमोल कि घोरि-घोरि पीबिअ रे की।
एक तं अन्हार राति, दोसर ने संगसाथि
यम सँ पड़ल अरारि, कोन विधि बांचब रे की।
अन्तर ध्यान धरू, गुरु पर सुरति राखु
ज्ञान कोठलिया दृढ़ करू, यम सँ बांचब रे की।
धर्मदास ई आरजि करै छथि, गुरूक चरण गहि रहबें
यम सँ बांचब रे की।'[66]

अलग-अलग भावदशाक उपर्युक्त तीनू गीत मे, एतबा तं स्पष्ट छि जे एकर अभिप्राय आध्यात्मिक अछि। लोकमन सँ सुपरिचित बिम्ब सभक उपयोग कएल गेल अछि। प्रचलित गीतक भास मे रचल गेल अछि। पहिल मे जँ कबीरक बुझौअलि-उलटबांसी किसिमक खिलंदड़ापन अछि तं अंतिम मे संपूर्ण कथन अभिधात्मक देखाइत अछि, यद्यपि कि भाव ओतहु व्यंजना सँ परिपूर्ण अछि। उपर्युक्त तीनू रचना कोनो एक कविक लिखल हेबाक जतेक संभावना अछि ततबे ओकर उपरचना हेबाक संभावना सेहो अछि। मूल प्रश्न अछि जे उनैसम शताब्दीक मिथिला मे ई धर्मदास के छलाह? समस्त अध्येता लोकनि एहि प्रश्न पर मौन छथि आ एतबे कहैत छथि जे ई विषय अनुसन्धेय अछि। दोसर दिस, हमरा लोकनि देखैत छी जे कृष्णकारख दासक लिखल ग्रन्थ -पांडुलिपि तं अनेक भेटल अछि, जाहि मे 'पांजी-पन्थ-प्रकाश', 'विचारगुणावली', 'क्रियाबोध', 'आदि उत्पत्ति' -मुख्य अछि। मुदा, हुनकर भणिता संग कोनहु गीत नहि भेटैत अछि। एहि बातक संभावना देखाइत अछि जे कृष्णकारख जतेक जे कोनो गीत लिखने होथि से परमगुरु धर्मदासक भणिता संग लिखने होथि। तकर एक सन्दर्भ हुनकर पांजी-पंथ-प्रकाश संग जुड़ैत अछि जतय ओ धर्मदासक चर्चा बारंबार करैत देखल जाइत छथि।[67] कृष्णकारख मूलतः आध्यात्मिक क्षेत्रक व्यक्ति रहथि। हुनका जीवनक संबंध मे जे सूचना भेटैत अछि, ताहि अनुसार ओ पूर्णतः वीतरागी संत छलाह। कवित्व, जकर परम्परा हुनका कबीर सँ प्राप्त रहनि, हुनका मे भरपूर छलनि, तकर सूचना हुनकर ग्रन्थ सब कें देखने भेटैत अछि। एहना मे, कवियश:प्रार्थी नहि भेनाइ, आ श्रद्धावश परमगुरु धर्मदासक यशोगाथा लेल हुनकर

भणिता जोड़ि देब सहज संभव भ' सकैत अछि। मुदा, कबीरपंथक अध्येता पूर्णेन्दु रंजन कें जखन ई विचार कहलियनि तं ओ एतबा तं मानलनि जे उनैसम शताब्दी मे मिथिला मे क्यो धर्मदास भेलाह, मुदा ओ के छला एहि संबंध मे हुनकहु लग कोनो उत्तर नहि छलनि। मुदा, जेना कि इतिहासक अनुशासन मे काज केनिहार अध्येताक सीमा होइत अछि, एहू बातक लेल हुनका लग मे कोनो साक्ष्य नहि छलनि जे कृष्णकारख आ धर्मदास (उनैसम सदी) अभिप रहथि। कठिनता इहो अछि जे उनैसम शताब्दी मे जतेक जे मठ मिथिला मे सक्रिय छल, प्रायः सबठाम महंथ लोकनिक उत्तराधिकार-पत्र, जकरा ओ लोकनि 'गुरु-प्रणाली' कहैत छथि, उपलब्ध अछि। ताहिमे सँ बहुतोक उल्लेख कमलाकान्त भंडारी आ पूर्णेन्दु रंजन अपन-अपन पुस्तक मे कयनहु छथि। मुदा एहि मे सँ कोनो गुरु एहन नहि छथि जिनका धर्मदास सँ अभिप मानबाक तर्क बनैत हो। जँ ओ क्यो साधारण गृहस्थ कबीरपंथी होथि, वा अनुयायी संत मात्र होथि तं हुनकर महिमा आ गरिमा कें देखैत से संभव नहि बुझाइत अछि। एहना मे, जाधरि अध्येता लोकनि सर्वसम्मत कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुँचैत छथि, यैह मानबाक चाही जे कृष्णकारख अपन परमगुरु धर्मदासक भणिता सँ पद लिखलनि।

कबीर आ धर्मदासक भणिताक अतिरिक्त किनसाइत कोनो मैथिली पद मिथिलाक कबीरपंथी लोकनिक बीच गाओल जाइत हो। कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक मे मिथिलाक बहुतो कबीरपंथी परवर्ती सन्त लोकनिक विवरण देने छथि। ओहि मे सँ बहुतो गोटे ग्रन्थ सभक, पद सभक रचना कयने छथि। नन्दूराम दास, हरिचरण दास, रामभरोस साहेब, रामनन्दन दास, जीबछ दास, रामदेव दास शास्त्री, इन्द्रमती रानी, खेमसरी नारी आदि एहन सन्त लोकनि छथि। मुदा हिनका सभक पद अधिकतर ब्रजभाषा, सधुक्कड़ी अथवा हिन्दी मे अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे जे हीनता-बोध 'रागतरंगिणी'-कार लोचन (सतरहम सदी) मे छलनि, अपन पुस्तकक रचना ओ संस्कृत मे केलनि आ अधिकाधिक लोकक समझ मे ई आबि सकय, ताहि लेल संस्कृतक पद्यानुवाद मैथिली मे नहि ब्रजभाषा मे देलनि, ताही तरहक हीनता-बोध जँ आगू हमरा लोकनि कबीरपंथी संत सब मे पबैत छी तं एहि मे आश्चर्यक कोनो बात नहि अछि। मैथिलीक प्रति सचेतनता आधुनिक युग मे आबि क' भेलैक अछि। जीवछ दास (1955)क कविता आदि तकर प्रमाण थिक। हम एतय मुनीन्द्र दास (1905-2000)क एक पद उद्धृत करय चाहब—

हम नहि आजु रहब एहि जग मे, पाओल सतगुरु कंत हे
एहि जग केओ नहि शुभचिंतक, विषय बसात बहंत हे।
ओरियानिक पानि बरेड़ी लागल, बूझथि साधू संत हे

नयनक मांझे सुषमनि बटिया, मनहि सतगुरु कंत हे।
झलकैत जोतिया सदिखन निरखल अनहद बाजल यंत्र हे
बजइत जंत्र समाधि लागल, महासुन्न परजन्त हे।
भ्रमर गुफा चढ़ि देखि अपन घर अलख अगम अनंत हे
सच्चिदानन्द मुनीन्द्र परमगति परमानन्द झड़ंत हे।

मिथिला मे प्रचलित कबीरपंथक अपन कतेको खासमखास विशेषता छैक, जकर विवरण पूर्णेन्दु आ भंडारी अपन अपन पुस्तक मे देने छथि। पूर्णेन्दु रंजनक पुस्तक मुख्यत: चारि अध्याय मे विभाजित छनि जाहि मे ओ मिथिलाक कबीरपंथक इतिहास, विभिप चरण, उत्तरोत्तर विकास, कबीरपंथी मठ-आश्रम-संस्था सभक इतिवृत्त, कबीरपंथी समाज मे प्रचलित कर्मकाण्ड, संस्कार, मिथक आ प्रतीक आदिक विवरण देने छथि। एक फूट अध्याय मिथिलाक राजनीति आ कबीरपंथ पर छैक, जाहि मे दूनू एक दोसर कें कोना प्रभावित केलक, तकर विवरण छैक। कमलाकान्त भंडारीक पुस्तक छव अध्याय मे छनि—सन्त कबीर ओ कबीरपंथक विकास, मिथिला मे कबीरपंथ ओ ओकर मैथिल वैशिष्ट्य, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधनस्रोत, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक विवेचित पाठ, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्विक विवेचन आ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति गीतक भाषाक तुलना। एकर अतिरिक्त ओ कबीरक 88 गोट मैथिली पद तथा कबीरपंथी संत लोकनिक परिचय तथा हुनकर उपलब्ध रचना सेहो परिशिष्ट मे देने छथिन। एहि विषयक अध्ययन लेल ई दूनू पुस्तक अत्यन्त उपयोगी अछि।

सन्दर्भ

1. मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 111

   ध्यान देबाक बात थिक जे श्रीश जी एतय 'विद्यापति-सम्प्रदाय'क बात केलनि अछि। वास्तविकता ई अछि जे मिथिला मे जाहि रूपें विद्यापतिक आधा-अधूरा मन सँ अनुसरण कयल गेल, तकरा हुनकर सम्प्रदाय किपहु नहि कहल जा सकैत अछि। से जँ भेल मानलो जाय तं बंगालक बारे मे कहल जा सकैत अछि। एकर ठीक विपरीत, मिथिला मे जँ कोनो कविक सम्प्रदाय चलैत हम सब देखितो छी तं से कबीरक सम्प्रदाय थिक। से ने केवल कबीरपंथक उदय के रूप मे अपितु मैथिलीक भक्ति-साहित्य मे सेहो।
2. संत कबीरक मैथिली पदावली
3. मैथिली साहित्यक इतिहास/दुर्गानाथ झा श्रीश/ पृ. 111
4. डॉ. राम कुमार वर्मा/ कबीर का जीवनवृत्त/ संत कबीर/ पृ. 76
5. डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत/ प्रस्तावना/ कबीर की विचार-धारा/ पृ. 32
6. उपर्युक्त/ पृ. 33
7. डा. सरनाम सिंह शर्मा/ कबीर: एक विवेचन/ पृ. 32
8. डॉ. सुभद्र झाक बालक श्री भास्कर झाक एक फेसबुक पोस्ट, दिनांक 20 जुलाई 2020 आ ताहि पर डॉ. विभूति आनन्दक प्रतिक्रिया।
9. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीर वाणी-सुधा/ पृ. 14
10. डॉ. सुभद्र झा/ संत कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद/ बिहार यूनिवर्सिटी जर्नल/ भाग-2 (1956)
11. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 20
12. उपर्युक्त/ पृ. 183
13. डॉ. सुभद्र झा/ 'संत कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' सँ सन्त कबीरक 'मैथिली पदावली' (डॉ. कमलाकान्त भंडारी) मे उद्धृत/ पृ. 16
14. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीर-वाणी-सुधा/पृ. 11
15. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 185
16. उपर्युक्त/ पृ. 186
17. उपर्युक्त/ पृ. 184
18. उपर्युक्त/ पृ. 184
19. डॉ. सुभद्र झा/ संत कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत/ पृ. 16
20. उपर्युक्त/ पृ. 17
21. उपर्युक्त/ पृ. 17
22. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
23. डॉ. केदारनाथ द्विवेदी/ कबीर और कबीरपंथ/ पृ. 67
24. डॉ. सुभद्र झा/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत।
25. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
26. डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 192
27. डॉ. विद्यानिवास मिश्र/ हम न मरै मरिहैं संसारा/ पूरा कबीर/ सं. बलदेव वंशी/ पृ. 136
28. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 12
29. डॉ. सुभद्र झा/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली मे उद्धृत।
30. डॉ. परशुराम चतुर्वेदी/ कबीर-साहित्य की परख/ पृ. 208
31. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 22
32. डॉ. शशिनाथ झा/ फेसबुक पोस्ट/ दिनांक 22 जुलाई 2020
33. डॉ. पारसनाथ तिवारी/ कबीरवाणी-सुधा/ पृ. 13
34. विलियम जेम्स डायर/ कबीर : सिंगर ऑफ डिवाइन/ पृ. 4
35. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 25
36. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ कबीर/ पृ. 136
37. उपर्युक्त/ पृ. 137
38. उपर्युक्त/ पृ. 137
39. उपर्युक्त/ पृ. 139
40. उपर्युक्त/ पृ. 144

41. उपर्युक्त/ पृ. 144
42. आचार्य रामनंदन दास/ सद्गुरु कबीर/ पृ. 155
43. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ कबीर/ पृ. 147
44. उपर्युक्त/ पृ. 396
45. पुरुषोत्तम अग्रवाल/ अकथ कहानी प्रेम की/ पृ. 398
46. उपर्युक्त/ पृ. 396
47. उपर्युक्त/ पृ. 21
48. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 57
49. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला (थीसिस)/ पृ. 111-115
50. मुनीश्वर राय मुनीश/ कबीरपंथ की जागू शाखा/ पृ. 60-61
51. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 59
52. उपर्युक्त/ पृ. 58
53. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला/ पृ. 112
54. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 60
55. उपर्युक्त/ पृ. 60
56. मुनीश्वर राय मुनीश/ कबीरपंथ की जागू शाखा/ पृ. 61
57. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली2 पृ. 61
58. डॉ. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपन्थ इन मिथिला/ पृ. 48
59. वचनवंशीय आचार्यगादी, महादेवमठ, रोसड़ाक वर्तमान महंथ आचार्य सुरेश साहेबक संग 22-10-2021 कें सम्पप साक्षात्कार सँ ई तथ्य सामने आएल। एहि गादी द्वारा प्रकाशित पुस्तक सब मे कृष्णकारख दासक आचार्यगादी-आरोहणक यैह वर्ष प्रकाशित अछि।
60. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 64-65
61. विशेष विवरण लेल देखी—कबीरपन्थ इन मिथिला/ अध्याय-2/ पृ. 110 एवं आगां
62. विशेष विवरण लेल देखी—विकीपीडिया पर राजीव कबीरपंथीक लेख/ पृष्ठ आईडी सं. 851098
63. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 61
64. अज्ञात कबीरभक्त द्वारा गाओल यूट्यूब चैनल 'सद्गुरु कबीर आश्रम, किरकिरी धाम' पर पोस्टेड विडियो/ लिंक -http://youtu.be/bqRnG9FKf3U
65. डॉ. कमलाकान्त भंडारी/ सन्त कबीरक मैथिली पदावली/ पृ. 275
66. सं. आचार्यशिवपूजन सहाय/ हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 2/ पृ. 243-44
67. 'पांजी पन्थ प्रकाश' एखन धरि अप्रकाशित छल, जकर पांडुलिपि महादेवमठ आश्रम मे उपलब्ध रहैक। मठक पूर्व महंथ आचार्य राजनारायण साहेबक उद्यम सँ ओही मठ द्वारा आब ई ग्रन्थ प्रकाशित अछि। 'वचनवंशीय पंथ और पांजी पंथ प्रकाश' नाम सँ डॉ. कमल किशोर प्रसाद वर्माक पुस्तक 2017 मे उक्त मठ द्वारा सेहो प्रकाशित अछि। ई पुस्तक मूलत: 1987 मे लेखक द्वारा बिहार विश्वविद्यालय सँ कयल गेल शोध-प्रबन्धक संपादित रूप थिक।

पूर्वांचल मे मैथिली कविताक पसार

विद्यापति-गीतक संकलन आ विवेचन दिस बंगाली अध्येता लोकनिक प्रवृत्ति 1858-59 सँ भेल छल आ बीसम शताब्दीक प्रथम दशक धरि अबैत-अबैत देवनागरी लिपि समेत मे ओ लोकनि विशालकाय विद्यापति पदावली प्रकाशित क' देल। एहि संकलनक क्रम मे यद्यपि प्रथम पीढ़ीक ओहो विद्वान लोकनि कम साकांक्ष नहि छलाह जे भणिता मे विद्यापतिक नाम अयबे कें एकमात्र प्रमाण नहि मानि भाव आ भाषा पर सेहो विचार क' क' निर्णय धरि पहुँचल छलाह। मुदा तकर बादो भेल ई रहैक जे भणिता मे नामांकित सामंत लोकनिक जखन हिसाब कयल जा लागल तँ पाओल गेल जे नगेन्द्रनाथ गुप्तक संकलन मे 'आनन लोलए वचन बोलए हसि' के भणिता मे जाहि राय नसरत शाह के नाम अंकित अछि, तिनकर राज्यकाल 1519-1532 ई. छलनि। एक समस्या बनि क' ठाढ़ भेल जे जाहि विद्यापतिक जन्म 1350 ई.क लगपास निर्णीत भेल छल ओ 1532 ई. धरि ने मात्र जीवित अपितु रचनाशील सेहो कोना रहि सकैत छथि? एहि समस्या सभक दिस सब सँ पहिने महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रिएक ध्यान गेल छलनि। दोसर पीढ़ीक अध्येता विमान बिहारी मजूमदार अपन संकलनक भूमिका मे एहि विषय मे लिखलनि—'नगेन्द्र गुप्त के संस्करण में 484 संख्यक पद में हुसेन साहेब का, 801 मे राउ भोगीश्वर का, 34 में राय नसरत शाह का, 44 में 'कीर्तनानन्द'धृत पाठान्तर में पंच गोड़ेश्वर नसीर शाह एवं 529 संख्याक पद में आलम शाह का नाम पाया जाता है। इन पदों को हमलोगों ने विद्यापति की नि:संदिग्ध रचना क्यों नहीं मानी है, उसका यहाँ विचार किया जा रहा है।'[1] आ बेस लम्बा-चौड़ा लिखि क' एहि पर विचार केलनि, आ जे पद संदिग्ध पाओल गेल तकरा छाँटलनि। ई छाँटा-फेरी आगुओक संकलन सब मे चलैत रहल। एकर जे आगाँ निकष सब निर्धारित भेल तकर चर्चा पहिनहि कयल जा चुकल अछि। मुदा, तमाम छाँटा-छूँटीक बाद जे विद्यापतिक पद असंदिग्ध मानल गेल, ताहू पर सुकुमार सेन जे टिप्पणी केलनि अछि, से देखबा योग्य अछि। ओ लिखलनि—'परवर्ती कवियों में अनेक ऐसे शक्तिमान कवि हैं जिन्होंने विद्यापति की तरह अथवा

उनकी अपेक्षा अच्छे पद लिखे हैं। विद्यापति महान कवि थे एवं उन्होंने बहुत सारे अच्छे पदों की रचना की है। तब भी, जो विद्यापति पदावली के मत्त मधुकर हैं उनसे मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि बहु स्थान-काल-पात्र के मधु को केवल एक व्यक्ति द्वारा संचित मानकर वे कल्पनाचक्र गढ़ने पर तुल गए हैं। इतिहास-चर्चा एवं साहित्य-आलोचना को बिलकुल एक वस्तु के रूप में स्वीकार नहीं करना है। किन्तु इतिहास को सर्वथा अस्वीकार कर साहित्य में आलोचना चल भी नहीं सकती। भावकल्पना के पात्र से विद्यापति पदावली के साहित्यरस को चुलाने से पहले पदों को अच्छी तरह से चुन लेने की आवश्यकता है।'[2]

असल मे भेल ई छलैक जे अलग-अलग स्थान, आ अलग-अलग कालक कविक लिखल गीत मिज्झर भ' गेल रहैक। सुकुमार सेनक शब्द मे कहल जाय तँ सतरहम-अठारहम शताब्दी धरिक कविगण भणिता मे विद्यापतिक नाम द' क' अपन पंगु पदावली कें जीवित रखबाक चेष्टा कयने छलाह। मुदा तथ्य जे भेटैत अछि तदनुसार एकर विपरीतो कम नहि भेल छलैक। गीत विद्यापतियेक रहलैक मुदा कविगण भणिता मे नाम अपन जोड़ि लेलनि।

ई की छल ? विद्वान लोकनि एकरा विद्यापतिक पसार कहि क' अभिहित करैत छथि। रमानाथ झा कहैत छथि— 'ओना तँ विद्यापतिक काव्य-प्रतिभा, भाषा-लालित्य एवं रचनाकौशल ततेक चमत्कारक छल जे हुनक प्रतिभाक प्रखर रश्मि मे आन कवि लोकनिक कृति दिनुक तारा जकाँ क्रमश: विलीन होइत गेल, परन्तु विद्यापतिक नवीन शिल्प-शैली ततेक लोकप्रिय भेल जे तहिया सँ अद्यपर्यनत कोनहु समय मे हुनकर अनुसरण नहि होइत रहल अछि से नहि कहि सकैत छी।'[3] मुदा, असल मे ई मैथिली कविताक प्रसार छल, आ विद्यापति मात्र एक माध्यम, निस्संदेह सशक्त माध्यम, छलाह। तकर तँ स्पष्ट कारण छल जे विद्यापति आ हुनक समकालीन आ उत्तरवर्ती कवि लोकनिक कविता जे कि विद्यापतियेक भाषा, भाव आ विषयक अनुसरण मे लिखल गेल रहैत छल, बंगाल, आसाम आ नेपाल पहुँचल आ ओहि ठामक कविताक भाषा बनि ओहि-ओहि ठामक कवि लोकनिक द्वारा लिखल जाइत रहल। ई ओहि मैथिली कविताक जादू छल जकरा विद्यापति आ हुनकर उत्तरवर्ती कवि लोकनि प्रसारित कयने छलाह। एकरा 'मैथिली साहित्यक एक गोट आओर अंश' बतबैत रमानाथ लिखने छथि—'मैथिली साहित्यक एक गोट अंश एहन अछि जे आन कोनहु साहित्य मे नहि भेटत। मैथिली मे साहित्य-रचना मैथिली सँ भिप भाषा-भाषीक द्वारा भेल अछि ओ ताहि मे प्रत्येक प्रान्त मे अपन-अपन प्रतिभाक अनुकूल एहि मे भिप-भिप विधाक विकास भेल छैक।'[4] मैथिली भाषा-साहित्यक, मैथिली कविताक ई प्रसार निश्चित रूप सँ इतिहासक एक अद्‌भुत घटना मानल जा सकैत अछि। डॉ.

रामदेव झा ठीक लिखलनि अछि जे साधारणत: राजनीतिक विजयक संग विजेता जातिक भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार विजित आ शासित प्रदेश मे होइत देखल जाइत अछि। अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगीज इत्यादि भाषाक प्रचार एकर प्रमाण थिक। परन्तु मैथिलीक संग एहन कोनो राजनीतिक घटना नहि भेल। तखन एकर प्रचारक पृष्ठभूमि मे जे कारण रहल अछि से पूर्णत: सामाजिक आ सांस्कृतिक कहल जा सकैत अछि।[5]

विद्यापति तँ सम्पूर्ण जीवन मिथिला मे, तिरहुतक राजा लोकनिक दरबार मे, आ किछु समय नेपालक रजा बनौली मे बितौने छलाह, तखन ओ बंगाल कोना पहुँचलाह ? रमानाथ झा लिखने छथि जे बंगाल आ मिथिलाक संबंध बहुत प्राचीन छल। आ ताहि समय मे बंगालक पंडित आ युवा अध्येता शास्त्रज्ञान प्राप्त करबाक हेतु, ओकरा परिष्कृत आ अद्यतीकृत करबाक लेल मिथिला अबैत रहैत छलाह। जखन ओ लोकनि वापस घर घुरैत छलाह तखन हुनका ठोर पर विद्यापतिक गीत रहैत छलनि। एहि तरहें विद्यापति आ आनो आन मैथिली कविक गीत बंगाल पहुँचल। चैतन्य आ हुनक सम्प्रदायी लोकनिक लेल ई प्रेमगीत सब भक्तिगीत बनि गेल आ विद्यापति भ' गेलाह वैष्णव महाजन। हुनक भाव आ भाषाक अनुकरण करैत अनेको कवि अनेको गीत लिखलनि। हुनका लोकनिक भाषा मैथिली आ बांग्लाक एक टा अद्‌भुत मिश्रण छल जे बाद मे ब्रजबुलि कहब' लागल। चैतन्य सम्प्रदायक विस्तारक संग विद्यापति आ हुनकर ई काव्य-भाषा ब्रजबुलि उड़ीसा आ आसाम धरि पहुँचि गेल। स्वयं सुनीति कुमार चटर्जी एहि कथा कें एहि शब्द मे लिखलनि अछि— 'Mithila was The resort of Sanskrit students from Bengal for some three hundred years after the conquest of the latter province by the Turks. She was the teacher and inspirer of Bengal in Sanskrit learning, in Smriti and specially in Nyaya. Bengali scholars would come back home after finishing their studies in Mithila not only with Sanskrit learning in their heads, but also with Maithili songs on their lips--Songs by Vidyapati, and also probably by his predecessors and his successors. These were adopted by the Bengali people, and they gave a new literary model and a new literary dialect, the Brajabuli, to Bengal. The Maithili lyric similarly naturalised itself in Assam and in Orissa during the15th. century.'[6] ई मैथिली कविताक पसार छल, जकरा रमानाथ झा एक आओर मैथिली साहित्य कहलनि अछि।

मैथिली कविताक बंगाल, आसाम, उड़ीसा पहुँचबाक आ मुखामुखी प्रचलित

भ' जेबाक बात एहू कारणेँ संभव छल जे आधुनिक भारतीय भाषा सभक विकास सँ पहिनें, पूर्व मध्य युग मे, समाजक आधारशिला सर्वभारतीय छल। आधुनिक भाषाक जखन स्वरूप निखरल तखनहि प्रान्तीय आंचलिक संस्कृतिक आधारशिला तैयार भेल। मुदा ताहि युग मे एती-एती दूर सँ लोकक मिथिला पहुँचब, नदीमातृक मिथिला देस मे, से की एतेक आसान छल? डॉ. नीहाररंजन राय एहि विषय पर काज केलनि अछि। हुनक विवेचनाक अनुसार आइ गंगा कें हमरा लोकनि जाहि बाटें बहैत देखैत छी, तकर इतिहास सतरहम शताब्दी सँ पुरान नहि अछि। बारहम-तेरहम सँ सोलहम शताब्दी धरि गंगा राजमहल (झारखण्ड) पार भेलाक बाद उत्तर आ पूर्व दिशा मे घूमि, गौड़क पच्छिमे राखि राढ़ कें चीरैत दक्षिणवाहिनी भ' जाइत छल। तात्पर्य जे मिथिला अयबाक हेतु गंगा पार करब अनिवार्य नहि छल। वरेन्द्र, गौड़ अथवा राढ़ सँ मिथिला पहुँचबाक हेतु केवल महानन्दा आ कोशी कें पार कर' पड़ैत छलैक, से कयलाक बाद लोक पैदल वा बैलगाड़ी सँ मिथिला पहुँचि सकैत छलाह। मिथिला अयला पर सम्पूर्ण भारतक लेल रस्ता खुलि जाइत छलैक—मिथिला-पाटलिपुत्र-गया-वाराणसी-अयोध्या। मिथिला अयबाक लेल एक टा दोसरो रस्ता रहैक मिथिला-चम्पा-गौड़। बंगाल आ कामरूपक संबंध प्राय: आओर निबिड़ रहैक। एहन बुझबा मे अबैछ जे करतोया नदीक तट पर स्थित पुण्ड्रवर्धन केवल एक प्रख्यात तीर्थे नहि, आन्तर्देशिक वाणिज्यक एक प्रसिद्ध केन्द्र छल। आसामक रेशमी वस्त्र, बाँस, चानन, सुपारी आदि वस्तु नदीमार्ग सँ सुगमतापूर्वक बंगालक बजार मे पहुँचि सकैत छल। असल मे पुण्ड्रवर्धन एवं कामरूप राज्यक बीचक सीमा मे बेसी काल अदल-बदल होइत रहैत छलैक। कखनहु जँ पुण्ड्रवर्धन धकिया क' गोपालपारा जिला कें स्पर्श कर' लगैत छल तं कखनहु कामरूप बंगाल कें अतिक्रमण करैत कोशी नदीक कछेर धरि पहुँचि अबैत छल। ई अध्ययन प्रस्तुत करैत प्रो. जयदेव मिश्र लिखलनि अछि जे मध्ययुग मे मिथिला, बंगाल, आसाम, उड़ीसाक बीच यातायातक अनेक उपाय छल यद्यपि कि तखनहुं ओ उपाय सब आसान नहि छल।[7]

डॉ. सुकुमार सेन बड़ उद्यमक संग 'हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर' लिखलनि जे 1935 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ प्रकाशित भेल। ओहि मे डॉ. सेन देखौलखिन जे कोना सोलहम शताब्दी सँ उनैसम शताब्दी धरि लगातार कविताक ई भाषा आ रूप अपन सिक्का जमौने रहल छल। पुस्तकक भूमिका मे सुकुमार सेन लिखलनि अछि जे चारि सौ प्राचीन कविक हजारो पदावलीक अध्ययन कयलाक बाद ओ ई पुस्तक लिखलनि अछि। शताब्दीक अनुसार ओ युगक विभाजन कयने छथि जाहि मे कवि लोकनिक प्रतिनिधि पद सब पूरा देल गेल अछि, मात्र उद्धरण नहि। एहि चारि सौ कवि लोकनि मे सँ जाहि कवि सब कें ओ महत्त्वपूर्ण माननलनि आ जनिका

अवश्य पढ़बाक अनुशंसा केलनि, से सब छथि—यशोराज खान, रामभद्र राय, मुरारि गुप्त, वासुदेव घोष, गोविन्द घोष, नयनानन्द, माधव दास, लोचन, ज्ञानदास, बलराम दास, जगपाथ दास, श्रीनिवास आचार्य, नरोत्तम दास, गोविन्द दास कविराज, गोविन्द दास चक्रवर्ती, राय बसन्त, शेखर, कविवल्लभ, विद्यावल्लभ, यदुनंदन दास, नृप वैद्यनाथ, जगदानन्द दास, नरहरि चक्रवर्ती, यदुनाथ दास, वीर हम्बीर, राघवेन्द्र राय, रामचन्द्र मल्लिक, यादवेन्द्र, प्रतापरुद्र, नसीर मामूद आदि। एहि रचना-धारा कें ओ पूर्व आधुनिक युग मानैत छथि, जकर अपन धार्मिक आग्रह छल। राधाकृष्णक कामकेलि के तथाकथित अश्लील आ अनैतिक चित्र सभक बारे मे तँ ओ फ्रायडियन मनोवैज्ञानिक लोकनिक चुटकी लेलनि जे एहि गीत सब मे ने तँ सप्रेशन अथवा रिप्रेशनक रूप सब ताकल जा सकैछ ने कॉम्पलेक्सक अन्तर्गत रखबाक जरूरति छैक, बस एतबे बुझल जाय जे ई मात्र एक 'कन्वेन्शनल मैटर' थिक, तल्लीनता निमग्न समुदायक एक बड़बड़ाहट। सब गोटे जनैत छी जे ओ एहन कीर्त्तन छल जे आराध्यदेवक गुन गबैत भक्त लोकनि बेसुध भ' जाइ छलाह। ओना, अपन पुस्तक 'विद्यापति-गोष्ठी' मे एक बात ओ इहो कहने छथि जे ब्रजबुलि साहित्यक आगामी विकास मे जेना-जेना भक्तितत्त्व बढ़ैत गेलैक, साहित्यरसक मात्र न्यून सँ न्यूनतर होइत चलि गेलैक आ बाद मे तँ सूखिये गेलैक।[8]

तखन ब्रजबुलिक इतिहासक भूमिका मे ओ इहो लिखैत छथि जे ई पद सब ने तँ प्रकाशन करेबाक वास्ते लिखल गेल छल आ ने कोनो व्यापक प्रसार (वाइड सर्कुलेशन) एकर कोनो उद्देश्य रहैक।

मुदा वास्तव मे एहि गीत सभक लिखल जेबाक उद्देश्य की छल? एहि विषयक विश्वस्त अध्येता डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा कहैत छथि—'बंगाल मे विद्यापति गीतक प्रचारक सब सँ पैघ हेतु भेलाह चैतन्यदेव। विद्यापतिक जे पदावली मिथिला मे शृंगारविषयक बूझल जाइत छल ओहि सँ तत्वदर्शी चैतन्य कें भक्तिक प्रेरणा भेटलनि। चैतन्यदेव सदृश भक्त जखन विद्यापतिक पद कें गबैत छलाह तँ आनन्द सँ मूर्च्छित भ' जाइत छलाह। चैतन्यक पश्चात हुनक शिष्य-परम्परा ओहि गीत कें अपनौलनि तथा ओकर सम्मान एवं प्रचार केलनि आ ओहि मे हुनका एक महान रहस्यक बोध भेलनि। विद्यापतिक व्यापक प्रभावक फलस्वरूप बंगाल मे विद्यापतिक अनुकरण पर पद रचनाक एक टा परम्परे चलि पड़ल। एहि प्रकारें मैथिली एवं बांग्लाक सम्मिश्रण सँ एक नूतन काव्यभाषाक जन्म भेल आ एक नवीन वैष्णव-साहित्यक अभ्युदय भेल जकर नाम बांग्ला साहित्य मध्य कालान्तरें 'ब्रजबुलि' देल गेल।'[9]

ब्रजबुलिक उदयक प्रसंग ऊपर जे मत व्यक्त भेल अछि, सामान्यत: यैह सर्वसम्मत सिद्धान्त रहल अछि। ग्रियर्सन, सुनीति कुमार चटर्जी, उमेश मिश्र, जे ?सी ?

घोष, जयकान्त मिश्र, शिवनन्दन ठाकुर आदि समस्त विद्वान एकरहि समर्थक छथि। सुकुमार सेनक सेहो अपन ब्रजबुलिक इतिहास मे, यैह मत छनि, यद्यपि कि आगू एहि मे परिवर्त्तनक प्रस्ताव ओ रखलनि। प्रस्ताव छल जे ब्रजबुलि मैथिलीक प्रभाव सँ नहि अपितु अवहट्टक प्रभाव सँ विकसित भेल। हुनक मुख्य अभिप्राय श्रेय पर सँ मैथिलीक एकाधिकार कें तोड़ब आ एकरा एक सर्वभारतीय अद्यतन एवं अंतिम अवशेष प्रमाणित करब छल। एहि संबंध मे शैलेन्द्रमोहन झा बहुत ठीक लिखने छथि जे 'ब्रजबुलि काव्य कें मैथिली सँ जे भाषा, शैली ओ छन्द संबंधी समानता छैक वैह जेना प्रमाणित करैत अछि जे बंगाल मे एकर स्वतंत्र विकास यदि नहि भेल रहैत तँ निश्चये ओ मैथिली मे रहैत।'[10] हमरा लोकनि देखैत छी जे जखन सुकुमार सेन ब्रजबुलिक अवहट्ट कनेक्शन पर जोर दैतहु छथि तखनहु एहि बात कें इनकार करबाक लेल हुनका लग कोनहु तर्क नहि रहैत छनि जे भाषा-शैली-छन्दक गीतात्मक प्रेरणाक केन्द्र मैथिली थिक।

स्वयं सुकुमार सेन सेहो मानैत छथि जे ब्रजबुलि काव्य-परम्परा चारि सौ वर्ष धरि पसरल रहल जाहि मे चारि सौक करीब कवि चारि हजार सँ ऊपर पद-रचना केलनि। एहि कवि लोकनि मे कम सँ कम तीन गोट महिला आ एगारह गोट मुसलमान कवि सेहो छलाह।

सब सँ पुरान जे ब्रजबुलि रचना भेटैत अछि, ओकर कवि यशोराज खान छथि। यशोराजक संग 'खान' किएक लागल छैक, अथवा ओ कतयक निवासी, की हुनक परिचय आदिक संबंध मे किछुओ सूचना नहि भेटैत अछि। हुनक पदक भणिता मे बंगालक राजा हुसैन शाहक नाम लेल गेल अछि, एतबे तथ्य उपलब्ध अछि। हुनक पद देखी—'एक पयोधर कनक भूधर/ कोले मिलला जोरा/ माधव, तुअ दरसन काजे/ आध पदचालन करिय सुन्दरि/ बाहरि देहलि माँझे/ दहिन लोचन काजरे रंजित/ धवल रहल वामा/ नील धवल कमल युगले/ पूजल कत कोटि कामा/ श्रीयुत हुसैन जगत जगभूषण/ सोहे ई रस जान/ पंच गौड़ेश्वर भोग पुरन्दर/ भने यशोराज खान।'[11]

सुकुमार सेन चर्च करैत छथि जे रामगोपाल दास ऊर्फ गोपाल दास जे कि 'रसमंजरी' आ 'रसकल्पवल्लि'क संग्रहकर्त्ता छथि, ई संकलन शक संवत 1595 मे कएल गेल छल, अपन गाम श्रीखण्डक वैद्य-परिवारक चर्च करैत छथि, ताहि सँ अनुमान होइछ जे ओ श्रीखण्ड गामक वैद्य-परिवार सँ होथि, जाहि परिवार सँ आगाँ बहुतो ब्रजबुलि कवि भेलाह। शाह हुसैनक समय सुनिर्धारित अछि जे ओ 1493 ई. सँ 1519 ई. धरि राज केलनि। प्राय: एही समय मे उड़ीसा मे राजा प्रतापरुद्रक शासन काल छल, जनिक एक गर्वनर रामानन्द राय छलाह, जे उड़ीसा मे ब्रजबुलि गीतक सुप्रसिद्ध रचनाकार छथि। एहि कालखंड मे चैतन्यदेव सेहो विद्यमान रहथि।

कहल जाइत अछि जे हुसैन शाह आ प्रतापरुद्र दुनू राजा, चैतन्यदेवक शिष्य छलाह। एहन विवरण भेटैत अछि जे एक बेर जखन शाह हुसैन उड़ीसा पर चढ़ाइ कयने छलाह तँ स्वयं चैतन्यदेव बीच मे पड़ि क' झगड़ा कें शान्त कयने छलाह। चैतन्येक प्रभाव सँ प्रतापरुद्रक समय मे उड़ीसा मे ब्रजबुलि मे पर्याप्त काव्यरचना भेल।[12]

चैतन्यक नववैष्णव आन्दोलन सँ जुड़ि क' ब्रजबुलि मैथिलीक पद-रचना मे जे विषय-विस्तार भेल, सेहो चैतन्यक जीवनकाले मे आरम्भ भ' गेल छल। स्वयं चैतन्य आ हुनकर अनुयायी लोकनि कतेक एकनिष्ठ भक्त-हृदय पौने छलाह, तकर एक दृष्टानत 'चैतन्य चरितामृत' सँ लैत विमान बिहारी मजूमदार रखलनि अछि जे 'य: कौमारहर: स एव एव हि वर:' सन सुप्रसिद्ध शृंगारिक श्लोक कें सुननहु चैतन्यदेव परम आध्यात्मिक आनन्द सँ भरि उठैत छलाह।[13] तें, विषय-विस्तार नितान्त स्वाभाविक छल। चैतन्यक समकालीन आ हुनक परिवारीजन जकाँ सेवारत वंशीवादन दास (जन्म 1494) कृष्णक बाललीलापरक ई पद लिखलनि—'धातु प्रबल दल नव गुंजाफल/ ब्रज बालक संगे साजे/ कुटिल कुंतल बेरि मणि मुकुता झरि/ कति तते घुंघरू बाजे/ नाचत मोहन बालगोपाला/ बरज वधू मिलि देअय करतलि/ बोलइ भालि रे भाला/ नन्द सुनन्द यशोमति रोहिणि/ आनन्दे सुतमुख चाय/ अरुण दृगंचल काजरे रंजित/ हसि हसि दशन देखाय/ बंशी कहए सब ब्रजरमणीगण/ आनन्द सायरे भासा/ हेरिते परसिते लालन करिते/ स्तन-खिरे भीगल वासा।'[14]

एहि गीतक तुलना जँ हमरा लोकनि ओहि काल मे एम्हर मिथिला मे लिखल जाइत गीत सब सँ करी तँ कपार पीट' पड़त। ओहि कालक बात तँ छोड़ी, कैक शताब्दी बाद जे मनबोध मिथिला मे अबैत छथि जे कृष्णक बाल-लीलाक वर्णन केलनि, हुनको कवि-दृष्टि एहि ठाम धरि नहि पहुँचि सकलनि। एहि ठाम देखिते छी, बालकृष्ण कें दुलार करैत अड़ोसी-पड़ोसी माता लोकनि कें ततेक वात्सल्य उमड़ैत छनि जे हुनकर स्तनपरक वस्त्र (आंगी) भीजि जाइत छनि।

एकर एक शताब्दी बाद कवि नयनानन्द (जन्म 1583)क पद मात्र दृष्टान्तक लेल हम प्रस्तुत करब। नयनानन्द बंगाली छलाह मुदा दीक्षित भेलाक बाद ओ घर त्यागि देलनि आ समुच्चा जीवन पुरी मे रहलाह। एहि तरहें हुनकर कविता कें उड़ीसाक कविता सेहो कहल जा सकैत अछि। हुनका बारे मे जानकारी भेटैत अछि जे ओ कोनो वाणीनाथ मिश्रक बालक छलाह, संन्यास सँ पहिने विवाहित छलाह आ हुनकर वंशक लोक मुर्शिदाबाद जिला मे एखनो बसैत छथि। नयनानन्दक कविता सब मे हमरा लोकनि देखैत छी जे ओ अपन कोपहु टा पद कृष्णक विषय मे नहि लिखलनि, जतेक जे हुनक पद भेटैत अछि, सभक सब परमगुरु चैतन्यदेवक स्तुति मे लिखल भेटैत अछि। दृष्टान्तक लेल हुनकर एक टा पद—'ओ रूप सुन्दर गौड़

किशोरा/ हेरइते नयने आरति नहि ओरा/ कर पद सुन्दर अधर सुरागे/ नव अनुरागिनि नव अनुरागे/ लोल विलोचन लोलत लोरा/ रसवति हृदये बाढ़ल प्रेम डोरा/ परतेख प्रेम किए मनमथ राजे/ कंचन गिरि किए कुसुम समाजे/ अछु प्रेम लंपट श्री गौरांग राय/ शिव शुक अनन्त ध्याने नहि पाय/ पुलक पटल वलयित सब अंग/ प्रेमवति आलिंगने लहरि तरंग/ तछु पदपंकजे अलि सहकार/ कह नयनानन्द चित्र विहार।'[15]

विपरीत रतिक वर्णन विद्यापतिक काव्य मे खूब भेटैत अछि, एहि पर आधुनिक अध्येता लोकनि, यथा शिवप्रसाद सिंहक, आपत्तियो बहुत छनि। मुदा, नव वैष्णवक ब्रजबुलि साहित्य मे सेहो विपरीत रतिक वर्णन आयल। देवकीनन्दन दासक पद छनि—'विपरीत रति अवसाने कमलमुखि/ घामहि भीजल चीर/ सहचरि दासि चामर करे बीजइ/ कोइ जोगाएत नीर/ बैठल राधा नागर कान/ दुहुजन चिर अभिलाष परिपूरल/ परिजन मंगल गान/ कालिन्दी तीर निकुंज मनोहर/ बहतहि मलय समीर/ कत परिहास रभस रस कौतुक/ दुहु पर दुहुजन गीर/ वृन्दादेवि समय बुझि कुञ्जहि/ देवकीनन्दन आर।'[16] तखन, ई बात तँ स्पष्टे अछि जे भने विषय विपरीतरतिये किएक ने हो, कृष्ण मे पूरन परमात्माक आरोपण भेने हुनक शान बढ़ि गेलनि अछि। विद्यापति मे जेना हमरा लोकनि साधारण युवक-युवतीक कौतुकक स्पर्श पबैत छी, एहि कविक रचना मे तकर अवश्ये अभाव अछि।

यैह समय छल जखन राधाा-कृष्ण प्रसंग मे फगुआ गीतक प्रादुर्भाव भेल। मिथिला समाज मे भने पहिनहि सँ प्रचलित होइक, विद्यापतिक पदावली मे हमरा लोकनि एकर अभाव पबैत छी। शिवानन्द चक्रवर्तीक गीत मे होरी खेलेबाक प्रसंग आयल अछि, जतय कृष्ण आ राधाक संग-संग महाप्रभु चैतन्य कें सेहो होरी खेलैत देखाओल गेल अछि—'होली खेलत गौर किशोर/ रसवति नारि गदाधर कोर/ स्वेद-बिन्दु मुख पुलक शरीर/ भावभरे गलितहि लोचन नीर/ ब्रजरस गावत नरहरि संगे/ मुकुन्द मुरारि वासु नाचत संगे/ खने खने मुरछइ पंडित कोर/ हेरइत सहचर सुखे भेल भोर/ निकुंज मंदिर प्रभु कयल बिठार/ झूमे पड़ि कहे कहाँ मुरलि हमार/ कहाँ गोवर्धन यमुनाक कूल/ कहाँ मालति युथि चंपक फूल/ शिवानन्द कहे पहु सुनु रसवाणि/ इहे पहु गदाधर इहे रसखानि।'[17] एतय जे कृष्णक भूमि पर पड़बाक, मुरली तकबाक, यमुना गोवर्धन आ उपवनक अवस्थिति पुछबाक वर्णन भेल अछि, स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे फगुआक अवसर पर भांग खयलाक बादक चित्तदशाक वर्णन कएल गेल अछि।

ज्ञानदास (जन्म 1530 ई.) संभवत: ब्रजबुलिक सब सँ प्रतिभाशाली कवि भेलाह। स्वयं सुकुमार सेन लिखलनि अछि जे गोविन्ददासक बाद वैह सब सँ पैघ कवि छथि। हुनक पद सभक संख्या सेहो पर्याप्त अछि। प्राचीन संकलन सब मे हुनकर

105 पद संकलित भेटैत अछि। महान कवि चंडीदास ब्रजबुलि मे नहि लिखलनि, मुदा हुनकर रचना मे अन्तर्निहित शैली, विचार-प्रणाली आ प्रस्तुतीकरण तकनीकक लगभग तहिना अनुसरण ज्ञानदास अपन ब्रजबुलि कविता मे करैत देखल जा सकैत छथि, जेहन हमरा लोकनि गोविन्ददास कें विद्यापतिक अनुसरण करैत देखैत छी। सुकुमार सेन इहो जनतब देलनि अछि जे कैक गोट परवर्ती कवि लोकनि ज्ञानदासक भणिता मे हेरफेर क' क' हुनकर पद सब कें हथियेबाक प्रयास केलनि। कृष्णक बेवफाई पर सखी सभक प्रति वर्णन एहि गीत मे देखल जाय—'लहु लहु मुचकि हँसि चलि आओलि/ पुन पुन हेरसि फेरि/ जनु रतिपति समो मिलन रंगभूमे/ ऐछन कयलि पुछेरि/ धनि हे, बुझलहुँ ई सब बात/ अंत दिन दुहुक मनोरथ पुरल/ भेटलि कानुक साथ/ यब तोहे सखिगण निरजने पूछल/ तब तुहु छापल काय/ अब विहि से सब बेकत कयल सखि/ कैछन गोप बिताय/ चोरिक वचन कहत सब गुरुजन/ सो सब पायलु साखि/ दस दिन दुरजन, एक दिन सुजनक/ आजु देखलु परतेखि/ हम सब निज जन सो सब बुझलुँ आजु काजे/ ज्ञानदास कह सखि तुहु विरमह/ राय पाओल बहु लाजे।'[18]

एक दोसर पद मे राधाक उपरागक वर्णन एहि तरहें कयल गेल अछि—'पहिलहि चाँद कर देला आनि/ झाँपल शैलशिखरे एक पाणि/ अब विपरित भेला से सब काल/ बैसि कुसुम किए गाँथइ माल/ न बोलह साजनि, न बोलह आन/ की फल अछय भेटब कान/ अन्तर बाहिर सम नहि रीत/ पानि तैल नहि गाढ़ पिरीत/ हिय सम कुलिश वचन मधु धार/ विषघट ऊपर दूध उपहार/ चातुरि बेचह गाहक ठाक/ गुपुत प्रेमसुख इहे परिनाम/ तुहु किए शठी निपट कह मोय/ ज्ञानदास कह समुचित होय।'[19] एहि सब ठाम विद्यापतिक समतुल्यता तँ हम सब देखिये सकैत छी, इहो देखबा योग्य अछि जे ज्ञानदासक भणिता केवल भरतीक लेल नहि होइछ, ओकर अपन स्पष्ट अभिप्राय होइत छैक। से एहू सँ स्पष्ट होइछ जे क्रोध कि उपराग स्थायी नहि थिक, स्थायी थिक प्रेम। कृष्ण छथिहे एहन जे क्रोध ठहरि नहि पबैछ। एक बेर हुनका देखि ली तँ आँखि हुनका पर सँ घुरबाक नाम नहि लैछ, मन मे बस एक्के टा बात बचल रहि जाइछ जे बस, हमरा हिनके संग रहबाक अछि। गजब देखू जे ई आदमी विना स्पर्श कयने समस्त सुखसम्पदा (शारीरिक)क ढेरी ठाढ़ क' सकैत अछि—'रूप देखि आँखि नहि निउतइ/ मन अनुगत निज लाभे/ उपरस देइ परस सुख संपद/ साँवर सहज सुभावे/ सखि हे, मुरति पिरिति सुखदाता/ प्रति अंग अखिल अनंग सुख सायर/ नायर निरमल धाता।'—मानू कि एहि आदमीक रचना विधाता बस केवल प्रेम करबाक लेल कयने हेथिन।

एक पद मे ओ अपन परमगुरु चैतन्य महाप्रभुक वर्णन कयने छथि, सेहो देखबा

योग्य अछि—'हेम बरन वर सुन्दर विग्रह/ सुरतक वर परकासे/ पुलक पत्र नव प्रेम पक्व फल/ कुसुम मन्द मृदु हासे/ नाचत गौर मनोहर अद्भुत/ राजित सुरधुनि धारा/ त्रिजग लोक ओक भरि पाओल/ भक्ति रतन मनिहारा/ भाव विभावमय रस रुप अनुभव/ सुवलित सुखमय अंगे/ द्विरद मत्त गति अति सुमनोहर/ मूर्च्छित लाख अनंगे/ धनि खितिमंडल, धनि नदियापुर/ धनि धनि ई कलिकाले/ धनि अवतार धनि रे धनि किरतन/ ज्ञानदास नह पारे।'[20]

चैतन्यक भक्ति-धाराक एक प्रभाव इहो देखल जाइछ जे अनेक मुसलमान संत एहि धाराक संग आबि मिललाह आ ब्रजबुलि मे भक्तिपद लिखलनि। ई बंगाले टा मे नहि उड़ीसा मे सेहो संभव भेल, जाहि ठामक कवि साल बेगक पद ब्रजबुलिक संग-संग उड़िया मे सेहो भेटैत अछि। अन्य प्रमुख कवि लोकनि थिकाह नासिर मामूद, सैयद मुर्तुजा, अकबर शाह, फकीर हबीब, कबीर मोहम्मद, शेख लाल आदि। सुकुमार सेनक आकलन छनि जे एहि मे सँ अधिकांश लोक फकीर (सूफी संत-टाइप) रहल हेताह, जिनका चैतन्यक किरतन-भक्ति मे अपरुब आनन्द देखार पड़ल हेतनि। एम्हर मिथिलाक ई अवस्था रहल जे ई एक टा कबीर कें नहि सम्हारि सकल, आन मुसलमानक तँ कल्पनो की कएल जा सकैत अछि! 'पदकल्पतरु' सन प्राचीनतम संकलन मे मुसलमान कवि लोकनि संकलित छथि जेना कि नासिर मामूदक ई पद देखल जाय—'चलत राम सुन्दर श्याम/ पाचनि काचनि वेत्र वेणु/ मुरलि खुरलि गान री/ प्रिय श्री धाम सुधाम मेलि/ तरणी तनया तीरे केलि/ धवलि साँवलि आउ री आउ री/ वयस किशोरा मोहन भान्ति/ वदन इन्दु जल कान्ति/ चारु चन्द्र री गुंजा हार/ वदने मदन भान री/ आगम निगम वेद सार/ लीलाये करत गोठ विहार/ नासिर मामुद करत आश/ चरणे शरण दान री।'[21]

सुकुमार सेन अपन पुस्तक मे एहि तथ्यक उल्लेख केलनि अछि जे ने केवल उनैसम शताब्दीक अन्त धरि ब्रजबुलि काव्य-लेखनक धारा चलैत रहल, जकर उदाहरण स्वयं बंकिमचन्द्र आ रवीन्द्रनाथ छथि, अपितु आइयो एक खास रसिक समाज मे स्वान्त:सुखाय ई लेखनधारा अविरल जारी अछि। मुदा हमरा लोकनि देखैत छी आ सुकुमार बाबू सेहो गछैत छथि जे एहि पद सब मे सँ धीरे-धीरे काव्यतत्व, जकर जड़ि लीलातत्त्व आ कौतुकतत्त्व मे छल, क्षीण होइत चलि गेल। उदाहरणक लेल हमरा लोकनि अठारहम सदीक कवि राधामोहन ठाकुर (1699-1778)क ई पद देखि सकैत छी जाहि मे कविता प्रभुक प्रार्थना धरि सीमित रहि गेल अछि—'अभिनव जलधर रुचिर सुदेह/ पीताम्बर वर तड़ित थिर रेह/ जय जय गोविन्द गोकुल भाँगि/ ब्रज नव रमणि याक मन लागि/ कत कोटि चाँद जिनिय वर मुख/ याकर दरसे मेटय सब दुख/ निरुपम रूप जलधि अवतार/ राधामोहन यहु मुरति सिंगार।'[22]

सुकुमार सेन 1876 ई. मे एक बांग्ला पत्रिका मे प्रकाशित प्रसाद दास ऊर्फ गुरु प्रसाद सेनगुप्तक एक पद उद्धृत केलनि अछि। एहि सँ तँ प्रतीत होइछ जे बात आब गुरु-वंदना धरि सीमित भ' रहल छल—'पामर जनगण परम सुहृत् धन/ गुरुपदे मझु परनामा/ कोमल नीरज पटल कलेवर/ सरस प्रेममय धामा/ को जानि तोहरि कृपाबल लेश/ देह करुणा करि भूतल अवतरि/ भव तरि सम उपदेश।'[23]

हमरा लोकनि अवगत छी जे रवीन्द्रनाथ ठाकुर एही काव्य-भाषा ब्रजबुलि सँ अपन कवि-जीवनक आरंभ कयने रहथि। एहि तरहक पहिल गीत तँ ओ 1877 ई. मे लिखने छलाह जखन हुनकर आयु मात्र सोलह वर्ष छलनि। 1884 मे हुनकर ई पहिल कविता-संग्रह 'भानुसिंह ठाकुरेर पदावली' छपल जाहि मे 22 गोट कविता रहनि। छप्रकथा ओ गढ़ि देने रहथि जे भानुसिंह ठाकुर सतरहम शताब्दीक एक सन्तकवि रहथि जिनकर ई सब पद हुनका कतहु सँ भेटि गेलनि अछि जकरा ओ छपबा रहल छथि। ई असल मे ओहि काव्यभाषाक प्रति दीवानगी रहैक, जकरा सुकुमार सेन 'पूर्व आधुनिक' (प्री-मॉडर्न) कहैत छथि आ जकरा कारणें रमानाथ झा रवीन्द्र कें विद्यापति परम्पराक अन्तिम बांग्ला कवि कहैत छथि। उचिते जे सुकुमार सेन अपन पुस्तक मे रवीन्द्रनाथक कविता नहि लेलनि, कारण हुनकर अध्ययन ओहि भक्ति-परम्पराक कविता सँ सम्बन्धित रहनि जाहि मे साहित्यरस आब न्यून भ' गेल रहैक। भानुसिंह ठाकुर कें सेहो नहि लेलनि कारण ताधरि रवीन्द्र रहस्य खोलि देने छलथिन।

रोचक होयत ओहि भाषाक बानगी देखब जकरा रमानाथ झा आन प्रान्त मे अन्य भाषाभाषी द्वारा लिखल मैथिली साहित्य कहैत छथि। रवीन्द्रनाथ बसन्तक वर्णन करैत छथि—'वसन्त आओल रे/ मधुकर गुनगुन, अमुआ मंजरि/ कानन छाओल रे/ सुन सुन सजनी हृदय प्राण मम/ हरखे आकुल भेल/ जर जर रिझसे दुख-ज्वाला सब/ दूर दूर चलि गेल/ मरमे बहइ बसन्त समीरण/ मरमे फूलइ फूल/ मरमकुंज पर बोलइ कुहु कुहु/ अहरह कोकिल कूल।'[24]

कठिन परिस्थिति मे अभिसारक वर्णन हुनकर एहि गीत मे कएल गेल अछि—'सजनि गो, साओन गगने घोर घनघटा/ निशीथ यामिनी रे/ उन्मद पबने यमुना तर्जित/ घन घन गर्जित मेह/ दमकत विद्युत, पथतरु लुंठत/ थर थर कम्पन घन घन रिमझिम, रिमझिम रिमझिम/ बरखत नीरदपुंज/ घोर गहन वन ताल तमाले/ निविड़ तिमिरमय कुंज/ बोल त सजनी, ए दुरयोगे/ कुंजे निरदय कान्ह/ दारुण बंसी काहे बजायत/ सकरुण राधा नाम।'[25] कतेक मार्मिक अभिव्यक्ति अछि। एहन विकराल राति मे राधा राधा कहि क' मोहन मुरली बजा रहल छथि! कहू तँ सखी, ई उचित भेलै?

अपन एक कविता 'हृदयक साध मिसाओल हृदये' मे विरहवर्णन करैत छथि—

'हृदयक साध मिसाओल हृदये/ कंठे विमलिन माला/ बिरहबिखे दहि बहि गेल रयनी/ नहि नहि आओत काला/ बुझनु बुझनु सखि विफल विफल सब/ विफल ए पीरिति लेहा/ विफल रे मझु जीवन जौबन/ विफल ए मझु देहा।'[26] एक टा दोसर विरह-गीत मे मृत्युक परिस्थिति धरि पहुँचल देखाओल गेल अछि। शीर्षक छैक—'मरण'—'मरण रे, तुहुँ मम श्याम समान/ मेघबरन तुझ, मेघ जटाजुट/ रक्तकमल कर, रक्त अधरपुट/ ताप-विमोचन करुण कोर तव/ मृत्यु अमृत करे दान/ तुहुं मम श्याम समान/ मरण रे, श्याम तोहारहि नाम/ चिर बिसरल जब निरदय माधब/ तुहुँ न भइलि मम वाम/ आकुल राधा रिझ अति जर जर/ झरइ नयन दोउ अनुखन झर झर/ तुहुँ मम माधव, तुहुँ मम दोसर/ तुहुँ मम ताप घुचाउ/ मरण रे, आउ तू, आउ रे आउ।'[27] हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे युवा रवीन्द्रनाथक एहि कविता मे ने मात्र भाषा आ भाव, अपितु लय, रंग आ बानि तक मे विद्यापति उतरि आयल छथिन।

मुदा सुकुमार सेन एहि ब्रजबुलि कें आधुनिक काव्य-भाषा नहि गछैत छथिन। हुनक मत छनि जे बस हँ, आब कविताक ई भाषा रखबाक प्रयोजन नहि अछि। आब तं एकरा अपन आधुनिक भाषा बांग्ला मे लिखल जा सकैत अछि। ई आधुनिक भाषा आ ओकर रूपक पहिल अभिव्यक्ति दिस गमनक प्रस्ताव छल। एहि तरहें देखी तँ बांग्ला मे रवीन्द्रनाथक वैह महत्त्व अछि जे मैथिली मे चन्दा झाक। रमानाथ बाबू सेहो विद्यापति सँ उतरलाक बाद चन्दे झा पर आबि क' टिकैत छथि। मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे चन्दा झा सामंत लोकनि सँ परेशान, गाम सँ निष्कासित दुखी बुद्धिजीवी छलाह जे पैघ लोकक प्रताप गछबा सँ अपन कविता मे तँ स्वतंत्र रहि सकैत छला मुदा वास्तव मे ओकरे सँ पीड़ित, आतंकित छला। मिथिलाक राजसत्ता अपन एक जागन्त साहित्यिक प्रतिभाक संग केहन व्यवहार करै छल, चन्दा झाक दृष्टांत मे हमरा लोकनि एकर सूचना पाबि सकैत छी। बांकी, 'सुतंत' साहित्यिक लोकनि तँ सामंत लोकनिक दरबारेक शोभा बढ़बैत छलाह। ओतय वैज्ञानिक मस्तिष्कक कोनहुं काज नहि छल, आ ने जागंत प्रतिभाक। एहि तरहें देखि सकैत छी जे सांस्कृतिक अस्मिताक बढ़ावा लेल कोनो प्रोत्साहन नहि छल, केवल राजनीतिक कुचक्री लोक सभक वर्चस्व छल भने ओकर साहित्यिक विवेक कतबो पिछड़ल किए ने होअय। चन्दा झा कें रवीन्द्रनाथ सँ पछड़ैत जँ देखैत छी एकर कारण मात्र ई नहि जे रवीन्द्रनाथ सामंतक परिवार सँ अबैत छलाह। बंगालक सामंत लोकनि तँ सांस्कृतिक दृष्टि सँ ततेक परिपक्व आ अगुआएल छलाह जे मिथिला मे क्यो एको टा एहन सामंत नहि भेलाह जिनकर आवाज बहुत दूर तक सुनाइ पड़ि सकय, जेना राजा राममोहन राय। चन्दा झा कें जनतोक सपोर्ट नहि छलनि। सांस्कृतिक मूल्य सेहो कोनो मूल्य होइत अछि तकर कोनो समझे तहिया नहि छल, स्वाभाविक जे

तकर परवाहो नहि छल। एक टा असगर भेला चन्दा झा। हुनक यज्ञ असम्पप रहल। ओहि यज्ञ कें आगू पूरा केलनि यात्री जी। बहुतो लोक कें बुझल हेतनि जे रवीन्द्रनाथक निधन पर जे कविता यात्री जी 1941 मे लिखने छलाह, ओहि मे एतेक धरि लिखने छलाह जे 'मुझको भी मिली है प्रतिभा की परसादी।'—एक युवा कविक ई टक्कर लेब छल कविगुरु सँ। ई युवा कवि अपना भाषाक लेल ठाढ़ भ' रहल छलाह। ई कविता तँ ओ हिन्दी मे एही टा दुआरे लिखने हेताह जे तखन क्यो हिन्दिएबला संपादक मँगने हेतनि, अपनो सुभितगर लागल हेतनि जे बात बेसी दूर धरि जेतैक। कविता मे बात अमीर-गरीब पर चलि गेलैक, ई ओकर अनिवार्य प्रयोजन छल। मुदा तारीफ जे अपन युगक समतूल कविताक एक सही प्रारूप ओ लिखि देलखिन, आ ताहि मे ओ पूर्ण सफल भेलाह। तें जखन रमानाथ झा कहैत छथिन जे विद्यापतिक अनुसरण मे मैथिली मे कविता एखनो लिखल जा रहल अछि तं यात्री सँ इतर धाराक काव्य-परंपराक सन्दर्भ मे ई बात कहल गेल अछि, से स्मरण रखबाक चाही।

एक ठाम ओ (रमानाथ झा) लिखैत छथि—'विद्यापति हमर भाषाक पहिल महाकवि छथि ओ भारतक एहि पूर्वांचल मे ओ पहिल महाकवि भेलाह जनिक रचना सँ प्रेरणा लए जनिक रीतिक अनुसरण कए जनिक आदर्श कें समक्ष राखि एहि अंचलक भाषा-साहित्यक विकास भेल अछि। मुदा विद्यापतिक पश्चात् हमरा लोकनि कें चन्दा झा भेटैत छथि। मध्यक पाँच सए वर्ष मे सैकड़ोक हिसाब सँ कवि भेलाह, हजारक हिसाब सँ गीत रचल गेल मुदा साहित्यिक प्रगति की भेल?'[28] एही लेख मे ओ आगू लिखैत छथि—'पाँच सए वर्ष मे पण्डित लोकनि मिथिलाभाषा कें हथिआए एकर विकासक मार्ग कें अवरुद्ध कएने रहलाह।' (पृ. 19) एक ठाम कहैत छथि—'हम मैथिली साहित्यक दुइए टा युग मानैत छी—'विद्यापतिक युग, प्राचीन युग, कृष्णकाव्यक युग ओ चन्दा झाक युग, नवीन युग, रामकाव्यक युग।' (पृ. 21) एक आर ठाम कहैत छथि—'मिथिला मे हर्षनाथ झा ओ बंगाल मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर धरि हम विद्यापतिक युग मानैत छी। तदनन्तर चन्दा झाक युग अबैत अछि ओ से होइत अछि रामकाव्यक युग। हम आइ धरि (1968) ओहि युगक परिणाम मानैत छी।' (पृ. 20) एक ठाम तँ इहो लिखलनि जे मिथिला मे विद्यापतिक अनुकरण पर गीत एखनहु लिखल जा रहल अछि। मुदा ध्यान देल जाय। यात्री जीक नाम लेबा सँ ओ अपना कें बचा लेलनि।

आसाम मे जे मैथिली साहित्य पहुँचल आ तकर व्यापक प्रभाव पड़ल से थोड़ेक भिप छल। डॉ. वासुकीनाथ झा लिखलनि अछि—'भाषाक दृष्टि सँ ई बंगालक ब्रजबुलिक अपेक्षा मैथिली सँ अधिक सिपकट अछि। भाव, माधुर्य, सरस-कोमल-ललित शब्द-विन्यास आदि सँ विद्यापतिक पदक प्रभाव स्पष्ट होइत अछि। बंगाल

मे जतए विद्यापतिक कलाक अनुकरण भेल ओतए आसाम विद्यापतिक साहित्यिक अभिव्यंजना सँ प्रभावित भेल।'[29] असमिया साहित्यक इतिहास मे ई काल 'वैष्णवकाल'क नामें अभिहित होइछ आ एकर पुरोधा शंकरदेव (1449-1569) मानल जाइत छथि। भुइयां परिवार मे जनमल शंकरदेव कें सर्वजातीय, सार्ववर्णिक वैष्णव-धर्मक प्रतिष्ठापन मे वर्चस्ववादी लोकनिक कते अत्याचार आ यंत्रणा भोगय पड़ल छलनि, तकर लंबा इतिवृत्त अछि। आसाम मे दू गोट नव साहित्यरूपक उद्भावनक श्रेय शंकरदेव कें देल जाइत छनि—वरगीत आ अंकीया नाट। अपन पुस्तक 'असमिया साहित्यक इतिहास' मे बिरिंचि कुमार बरुआ कहैत छथि—'असमिया मे ई दुनू (वरगीत आ अंकीया नाट) नव साहित्य-रूप छल। ई रचना सब कीर्त्तन वा काव्य सदृश चलित असमिया मे नहि लिखल गेल। ई सब एक प्रकारक अप्रचलित वाणी मे लिखल गेल जकरा ब्रजबुलि कहल जाइत अछि। ई ब्रजबुलि मैथिली-असमिया मिश्रित भाषा छल जकरा विषय मे ई धारणा अछि जे महाकाव्यक युग मे कृष्ण आ गोपी लोकनि द्वारा एही भाषाक व्यवहार कयल जाइत छल। ई साहित्यिक माध्यम बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक मध्यकालीन कवि-समाज मे प्रचलित छल। ई अनुमान करब कठिन अछि जे शंकरदेव अपन काव्य मे प्रयुक्त लोकभाषा कें त्यागि अपन भगवतविषयक गीत आ नाटकक लेल ब्रजबुलिक चयन किएक केलनि।'[30] एकर एक कारण तँ ओ ई संभव मानैत छथि जे ब्रजबुलि मे संयुक्त व्यंजनक प्रयोग बहुत कम होइत छल आ एहि मे स्वरक बाहुल्य, गठन मे आनुप्रासिक लालित्य आ तात्पर्यक सूक्ष्म प्रभेद छल। दोसर ई संभव मानैत छथि जे एहि कृत्रिम भाषाक संग धार्मिकताक तत्त्व सिपहित छलैक। ई भाषा अपन गूढ़ स्वर आ संवेदनशीलता सँ ओहि प्रयोजनक सिद्धि केलक जे साधारण भाषा सँ संभव नहि भ' सकैत छल, ई कहैत बिरिंचि कुमार बरुआ लिखैत छथि—'शंकरदेव हमरा लोकनिक पहिल महान कवि छलाह जे एहि कृत्रिम भाषाक प्रयोग केलनि आ ई प्रयोग हुनक वरगीत आ अंकीयानाट मे चमत्कारक रहल। संभव जे एहि वरगीतक गठन मे बौद्ध चर्यापदक आदर्श काज कयने हो।'[31]

शंकरदेव आनो भाषा-रूप मे कविता लिखलनि मुदा सर्वाधिक लोकप्रिय जे वरगीत भेल तकर कारण संगीत तँ छलैके, इहो छल जे आन आख्यानक तुलना मे एहिठाम कवि कें बेसी भावपूर्ण, अत्यन्त उल्लास सँ भरल, मार्मिकता आ समर्पण-भाव सँ ओतप्रोत देखल जा सकैत छल। वरगीतक मुख्य विषय धर्म-धारणा, लौकिक एवं नैतिक चिन्तन, सूक्ष्म अन्तरावलोकन, आध्यात्मिक मनस्ताप आदि छल। आगू ई वरगीत एक साहित्य-रूप मे अत्यधिक लोकप्रिय भेल। हुनक शिष्य माधवदेव तँ वरगीत लिखि वैष्णव आन्दोलन मे अत्यन्त लोकप्रिय कवि भ' गेलाह। आगू अनेक

कवयित्री लोकनि सेहो भेलीह, जे वरगीतक रचना केलनि।

शंकरदेव तथा हुनक परम्पराक साहित्यिक सन्त लोकनि जे काज आसाम मे केलनि, तकर मूल्यांकन करैत रमानाथ झा कहैत छथि जे 'असमियाक पहिल महाकवि शंकरदेव विशुद्ध मिथिलाभाषा मे रचना कएल ओ किछु दिन धरि यावतपर्यन्त असमिया मे अभिव्यक्तिक पूर्ण सामर्थ्य नहि भेल छलैक, आसामक साहित्य मैथिली साहित्य थिक। शंकरदेव साहित्य कें भक्ति-धर्मक प्रचारक माध्यम बनाओल आ आसाम मे जे लोकमंच छल तकर उपयुक्त नाटकक रचना कएल। मिथिला मे जे नाटक लिखल गेल ताहि संग आसामक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट क' देत जे दुनू दू दृष्टिकोण सँ, दू उद्देश्य सँ, दू रंगक वस्तु भेल। आसामक नाटक विशुद्ध मैथिली भाषा मे अछि जाहि मे गद्य सेहो अछि तथा काव्य कें मुख्यता नहि दए भक्ति कें प्रधानता देल गेल अछि। आसाम मे ई युग मैथिली साहित्यक युग छल जे लोकानुरंजनक दृष्टि सँ भक्तिक प्रचार करबाक उद्देश्यें नाटक सब विरचित भेल कारण प्रचार सब सँ सुलभ रीतिएँ अभिनय द्वारा भए सकैत छल। मुदा तें कहब जे मिथिला मे सेहो नाटक ताहि उद्देश्य सँ लिखल गेल भ्रान्तिपूर्ण होएत।'[32] शंकरदेव जाहि नाटक-प्ररूपक उद्भावना केलनि, ओ छल अंकीया नाट, नाटक। बिरिंचि कुमार बरुआक शब्द मे 'अंकीयानाट, असमिया मध्य एक गोट सम्प्रदाय विशेष सँ सम्बद्ध शब्द थिक आ एहि सँ वैष्णव तत्त्व सिद्धान्त कें चित्रित करैत एक अंकक नाट्य रचनाक बोध होइत अछि।'[33] अंकीया नाटकक विशेषता सभक बारे मे ओ लिखलनि अछि—'अंकीयानाट मे सम्वेदनात्मक आ बौद्धिक उभय प्रकारक आकर्षण अछि। ई नाटक सब आसामक राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक जीवन कें गम्भीर रूपें प्रभावित केलक। ई सब लोक रंगमंचक स्थापना तथा संगीत-नृत्यक विकास मे सहायक भेल। नाटक अधिदृश्य कें निरूपित करैत अछि अत: ओहि युग मे जखन ग्रन्थक मुद्रण अज्ञात छल, एकर बड़ बेसी प्रभाव पड़ल। यद्यपि पहिने एकर सर्वोपरि प्रयोग अभिनय द्वारा जनसाधारण मे असमिया वैष्णव मतक प्रचारक माध्यम रूप मे भेल मुदा शंकरदेवक ई नाटक सब आइ धरि सामान्य मन कें स्थायी रूप सँ प्रभावित करैत रहल अछि।'[34]

शंकरदेवक लिखल प्रमुख अंकीयानाट सब थिक—कालीदमन, पत्नीप्रसाद, रासक्रीड़ा अथवा केलिगोपाल, रुक्मिणीहरण, पारिजात हरण, रामविजय आदि।

विद्यापतिक आखिरी नाटक 'गोरक्षविजय' कें ल' क' रमानाथ झाक जे मन्तव्य छलनि तकर चर्चा पछिला अध्याय मे भ' चुकल अछि। ओ मानैत रहथि जे विद्यापति कें जँ आरो अवसर भेटल रहितनि तँ ओ मैथिली मे एहन नाटक लिखितथि जाहि मे संवादक गद्य सेहो मैथिली मे होइत। संस्कृतनाटक मे जे प्रयोजन

संस्कृतक श्लोक द' क' पूरा कयल जाइल छलैक तकर प्रतिस्थानी रूप मे तँ ओ मैथिली गीत कें स्थापित क' चुकल छलाह, मुदा आगू मिथिला मे भेलैक यैह जे कैक शताब्दी धरि यैह परिपाटी चलैत रहि गेल। अथवा, के जानय, विद्यापति कें आगू अवसर भेटल होइन आ एहन नाटक ओ लिखनहुं होथि, कारण हुनकर किछु गीत एहन भेटैत अछि जकरा देखने प्रतीति होइछ मानू ई कोनो नाटकक लेल प्रयुक्त गीत होइक। विद्यापतिक एहन कोनो नाटक आइ धरि नहि भेटि सकल अछि। ओम्हर आसामक जे स्थिति हमरा लोकनि देखैत छी से मिथिला सँ सर्वथा विपरीत अछि। ओहि ठामक अंकीयानाट मे संवाद सेहो गद्य मे लिखल गेल छैक आ तकर भाषा मैथिली छिऐक।

शंकरदेव अपन भक्ति-प्रचार-प्रयोजन सँ अंकीयानाट कें कतेक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान केलनि, तकर विवरण बिरिंचि कुमार बरुआ अत्यन्त विस्तारपूर्वक देने छथि। नाटकक आयोजन लेल गाम-गाम मे 'नामघर' स्थापित कयल गेल छलैक। ई नामघर ठीक ओही आदर्शक अनुरूप निर्मित होइत छल जकर वर्णन भरतमुनि अपन नाट्यशास्त्र मे कयने छथि। भजन-कीर्त्तन आदि जँ एहि ठाम दिन मे आयोजित होइत छलैक तँ साँझ मे, देर राति धरि अंकीयानाटक आयोजन होइक। बाँकी समय मे एहि 'नामघर'क उपयोग समाज सामाजिक सम्मिलन, पंचैती आदिक लेल करैत छल। अंकीयानाट अपना युग मे ततबा लोकप्रिय भेल जे पाँच सौ बरखक काल-सीमा कें चीरि एखनो ओ आसामक गाम-घर मे एक लोकप्रिय लोकनाट्य विधाक रूप मे प्रचलित अछि। एकर मुख्य आकर्षण होइत छल संगीत जे समुच्चा आयोजन कें एक मार्मिक लय मे बन्हने रखैत छल आ दोसर नृत्य, जे सूत्रधार सँ ल' क' नाटकक समस्त पात्र सम्पूर्ण कार्यक्रमक दौरान खास-खास नृत्यमुद्रा मे बनल रहैत छल।

नाट्यशास्त्रक आदर्शानुरूप नान्दीपाठ, पूर्वरंग, सूत्रधारक भूमिका आदिक अछैत कतोक नव प्रयोग अंकीयानाट मे हमरा लोकनि देखैत छी यथा सूत्रधार आरम्भ सँ अन्त धरि मंच पर बनल रहैछ, कथासूत्र जोड़ैछ, बीच-बीच मे व्याख्या करैत चलैछ आदि-आदि। एहि मे संस्कृतक श्लोक सेहो छैक आ देसी भाषाक स्तवन सेहो जकरा 'भटिमा' कहल जाइछ। प्रसंगानुकूल वरगीत सेहो प्रयुक्त होइत रहैत छैक आ चुटकुल सेहो। एहि समस्त संयोजन कें स्पष्ट करबाक लेल शंकरदेवक 'रामविजय' नाटकक एक पूरा अवतरण प्रस्तुत कएल जाइछ—

'सखी—आहे सखी, तुहु राजनन्दिनी, कोन सम्पति नहि थिक! कि निमित्ते तोहो बारम्बार विलाप करह?

सखी—प्राण सखी, हामाक सपत, तोहार पावे लागु हामात सतर कथा कह'

श्लोक

ततः सीता विनिःश्वस्य चरितै पूर्व्व जन्मनः।

सखीभ्यां वर्णयामास रुदती सुदती सती।।

सूत्रधार—सीता कति बेलि स्वस्थ हुया आमचोरे आखि मुख मुचि निश्वास फ़ोकारि सखी सबक सम्बोधित वचन बोलये लागल।

सीता—आहे सखी सब! परम अभागिनीक की पूचह? हामु पुरब जनम ईश्वर नारायणक स्वामी इछा कयल। अनेक काय क्लेश करिये बहुत बरिष त तपस्या कयलो। तदन्तरे आकाशी वाणी शुनल 'आहे कन्या, तोहो ओहि जनमे स्वामीक भेंट ना पाबब। आर जनमे श्रीराम रूपे तोहोक विवाह करब।' इहा जानि हामु अगनि प्रवेशि प्राण छाड़ल। आहे सखी सब, से दैव वाणी विफल भेल, से श्री राम चरण ओहि जनमे भेंट नहि भेलो।

सूत्रधार—ओहि बुलिते सीताक परम सन्ताप उपजल। हा राम स्वामी बुलि मोह हुया माति लोण्टि यैचे विलाप कयल ताहे देखह शुनह।

निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग-सुहाइ-चुटकला

ध्रुपद—विलपति मैथिलि माइ नीर नयन झुराइ

घन घन स्वास फोकारत तनु चेतन नाइ

पद.—चिर विरहे दहे देहा दिश देखु अन्धियारि

रमया बिने मन झामर परम रुचिर कुमारि

हा हरि हरि जम्पय जीव यैचे नायाइ

राम चरणे लागु गति आबरि नाइ

सूत्रधार—ऐचन सीताक विलाप देखिये सखी सब प्रबोध बोलल।

सखी सब—आहे प्राण सखी! से भकतक बान्धव माधव तोहाक दुख दूर करब। पूरब जनमक तोहार स्वामी अवश्य क भेंट पाबब। हे सखी, ताप छाड़ह।'[35]

आगू भटिमाक एक दृष्टान्त देखल जाय जाहि मे कवि सीताक रूप-वर्णन करैत अछि—

'कि कहब रूप कुमारिक राम। कनक पुतलि तुल तनु अनुपाम।।

रतन तिलक लोले अलक कपोल। हेरिये भ्रूभंग त्रिभुवन भोल।।

देखिये बदन चान्द भेलि लाज। नयन निरिखि कमल जल माज।।

हेरिये भुजयुग मिलल उछंक। ललित मृणाल भजल जलपंक।।

आरतक करतल मुनिमन मोहा। कनक शलाका आँगुर करु सोहा।।

बन्दुलि अधिक अधर अरु कान्ति। डाड़िम निबिड़ बीज दंत पान्ति।।
इषत हासि मदन मोह याइ। नासा तिलफुल कमलिनी माइ।।
नवयौवन स्तन बदरी प्रमाण। उरु करिकर कटि डम्बरुक ठान।।
पदपल्लव नव पंकज कान्ति। चम्पक पापरि आंगलिक पान्ति।।
नखचय चारु चान्द परकाश। लहु लहु मत्त गज गमन विलास।।
कत लावण्य विधि निरमिल जानि। कोकिल नाद अमिया जुरे वाणि।।
तुहुँ सुकुमार रूपे नोह हीन। राजकुमारिक वयस नवीन।।
सोहि वर रमणी धरणी यब हुइ। तब गृहवास साम्फल तब हुइ।।'[36]

एहि ठाम हमरा लोकनि देखैत छी, रचनाकारक मध्यकालीन बोध-सीमाक कारण पूर्वजन्मक भाग्यवशता आदिक बात भने होइक, मुदा ओकर दिशा आशा आ उत्साहक दिस छैक। दोसर, उन्मत्त प्रेम-पिपासा कें नहि, धीर आ व्यवस्थित दाम्पत्य-जीवनक कामना कें अभीप्सित मानल गेलैए। रचनाकारक आदर्श गार्हस्थ्य छिऐक, गार्हस्थ्येक राग आ संघर्ष रचनाक विषय-वस्तु बनलैक अछि। आध्यात्मिकताक संग-संग सांसारिक आदर्शक लक्ष्य-पूर्त्ति रचनाकारक ध्यान सँ कखनहु नहि हटैत छैक। डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र ठीक लिखलनि अछि जे 'शंकरदेव ओ माधवदेवक प्रेरणाक पृष्ठभूमि मे छल एक लक्ष्यप्राप्तिक स्फूर्त्ति। ओहि मे आध्यात्मिक लगन छल जे सर्जनात्मक वृत्तिक बलबती धारा मे प्रवाहित होअय लागल छल। एही लक्ष्यपूर्त्तिक हेतु अंकीया नाटक सृजन कयल गेल।'[37] कहब आवश्यक नहि जे ई लक्ष्य एक मनुष्यतापूर्ण, समतापूर्ण आ शांतिकामी नव समाज बनेबाक लक्ष्य छल।

शंकरदेवक अंकीयानाट मे हमरा लोकनि उत्तरोत्तर सामाजिक तत्त्व कें बढ़ैत देखैत छी। 'पारिजातहरण' नाट मे ओ एहि खिस्साक रूपान्तर कयने छथि जे कोना नरकासुरक वध करबाक बाद कृष्ण कें पारिजात-वृक्ष कें स्वर्ग सँ उखाड़ि सत्यभामाक वाटिका मे रोपय पड़ल छलनि। अंकीया नाटक विशेषता थिक जे ओकर गद्य आ कविता एकमएक मिज्झर रहैत अछि, गद्य सेहो काव्यात्मक आ कविता सेहो कथा कें आगू बढ़बैत। ओहि नाटक प्रसंग देखल जाय। इन्द्र कृष्ण सँ भेंट करय अयलाह तँ एक टा पारिजात पुष्प ल' क' अयलाह। ओ पुष्प कृष्ण रुक्मिणी कें देल। नारदक बढ़ावा पर ओम्हर सत्यभामा परम कुपित जे हमरो फूल चाही। कृष्ण नारद कें पारिजात आन' इन्द्रक ओतय पठौलखिन। इन्द्रक स्त्री शची फूल तँ नहियें देलखिन, बड़-बड़ गंजन सेहो केलखिन। नारद खाली हाथ घुरि क' अयलाह आ कृष्ण कें जे कहलखिन आ आगू जे भेल, शंकरदेवक वर्णन देखल जाय—

'नारद—हे कृष्ण, पारिजातक निमित्त तुहुँ पठाबल, हामु बड़ि लाज भेलो। सत्यभामाक बहुत गालि पारावल मात्र। पारिजातक नाम शुनि शची क्रोधो बोलल—

अ: कथाक मानुषी सत्यभामा शचीक पारिजात पिन्धिते इच्छा कयल। अ भा ग्य कपाल, यब तप जप आचरि जन्मान्तरे अम्रावती अधिकारिणी हय तब पारिजात पाबब गिया। हे कृष्ण, देविक धिक्कार शुनिबे हृदय दहे, हा हा कि भेलि!

सूत्रधार—ताहेक शुनि सत्यभामा कोपे कम्पमान हया बोलल।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामाक कदर्थितें तोहों आनल। दानबक बेटी शची, ताहेक चाटु कय पारिजात नेवब। अ: धिक्कार होक। हे प्राणनाथ, काहेक भय थिक? सत्वरे पारिजात आन गिया।

नारद—अ: देवी, भल्ल कहल। हे श्रीकृष्ण, सत्वर पारिजात आनह।

श्लोक

निशम्य सत्यभामाया वचनं कंजलोचन।
जहार सहसागत्य पारिजाततरुं हरि।।

सूत्रधार—तदनन्तर श्रीकृष्ण पृयाक वाक्य शुनिते तत्काले पारिजातक समीप चापि समूलि उपारि आनल। पेखि रखीया सब कोलाहल कये बोलल।

रखीया—हे कृष्ण, शचीक पारिजात निते तोहारि कोन बेयहार?

सत्यभामा—अरे रखीया सब, तोहाक शची त कह गिया सत्यभामा पारिजात निया याह, अब यत शकति थिक राखोक आसिया।

सूत्रधार—शुनि रखीया सब इन्द्रशचीक प्रणामि कहल।

रखीया—हे माता शची, तोहारि पारिजात तरु सत्यभामा बड़ाइ करिये स्वामी हाते हरि निया याज, जानि ये युयाइ ता करह।

श्लोक

पारिजातस्य हरणं निशम्य कुपिता शची।
पति पुरन्दरं प्राह धिगस्तु तव विक्रमम्।।

सूत्रधार—पारिजात हरण शुनि शची कोपे पुरन्दर बोलल।

शची—हे स्वामी, तोहो विद्यमान थाकिते हामाक पारिजात मानुषी निया जाइ। आ: तोहाक धिक्कार थिक। वज्रक धिकार होक।

श्लोक

गत्वा सत्रजितसुतां प्रोवाच कुपिता शची।
नेष्यसि त्वं पारिजातं किं नु वज्रधरे स्थिते।।

शची—अये सत्रजितक कुमारि, तुहुँ मानुषी हया हामार पारिजात निया यास। आ: तोहाक अभाग्य मिलल, अब वज्रधरक हाते सवंशे मारब नाहि तव सत्वरे पारिजात चोड़ह।

सूत्रधार—ओहि बोलि येछे गरजल ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

ध्रु.— मानुषि, साहस ऐछन तोहारि।
हरसि कुसुम हामारि।।
पद— *स्वामि पुरन्दर वीर वज्रधर, आछन्त दैत्य अन्तकारी।*
पारिजात तरु चोरह मोरा, राखहु जीवन कुमारी।।
तोहारि स्वामी माधव मानुष, कयलि गरब ताहे लाइ।
बासव आगे सोहि कोन होइ, करु शची एछन बड़ाइ।।

शची—आहे सत्यभामा, तोहारि स्वामी माधवक कथा हामु सब जानी ओहि गोपी बिटाल गोपाल। उनिकर आगू गोकुलक स्त्री नहि रहल। देखू कंसक दासी कुबुजि ताहेक हातक एड़ावल नाहि। ताहेक आर की कहब ? ऐछन अनाचार कृष्णक गरव कवे कहों हामाक पारिजात निया जाय? वज्रपाते सर्वंशि नाश, नाश भेलि जानबि।

श्लोक

निशम्य गर्ववाक्यं सा सत्यभामा हरिप्रिया।
कोपेन कम्पितवती शचीमाभाष्य बल्गति।।

सत्यभामा—आबे इन्द्राणी, जगतक परम गुरु हामार स्वामी जाहे नाम सुमरिते महा महा पापी सब संसार निस्तरे, ताहेक अतय निन्दा करह? अये निलजनी मरिते न जान? तोहारि स्वामी इन्द्रक कथा कहिते घृणा से उपजे। येखो अम्रावती यत वेश्या तोहाक स्वामी से नाहि आण्टल। तोहारि स्वामी कयलि कि? गौतम ऋषिक भार्या अहल्या, ताहेक माया करि कहुँ जातिभ्रष्ट कयल। तिपमिते सब शरीर ढाकि योनिडाक भेल। अये पामरि एछन इन्द्रक हामाक आगु बखानह।'[38]

आगूक कथा अछि जे दुनू स्त्रीक झगड़ा अन्तत: इन्द्र आ कृष्णक बीच युद्धक रूप ल' लैत अछि जाहि मे कृष्ण विजयी होइत छथि। ई विजय देवता पर मनुष्यक विजय थिक। शचीक श्रेष्ठता-दंभ जे एहि ठाम व्यक्त भेल अछि जे मनुष्य आ देवताक सीमा के टपैत आगुओ धरि, वर्ण आ जाति-विचार धरि जाइत अछि। कृष्ण गोआर छथि, ताहू कारणें श्रेष्ठतावादी लोकनिक लेल क्षुद्र छथि। शंकरदेवक वैष्णव आन्दोलन अपन व्यापकता मे सामाजिक घरातल पर जे काज केलक तकरो ध्वनि एहिठाम सुनल जा सकैत अछि। मिथिला जेना ब्राह्मणवादी कर्मकाण्ड आ शाक्त रूपांकित भोगवाद मे जकड़ल छल, तहिना पहिने आसाम सेहो छल। शंकरदेव-माधवदेव लोकनि कें ओहि जकड़ कें तोड़बाक लेल हम सब भीषण जतन करैत, यातना सहैत देखैत छियनि। मुदा आसामक ई आन्दोलन चैतन्यक आन्दोलन जकाँ व्यक्तिनिष्ठ नहि, पूर्णत: समाजनिष्ठ छल। जें कि कर्मकाण्ड आ शाक्त भोगवादक आगू कोनो वैष्णव

आन्दोलन, यथा कबीरक, मिथिला मे हम सब सफल होइत नहि देखैत छिऐक तें मिथिला निरंतर अधोगति कें प्राप्त होइत गेल। मैथिली कविता (मिथिला मे लिखल गेल) एहि तथ्यक साक्ष्य भ' सकैत अछि।

नवीनचन्द्र मिश्र अपन पुस्तक मे शंकरदेवक दू गोट नाटकक अतिरिक्त माधवदेव (1489-1596)क दू गोट नाट जकरा माधवदेव 'झुमरा' कहथि, देने छथि—'भूमि लुटिया' आ 'पिम्पिरा गुचुरा'। एकरा अतिरिक्त दैत्यारि ठाकुर (1564-1622)क एक नाट 'स्यमन्तकहरण यात्र' लक्ष्मीदेव (1670 लगभग)क एक नाटक अंश तथा एक अज्ञात रचनाकारक कृति 'शतस्कन्ध रावणवध'क अंश देलनि अछि। पंडित राजेश्वर झा अपन पुस्तक 'मध्कालीन पूर्वांर्चलक वैष्णव साहित्य' मे सोलहम शताब्दीक कतिपय आओर रचनाकार गोपाल अता:, द्विजभूषण तथा रामचरण ठाकुरक रचना, वरगीत सेहो प्रस्तुत केलनि अछि। द्विजभूषण 'अजामिल उपाख्यान' नामक नाट लिखने छलाह, जाहि मे ई वरगीत अबैत छैक—'चले अजामिल धन आनिते/ वज्र लोहार दांग धरि होते/ साधु लोक द्विज पितृ सुजन/ मारि चुरि करि आनल धन/ असतिर संगे दुष्ट भेल मति/ कहै द्विज भूषणे गोविन्दे गति।'[39]

आसाम मे ब्रजबुलि भाषा-प्रयोगक भिप उद्देश्य आ तरीकाक जाहि संकेतक बात करैत ऊपर रमानाथ झा कें उद्धृत कयल गेल छल, एहि रचनांश सब कें देखने तकर यथातथ्यता बूझल जा सकैत अछि। एहि काव्य-धाराक सर्वाधिक प्रतिभाशाली कवि शंकरदेवक शिष्य माधवदेव मानल जाइत छथि। हुनको लिखल कैक गोट अंकीयानाट भेटैत अछि—चोरघरा, पिम्परा गुचोवा, कोटोरा खेलोवा, भूषण हेरोवा, भूमि लोटोवा। एहि सब मे कृष्णक बाललीलाक वर्णन कयल गेल छैक। हुनक एक टा वरगीतक पाँती बिरिंचि कुमार बरुआ उद्धृत कयने छथि—'नयन निगरे नीर कान्दे जसोमति/ काहे गैले पाइवो लाग पूता यदुपति/ घरनि लुटिया मुरुछित भयो माइ/ कहय माधव हरि बिने गति नाइ।'[40]

कहैत छलहुँ, जाहि उद्देश्य सँ बंगाल मे ब्रजबुलिक विकास भेल, आसामक उद्देश्य ओहि सँ भिप छल। एहि संबंध मे रमानाथ झाक मंतव्य ऊपर उद्धृत कयल जा चुकल अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहास पुस्तक मे एहि दुनूक बीचक किछु प्रमुख अन्तर कें देखबैत लिखलनि अछि—'पहिल ई जे असमियाक ब्रजबुलि साहित्य मे राधा नहि छथि, दोसर ई जे असमक ब्रजबुलि गीतकार अपना मे दास्य भाव रखैत छथि किन्तु बंगाल मे सख्य भाव वा पतिपत्नी भाव रखैत छथि, आओर इहो कहल जा सकैत अछि जे असमक लेखक लोकनि मैथिली नाटक सेहो लिखलनि जे बंगाल मे एकदम नहि लिखल गेल।'[41]

डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र अपन पुस्तकक उपसंहार मे आसामक वैष्णव आन्दोलनक,

जे अपन मूल स्वभाव मे एक सांस्कृतिक आन्दोलन छल, आ जकर माध्यम नाट, गीत आ किरतन छलैक, निम्नलिखित अन्यो विशेषता सब बतबैत छथि—(1) विष्णु कें नमस्य आ पूज्य मानितो शैव एवं शाक्त लोकनिक स्वीकृत मर्यादा कें मान्यता देल गेल अछि। (2) ई लोकनि कट्टर मर्यादावादी नहि छथि तथापि उत्तान शृंगारक समावेश नहि कएल गेल अछि। (3) सामाजिक क्षेत्र मे गृहस्थ जीवन कें सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि तथा संन्यासक समर्थन हिनका लोकनिक रचना मे नहि भेटैछ। (4) भक्तिक क्षेत्र मे जाति-पाँति वा ऊँच-नीचक भेद नहि मानैत छथि। 'यथार्थ भूमि पर व्यापक सामाजिक समताक एतेक पैघ समर्थन अन्यत्र कतहु नहि भेटत।' (5) ई लोकनि भाषागत पार्थक्य कें नगण्य मानि मिश्र भाषा कें अपनौलनि आ एक प्रकारक अद्‌भुत भाषिक समन्वयक प्रयास केलनि। (6) शास्त्रीय नाट्यपद्धति कें लोकभूमि पर अवतरित क' ओकरा पूर्ण रूपें लोकनाट्य परम्पराक रूप मे प्रतिष्ठित करौलनि। डॉ. मिश्र कहैत छथि—'वैष्णव भक्त लोकनिक एहि प्रयास कें ऐतिहासिक दृष्टि सँ सर्वथा अभूतपूर्व तथा आश्चर्यजनक कहल जा सकैछ।'[42]

पहिनहि कहल गेल जे उड़ीसा मे जाहि तरहें मैथिली कविता, ब्रजबुलिक प्ररूप मे पहुँचल, से आसाम सँ सर्वथा भिप छल। आसामक ब्रजबुलि विशाल जनसमूह संगें, जे गृहस्थ छला, सामान्य जीवन जिबैत व्यावहारिक वैष्णवधर्म कें समाहित करैत एक भिप रूप लेलक। वैष्णव कविता-परम्परा मे रमानाथ झाक अनुसार, 'रामयुग' मे पहुँचबा मे मिथिला कें पाँच सौ वर्ष लागि गेल, आसाम मे से लगले, सद्यः पश्चातवर्ती शताब्दी मे आबि गेल। बंगालक वैष्णव धर्म-परम्परा भिप छल। ओ एक सम्प्रदाय, एक पंथक अंग रूप मे कविता मे आबि रहल छलैक। एहि धर्म-परम्परा कें सुव्यवस्थित करबाक लेल दार्शनिक आधारग्रन्थ आ विधिशास्त्र लिखल गेल छलैक। एकर दायरा सीमित छल। व्यापक जन-समूह संग एकर कोनो विशेष जुड़ाव नहि छल। बस एतबे छल जे सम्प्रदायक संत लोकनिक प्रति आमजन मे श्रद्धा आ आदरक भाव छलैक।

उड़ीसाक ब्रजबुलि साहित्यक विकास बंगालक मॉडल पर भेल। एकर कथा डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहास मे देलनि अछि। सुकुमार सेनक पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर'क एक पूरा अनुच्छेद ओ ओतय देने छथि जकर उद्देश्य यैह जे उड़ीसा मे ब्रजबुलि कोना प्रवेश पौने छल।

ओड़ियाक प्रथम आ निःसन्देह सब सँ प्रतिभाशाली कवि रामानन्द राय उर्फ राय रामानन्द भेलाह। रामानन्द उड़ीसाक राजा प्रतापरुद्र (1504-1532)क अधीन विद्यानगर इलाकाक गवर्नर छलाह। ओ बेस पढ़ल-लिखल, विद्वान रचनाकार तथा आध्यात्मिक भावनासम्पप लोक छलाह। अधिकतर ओ जयदेवक अनुकरण मे

राधामाधव-प्रेम कें विषय बना संस्कृत मे लिखथि। ओ 'जगपाथवल्लभ-विलास' नामक पाँच अंकक एक संस्कृत नाटक सेहो लिखने रहथि जाहि मे एकैस गोट संस्कृत गीत रहैक आ जकर विषय राधा-माधवक प्रथम प्रेम छल। चैतन्य महाप्रभु जखन ओहि इलाकाक यात्रा पर (1511-12 ई.) बहरेलाह तँ हुनक एक अत्यन्त विश्वस्त श्रद्धालु वासुदेव सार्वभौम हुनका सँ आग्रह कयने छलनि जे बाट मे ओ राय रामानन्द सँ अवश्य भेंट करथि। गोदावरी नदीक तट पर विद्यानगर मे जखन चैतन्य महाप्रभु संग हुनक भेंट भेल, हुनका दुनू गोटेक बीच भेल वार्तालापक जीवन्त वर्णन 'चैतन्य चरितामृत' (भाग-2, अध्याय-8) मे देल गेल अछि। चैतन्य हुनका पुछलकनि जे वैष्णव धर्मदर्शनक परम लक्ष्य की मानैत छह? रामानन्द जे मानैत छलखिन, बतौलखिन मुदा चैतन्य संतुष्ट नहि भेलाह। प्रश्न-प्रतिप्रश्न चलय लागल आ अन्ततः कोनो आन उपाय नहि देखि रामानन्द कहलखिन जे हम जे एक टा गीत लिखने छी, तकरा सुनल जाय। ओ गीत राधामाधवक प्रेम कें ल' क' ब्रजबुलि मे लिखल गेल छल। मुश्किल सँ दू टा पाँती सुनौने हेथिन रामानन्द, महाप्रभु भावाविष्ट भ' उठि क' ठाढ़ भ' गेलखिन, आगू सुनेबा सँ हुनका रोकि देलखिन आ तकर बाद हुनका दुनू गोटेक जे प्रीति बनल, रामानन्द नौकरी सँ त्यागपत्र द' आजीवन हुनके संग रहि गेलखिन। रामानन्दक प्रति जे चैतन्यक प्रीति-भाव भेलनि, 'चैतन्य चरितामृत' मे चैतन्य महाप्रभुक मुँहें कहल ई पंक्ति उद्धृत कयल गेल अछि—'रामानन्द सह मोर देहभेद मात्र।'[43]

गोदावरी नदीक तट पर विद्यानगर मे जे रामानन्द हुनका ब्रजबुलि पद सुनौने छलखिन, ओ उड़ीसाक इतिहास मे प्रथम ब्रजबुलि काव्य छल, आ समुच्चा मे प्राचीनतम सेहो जकर एकमात्र अपवाद यशोधर खान (बंगाल)क पद भ' सकैत अछि, जेना कि तत्सामयिक साक्ष्य सँ हमरा लोकनि कें जानकारी भेटैत अछि। ओ पद एहि ठाम प्रस्तुत अछि—

पहिलहि राग नयन भंग भेल
अनुदिन बाढ़ल अवधि न गेल
न से रमण न हम रमणी
दुहु मन मनोभव पेशल जनी
ए सखी, से सब प्रेम कहानी
कानु ठामे कहब, बिछुरह जनी
न खोजलि दुति न खोजलि आन
दुहुक मिलने मधबइत पंचबान
आब से बिरागे तुहु भेलि दोती
सुपुरुष प्रेमक ऐछन रीती

वरधन रुद्र नराधिप मान
रामानन्द राय कवि भान।।[44]

एहि तरहें देखी तँ उड़ीसाक ब्रजबुलि आगू कोन पाठि पकड़त, तकर निर्धारण एतहि भ' गेल। रामानन्द एक सामर्थ्यवान लोक तँ छलाहे, उड़िया मे वैष्णवधर्मक प्रतिष्ठापन आ प्रसार मे निरंतर सक्रिय रहलाह आ आगू समुच्चा सम्प्रदायक बीच एक महनीय आचार्य कविक यशभागी सेहो भेलाह। हमरा लोकनि अवगत छी जे वैष्णव सम्प्रदायक अगिला संतकवि लोकनि परम्परित रूप सँ राधाकृष्णक प्रेमक पद तँ लिखबे केलनि, गौरांग महाप्रभुक स्तवन मे सेहो प्रचुर पद लिखल गेल, किछु किछु आनो आचार्य लोकनिक स्तुति मे, जेना गोविन्ददासक पद विद्यापतिक स्तुति मे प्रसिद्धे अछि। राय रामानन्द एते श्रद्धेय मानल गेला जे हुनक परम्पराक एक संतकवि कान्हुराम दास उर्फ कान्हु दास (1583 ई.) स्वयं हुनका स्तुति मे बांग्ला मे एक पद लिखलनि, जाहि मे विद्यानगरक ओहि आद्य मिलनक स्मृति सेहो छलैक। पद एहि तरहें शुरू होइत छैक—'विद्यानगराधिप अपार सम्पदाशाली/ राम राय पुरुष-प्रधान/ गृहे पारया श्री गौरांग आपनार मनोभृंग/ तार पदे करिलेका दान/ याहार पाइया पार संग प्रभु मोरा गौरांग/ भुंजीलेका असीम आनन्द।'[45]

रामानन्द रायक पदावली प्रकाशित छनि—'राय रामानन्देर भणिताजुक्त पदावली', जकर संपादन प्रो. प्रियरंजन सेन कयने छथि। पद तँ एहि मे दू सौ सँ ऊपर संकलित अछि जाहि मे सँ एक सौक करीब पद ब्रजबुलिक अछि। मुरारि गुप्त चैतन्यक समकालीन छलाह। हुनक जन्म सिलहट (आब बांग्लादेश) मे भेल छलनि मुदा बाद मे हुनकर परिवार नवद्वीप मे ठीक ओही टोल मे आबि बसल जतय चैतन्यक पिताक परिवार छलनि। जाहि गंगादासक चौपाड़ि मे चैतन्यक प्रारम्भिक शिक्षा भेलनि, मुरारि सेहो ओकरे विद्यार्थी, बरु ओ चैतन्य सँ सीनियर छलाह। मुदा, गयातीर्थ सँ घुरलाक बाद जखन चैतन्यक जीवन मे देखार सिद्धता आबि गेलनि, मुरारिक परिवार ओहि आरम्भिक श्रद्धालु सब मे सँ एक छल जे हुनका मान्यता देलकनि आ अनुयायी भेलाह। मुरारि कें नेनपने सँ चैतन्य नीक लगैत। बाद मे तँ ओ अपन समुच्चा जीवन हुनके नामें समट्पत क' देलखिन। 'चैतन्य चरितामृत' मे हुनकर प्रेम आ भक्तिक बहुत प्रशंसा कयल गेल अछि। चैतन्य महाप्रभुक पहिल जीवनी लिखबाक श्रेय मुरारि गुप्त कें देल जाइछ। ओ तहिये हुनक जीवनी लिखलनि जहिया ओ (चैतन्य) मात्र 28 वर्षक छलाह।

हुनकर पद मे कविताक ओ आन्तरिक सौन्दर्य झलकैत अछि जे हुनका व्यक्तित्वो मे छलनि—

'तपत किरन यदि अंग न दगधल/ कि करब जल अभिषेके/ दुर्वह प्राण बाहिरे यव निकसब/ कि करब औषध विशेखे/मानिनि, अतह समापह माने/ मृदु मृदु भासे संभाषह वरतनु/ एक बेर देह जिउ दाने।।/ सुन्दर वदने बिहसि वर भामिनी/ रचह मनोहर बानी/ कुच कन्या गिरि मध गहि राखह/ निज भुजे आपन जानी/ अधर सुधारस पान देह सखि/ हृदय जुड़ाबह मोरा/ तुअ मुख इन्दु उदय हेरि विलसत/ तिरपित नयन चकोरा/ निज गुन हेरि परक देखि परिहरि/ तेजह हृदयक रोखा/ भनय मुरारि प्राणपति संगिनि/ पुरुख वदह बहु धोखा।'[46]

उड़ीसाक दोसर कवि जगपाथ दास भेलाह, जनिका आरम्भिक जीवनक बारे मे विशेष जानकारी नहि भेटैछ। ओ पुरी मे रहैत छलाह, भागवतपुराणक ओड़िया अनुवाद कयने रहथि, चैतन्यदेवक गृहजीवनक विषय मे अनेक गीत लिखने रहथि। हुनक भक्ति-भावक दृष्टान्त मे देवकीनन्दन दासक ई पाँती उद्धृत कयल जाइछ जे 'जगपाथ दास बन्धो संगीते पंडिता। यार गीत सुनिया श्री जगपाथ मोहिता।' हुनकर भणितायुक्त नौ गोट ब्रजबुलि पद भेटैत अछि जे 'पदकल्पतरु' आ 'सिद्धान्त चन्द्रोदय' मे संकलित अछि। हुनक एक पद छनि—

'यमुनाक तीरे धिरे चलु माधव/ मन्द मधुर वेणु बानि रे/ इन्दीवर नयनी ब्रजवधु कामिनी/ साधन तेजिय वने ध्वनि रे/ असित अम्बुधर असित सरोरुह/ अतसि कुसुम अहि मकर सुता निर/ इन्द्रनील मणि उदार मरकत/ श्रीनिन्दित वपु आभा रे/ शिरे शिखंड दल नव गुंजाफल/ निर्मल मुक्ता लम्बि नासातल/ नव किसलय अवतंस गोरोचन/ अलक तिलक मुख शोभा रे/ श्रोणि पितांबर वेत्र वामकर/ कम्बुकंठे वनमाल मनोहर/ धातुराग वैचित्र कलेवर/ चरणे चरण परि शोभा रे/ गोधूलि धूसर विशाल वक्षथल/ रंग भूमि जिनि विलास नटवर/ गोचारण रजु विनिहित कंधर/ रूपे भुवन मन लोभा रे/ ब्रह्म पुरंदर दिनमणि शंकर/ ये चरणाम्बुज सेवे निरंतर/ से हरि कौतुक ब्रजबालक साथे/ गोप-नागरि अभिलाषा रे/ से पहु पदतल पराग धूसर/ मानस मम कुरु वास निरंतर/ अभिनव सत्कवि दास जगपाथ/ जननि जठर भय नाशा रे।'[47]

एहि ठाम स्पष्ट देखल जा सकैत अछि जे परिवेश आ परिस्थिति भेद सँ परवर्ती कवि लोकनि विद्यापतिक मूल भाषा-भंगिमा सँ आ दृश्यावली सब सँ कतबा दूर गेलाह अछि। आ संगहि विषय-विस्तार सेहो कोना होइत गेलैक अछि।

कविक वैयक्तिक प्रतिभा आ बिम्ब-विधान सँ मुदा समानो परिवेशक कविता मे रचनात्मकताक स्फोट भिप-भिप होयब संभव होइत अछि। उड़ीसाक प्रसिद्ध सन्त कवयित्री भेलीह माधवी दास। चैतन्यक वैष्णव सम्प्रदाय मे माधव दास तँ कतेको भेलाह मुदा माधवी दास यैह एक भेलीह। ओ सत्ते स्त्री छली आ कि कोनो पुरुष, एहि पर सुकुमार सेन पर्याप्त मगजमारी केलनि अछि। कतेको विद्वान अपन लेख मे माधवीक नाम लागल 'दास' कें 'दासिन' बना देलनि अछि। प्रश्न अछि जे एहि

पंथ मे तँ सब भक्त अपना कें कृष्णक प्रेमिके हेबाक भावना करैत छथि तखन की दास की दासिन? मुदा माधवीक जतेक पद भेटल सब ठाम ओ अपना कें माधवी दास कहलनि अछि। गौरांग महाप्रभुक प्रति जे हुनकर अनन्य श्रद्धा रहनि तकर प्रशंसा जगदबन्धु सेहो केलनि अछि। ओहो पुरी मे रहैत छलीह, हुनका बारे मे बस एतबे टा तथ्य भेटैत अछि, सिवाय एहि बातक जे उड़िया मे हुनकर कोनो रचना उपलब्ध नहि होइछ। हुनक पद देखी—

'राधा माधव बिलसय कुंजक माँझे/ तनु तनु सरस परस-रस पीबइ/ कमलिनि मधुकर राजे/ सचकिते नागर काँपय थर थर/ शिथिल होयल सब अंगे/ गद गद कहय रइ भेल अधर रस/ कब होयब ताछु संगे/ से धनि चारु वयन किए हेरब/ सुनब अमियमय बोला/ इहा मझु हृदय ताप किए मेटब/ सोइ करब किए कोला/ ऐछन कतहु विलापय माधव/ सहचरि दूरहि हासा/ अपरुप प्रेमे विषादित अन्तर/ कहतहि माधवि दासा।'[48]

चंपति राय उड़ीसाक एक प्रमुख ब्रजबुलि कवि मानल जाइत छथि। सुकुमार सेनक आकलन छनि जे ओ उड़ीसाक राजा प्रतापरुद्रक अधीन एक वरिष्ठ अधिकारी छलाह। हुनकर अनुमान इहो छनि जे भने ओ उड़ीसा मे रहल होथि मुदा मूलतः बंगाली छलाह। किन्तु एकर विपरीत, डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा अपन पुस्तक मे हुनका दाक्षिणात्य बतौलनि अछि।[49] एहि स्थापनाक आधार रूप गोस्वामीक पदावली थिक जाहि मे चंपति एक दाक्षिणात्य कविक रूप मे संकलित छथि। ओहि ठाम हुनका 'चमूपति' कहल गेल छनि। तकर तात्पर्य ई लगाओल जाइछ जे ओ महाराज प्रतापरुद्रक चमूपति (सेनापति) छलाह। (मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य) भणिता मे हुनकर कैक गोट नामक प्रयोग भेटैत अछि—चंपति, राय चंपति, चंपति पति। सुकुमार सेन एहू बातक दिस संकेत करैत देखल जाइत छथि जे भूपतिनाथ, सिंह भूपति, नृपति सिंह कवि, नृसिंह भूपतिक भणिता लागल जे पद सब भेटैत अछि सेहो संभवतः हिनके लिखल थिक। समस्या ई अछि जे मिथिलाक स्रोत सँ सेहो सिंहभूपतिक गीत प्राप्त होइत अछि, आ से पद सब प्राचीन गीतक प्रायः सब संकलन मे संकलित अछि। डॉ. रामदेव झाक अनुमान छनि जे मिथिलाक एक अज्ञात राजवंश जनिक संबंध काठमाण्डूक मल्ल राजपरिवार मे छल, एही वंशक राजा सिंह नारायण ई सिंहभूपति छथि। जयकान्त मिश्र जतय अनिश्चयपूर्वक हिनका सिद्धिनरसिंहमल्लक अपर नाम कहैत छथि तँ सैह बात शैलेन्द्रमोहन झा कें सेहो दोहरबैत देखल जा सकैत अछि। अपन इतिहास-ग्रन्थ मे जयकान्त मिश्र चंपतिराय कें उड़ीसाक महाराज प्रतापरुद्र देवक महामंत्री बतबैत छथि, संगहि इहो सूचना दैत छथि जे प्रतापरुद्र सेहो ब्रजबुलि मे पद सभक रचना कयने छलाह। प्रतापरुद्रक नाम सँ कोनो वैष्णव संकलन

मे कोनो पद नहि भेटैत अछि। शैली-साम्यक आधार पर सुकमार सेनक अनुमान छनि जे चम्पति राय अपनहि सिंहभूपतिक नामें पद लिखैत छलाह, प्रसिद्धि छल जे प्रतापरुद्र सेहो पदक रचयिता थिकाह, जकर चर्चा जयकान्त बाबू सेहो केलनि अछि। सब स्रोत कें एक ठाम कयने एवं अन्यान्य नवीन साक्ष्यक खोज कयने कदाचित एहि 'अज्ञात राजवंश'क अज्ञातनामा राजाक रहस्यभेदन भ' सकय।

सब सँ आश्चर्यजनक ई अछि जे एहन दू टा पद भेटैत अछि जकर भणिता मे एक्कहि संग चंपति राय आ गोविन्ददासक चर्चा छनि: 'विरहमोचन ई तुअ लोचन/ कोने हेरबि कान/ राय चंपति वचन मानह/ दास गोविन्द भान।' दोसर: 'जानह पुन पुन से पिय परिखन/ सोइ पुजए पचबान/ राय चंपति ओ रस गाहब/ दास गोविन्द भान।' सुकुमार सेनक मंतव्य छनि जे दुनू कवि संभवतः एक दोसरक मित्र रहल हेताह, मुदा तथ्य किछु आनो भ' सकैत अछि। कारण, चंपतिक एहनो पद भेटैत अछि जकर भणिता मे चंपतिक नामक संग विद्यापतियोक नाम भेटैत अछि। एहन एक पद देखी—'शुन शुन माधव! निरदय देह/ धिक् रहु ऐछन तोहरि सुनेह/ काहे कहलि तुहु संकेत बात/ यामिनि बंचलि आनहि साथ/ कपट लेह करि राइक पाश/ आन रमणि सने करह विलास/ को कहे रसिक-शेखर वर कान/ तुहु सम मुरख जगते नहि आन/ मानिक त्यजि काचे अभिलाष/ सुधा-सिन्धु त्यजि क्षारे पियास/ क्षीर सिन्धु तेजि कूपे विलास/ छिये-छिये तोहरि रभसमय भाष/ विद्यापति कवि चम्पति भाण/ राइ ने हेरब तोहरि बयान।' डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक आकलन छनि जे चम्पति रायक एक उपाधि 'विद्यापति' सेहो छलनि।[50]

दुर्ज्जय मान लिखबाक प्रसिद्धिप्राप्त चंपति रायक ई पद प्रसिद्ध छनि: 'मदन कुंज तेजि चललि चतुर दुति/ पवनक गति सम गेला/ क्षिति नखे लेखि देखि मुख झापल/ रोइ उतर नहि देला/ चतुरि दूति तब मनहि विचारल/ कहत ललिता सने बाता/ काहे विमुख भए बैठलि दूबरि/ की भेल आजुक राता/ हेरि ललिता सखि मृदु मृदु बोलत/ हमरि करम मति भेली/ नागर किशोर कुंजे निशि बंचला/ चन्द्रबली सने केली/ हसि हसि नियरे यइ दुति बैठलि/ कहतहि मधुरिम बानी/ इहे लघु दोखे रोष अब मानसि/ को कहे तोहे सयानी/ उठ उठ सुन्दरि मान दूर करि/ बाहु पसारि करु कोरा/ फटकि हाथ बात नहि सूनल/ कोपे भरल सब गाते/ भूपतिनाथ रोखे तब बोलत/ यबहू फटकल हाथे।'[51]

चम्पति रायक कविताक प्रशंसा मे विद्वान लोकनि बहुतो बात लिखलनि अछि। मुदा सत पूछी तँ हमरा हुनका पद सब मे भक्ति-अपेक्षित विनम्रता नहि, पुरुष-वर्चस्वक सामंती अहंकारक तत्त्व प्रबल देखाइत अछि। राजदरबारक एक विशुद्ध शृंगारिक कवि हेबाक अछैतो विद्यापति स्त्री कें जतबा जगह आ इज्जत देलखिन,

एक भक्ति-धाराक प्रतिनिधि कवि हेबाक अछैतो चम्पति राय मे तकर अभाव देखल जाइछ। अपन एक पद मे स्त्री कें मान त्यागबाक लेल तर्क करैत जखन ओ कहैत छथि जे 'सकल जीवगण जीव समीरण/ मन्द सुगन्ध सुशीते/ दीपक ज्योति परशे यदि नाशइ/ इथे लागि निन्दह मारुते/ स्थावर जंगम कीट पतंगम/ सुख देइ सकल शरीरे/ कागजपत्र परशे यदि नाशइ/ इथे लागि निन्दह नीरे'—कि सकल जीव कें आनन्दित कर'बला वायु अपन झोंका सँ यदि दीप कें मिझा दैक, अथवा समस्त चराचर कें सुख देनिहार जल अपन स्पर्श सँ कागज कें गला दैक—तँ एहि मे वायु अथवा जलक दोष नहि अछि, दोष ओहि दीप आ कागजक अछि जे कि स्त्री थिक—तँ विवेकी लोक कें भक्ति तँ की हेतनि जे वितृष्णा सँ मन घोर हेतनि।

डॉ. शैलेन्द्रमोहन झाक शोध सँ उड़ीसाक एक आओर सामन्त कविक सूचना भेटैत अछि। ई नृप वैद्यनाथ उर्फ बैञ्जल देव छलाह। डॉ. झाक ई शोध-लेख 'मिथिला-भारती' (अंक-2, भाग 1-4) मे प्रकाशित भेल छल जत' ओ नृप वैद्यनाथक भणिता सँ लिखल चारि गोट गीत सेहो प्रकाशित करौने छलाह। हमरा लोकनि अवगत छी जे विद्यापतिक एकाधिक पद मे वैञ्जल देव तथा वैद्यनाथक उल्लेख भेल अछि जे चन्दल देवीक पति छलाह—'भनइ विद्यापति अभिमत देवा/ चन्दल देविपति बैजल देवा' तथा 'भनइ विद्यापति पुन पुन सेव/ चन्दल देविपति वैद्यनाथ देव।' ई पद सब कतय धरि प्रामाणिक अछि कहि नहि, कारण ब्रजबुलिक समुच्चा काव्याभियान मे हम सब पबैत छी जे विद्यापतिक समतुल्य प्रतिभाशाली कतेको गोट कवि भेलाह। विद्यापति कदाचित हुनको लोकनिक एक आर उपाधि होइन, एहू संभावना कें कोना खारिज कएल जा सकैए? एतय हम सब हुनकर एक टा पद कें देखी आ आगूक शोधक प्रतीक्षा करी, सैह टा भ' सकैत अछि। पद छनि—'कत दुख कत सुख धरिते नारि हिया/ हमे नारि अभागिनी निदारुण पिया/ हमार दुखे रो कथा सुन हेलो काय/ से देश पंडित नाहि स्वामि कें सुझाय/ धन जन जौभन दिन दुइ चारि/ नृप वैद्यनाथ कहे सुन वरनारि।'

सन्दर्भ

1. विमानबिहारी मजूमदार/ विद्यापति/ पृ. 23
2. सुकुमार सेन/ विद्यापति गोष्ठी (हिन्दी अनुवाद शैलेन्द्रमोहन झा)/ पृ. 76
3. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 79
4. उपर्युक्त/ खंड-2/ पृ. 21
5. रामदेव झा/ जगत्प्रकाशमल्ल (मोनोग्राफ)/ पृ. 12
6. सुनीतिकुमार चटर्जी/ भूमिका/ वर्णरत्नाकर (1940)/ पृ. 21
7. प्रो. जयदेव मिश्र/ मैथिली साहित्यक रूपरेखा/ पृ. 9
8. सुकुमार सेन/ विद्यापति गोष्ठी/ पृ. 77
9. डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा/ ब्रजबोली/ प्रबन्ध पारिजात (मैथिली अकादमी)/ पृ. 3
10. उपर्युक्त/ पृ. 4
11. सुकुमार सेन/ हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर/पृ. 23-24
12. डॉ. बदरीनारायण झा/ मैथिली प्रसार प्रभाव : संदर्भ उड़ीसा/ पं. गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा/ पृ. 103
13. विमान बिहारी मजूमदार/ विद्यापति/ पृ. 93
14. हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर/ पृ. 43
15. उपर्युक्त/ पृ. 46
16. उपर्युक्त/ पृ. 48
17. उपर्युक्त/ पृ. 50
18. उपर्युक्त/ पृ. 68
19. उपर्युक्त/ पृ. 71
20. उपर्युक्त/ पृ. 69
21. उपर्युक्त/ पृ. 462
22. उपर्युक्त/ पृ. 276
23. उपर्युक्त/ पृ. 372
24. रवीन्द्रनाथ ठाकुर/ रचनावली (सस्ता साहित्य मंडल)/ खंड-1/ पृ. 55
25. उपर्युक्त/ पृ. 64
26. उपर्युक्त/ पृ. 58
27. उपर्युक्त/ पृ. 66
28. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/पृ. 18
29. डॉ. वासुकीनाथ झा/ अनुशीलन अवबोध/ पृ. 44
30. बिरिंचि कुमार बरुआ/ असमिया साहित्यक इतिहास/ पृ. 34
31. उपर्युक्त/ पृ. 35
32. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 21
33. बिरिंचि कुमार बरुआ/ उपर्युक्त/ पृ. 37
34. उपर्युक्त/ पृ. 36
35. शंकरदेवकृत रामविजय/ सं. डॉ. रामदेव झा/ पृ. 4-5
36. उपर्युक्त/ पृ. 9
37. डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र/ प्रो. उमानाथ झा अभिनंदन ग्रन्थ मे संकलित लेख 'अंकीया नाट: परिचय एवं विकासक्रम/ पृ. 118
38. अंकीया नाट विवेचन (डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र)/ पृ. 172-74
39. मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य (पं. राजेश्वर झा)/ पृ. 149-50
40. असमिया साहित्यक इतिहास/ पृ. 54
41. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 106
42. डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र/ अंकीया नाट विवेचन/ पृ. 116

43. हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर/ पृ. 25-26
44. उपर्युक्त/ पृ. 25
45. उपर्युक्त/ पृ. 86
46. उपर्युक्त/ पृ. 29-30
47. उपर्युक्त/ पृ. 84
48. उपर्युक्त/ पृ. 59
49. डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा/ ब्रजबोली/ पृ. 257
50. उपर्युक्त/ पृ. 259
    डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा लिखैत छथि—'विद्यापति की उपाधि चम्पति हो या नहीं किन्तु पदावली साहित्य के अन्वेषण-क्रम में यह अवश्य मान्य है कि प्रतापरुद्र के आमात्य चम्पति की उपाधि विद्यापति थी! इस प्रकार की जनश्रुति वृन्दावन के वैष्णव समाज में प्रचलित है।'
51. हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर/ पृ. 154

नेपाल मे मैथिली कविताक विकास

बंगाल, उड़ीसा आ आसाम मे जाहि तरहें मैथिली कविताक प्रसार भेल छल, नेपाल मे भेल प्रसार एहि सँ सर्वथा भिप छल। हम सब अवगत छी जे कविता मनुष्यक जीवनक बहुतो काज आबि सकैत अछि, अभिव्यक्तिक माध्यम बनब तँ न्यूनतम थिक। मुदा इहो नहि बिसरबाक चाही जे कविता अन्ततः थिक एक कला। हरेक कला अपन कलाकारक संग सामंजस्य सँ अपन विकास कें प्राप्त करैत अछि। बंगाल आ आसामक मैथिली जहिना कि युग प्रभाववश अपन उद्देश्यक पूर्त्ति लेल अक्षम भेल, ओकर उपयोगक उठाब होइत गेलैक। कलाक रूप मे जँ कविता-भाषा कें ली, तँ ई स्थान ओहि-ओहि प्रान्तक अपन भाषा बांग्ला, उड़िया, असमिया कें प्राप्त भेलैक। ई बात पहिनहु कहलहुँ अछि जे ओ एक टा युग छल जे सर्वभारतीय आदर्श एहिठामक संस्कृतिक भित्ति छल, बाद मे एकर स्थान पर आंचलिक संस्कृति कें हमरा लोकनि स्वरूप ग्रहण करैत, आधुनिक भारतीय भाषा सब कें विकसित होइत देखैत छिऐक। नेपालक संग अन्तर ई रहलैक जे एक कलामाध्यमक रूप मे मैथिली कविता ओतय अपन स्थान बनौलक आ युगक अनुरूप, कलाकार लोकनिक संग सामंजस्य बनबैत अपन विकास कें प्राप्त केलक। रमानाथ झाक शब्द मे कही तँ बंगाल कि आसाम मे उद्देश्य छल वैष्णवधर्मक प्रचार जखन कि नेपाल मे मैथिली साहित्य मनोरंजनक लेल, साहित्यिक आनन्दक लेल लिखल गेल। अथवा ई जे 'आसाम किंवा बंगाल मे मैथिलीक अनुकरण भेल, नेपाल मे मैथिलीक सर्जना भेल, ओकर विकास भेल।' आ जहाँ धरि एकर विकासक प्रश्न अछि, ओ तँ एतय धरि लिखलनि अछि जे 'मैथिली साहित्यक जतबा विकास मिथिला मे भेल ताहि सँ कत बड़ विशेष नेपाल मे भेल, जाहि प्रसंग हमरा लोकनि एखन धरि अन्धकार मे छलहुँ।'[1] प्रसंगवश हमरा लोकनि अवगत होइ जे नेपाल मे ने केवल मैथिली साहित्यक इतिहास अछि, ओकर वर्तमान सेहो अछि। आइयो लिखल जाइत अछि। हमरा लोकनि एहू बात सँ अवगत छी जे प्रथम पीढ़ीक अध्येता लोकनि, यथा महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री कें इतिहासक अन्धकार कें चीरि देनिहार कतेको पाण्डुलिपि सब, यथा

चर्यागीतक पाण्डुलिपि, भेटल छलनि से नेपाले सँ भेटल छलनि। मैथिली मे लिखल गेल पहिल पुस्तक 'वर्णरत्नाकर' नेपाले मे भेटल, विद्यापतिक पदावली भेटल, हुनक आन-आन कृति सब कीर्तिलता, कीर्तिपताका आदि सब सेहो नेपाले मे भेटल, मैथिली साहित्यक कैक गोट कर्मठ अध्येता लोकनि यथा डॉ. सुभद्र झा, रमानाथ झा, दुर्गानाथ झा श्रीश, रामदेव झा, लेखनाथ मिश्र भिप-भिप समय मे नेपाल मे अड्डी गाड़ि एहि विशाल अमूल्य निधि मे सँ थोड़-थोड़ बहार करैत अयलाह अछि। नेपालक दू गोट पुस्तकालय—नेपाल राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा वीर पुस्तकालय मे ई भण्डार संगृहीत छैक। डॉ. भीमनाथ झा लिखलनि अछि—'आइ जँ नेपालक पुस्तकागार मे पाण्डुलिपि सुरक्षित नहि रहैत तँ कत' सँ अबैत सिद्धसाहित्य? कत' सँ अबैत विद्यापतिक अमूल्य लगभग अढ़ाइ सय पद? कत' सँ अबैत मध्यकालीन नाटकक गौरवशाली परम्परा? नेपालक पुस्तकालय मे पाण्डुलिपि सुरक्षित नहि रहैत तँ हमरा लोकनिक प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्य कतेक छुछुप रहैत! मैथिलीक आयु कतेक कम मानल जाइत?[2]

रमानाथ झा 1967 मे काठमाण्डू गेल छलाह। बहुत आशावान भ' क' गेल छलाह, जे कि पूरा नहि भ' सकलनि, मुदा जे किछु भेलनि, अपन यात्रक अनुभव ओ लिखैत छथि—'हमर ई यात्रा पूर्ण नहि भेल। वीर पुस्तकालयक अध्यक्ष दैवात ओतए नहि छलाह। एमहर सम्पूर्ण नेपाल सँ जे प्राचीन लेख सब संगृहीत भ' क' आएल छैक से ओहिना बन्द छलैक ओ तकर कोनो पता नहि लागल। तखन रहल ओतुका प्राचीन संग्रह। से तँ एतेक दिन सँ ततेक व्यक्ति देखि आएल छथि जे सर्वथा अभिनव वस्तु की भेटत? तथापि वीर पुस्तकालयक संग्रह मे मैथिली साहित्यक अनन्त निधि देखि, भातगाँव मे शिलालेख पर्यन्त मे मैथिलीक गीत पढ़ि, आँखि फूजि गेल जे ओइनवार राजकुलक पतन भेला उत्तर मैथिली साहित्य मिथिला मे नहि नेपाल मे विकसित भेल ओ जाधरि मल्ल लोकनिक राज्य रहल नेपालक साहित्यिक भाषा मैथिली रहल।'[3]

ई मल्ल राजा लोकनि के छलाह? विद्वान लोकनिक निष्कर्ष छनि जे भातगाँव सँ काठमाण्डु धरि नेपाल पर शासन करैबला ई मल्ल लोकनि अपन वंशक उत्पत्ति मिथिलाक कर्णाट राजवंश (1097-1325) सँ मानैत छलाह।[4] डॉ. रामदेव झा पूरा विवरण दैत लिखलनि अछि जे कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेव अपन राजधानी हिमालयक पादप्रदेश सिमरौनगढ़ मे स्थापित केलनि, नेपाल सँ अतिनिकटताक ई कारक भेल जे कि पौराणिके काल सँ कमोबेस चलि आबि रहल छल। दोसर कारक भेल जे चौदहम शताब्दीक आरम्भिक चरण मे कर्णाट राजा हरसिंह देवक महामत्तक चण्डेश्वर ठाकुर नेपालविजय (1314) केलनि। एहि युद्ध मे नेपालक राघववंशीय

राजा लोकनि कें परास्त क' चण्डेश्वर पशुपतिनाथक पूजाक संग जे वाग्मती तीर पर तुलापुरुषदान कयने छलाह, से मिथिलाक इतिहासक एक ऐतिहासिक घटना थिक। आगू जखन वैह हरसिंहदेव दिल्लीक सुल्तान गयासद्दीन तुगलक सँ 1325 ई.क युद्ध मे पराजित भेलाह तँ भागि क' नेपाल अयलाह आ पूर्वविजित अपन एहि क्षेत्र मे अपन राज्य स्थापित केलनि। आगू एही वंशक एक राजकुमारी राजल्लदेवी जे कि नेपाल उपत्यकाक एक मुख्य राज्यक उत्तराधिकारिणी छलीह, के विवाह 1354 ई. मे राजकुमार जयस्थितिमल्ल सँ भेल। इहो कहल जाइछ जे जयस्थितिमल्लक वंश मे पहिनहु कोनो संबंध कर्णाट लोकनि सँ छलनि। अस्तु, एहि परिणय-संबंध सँ जयस्थितिमल्लक मजगूती बहुत बढ़लनि आ नेपाल उपत्यका पर हुनक एकच्छत्र राज स्थापित भ' गेलनि। एही मल्लवंशक एक परवर्ती शासक यक्षमल्लक मृत्यु जखन 1481 मे भेलनि तँ हुनक तीनू पुत्र लोकनिक बीच सत्ता-प्राप्तिक लेल भीषण संघर्ष भेल। आ अन्ततः राज्य कें तीन भाग मे विभक्त क' तीनू कें राजा बनाओल गेल। ज्येष्ठपुत्र रायमल्ल (1482-1505) भक्तपुर (भातगांव)क राजा भेलाह, दोसर पुत्र रत्नमल्ल (1482-1520) कान्तिपुर (काठमाण्डू)क राजा भेलाह।[5] पुनः अपन पुस्तक 'जगज्ज्योतिर्मल्ल' मे ओ लिखलनि अछि जे हुनक एक आर पुत्र, प्रायः दोसर पुत्र वैह छलाह, प्राणमल्ल वनिकपुर (बनेपा)क राजा भेलाह। ओतय ओ इहो सूचना दैत छथि जे रत्नमल्ल ललितपुर कें सेहो अपन अधिकार मे ल' लेलनि।[6] राधाकृष्ण चौधरी अपन 'मिथिलाक इतिहास' मे राज्य कें तीन नहि अपितु चारि भाग मे बँटबाक सूचना दैत कहैत छथि जे रत्नमल्लक परवत्ती उत्तराधिकारी लोकनि पाटन कें ललितपुर मे मिला लेलखिन। एवम्प्रकारें, सतरहम शताब्दी मे नेपाल उपत्यका मे तीन गोट राज्य चलैत रहल—भक्तपुर (भातगाँव), कान्तिपुर (काठमाण्डू) तथा ललितपुर (पाटन)।[7]

नेपालक एहि राज्य-विभाजन कें इतिहासकार लोकनि राजनीतिक दृष्टि सँ नीक नहि मानैत छथि कारण सतरहम शताब्दी मे नेपाल अनेकानेक जागीर मे बँटि गेल।[8] मुंदा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि सँ मैथिलीक चतुर्दिक विकास कें ल' क' विद्वान लोकनि एकर भूरि-भूरि प्रशंसा केलनि अछि। मल्ल राजा लोकनि प्रयत्नपूर्वक मिथिला सँ सम्पर्कित रहैत छलाह तथा ओतय सँ शास्त्र एवं साहित्यक विशेषतः गीत नाटकक प्रतिलिपि कराय मँगबबैत छलाह तथा अपनहु आनन्द लेथि तथा नागरजन कें सेहो आनंद प्रदान करैत छलाह। यैह कारण भेल जे मिथिलाक साहित्य हजारोक संख्या मे, तिरहुत तथा नेवारी लिपि मे लिखल हुनका लोकनिक संग्रह मे प्राप्त होइत अछि। हमरा लोकनि पबैत छी जे विद्यापतियेक समय सँ मैथिली मे कविता/ गीत लिखब लाभकारी रोजगारक रूप मे प्रतिष्ठापित भ' गेल छल। मैथिल पंडित लोकनि ओहुनो काव्यरसिक होइत छलाह आ शुष्क दार्शनिको लोकनिक बीच

मुखामुखी काव्यरसक आनन्द लेबा-देबाक अनेको उदाहरण हम सब इतिहास मे देखैत छी। थोड़बो पढ़ल-लिखल पंडित विद्यापतिक अनुकरण मे तुक जोड़ि लेल करथि आ नाना बुद्धि लगा क' कोनो-ने-कोनो राजाक दरबार मे जा क' राज्याश्रय पाबि लेथि। कवि जँ नहियों भ' सकलाह तँ एहन-एहन लोक 'लेखक' (लिपिकार) मे लागि जाथि। 'हरिश्चन्द्रनृत्य'क लेखक रामभद्र शर्मा एहने लिपिकार छलाह। 'लिखितं श्री रामभद्रशर्मणा'—एकर तात्पर्य थिक जे ओ मात्र लिखल कें उतारलनि, अन्यथा 'रचितं श्रीरामभद्रशर्मणा' रहितैक।[9] विद्यापति पदावलीक पाठ-संशोधन मे अध्येता लोकनि कें कते-कते संकटक सामना कर' पड़लनि, तकर विवरण सब भरल पड़ल अछि। ई अयोग्य लोक सभक लेखक बनि जेबाक कारण होइत छल। रमानाथ झा लिखने छथि—'मैथिली काव्यक जे पोथी सब भेटल अछि सब एहन व्यक्तिक लिखल जे वृत्या लेखक छलाह, जे देखल से लिखि देल, जे बहुधा ई नहि बूझथि जे की लिखैत छी ने से बुझबाक हुनका प्रयोजन रहनि। अथवा एहन व्यक्तिक लिखल जे रसिक तँ रहथि मुदा अर्धशिक्षित जनिका पाठक संगति किंवा पदक साधुताक अवगति नहि रहनि। विद्यापति गीतक जे संग्रह तालपत्र पर वीरपुस्तकालय मध्य अछि, जकर प्रकाशन श्री सुभद्र बाबू कएने छथि, वृत्या लेखकक लिखल थिक ओ रामभद्रपुरक पोथी अर्धशिक्षित व्यक्तिक लिखल।'[10] ओइनवार वंशक मैथिल राजा लोकनि एखन धरि हुनका लोकनिक एकमात्र आश्रय होइत छलखिन, यद्यपि कि एहू बातक प्रमाण अछि जे किछु प्रभावी मैथिली कवि उड़ीसा आ आसाम धरि मे जा क' राज्याश्रय पयबा मे सफल भेल रहथि, मुदा ई सभक वशक बात नहि छल। ओइनवार वंशक पतन (1325)क बाद मिथिला मे अगिला राजवंश खण्डवलावंशक स्थापना (शाके 1448) आ संस्कृति-संरक्षणक स्पष्ट नीतिक अमल मे अयबाक बीचक स्थिति एहि कवि लोकनिक लेल हताशाजनक छल। रमानाथ झा लिखलनि अछि—'ओइनवार राजवंशक पतन भेलाक पश्चात मिथिलाक राजनीतिक परिस्थिति साहित्यसर्जनक अनुकूल नहि रहल। ओना खण्डबला राजकुलक स्थापना ओकर तीस-पैंतीस वर्षक अभ्यन्तरहि भ' गेल, राज्य पण्डित ब्राह्मणेक रहल, खण्डबला राज्यकुलक संस्थापक स्वयं कवि छलाह, ओ हुनक रचना मैथिलीक गौरव थिक, परन्तु खण्डबला कुल मे राज्य कें सुदृढ़ होयबा मे गोटेक सय वर्ष लागि गेलैक ओ एहि बीच मे कविता कें आश्रय देबाक अवकाश ककरहु नहि छलनि। ओना मैथिली कविताक स्रोत एतहु प्रवहमान रहल मुदा राज्याश्रित कवि नहि भेलाह तथा जे केओ आश्रय चाहथि से मिथिला सँ बहार चल जाथि।'[11]

एहना स्थिति मे मल्ल राजवंशक विखंडीकरण मैथिलीक कवि लोकनिक लेल भाग्य जागबाक तुल्य छल। एहि बातक पर्याप्त साक्ष्य अछि जे मल्ल राजा लोकनिक तीनू दरबार साहित्य-संस्कृतिप्रेमी छल आ ओ लोकनि विद्या आ कला कें प्रोत्साहन देबाक सदति मंशा रखैत छलाह। गीत-गायकी तथा नाटकक मंचन राजदरबारक प्रमुख मनोरंजन छल। हम सब अनुमान क' सकैत छी जे आश्रयप्राप्त कवि लोकनि अपन बुद्धि-कौशल सँ कोना एहन उपयुक्त माहौल बनौने रखबाक चेष्टा करैत रहैत छल हेताह जे उत्तरोत्तर ई उत्सवी आ मनोरंजनात्मक माहौल बढ़ौक जाहि सँ उत्तरोत्तर हुनकर लाभ बढ़नि। राजनीतिक वा पारिवारिक प्रतिस्पर्धा तँ ओहुनो ओहि दरबार सभक बीच रहिते छल, ई एक नवीन प्रकारक प्रतिस्पर्धा सेहो चालू छल। रमानाथ झा कहैत छथि—'मल्ल राजा लोकनिक कए गोट शाखा, काठमाण्डू, भातगाँव, ललितपुर, वनेपा ओ कीर्तिपुर मे राज्य करैत छल तथा परस्पर प्रतिस्पर्धा सँ साहित्यक विकास मे अपूर्व योगदान करैत रहल। सब सँ विशेष नाटकक विकास एतए भेल ओ एक दरबारक कवि एक टा नाटक लिखल, ओकर अभिनय भेल, तँ दोसरो दरबारक कवि ओही विषयक दोसर नाटक लिखल। एवं प्रकारें वीर पुस्तकालय मे एक-एक नामक अनेक नाटक उपलब्ध होइत अछि। पूर्व मे मोरंग सँ लए पश्चिम मे बेतिया धरि तराइक क्षेत्र मे छोट-पैघ अनेक रजबाड़ा छल ओ सर्वत्र मैथिलीक प्रतिष्ठा छल, मैथिलीक सम्मान छल, सर्वत्र मिथिलाक पण्डित लोकनि पूजित छलाह, ओ सर्वत्र मैथिलीक साहित्यक सर्जन होइत छल।'[12] एही प्रसंग मे हंसराज लिखने छथि—'भातगाँव, ललितपुर आ कान्तिपुर—ई सब एक दोसराक निकटहि छलैक। तें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा छलैक। ओहि स्पर्धा मे साहित्यिक प्रतिस्पर्धा सेहो छलैक। पण्डित-कविक आश्रय ओ सम्मानक स्पर्धा, काव्य-चर्चा ओ नाटकक अभिनयक स्पर्धा आ राजा लोकनि अपनहु मैथिली काव्यरचना करथि—प्राय: तकरो स्पर्धा। तें ओहि समय मे नेपाल मे अधिक मैथिली काव्य-रचना भेल अछि।'[13] सुकुमार सेन तँ नाम ल' क' कहलनि अछि जे 'भातगाँवक जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रतिस्पर्धी छलाह काठमाण्डूक प्रतापमल्लदेव एवं ललितपुरक सिद्धिनरसिंहदेव।'[14]

नेपालक विभिप राजवंशक साहित्यिक राजा लोकनिक बीच जगज्ज्योतिर्मल्ल प्राय: सर्वाधिक विदग्ध, गुणी तथा सृजनात्मक प्रतिभा सँ भरल, रचनाशील शासक रहथि। ओ मल्ल राजवंशक भक्तपुर (भातगाँव शाखा)क त्रैलोक्यमल्लक पुत्र छलाह, जनिक राजत्वकाल 1613-1637 मानल गेल अछि। हुनक ज्ञानविशदताक अनुमान एही सँ कयल जा सकैत अछि जे मैथिली नाटक तथा मैथिली गीतक अतिरिक्त ओ छन्दशास्त्र, नाट्यशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, कामशास्त्र आदि विषयक ग्रन्थक रचना कयने छलाह जे अधिकतर संस्कृत मे अछि। संस्कृतक अतिरिक्त मैथिली, नेवारी, बांग्ला, ब्रज-अवधी भाषाक सेहो ओ ज्ञाता रहथि, जे हुनकर सृजनात्मक रचना सब कें देखने स्पष्ट होइत अछि। शासनकर्त्ताक पद पर आसीन

रहैतो, खास क' क' एहन परिस्थिति मे जखन आरम्भिक दौर मे हुनक मंत्री लोकनि हुनकर तख्ता-पलट के प्रयास मे संलग्न भेल रहथि, ओ एहन विद्वत्तापूर्ण व्यक्तित्वक स्वामी कोना भ' सकलाह तकर विवरण डॉ. रामदेव झा अपन विनिबंध 'जगज्ज्योतिर्मल्ल' मे देने छथि। ओ धार्मिक मनोवृत्तिक अध्ययनशील व्यक्ति छलाह जिनका नव-नव विषयक अध्ययन तथा नव-नव प्रकारक प्रयोग, केवल साहित्यिके नहि सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र मे सेहो, करबा दिस गंभीर अभिरुचि रहनि। एकर साक्ष्य अछि जे तीस-बत्तीस वर्षक अवस्था भेलो पर पिता एवं पितृव्यक स्वयं सक्रियताक कारण ओ राज्यशासनक दायित्व वा सहभागिता सँ सर्वथा मुक्त रहथि। डॉ. झा लिखैत छथि—'एकर सुपरिणाम ई भेल जे एहि काल मे हुनका विभिप शास्त्रक दुर्लभ ग्रन्थ सभक संकलन, अध्ययन-मनन करबाक उन्मुक्त समय एवं सौविध्य प्राप्त भेलनि। एहि अवधि मे ओ मैथिली भाषाक काव्य-नाटकक रसवत्ता सँ परिचित भेलाह। काव्य-नाट्य-नृत्य-संगीत विषयक शास्त्रक अतिरिक्त नीतिशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, कामशास्त्र ओ अश्व-वैद्यक शास्त्र मे निपुणता ओ बहुज्ञताक संगहि काव्य-नाटकादिक रचना मे सेहो पाटव प्राप्त कयलनि। एकरहि सभक प्रतिफलन हिनक विभिप कृतिक रूप मे भेल।'[15]

हुनकर चारि गोट नाटक—मुदितकुवलयाश्व नाटक, हरगौरीविवाह नाटक, कुंजविहार नाटक तथा षोडशगीतम् भेटैत अछि। ई नाटक सब अनेक तरहें प्रयोगशील अछि। 'मुदितकुवलयाश्व' मे अनेक विरोधी रस सभक समायोजन अत्यन्त कुशलताक संग कयल गेल अछि। तहिना, 'हरगौरीविवाह' यद्यपि शिव-पार्वतीक विवाह विषयक अछि मुदा एहि प्रसंगक जे सामान्यत: प्रचलित मिथक सब अछि जेना सती-दहन, पार्वतीक तपस्या, मदन-दहन, आदिक एहि ठाम सर्वथा अभाव अछि आ भिप तरहें मौलिकता प्राप्त कयने अछि। एतय तँ अंकीया नाट जकाँ ने तँ अलग सँ सूत्रधार अछि आ ने नेपालक आन नाटक जकाँ पात्र सभक भरमार अछि। राधा-कृष्णक विलास पर आधारित 'कुंजविहार' नाटक मे तँ कोनो कथानक अछिये नहि, अपितु अत्यन्त सूक्ष्म काल्पनिक सूत्र मे सब प्रसंग एक दोसराक संग गुथल अछि। तहिना 'षोडशगीतम्' मे सेहो कथावस्तु कें नहि संगीत सँ भरल ओकर प्रस्तुति कें महत्त्व देल गेल अछि। एहने प्रकारक अन्य नाट्य प्रस्तुति-रूप 'दण्डपाणि उत्पत्ति नाच'क ओ आविष्कर्त्ता मानल जाइत छथि। रमानाथ झाक कहल ओ बात एहि ठाम मोन पड़ि जाइत अछि जे मैथिली साहित्यक वास्तविक विकास, मध्यकाल मे, मिथिला मे नहि, नेपाले मे भेल।

जगज्ज्योतिर्मल्लक मैथिली गीत दू स्रोतक अछि। एक तँ अपन नाटक सब मे ओ ई प्रयोग केलनि जे आनो आन कवि लोकनिक अधिकाधिक गीत ओहि मे शामिल केलनि। यथा, 'हरगौरी विवाह' मे शामिल 54 (वास्तव मे 49) गीत सब मे सँ सतरह टा मात्र ओ अपन देलनि तथा शेष विद्यापति, विष्णुपुरी, सदानन्द गोविन्द, करण महेश, कृष्णराए, चतुर चतुर्भुज, जगदीश, शशिशेखर सिंहक गीत सब छनि। तहिना, 'कुंजविहार' मे अपन 34 टा तथा षोडशगीतम् मे 16 टा गीतक समावेश कयने छथि। एकरा अतिरिक्त दशावतारनृत्यम्, गीतपंचाशिका, गीतसंग्रह, नानाराग गीत-संग्रह, नवरस संगीत, नादोत्पत्तीत्यादि भाषासंगीतम्, रागभजनसंग्रह, नानारागसंग्रह आदि मे हुनकर गीत सब संकलित छनि।

हुनकर सब टा गीत राग-भास पर आधारित आ शृंगार, नीति तथा वैराग्य सँ सम्बन्धित अछि, यद्यपि कि प्रधानता शृंगारेक छैक। मुदा अपन जाहि विशेषता—भावपक्षक प्राबल्य ल' क' ओ प्रशंसित छथि, से सभतरि देखाइत अछि। हुनक किछु एहन गीत सब देखल जाय जाहि मे कतोक बेर अपन मध्यकालीन वातावरणक ओ नीक आलोचक बनि क' उपस्थित भेलाह अछि। धन कें सर्वाधिक महत्त्व देनिहार, धनक पाछू बेहाल समाजक ओ ई चित्र सामने रखैत छथि—'धन हित चाकर धन हिते साहब धन कारणे जिब देइ/ धन कारणे कोइ धरम गमाबए धन हिते परजिब लेइ/ जइसे लवण पानि पर धरिअए खन एक जाए विलाने/ हाड़ मासु कफ सिरजल देही धन पुनु तैसन निदाने।' समाज मे पसरल धूर्त्तता पर हुनक गीत छनि—'दाता वंचक सेवक धूत/ नारी नीच द्यूतमति पूत/ भय नहि मान वचन नहि थीर/ बिनु अपराध करए पर पीर/ लोभी ठाकुर कपटी लोग/ विहि निमाओल सबहिं कुयोग/ ई व्यवहार दिनहु दिन बाढ़/ देखि देखि सत होअ दुख गाढ़।' ई कुवृत्ति दिनोदिन बढ़ि रहल अछि, से सूचना दैत जखन ओ कहैत छथि जे 'विहि निरमाओल'—विधाता बनौलनि—तँ मानू विधाता कें सेहो कठघरा मे ठाढ़ करैत देखल जा सकैत छथि। एक टा गीत मे ओ लोकक कलहप्रियता, पिशुनता, छल-बल सँ धनलाभक प्रवृत्ति पर लिखैत छथि तँ जेना समकालीन यथार्थक लगीच धरि चलि अबैत छथि—'कलह छाड़ि काहु किछु ने सोहाब/ कानहि कान कहिनि काहु भाव/ छले बले कले केओ धने पए साध/ माया बंध करब के बाध।' मायाक बन्हन मे जे बन्हा गेल तकरा के कतय रोकि सकैत अछि, ई कहैत कवि जेना 'माया' सन दार्शनिक अवधारणा कें एक ठोस भौतिक जमीन प्रदान करैत छथि। तें सुपुरुषक हुनकर परिभाषा छनि—'सुपुरुष सोहए वचनक थीर/ संपति विपतहि चाहिअ धीर/ हृदयक शोभा पर उपकार/ जतनहु परिहरि राग-विकार।' डॉ. रामदेव झाक ई टिप्पणी मूल्यवान अछि जे 'जीवन ओ समाजक कटु यथार्थ कें अभिव्यक्ति देनिहार मध्यकालीन कविक रूप मे जगज्ज्योतिर्मल्ल प्राय: एकसर सिद्ध होयताह।'[16]

मल्लवंशक कान्तिपुर शाखाक राजा प्रतापमल्ल (1641-74)क व्यक्तित्व जगज्ज्योतिर्मल्ल सँ सर्वथा भिप रहनि। जेना कि विवरण भेटैत अछि, ओ एक विलासी,

चतुर आ वीर राजा रहथि आ ताहि संग संगीत-नृत्य-अभिनय, लिपिशास्त्र आदिक शौकीन सेहो रहथि। अपन राज्य-विस्तारक लेल ओ अनेक छोट-छोट रजबाड़ा सभक विरुद्ध विजय-अभियान चलौने छलाह। डॉ. रामदेव झा तँ इहो सूचना दैत छथि अपन प्रचण्ड महत्वाकांक्षाक कारण अपन पिता लक्ष्मीनरसिंहमल्ल सँ हुनक आन्तरिक संघर्ष चलैत रहैत छलनि आ हुनका जीवनकालहि मे ओ राजसत्ता छीनि शासक बनि गेल छलाह। लड़ाकू स्वभावक रहथि, निरंतर अपन पड़ोसी राज्य सभक संग युद्ध आ भयक वातावरण बनौने रहैत छलाह।[17] मुदा, तकरा संग-संग, ओ प्रमुख चारि गोट विवाह जे रजबाड़ा सब मे कयने रहथि—कुचविहारक राजा वीर नारायणक पुत्री रूपमती, महोत्तरीक राजा कीर्त्तिनारायणक पुत्री लालमती, कर्णाटकन्या राजमती तथा दू आर राजकुमारी अनन्तप्रिया एवं प्रभावती संग—तकरो डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन हुनकर 'विलासवृत्ति'क संग 'राजकीय प्रभुत्व'क संग जोड़लनि अछि।[18] 'मिडाइवल नेपाल' भाग-4 मे संकलित शिलालेख सभक विवरण दैत ओ विशेषत: हुनकर ओहि शिलालेखक चर्चा केलनि अछि जाहि मे तद्युगीन नेपाल मे प्रचलित-अप्रचलित पन्द्रह गोट लिपिक सूचना प्राप्त होइत अछि। एहि मे नेवारी, तिरहुता, देवनागरीक अतिरिक्त कैथी, फारसी आ अरबीक सेहो उल्लेख अछि। ताहि सँ मौन जीक निष्कर्ष छनि जे ओ बहुतो लिपिक जानकार रहथि। जेना कि ऊपर उल्लिखित कयल जा चुकल अछि, एहि युग मे ओतय मैथिली शिलालेखक भाषा सेहो छल। अनेक राजाक लिखल गीत सब भिप-भिप शिलालेख मे पाओल गेल अछि, जकर अध्ययन एवं संकलन डॉ. रामदेव झा तथा डॉ. जयमन्त मिश्र कयने छथि। प्रतापमल्लक शिलालेख सब मे हुनका 'कवीन्द्र' तथा विभिप शास्त्रक ज्ञाता बताओल गेल अछि। नेपालक एक प्रसिद्ध मंदिर तुलजा भवानी मंदिर, जकर प्रसिद्ध नाम तुलेजू छैक आ जाहि देवी कें प्राचीन कर्णाट लोकनिक आराध्या बताओल गेल अछि, मे प्राप्त एक शिलालेख मे प्रतापमल्लक नौ गोट गीत शिलांकित भेटैत अछि। डॉ. मौनक कथन छनि जे एहि सँ हुनक काव्य-सृजन-क्षमता, छंद पर अधिकार तथा तुलजाक भक्त होयब प्रमाणित होइछ।

'मल्लकालीन नेपाल' (लीलाभक्त मुनकर्मी)क संदर्भ दैत कहल गेल अछि जे प्रतापमल्ल कें नाट्यसृजन आ मंचनक प्रति बेस रुचि रहनि, एतय धरि जे 'नाट्य-लेखन मे हुनक कलम तीक्ष्ण छलनि', मुदा एखन धरि हुनकर एक्कहु गोट नाट्यकृतिक प्राप्त नहि होयबा पर आश्चर्य व्यक्त कएल गेल अछि एवं एकरा अनुसंधानक विषय बताओल गेल अछि। डॉ. मौनक अनुसार, राष्ट्रीय अभिलेखागार मे हुनकर तीन गोट गीत-संग्रह प्राप्त होइत अछि—गीतम् प्रतापमल्लीयम्, गीतगोविन्दम् प्रतापमल्लस्य तथा प्रतापमल्लविरचितं गीतम्। डॉ. सुकुमार सेन कैम्ब्रिज पोथी मे देल गेल सूचनाक आधार पर हुनकर अन्य रचना 'वृष्टिचिन्तामणि' तथा 'हरमेखलाटीका' बतबैत छथि।

तहिना रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, ग्रेट ब्रिटेनक आधार पर हुनक एक आर रचना 'अवलोकितेश्वर स्तवराज'क सूचना दैत छथि। एतय धरि जे नेपाल दरबार मे हुनकर एक आर रचना 'स्वयम्भूभट्टारकस्तोत्र' भेटबाक उल्लेख केलनि अछि।[19]

तुलजा मंदिरक शिलालेख मे प्रतापमल्लक जे नौटा गीत प्राप्त भेल अछि, स्वाभाविके जे ई सब शाक्त सम्प्रदायक अनुरूप आ शक्ति-आराधनाक निमित्त अछि। यद्यपि कि 'सुकवि', 'कवीन्द्र' आदि ओ सब ठाम अपना कें कहलनि अछि आ राजा छथि से कतहु विस्मरणो नहि भेलनि अछि किन्तु कतोक ठाम आत्म-निवेदनक स्वाभाविकता सेहो रचना मे उतरल अछि। किछु पद देखल जा सकैछ। एक टा गीत मे आयल अछि—'एतय जे भेल जेहि तेहि गेल ओतहुँ मने अवधारि/ जथन जमक जमाति जाँतब जतने लेबह संभारि/ सुकवि प्रबल प्रतापमल्ल नृप वचन कर अवधान/ मनक मनोरथ नहि बाढ़ल मनहि रहल निदान।' एक आर गीत मे अछि—'कीदहुँ तस विपरित हमे पाओल ऐसन सेवक समाज/ सुकवि प्रताप महीपति गोचर जननि करह अवधान/ ऐसन सेवल सओ गंजन सवे भेल अवहुँ करबह समधान।' एक गीत मे तँ एहि तरहें आएल अछि—'सहस सेवाए विविध पूजने आथिर अलप प्रसाद/ अनेक पर अपराध याइए मूल सओ अवसाद/हमर जे भेल सहे बरु भेल मल्ल परताप भान/आबहुं शंकर विमुख जन नहि होअ तुअ पद आने।'[20]

ललितपुर शाखाक सिद्धिनरसिंहमल्ल (1622-57) किन्तु राजा प्रतापमल्ल सँ सर्वथा भिप व्यक्तित्वक लोक छलाह। तहिना हुनकर कवि-कर्मक विषय-क्षेत्र सेहो भिप छलनि। अपन पुस्तिका 'सिद्धिनरसिंहमल्ल' मे डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा हुनका 'राजा रहितहुँ राजर्षि तथा शासक रहितहुँ संन्यासी' कहलनि अछि। वस्तुत: 'सांसारिकता सँ विमुक्त भए ओ अपना कें देवोवासना मे संयुक्त क' देने छलाह। फलत: अपन जीवनकालहि मे ओ समस्त अधिकार अपन पुत्र श्रीनिवासमल्ल कें प्रदान क' निर्द्वन्द्व भ' गेल छलाह।'[21] ई वस्तुत: हुनकर राज्य-प्राप्तियेक अनुरूप छल। डॉ. झा लिखलनि अछि, सिद्धिनरसिंह अपन जन्महु सँ पहिने ललितपुर (पाटन)क राजा घोषित भ' गेल छलाह। हुनक पितामह राजा शिवसिंहेक ई निर्णय छलनि जे 'ललितपुरक राज्य अपन वैमात्रेय सँ विजय कयने छलाह आ अपन छोट पुत्र हरिहरसिंह कें ओतयक राजा बनौने रहथि, निर्णय रहनि जे हरिहरक सन्तान आ चाहे पुत्र हो कि पुत्री, ललितपुरक अगिला शासक होयत। ओ जखन अपन माय लालमतीक गर्भहि मे छलाह, पिताक देहान्त भ' गेल छलनि।[22] डॉ. सुकुमार सेन अपन पुस्तक 'विद्यापति-गोष्ठी' मे कैम्ब्रिज पोथीक सन्दर्भ दैत एक टा उद्धरण प्रस्तुत केलनि अछि जाहि मे भक्तपुरक राजा जगज्ज्योतिर्मल्लक नामोल्लेखक संग-संग सिद्धिनरसिंहदेवक नामोल्लेख भेल अछि जतय हिनका 'गरुड़ध्वजावतार' बताओल गेलनि अछि।[23] एहि

दुनू राजाक धर्म-धारणा भने भिप हो, व्यक्तित्व मे अनेक समानता हमरा लोकनि देखि सकैत छी।

ओ मूलत: आ प्रमुखत: वैष्णव भक्त रहथि आ हुनकर जाबन्तो उपलब्ध गीत राधाकृष्ण-विषयक अछि। मुदा एकरो उल्लेख भेटैत अछि जे अपन इष्टदेवी तुलजा भवानीक प्रति हुनका अनन्य श्रद्धा छलनि। एतबे नहि, ललितपुर (पाटन)क सुप्रसिद्ध शिवमंदिरक ओ निर्माण करबौने छलाह जकर एक विशेषता छल जे शिवलिंगक चारू भर शिवक चारि गोट पुरुषाकार छवि खोधल रहैक। आनो धर्मट्ठ यथा बौद्ध धर्मक प्रति हुनकर उदारता आ सेवाभावक साक्ष्य अछि। एक 'शिलालेख मे तँ हुनका 'लोकेश्वरचरणसेविता' कहल गेल अछि जकर तात्पर्य थिक जे वज्रयानक धर्मधारणाक प्रति हुनका मे भक्तिभाव रहनि। महाबोधि शाक्य मुनिक मंदिर-स्थापना (कीर्त्तिपुर मे)क क्रम मे मूर्त्तिप्राणप्रतिष्ठाक समारोह मे ओ स्वयं उपस्थित भेल छलाह तकर साक्ष्य सिन्धुवाल शिलालेख मे भेटैत अछि।'[24] हुनकर पौत्री योगमतीक खोदाओल एक शिलालेख मे एहि बातक प्रमाण भेटैत अछि जे हुनकर परवर्ती जीवन मे तीर्थाटनक महत्व बढ़ि गेल छल तथा अपन जीवनक अंतिम समय ओ काशी मे व्यतीत कयने छलाह।[25]

डॉ. मौन अपन इतिहास-पुस्तक मे ई सूचना दैत छथि जे सिद्धिनरसिंहमल्ल मैथिली गीत-संगीत एवं नृत्य-नाटकक अनन्य संपोषक छलाह, यद्यपि कि हुनका द्वारा रचित कोनहु नाटक वा गीत-संग्रहक पाण्डुलिपि एखन धरि प्राप्त नहि कयल जा सकल अछि। हुनका 'कृष्णचरित' काव्यक रचयिता तथा कार्तिक नाच उर्फ नृसिंह नाचक आविष्कर्ता मानल जाइछ जे उपत्यकाक लोकसंस्कृति मे एखनहु प्रचलित अछि।[26]

सिद्धिनरसिंहक गीत सब जे वर्तमान मे उपलब्ध होइत अछि, तकर तीन गोट प्राचीन आकर स्रोत अछि—रागतरंगिणी, रागभजनसंग्रह तथा भाषागीतसंग्रह। डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा एहि समस्त स्रोत सब सँ प्राप्त हुनकर तेरह गोट गीतक संकलन अर्थ-सहित अपन पुस्तिका मे प्रकाशित कयने छथि। हुनकर मान्यता छनि जे 'भाषागीतसंग्रहक सिद्धिनरसिंह, नृप सिंह ओ नृपति सिंह वस्तुत: एकहि व्यक्ति छथि।'[27] कहब आवश्यक नहि जे विषय-क्षेत्र भने एहि गीत सभक एक्के हो किन्तु भाषा-शिल्प तथा बिम्ब-विधानक दृष्टियें डॉ. झाक ई मान्यता निरापद नहि छनि। सिद्धिनरसिंहमल्लक काव्यवैशिष्ट्यक बारे मे डॉ. झा लिखलनि अछि—'कविक प्रत्येक पद काव्यक दृष्टि सँ महर्घ रत्न सदृश अछि जकर अर्थ-चयन, छन्दक धुनि ओ लय संगीतक सृष्टि करैत अछि तथा लोकजीवन सम्पृक्त अभिव्यक्ति-सहजता ओकर दुर्निवार प्रभाव कें स्थायित्व प्रदान करैत अछि।[28]

हुनक लिखल गीत सभक किछु उद्धरण देखल जा सकैत अछि—'विष सेमार

पवनासन हारे/ पावक सम धनि मान तुषारे/ नोरहि काजर बहि महि परइ/ ससि बसि मसि संजन जनि बमइ/ हृदय सिनेह दहन सन दहइ/ कहहि न पारिअ जत दुख सहइ/ सिद्धिनरसिंह भन सुनि सखि बानी/ सिनेह राष प्रभु परदुख जानी।' एक गीत मे मानिनी राधा कें ई कहैत जे 'कामिनि, मान न कर सब ठामे', ई पंक्ति अबैत अछि—'आरति संचर मनमथ कुंचर, भेल मगन गुन पंके/ हृदय निकारुण तुअ अति दारुन, जुग भरि रहत कलंके।' ई तँ स्पष्टे अछि जे भाव आ शैली दुनू रूप मे ओ विद्यापतिक अनुसरण करैत छथि, मुदा कृष्णक देवत्व हुनका भक्ति मे स्पष्ट छनि। एहना मे कतोक ठाम कृष्ण सँ कयल गेल राधाक शिकायत मे हृदयक अन्तर्निहित आत्म-निवेदन उतरि अबैत अछि—'बिनु भय मन धरि कएल सरन हरि, आबे तुअ बुझल उदासे/ जे आबे जिब तह अधिक पेयसि रह, तसु संगे करह विलासे/ माधव, कि कहब हमे तोंह रामे/ जे जत अछल भल सबे विपरित भेल, हमर करम परिनामे।'

जेना कि ऊपर डॉ. सुकुमार सेनक सूची आ हुनक अभिमतक उल्लेख कयल गेल रहय, मल्ल राजवंशक तीनू शाखाक जे प्रतिनिधि-पुरुष भेलाह, हुनक कएल प्रमुख काजक संक्षिप्त विवरण एहि ठाम देल गेल। ई एहन राजा लोकनि छलाह जे अपन-अपन राजदरबार मे ज्ञान-चर्चा, साहित्य-रचना एवं कला गतिविधिक प्रतिष्ठापन केलनि। ई क्रम आगुओ अठारहम शताब्दी धरि, ताधरि जारी रहल जाबे गोरखा राजवंशक पृथ्वी नारायण शाह एहि समस्त राज्य सब कें जीतिक' अपना राज्य मे मिला नहि लेलनि। जेना कि पहिनहु कहलहुँ, नेपाल मे मैथिली साहित्यक गतिविधि एखनहु जारी अछि। डॉ. रमानन्द झा रमण अपन एक लेख मे नेपालक प्राचीन सँ आधुनिक काल धरिक मैथिली गतिविधि कें तीन काल मे बँटलनि अछि—स्वर्णयुग, अन्धकारयुग आ नवोन्मेष काल। स्वर्णयुग ओ एही मल्लवंशक शासन-काल कें कहलनि अछि। एहि युग मे 'परिवेश मे शान्ति परिव्याप्त छल असुरक्षा नहि छलैक, मैथिल विद्वान संरक्षित छलाह। भाषा आ साहित्यक विकासक प्रति प्रशासकीय सुदृष्टि छलैक। विभिप शासनखंड मे मैथिलीक संरक्षण, विकास आ प्रचार-प्रसारक हेतु स्पर्धा छलैक।'[29]

जहाँ धरि सर्जनात्मक उपलब्धिक प्रश्न अछि, डॉ. रमणक ई निष्कर्ष तँ सही भ' सकैत छनि जे ओ काल स्वर्णयुग छल, मुदा परिवेश मे शान्ति व्याप्त हेबाक जे बात अछि, से वास्तविकता सँ बेसी उपकल्पना पर आधारित अछि जे जें कि मुस्लिम आक्रमणक सामना ओतय नहि करय पड़ैक तें शान्ति परिव्याप्त छल। वास्तविक स्थिति ई छल जे एसगरे प्रतापमल्ल अपन आततायी आचरण सँ सौंसे उपत्यका कें तेना भयाक्रान्त कयने रहैत छलाह जे शान्ति बाधित हेबाक स्थिति अधिक काल पाओल जाइत छल। एहि परिस्थिति सभक विस्तृत विवरण डॉ. रामदेव झा

अपन विनिबंध 'जगत्प्रकाशमल्ल' मे देने छथि। तीनू प्रतिस्पर्धी मे जगज्ज्योतिर्मल्ल सब सँ बुजूर्ग रहथि आ प्रतापमल्ल सब सँ युवा, तें हुनकर आततायीपन बहुतो दिन धरि चलैत रहबाक छलै। एहि, आक्रमणक सामना मुख्यरूप सँ भक्तपुरक (भातगाँव)शाखाक राजा लोकनि कें करय पड़ैत छलनि। तकर कैक कारण छल। भक्तपुर शाखा यक्षमल्लक ज्येष्ठपुत्रक वंशपरम्पराक प्रतिनिधित्व करैत छल, तें सामाजिक एवं राजनीतिक प्रतिष्ठा विशेष छल। दोसर छल जे मल्लवंशक कुलदेवी तुलजा भवानीक पूजन-दर्शनक अधिकार भक्तपुरे शाखाटा कें छलैक, अन्य कें नहि। तकरहु पाछू ज्येष्ठ पुत्रक वंश-परम्पराक वैह मान्यता रहल छल होयत। तेसर जे शुरुहे सँ एहि शाखाक राजा लोकनि साधु प्रकृतिक होइत रहलाह आ कला, साहित्य आ सांस्कृतिक क्रिया-कलाप ओतय उत्कर्ष पर रहल। तें विद्या आ व्यक्तित्व कें सम्मान देनिहार आम नागरिक मे हार्दिक प्रतिष्ठा रहैक। एहि सब सँ प्रतापमल्ल कें एतेक बेसी चिढ़ छलैन जे अधिकांशत: तँ ओ ई करथि जे भक्तपुर कें चोट पहुँचेबाक लेल ललितपुरक संग जायज-नाजायज गठबंधन क' लेथि आ दुनू मिलि क' हमला करथि। एहि सब कथूक विवरण विदेशी यात्रवृत्तान्तो सब मे भरल पड़ल अछि।

नेपालक एहि कालखण्डक मैथिली साहित्यक सृजनक वास्तविक थाह पाबक हेतु हमरा लोकनि कें तीन अलग-अलग बिन्दु पर दृष्टिपात करय पड़त। एक तँ मल्लवंशक एहि तीनू शाखाक आन-आन राजा सभक दरबारक हाल लेब, जकरा बारे मे मशहूर अछि जे एकहक टा राजा दर्जनोक संख्या मे नाटक आ गीतक रचना केलनि, आ से तीनू शाखा मे। दोसर, उपत्यकाक आन-आन राजवंश जेना मोरंग वा मकवानी राजवंशक समयक वृत्तान्त लेब, जकर राजालोकनि मल्ल राजपरिवारक देखादेखी कला गतिविधि मे अत्यन्त सक्रिय छलाह। तेसर जे एहि समस्त राजवंश सब मे दर्जनोक संख्या मे मैथिल पंडित रहैत छलाह जे नाटक, गीत आदि लिखलनि। आ हुनका लोकनि कें राजा द्वारा ख्यापित कयल गेलनि जे अपन रचना मे ओ अपन नाम दर्ज करथु आ राज पुस्तकालय हुनका संरक्षित करतनि। एहि मे सँ बहुतो एहन लोकप्रिय भेलाह जिनकर गीत, नेपाल सँ बंगाल धरि मे संकलित प्राचीन गीतक संग्रह सब मे संगृहीत भेटैत अछि।

एहि ठाम इहो चर्चा क' देब आवश्यक जे एहि दरबार सब मे जेना मैथिल पंडित रहैत छलाह ठीक तहिना बंगाली पंडित सब सेहो रहैत रहथि। हिनका सभक जे आपसी प्रतिस्पर्धा रहनि सेहो ओहि प्रतिस्पर्धायुगक एक आयाम कें बढ़ौनिहार कारक छल। ओहि कालक अनेक नाटक एहन भेटत जाहि मे मैथिली भाषाक संग-संग बांग्ला भाषा मे सेहो संवाद देल गेल अछि। किछु नाटक तँ एहनो अछि जे अपन लोकप्रियताक कारण, एक दरबार जँ मैथिली मे मंचित करय तँ दोसर दरबार ठीक

ओही नाटक कें बांग्ला मे। होइक ई जे संवादक भाषा कें बांग्ला मे अनूदित करैत अलग नाम सँ, अलग रचनाकारक कृतिक रूप मे ओकरा प्रस्तुत क' देल जाइत छल। एकर दृष्टान्त मे हमरा लोकनि 'मुदितकुवलयाश्व'(लेखक जगज्ज्योतिर्मल्ल) कें श्रीनिवासमल्ल (ललितपुर शाखा)क समय मे 'ललित कुवलयाश्वमदालसा'क नामें मंचित होइत देखैत देखि सकैत छी। अध्येता लोकनि देखौलनि अछि जे संवादक भाषाक बांग्लाकरणक अतिरिक्त एहि मे आन कोनो अंतर नहि छैक।[30]

एहि दरबारी पंडित कवि लोकनि मे सँ कैक गोटे एहन छथि जिनका काव्यप्रतिभाक नैसर्गिक प्रसाद भेटल रहनि आ अपन काव्य-रचना सँ ओ मध्यकालीन काव्यजगत मे एक नव क्षितिजक अनावरण केलनि। एहि तीनू बिन्दुक प्रसंग हमरा लोकनि संक्षेप मे चर्चा क' सकैत छी।

अन्यान्य कवि लोकनिक कृति

ललितपुर शाखाक सिद्धिनरसिंहक उत्तराधिकारी श्रीनिवासमल्ल (1657-86)क विषय मे कहल जाइछ जे अनन्य कलाप्रेमी आ यशस्वी कवि छलाह। हुनक किछु पद 'रागतरंगिणी' मे सेहो भेटैत अछि। हुनके दरबारी कवि रामभद्र 'ललित कुलयाश्वमदालसा'क रचना कयने छलाह। हुनका दरबारक एक नाटक 'तारकासुरवध' अछि तथा एक 'मलयागिरि' (विद्यानन्द रचित) अछि। सुप्रसिद्ध 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्'क रचना सेहो एही कालखण्ड मे भेल छल जकर प्रकाशन आगस्टस कानरेडीक संपादन एवं जर्मनी भूमिकादिक संग 1891 मे जर्मनी सँ भेल तथा आब पुन: विश्वम्भर फाउन्डेशन द्वारा कयल गेल अछि। एहि दरबार मे कुनु शर्मा नामक एक पंडित छलाह जिनकर प्रतिलिपि कयल 'कीर्तिपताका', 'रुद्रशतक', 'विष्णुशतक' आदि कृति प्राप्त भेल अछि।

कान्तिपुर दरबार मे प्रतापमल्लक बाद साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधि समाप्तप्राय भ' जेबाक सूचना भेटैत अछि, तथापि पार्थिवेन्द्रमल्लक समय 'पामचराक्ष' (1682) तथा भूपतीन्द्रमल्लक समय 'नलचरित्र' अभिनीत हेबाक साक्ष्य अछि। ई पाण्डुलिपि सब उपलब्धो भेल अछि। अगिला राजा जगज्जयमल्लक समयक 'प्रबोधचन्द्रोदय' तथा अरिमल्लदेवक समयक 'महीरावणवध' लिखल जेबाक उल्लेख डॉ. मौन कयने छथि।[31]

मोरंग राजवंशक राजा लक्ष्मीनारायणक एक गीत 'भाषागीत संग्रह' मे संकलित अछि, जकर भणिता किछु एहि तरहें अछि—'लक्ष्मीनारायण नृप कह तोहँ गुणमति नारि/ जा समो नेह बढ़ावह सैहे देव मुरारि।' जाहि पुरुषक संग स्त्रीक नेह जुड़ि जाय, ठीक-ठीक वैह पुरुष ओहि स्त्रीक कृष्ण थिक! गोपीनाथ नामक एक मैथिली कवि

ओहि युगक छलाह जिनकर कविता 'भाषागीत-संग्रह' मे संकलितो अछि, ओ एहि लक्ष्मीनारायण राजाक आश्रित कवि रहथि। तहिना राजा रूपनारायणक आश्रित कवि जीवनाथ छलाह जिनकर एक गीत 'रागतरंगिणी' मे भेटैत अछि। एहि गीतक भणिता मे मेधापति रूपनारायण कें 'हिन्दू सुल्तान' कहल गेलनि अछि। गीत मे छैक जे राधा दूध बेचय हटिया गेल अछि आ ओतहि कृष्ण कें देखि, हुनकर आकर्षण मे पड़ि अपन दूधक कलसी समेत हटिये पर बिसरि अबैत अछि। मोरंगनरेश वीरनारायणक एक गीत 'भाषागीत-संग्रह' मे संकलित अछि। प्रसिद्धि अछि जे त्रैलोक्यमल्ल (1572-86)क दरबार मे अभिनीत नाटक 'विद्याविलाप'क यैह रचयिता छलाह, दोसर जे हिनकहि पुत्री रूपमती संग प्रतापमल्लक विवाह छलनि। मोरंगनरेश नरनारायण अपने तँ कवि नहि छलाह मुदा हुनका दरबार मे दू टा आश्रित कवि धीरेश्वर एवं भीषमक नामक उल्लेख होइत अछि। भीषम एक लोकप्रिय कवि छलाह, तकर प्रमाण अछि जे 'रागतरंगिणी' मे हुनक तीन टा तथा 'भाषागीत-संग्रह' मे ओही मे सँ एक टा गीत संकलित भेटैत अछि। 'कीर कुटिल मुख न बुझ वेदन दुख न बोल परमाने/ विरहदहन दह कोप तरुन तह सरुप कहत के आने'—एहि गीत कें रमानाथ झा उर्वशी-विषयक कोनहु नाटकक गीत बतौलनि अछि। हुनक इहो मान्यता छनि जे आश्रित कवि तँ ओ जगनारायणक छलाह, मुदा राजाक पिताक सम्मानार्थ नरनारायणक नामोल्लेख भणिता मे केलनि।[32] प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक मानब छनि जे ओ पिता-पुत्र दुनू राजाक दरबार मे रहलाह। डॉ. सुकुमार सेन सेहो कहैत छथि—'नरनारायण एवं जगत्नारायण इन दोनों पिता-पुत्रें के सभाकवि कुमार भीषम थे। 'रागतरंगिणी' में इनके तीन पद हैं। एक पद में नरनारायणधरमादेह का उल्लेख है, दो पदों में मोरंग महीपति प्रभावतिदेइ पति जगनारायण का नाम है।'[33] मोरंगनरेश त्रिविक्रमनारायणक दरबारी कवि गंगाधर, जिनका सुकुमार सेन 'गदाधर' लिखलनि अछि, छलाह। हुनको पद 'रागतरंगिणी' मे संकलित भेटैत अछि। मोरंग दरबारक आन कवि लोकनि श्यामसुन्दर, लखिमीनाथ, गरुड़नारायण, गजसिंह आदि छलाह। एहू कवि लोकनिक गीत प्राचीन संकलन सब मे भेटैत अछि।

नेपालक तेसर जे राजवंश मैथिली साहित्यक गतिविधि कें प्रश्रय देलक ओ मकवानपुरक सेन राजवंश छल। एही वंशक राजा हरिहरसिंह जे 'हिन्दूपति'क विरुद धारण करैत छलाह, मैथिलीक यशस्वी कवि-नाटककार उमापति कें आश्रय देलनि जे मध्यकाल मे कदाचित विद्यापतिक बाद सब सँ महान रचनाकारक रूप मे स्मरण कयल जाइत छथि। उमापतिक प्रयोगशील गीतिमय नाटक 'पारिजातहरण' एक एहन कालजयी रचना साबित भेल जे मैथिली नाटकक समुच्चा भविष्य कें पलटि क' राखि देलक। हुनक आनो आन गीत-रचना सब विभिप स्रोत सँ प्राप्त भेल अछि, जाहि

मे ओ पारिजातहरणे जकाँ भणिता मे अपन आश्रयदाता राजाक नाम अथवा हुनक विरुद के प्रयोग केलनि अछि। मौन जी अपन इतिहास मे एकदम ठीक लिखलनि अछि जे 'विद्यापति जेना अपन राजनामांकित भणिता सब सँ शिवसिंह रूपनारायण एवं लखिमादेवीक सकल रसमर्मज्ञता कें ख्यात क' देलनि, तहिना उमापति हिन्दूपति हरिहर एवं हुनक पट्टमहिषी माहेश्वरी देवीक नाम कें अमरता प्रदान केलनि।'[34]

मकवानपुरक राजा हरिहरसिंहक जीवन-काल 1595-1676 मानल गेल अछि। उमापति, जे कि कोइलख गामक वासी आ दरिहरय अमरावती मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह आ जिनकर प्रसिद्धि 'महामहोपाध्याय' तथा 'पण्डितमुख्य'क रूप मे रहनि, आब ई स्थापित बात अछि जे उमापति राजा हरिहरसिंहक आश्रित छलाह आ तें हुनक समय सतरहम शताब्दी निर्धारित करब उचित अछि। मैथिली साहित्य वा विद्यापतिक अध्येता लोकनिक पहिल आ दोसर पीढ़ीक लगभग समस्त विद्वान उमापति कें चौदहम शताब्दी मे मानलनि अछि आ एहन कवि लोकनिक बीच स्थान देलनि अछि जे कि विद्यापति सँ पूर्व एहि भाषा मैथिली मे अपन रचना केलनि, यथा ज्योतिरीश्वर। एहि भ्रमक कारणक जँ खोज करी तँ एकर जड़ि हमरा लोकनि ग्रियर्सन मे पबैत दी। 'पारिजातहरण'क प्रथम संस्करणक प्रकाशन 1893 मे मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी, दरभंगा सँ भेल छल। भारतीय भाषाक यूरोपियन अध्येता विद्यार्थी सभक लेल ग्रियर्सन एकर एक आन संस्करण, अनुवाद आदि सहित 1916 मे प्रकाशित करौलनि। एही साल 1916 मे एक लेख 'द डेट ऑफ उमापति' सेहो ओ प्रकाशित करौलनि। एहि सब मे ओ राजा हरिहरसिंह कें कर्णाटवंशीय राजा हरसिंह मानलनि, जखन कि ने तँ हुनकर विरुद 'हिन्दूपति' छलनि ने ओहि रानी लोकनि मे सँ एक्कहु टाक ओ पति छलाह, जकर चर्चा उमापति 'पारिजातहरण' आ आनो गीत सभक भणिता मे केलनि अछि। ओ स्वयं गछलनि जे राजा हरसिंहदेवक मुस्लिम-विजयक कोनो सुपुष्ट प्रमाण नहि आ ने हुनक 'हिन्दूपति' विरुद धारण करबाक अछि। एतय धरि जे पंडित चेतनाथ झा मिथिलाक लोकप्रसिद्धिक आधार पर एक लेख लिखि क' ग्रियर्सनक मतक खंडनो केलनि, कहलनि जे हरिहरसिंह वस्तुत: मकमानी राजा छलाह जे भपटियाहीक उत्तर नेपालक सप्तरी इलाकाक राजा रहथि, तिनके आश्रित कवि उमापति छलाह मुदा स्वाभाविके, ग्रियर्सनक अपन एक विराट आभामंडल रहनि आ चेतनाथ झा लग मे पुष्टिक हेतु यथेष्ट प्रमाणक अभाव सेहो, अन्तत: ग्रियर्सन ई कहैत पंडित चेतनाथ झाक मतक खंडन क' देलखिन जे प्रमाण जँ हमरा लग मे नहि अछि तँ अहूं लग मे नहि अछि। आइ हमरा लोकनि कें ई बात सर्वथा अपच आ अनकट्ठल लागि सकैत अछि जे बिना कोनो स्पष्ट प्रमाणक हरिहरसिंह कें हरसिंह मानि लेब कोना संभव भेल छल होयत, मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे सौंसे संसारक

भारतविद् विद्वान लोकनि हुनके मतक समर्थन केलखिन। एखनो बहुत किताब मे उमापति कें हमरा लोकनि विद्यापतिक पूर्ववर्ती कविगणक मध्य स्थान प्राप्त करैत देखि सकैत छी। बाद मे, अत्यन्त अध्यवसाय एवं मेधावितापूर्वक डॉ. रामदेव झा अपन पुस्तक 'उमापति' मे एहि समस्त समस्याक निपटारा केलनि। ई पुस्तक मैथिली अकादमी पटना सँ 1980 मे प्रकाशित भेल अछि। मैथिली शोध-आलोचना-स्तरक उच्चताक पता पाबैक लेल एहि पुस्तकक अध्ययन जरूर करबाक चाही।

उमापति कें विद्यापतिक अनुसरणकर्त्ता कवि कहल जाइत रहल अछि। मुदा, आरंभिक अध्येता लोकनि विद्यापति-गीतक शिल्प-विन्यासक मादे कहल करथि जे ई विद्यापतिक अपन कोनो वैयक्तिक उद्भावना नहि अपितु मैथिलीक एक लोकप्रिय काव्य-शिल्प रहल अछि आ तकर दृष्टान्त मे ओ लोकनि उमापतिक गीत उद्धृत करथि। मुदा डॉ. रामदेव झाक अध्ययनक निष्कर्ष थोड़ेक भिप अछि। ओ कहैत छथि—'उमापतिक काव्यसर्जन सर्वथा विद्यापति-परम्परानुसारी नहि अछि। छन्द ओ भास अवश्ये विद्यापतिक अनुसरण कयलनि परन्तु भाव, भाषा ओ अभिव्यक्ति-पद्धति मे उमापति स्वतंत्रताक परिचय देलनि अछि'।[35] उमापतिक कविता मे हमरा लोकनि जे प्रवाह देखैत छी, से अन्तय दुर्लभ अछि—'भए गेल दुपहर बेरी/ कखन जाएब गृह फेरी/ गरुअ पड़ल किअ आजे/ कहिनि कहैतें होअ लाजे।' स्त्री-पुरुष-प्रेमक संबंध मे हुनकर ई पाँती देखल जाय—'तोंहे धनि धनि जल हमे मीन/ एक जीवन तन भीन/ हमे पाओल तोहें नीप/ हमे गृह तोहें मणिदीप/ तोहे हमें समुचित पेम/ रतने जड़ितजनि हेम।' कतोक ठाम संस्कृतनिष्ठ भाषा आ अलंकारक खूब प्रयोग केलनि मुदा अलंकार ततबे, जतबा धरि ओ काव्यक हेतु उपकारक बनल रहय। कृष्णजन्मक प्रसंगक हुनक एक गीत कविशेखर बदरीनाथ झा अपन संग्रह 'मैथिली गीत-रत्नावली' मे संकलित केलनि अछि—'बेरि बेरि विरचथि विधि विधुमण्डल हहिरमुख सरि नहि होए/ नयन निरखि निशि नलिन मलिन होअ नलिनी वन वस गोए/ हरि एक जना/ मोर सएह घना।' एक गीत मे लोकदेव महादेवक मस्ती भरल नाचक वर्णन एहि रूपें कयलनि अछि—'जय शम्भु नटा जय शम्भु नटा/ हँसि हर हेरथ गौरि निकटा/ भृंगी मधुर मृदंग बजाबथि/ नन्दी निपुण झालि झमटा/ ताल तमौरा लए गुन गाबथि/ संगहि नारद मुनि विपटा...' आदि-आदि। उमापतिक अनेक एहन गीत सब विभिप ठाम, जेना मोरंग पदावली मे, भेटैत अछि जाहि सँ भान होइछ जे ओ कोनो नाटकक प्रसंग-विशेषक गीत थिक। जेना—'आयल नट नेसरि लेल परवेस/ अभरन तेजि धाअ जोगिन भेस/ कछनी पहिरि माता भाउर लेल/ नेपुर सबद मेदिनी उड़ि गेल/ भनइ सती भवानी गुन अनुमान/ सुमति उमापति होउ समधान।' डॉ. रामदेव झा अपन पुस्तक मे उमापति लिखित बारह गोट नाटक हेबाक जनश्रुतिक

उल्लेख केलनि अछि जे मिथिला मे प्रचलित छल। मुदा 'पारिजातहरण' छोड़ि क' हुनकर कोनो आन नाटक एखन धरि उपलब्ध नहि भ' सकल अछि।

मल्ल वंशक आन राजा लोकनिक लेखन

मल्ल राजवंशक भक्तपुर शाखाक अमर साहित्यसर्जक जगज्ज्योतिर्मल्लक चलाओल परम्परा प्राय: अन्त-अन्त धरि जारी रहल, जखन कि आन शाखा एहि प्रकारक निरन्तरता नहि बनौने राखि सकल। जगज्ज्योतिर्मल्लक बाद भक्तपुरक सिंहासन पर के बैसलाह, एहि विषय मे बहुत मतान्तर अछि। अनेक इतिहासकार एहि पक्ष मे छथि जे जगज्ज्योतिक निधनक (1637) क बाद सत्ता सीधे हुनक पौत्र जगत्प्रकाशमल्लक हाथ मे अयलनि। मुदा, डी. आर. रेग्मी (मिडियावल नेपालक लेखक) क देल प्रमाण सब कें अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय मानैत डॉ. रामदेव झा कहलनि जे जगज्ज्योतिक बाद हुनक पुत्र अल्पमय (1637-1643) क लेल राजा भेलाह, जिनकर कैक गोट शिलालेख सेहो उपलब्ध अछि। डॉ. मौन अपन इतिहास मे सूर्य विक्रम ज्ञवाली (नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास) पर भरोस करैत छथि, जिनकर निष्कर्ष कें डॉ. रामदेव झा अनेक कारण सँ त्रुटिपूर्ण मानैत छथि। डॉ रामदेव झा जगत्प्रकाशक जीवनावधि 1639-73 मानैत छथि। ओ 1643 मे अर्थात केवल चारि वर्षक आयु मे भक्तपुरक राजा भेलाह आ अत्यन्त अल्पायु केवल चौंतीस वर्षक अवस्था मे चेचक सँ आक्रान्त भ' हुनक निधन भ' गेलनि। एतबे कम अवधि मे शासन, साहित्य आ संगीतक क्षेत्र मे ओ जतेक काज क' गेलाह से कतोक बेर आश्चर्य उत्पप करैत अछि। अल्पायु मे माता-पिता मरि गेलखिन, भाइ-बहीनि सेहो नहि छलनि, पिता नरेशमल्लक राज्यकाल, प्रतापमल्लक निरंतर आक्रमणक ओजह सँ आ संभवत: हुनकर वैयक्तिको अक्षमताक कारण झंझावात भरल रहल। एहन प्रतीत होइत अछि जे हुनका समय मे साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधि सेहो भक्तपुर मे समाप्त छल आ जगज्ज्योतिक समय मे जे हुनकर आश्रित पंडित, कवि लोकनि छलाह, प्रमुखत: वंशमणि आ चतुरचतुर्भुज, सेहो लोकनि भक्तपुर कें त्यागि कान्तिपुर मे आश्रय ल' लेने छलाह। सोलह-सतरह वर्षक आयु मे, जखन हुनकर विवाह भेलनि, आ प्राय: एही समय मे आबि हुनक साहित्य-लेखन सेहो शुरू भेलनि—हुनकर पहिल नाट्यकृति 'प्रभावतीहरण'क रचना-समय 1656 थिक। एही समय सँ भक्तपुर अपन पुश्तैनी सांस्कृतिक गौरव, जे कि जगज्ज्योतिर्मल्लक स्थापित कयल रहनि, आ जे पितामह जगज्ज्योति, जगत्प्रकाशक जीवनक आदर्श रहथिन, एही समय सँ अपन पुरान गौरव कें पुनर्प्रतिष्ठापित करबा मे सफल भेल। डॉ. रामदेव झा उचिते एहि बीचक अवधि 1637-1656 कें भक्तपुरक साहित्यिक इतिहासक अंधकारकाल कहलनि अछि।

मुदा, आगू हमरा लोकनि देखैत छी जे मल्ल लोकनिक तीनू शाखा मे सँ केवल भक्तपुर अंतो अंत काल धरि अपन साहित्यिक-सांस्कृतिक गौरव कें बनौने राखि सकल। तकरा संग हमरा लोकनि इहो देखैत छी जे तीनू शाखा मे सँ केवल भक्तपुरे छल जतय शासनाधिकार एक पीढ़ी सँ दोसर पीढ़ी धरि शान्तिपूर्वक अन्तरित होइत रहल, अन्यत्र से संभव नहि भेल। जगत्प्रकाशक बाद हुनकर पुत्र जितामित्रमल्ल अथवा जयजितामितमित्रमल्ल (1673-1696) तत्पश्चात पौत्र भूपतीन्द्रमल्ल (1696-1722) एवं प्रपौत्र रणजितमल्ल (1722-1769) सुयोग्य राजा भेलाह तथा साहित्य-संगीत-संपोषक कौलिक परम्परा आ मर्यादाक कुशलतापूर्वक निर्वाह करैत रहलाह।[36]

मल्ल राजवंशक समस्त शाखाक राजा लोकनिक बीच जगत्प्रकाश प्राय: सर्वाधिक गुणज्ञ राजा भेलाह, हुनक साहित्यिक उपलब्धि सेहो सर्वाधिक प्रभावशाली रहल तथा अल्पायु हेबाक अछैतो अनेको योजना कें ओ कार्यरूप द' सकलाह। हुनक उपाधि सभक जे उल्लेख विभिप ठाम भेल अछि—साहित्यविद्याविद्, वैदग्ध्यपाथोधि, गन्धर्वविद्यागुरु—ताहि सँ हिनक रुचिविशदता आ आन्तरिक क्षमताक पता भेटैत अछि। अनेक देवमंदिर, प्रस्तरमंडप, नाट्यशाला एवं दरबार (प्रासाद)क ओ निर्माण करौलनि। भक्तपुर राजप्रासादक निकट जे भव्य नाट्यशाला आ मंदिर जे ओ बनबौने छलाह जाहि मे नाट्येश्वर शिवक प्रतिमा विराजित छल तकर द्वार पर अवस्थित सिंहद्वय संभवत: एखनहु देखल जा सकैत अछि। तहिना, अपन प्रिय पत्नी अपपूर्णा लक्ष्मीक प्रेम-प्रतीक-स्वरूप जे मंदिर ओ भक्तपुरक सटले खौमाटोल मे बनबौने छलाह ताहि मे प्रेमसूचक शिव-पार्वतीक युगलमूर्त्ति स्थापित कयल गेल छल जे कि एक विलक्षण बात छल। सब सँ बढ़ि क' ई जे एहि सब कथूक प्रति हुनका आन्तरिक स्नेह छलनि। भक्तपुर पर जे प्रतापमल्लक भयानक आक्रमण भेल छल जाहि मे ओहि वास्तु संरचना सब कें तोड़ि कीमती वस्तु सब उखाड़ि काठमाण्डू लूटि ल' गेल छलाह, ताहि दृश्यक दर्द मार्मिक रूप मे हुनका कविता मे व्यक्त भेल अछि। कविता मे ई पाँती अबैत छैक-'केहु कयल पर बिगाड़ि नड़ाबय/ तकराक अति होय पाप।' मुदा सब कथूक सामना ओ पूरा हिम्मत आ समझदारीक संग केलनि। एहि सब मे हुनक साधुहृदयता तँ देखले जा सकैत अछि, हुनका मे उच्च कोटिक कूटनीतिक कौशलक झलक सेहो पाओल जा सकैत अछि। आततायी प्रतापमल्लक विजय-अभियानक असल शक्ति ई रहैत छलैक जे ओ ललितपुर दरबार कें अपना संगे मिलौने रहैत छल आ दुनू मिलि क' भक्तपुरक विरुद्ध चढ़ाइ करैत छल। जगत्प्रकाश एकरा तोड़लनि। अपन आ अपन पिताक संग भेल तमाम अपमानजनक बर्बरता कें बिसरि ओ ललितपुरक राजा श्रीनिवासमल्लक संग मैत्री बढ़ौलनि। ई केवल कूटनीतिक नहि छल अपितु एहि मे हार्दिकता सेहो छलैक जे उच्च आदर्श ल' क' जीनिहार

कोनो व्यक्तिये सँ संभव भ' सकैत अछि। मल्ल लोकनिक कुलदेवता तुलजा भवानीक पूजन एवं अनुष्ठानक सर्वाधिकार ज्येष्ठ उत्तराधिकारी हेबाक नातें एखन धरि मात्र भक्तपुर कें छल। ई अधिकार व्यवस्थापूर्वक ओ ललितपुरक श्रीनिवासमल्ल में देलखिन जे मध्यकालीन धर्म-धारणाक हिसाबें एक टा पैघ बात छल आ श्रीनिवासमल्ल पर एकर अचूक असर पड़ब सेहो अपरिहार्य छलैक। दोसर दिस, अपन कविता सब मे जे ओ श्रीनिवासमल्लक प्रति प्रेमभाव व्यक्त केलनि ओहो पर्याप्त हार्दिकता सँ भरल छल। जखन-जखन श्रीनिवास तुलजा भवानीक दर्शन-पूजन आदि हेतु आबथि, एकरा परमेश्वरी यात्र, देवीयात्र, देवीयात्रेत्सव सन उत्सवपूर्ण नाम देल जाइक। एहने अवसर सभक लेल ओ 'मलयगन्धिनी', 'पारिजातहरण' एवं 'नलीयनाटक'क रचना कयने छलाह जे श्रीनिवासक प्रथमदर्शकत्व मे अभिनीत भेल छल। 'मलयगन्धिनी' नाटकक प्रस्तावना मे श्रीनिवासक गुणवर्णन करैत ई गीत अबैत छैक—'चौखण्ड नरपति तोहर बखान/ त्रिभुवन महीपति सम नहि आन/ निरमल मति तुअ गांग जलधार/ गल गजराजमोति सुन्दर हार/ चौंसठि कला पर सरूपहि काम/ सरदक शशिमुख तुअ अभिराम/ शिरिनिवास भूपति शरण लेला/ जगत्प्रकाशमति मोह सुख देला।' डॉ. रामदेव झा लिखलनि अछि—'प्रतापमल्ल द्वारा कयल गेल नरेशमल्लक अपमान जगत्प्रकाश बिसरियो सकैत छलाह मुदा अपना पर ओ भक्तपुरक जनता पर कयल गेल अत्याचार-यातना ओ मान-मर्दनक दीर्घकालिक त्रसदी कें कोना बिसरि सकैत छलाह! हुनका भक्तपुरक विखण्डित स्वाभिमान कें पुन: प्रतिष्ठापित करबाक छलनि। एहि हेतु श्रीनिवासमल्ल कें प्रतापमल्ल सँ फराक ओ अपना पक्ष मे राखब अनिवार्य छल आ एहि मे जगत्प्रकाश सफल भेलाह।'[37] एही सफलताक बदौलति ई भ' सकल जे एहि बीचक शान्तिकालक लाभ लैत ओ अपन सैन्यशक्ति बढ़ौलनि आ आगू प्रतापमल्ल पर आक्रमण क' ने केवल पिताक समय मे छीनल गेल भूभाग पर पुन: कब्जा केलनि अपितु प्रतापमल्लक युद्धोन्माद कें सेहो सदा-सर्वदाक लेल पूर्णविराम लगा देलनि।

जगत्प्रकाशमल्लक साहित्य-रचनाक संबंध डॉ. रामदेव झा ई बात ठीक कहलनि अछि जे अशान्त आ संघर्षशील जीवन मे जतबा अल्प अवधि हिनका साहित्य-रचना हेतु भेटलनि, तकरा देखैत हुनकर कृति सब पर विचार करी तँ अवश्ये चकित भ' जाय पड़ैत अछि आ हुनकर काव्य-प्रतिभा, अध्यवसाय तथा सारस्वत-साधनाक प्रति प्रशंसा-भाव जगैत छैक। संगीतशास्त्रक हुनका विशद ज्ञान छलनि जे कि हुनक उपाधि 'गन्धर्वविद्यागुरु' सँ स्पष्ट अछि। रागशिक्षा आ रागाभ्यासक हेतु ओ 'पद्य-समुच्चय'क रचना केलनि। ओहि युग मे जतेक जे कोनो राग मिथिला वा नेपाल मे प्रचलन मे छल सभक समावेश तँ ओतय भेटिते अछि, सुखद आश्चर्य होइछ

ई देखि जे मिथिलाक प्रसिद्ध लोक-संगीतक भास-रूप—कोबर, उचिती, जोग, सोहर, बारहमासा, छौमासा, चौमासा, घुरिया मलार आदिक प्रयोग सेहो कयने छथि।

जगत्प्रकाशक भणितायुक्त गीतक संग हुनक नौ गोट नाटकक सूची डॉ. रामदेव झा एहि तरहें प्रस्तुत कयलनि अछि—प्रभावतीहरण, मलयगन्धिनी वा वीरेश्वर प्रादुर्भावनाटक, पारिजातहरण, नलचरित वा नलीयचरित, उषाहरण, मदनचरित्र, माधव-मालति-नाटक, मूलदेवशशिदेवोपाख्यान नाटक तथा महाभारत नाटक। एकर अतिरिक्त तीन गोट एहन नाटकक ओ उल्लेख कयने छथि जकर विभिप गीत सब तँ जहाँ-तहाँ भेटैत अछि मुदा समुच्चा नाटक उपलब्ध नहि होइछ—रामायण नाटक, वृन्दाचरित विषयक नाटक तथा कृष्णचरित अथवा कंसवध नाटक। डॉ. रामावतार यादव जगत्प्रकाशक एक आर सम्पूर्ण नाटक प्रकाशित हेबाक सूचना दैत छथि जकर गद्यक भाषावैज्ञानिक अध्ययन सेहो ओ अपन एक लेख मे केलनि अछि। ई नाटक थिक 'प्रद्युम्नविजय नाटक' जे अंग्रेजी मे संपादित भ' क' 1987 मे छपल अछि।[38] जगत्प्रकाशक नाटक मे प्रयुक्त गद्य एवं गीतक दू गोट स्पष्ट विशेषता डॉ. रामदेव झा देखौलनि अछि, एक तँ ई जे एहि सब मे कतहु बांग्ला तथा ब्रजबुलिक स्पर्श नहि आयल अछि, जे कि नेपालीय मैथिली नाटकक लेल एक विरल विशेषता थिक। दोसर जे नाटकक गीत सब मे ओ 'दण्डक' नाम सँ एक विशिष्ट गीत-शैलीक उद्भावना केलनि जाहि मे दू पात्रक बीच केवल आपस मे उत्तर-प्रत्युत्तर चलैत छैक। नाटक मे प्रयुक्त हुनकर गीत सब तीन प्रकारक अछि—लघुगीत, पूर्णगीत आ दण्डकगीत। गीत सब कें देखने यैह स्पष्ट होइछ जे ओहि मे कतहु फराक सँ काव्यत्व उत्पप करबाक सायास चेष्टा नहि छैक आ आत्यन्तिक रूप सँ ओ कथा-विकासक सहयोगी बनि क' अबैत अछि। अलंकार आदिक हुनक प्रयोग मे सेहो सायास मौलिकता अनबाक चेष्टा नहि छैक आ अधिकतर कविरूढ़ि पर ओ चललाह अछि। एक रचनाकारक रूप मे जगत्प्रकाशक ध्यान हरदम वस्तुविन्यास पर रहैत छलनि। उदाहरण सँ बात बेसी स्पष्ट होयत। जगत्प्रकाशक गीत सब कि तँ शृंगारिक छनि वा भक्तिपरक। एकरा अतिरिक्त वैयक्तिक भावपरक गीत सब जे ओ लिखलनि अछि, जकरा ल' क' हुनक काव्यकर्मक महत्व सर्वाधिक अछि, ताहि पर हम आगाँ चर्चा करब। डॉ. रामदेव झा एहि बात कें विशेष रूपें अख्यास केलनि अछि जे आन प्रमुख रस सभक समावेश करितहु हुनक नाटक सब मे हास्य रसक प्रसंग सभक अभाव अछि। हम एतय, हुनकर वस्तुविन्यास, विशेषत: दृश्यबन्ध तैयार करबा मे, आ ताहि प्रसंगें गीतक प्रयोग करबा मे, कोन तरहे अभिव्यक्ति करैत छथि, से देखबाक लेल हुनकर 'प्रभावतीहरण' नाटक सँ एक प्रसंग उद्धृत करैत छी, जकरा रामदेव बाबू सेहो कयने छथि। प्रसंग छैक जे राजा लोमपादक आदेश सँ चारि गोट वेश्या विभाण्डक ऋषिक

पुत्र ऋषि ऋक्ष शृंग कें परतारि क' अनबाक लेल हुनका एकसर पाबि हुनकर आश्रम मे गेल अछि। 'ऋक्ष शृंग' कें काम-प्रवृत्तिक कोनो ज्ञान नहि छैक ने ओ कहियो कोनो युवती कें देखलनि अछि। वेश्या लोकनि अपना कें तपस्वी बतबैत हुनका अपना आश्रम चलबाक आग्रह करैत छथि। प्रसंग देखल जाय :

ऋक्ष शृंग—जाए देखब ओहे आसम तोर
तुअ देह परसन शित भेल भोर
तोहे लोक जे कहय से हमे करब
किए हिए राखल शिरिफल अभिनव

हे लोके! हम इहाक बोल करब। हमर संदेह निवृत्ति करू! हमर बाप तपस्वी इहाय लोके तपस्वी। हमर पिता का बड़ छोड़, इहाय लोक का किछु छोड़ नहि। हमर पिता कां छाति श्रीफल नहि, इहाय लोक कां दुयि दुयि श्रीफल। ए विशेष केहन भेल?

वेश्या—हे ऋक्ष शृंग! हमरा पूर्ण तपस्या भेल तकर फल ई फड़ैछ। इहाक पिता कां तपस्या पूर्ण नहि भेल।

ऋक्ष शृंग—हे लोके! हमर अभाग्य। बाप काँ तपस्या पूर्ण नहि भेल।

वेश्या—हे ऋक्ष शृंग! हमर आश्रम चलु। हमहि सन पूणर्फल तपस्वी अनेक देखब।

आ पिताक आपस घुरला पर ऋक्ष शृंग हुनका सूचना दैत छथिन—'हे तात! छोड़ नहि। छाति दुइ दुइ श्रीफल। अपूर्व नयन तरंग, स्वर मधुर।'

एहि ठाम लघु गीतक प्रयोग भेल छैक आ गद्यक नमूना सेहो हमरा लोकनि देखि सकैत छी।

हुनकर 'कृष्णचरित' नाटक मे बालकृष्णक जन्मोत्सवक अवसर पर एक टा सोहर गीतक प्रयोग एहि तरहें कयल गेल छैक—'चिर जिब तोहरा शिशु बहु काल/ कर मन आनंद सबहु गोआल/ जुबति सबहि मिलि मंगल गाबए/(ध्रु.)/ जनम सफल भेल दूर भेल दुख/ देखल एहन वयस सुत मुख/ धनेश जसोदा कुलमति दार/ मोर अनुमाने देवक अवतार/ परकास भन नन्दक नन्दन/ मुदित कएल गोकुल वासि सब जन।' तहिना, जगत्प्रकाशक गीतावलि मे नन्द आ गर्गमुनिक संवाद क्रम मे एक टा दंडकगीत प्राप्त होइत अछि, जे कि सेहो 'कृष्णचरित'क रहल होयत—

नन्द— मोर विनति सुनु गरग महामुनि।। ध्रु.।।
रोहिणी सुत देख एहे, पुनु एहे हमहुक ओरे।
करिअए जात करम सब आस मोहि तोहहुक ओरे।।
गर्ग— मोए जदुकुल पुरोहित मुनि।। ध्रु.।।
करब सबहि हमे कहतह ओरे ।
तुअ नहि थिक जदुकुलक एहे होएतहु सोरे।।

नाटक गीतक अतिरिक्त जगत्प्रकाशमल्ल मुक्तक गीत सेहो लिखलनि, जकर संख्या सैकड़ो मे अछि। हुनकर गीत सब आन-आन कविक गीतक संग संयुक्त संग्रह सब मे तँ भेटिते अछि, हुनक अनेको गीत अलग-अलग ठाम शिलालेख मे खोधल सेहो भेटैत अछि, मुदा तकर सभक अतिरिक्त नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखागार मे हुनकर स्वतंत्र गीतसंग्रह सेहो भेटैत अछि। एहि सबमे 'गीतावली' सर्वाधिक आरंभिक थिक, जकर संकलन-काल 1657 बताओल गेल अछि, आ इहो कहल गेल अछि जे चारि वर्ष धरि एकर संकलन-संपादन चलैत रहल आ हरेक बेर गीतक संख्या बढ़ैत गेल। डॉ. रामदेव झा विवरण देलनि अछि जे गीतक ई विशाल संग्रह विषयक दृष्टिकोण सँ बीस भाग मे विभाजित छैक आ प्रत्येक विभाग मे अनेक अनेक गीत अछि। खास बात ई छैक जे 'स्त्री विरहगीत' विभागक संग 'पुरुष विरहगीत'क सेहो अलग विभाग छैक। तहिना, कोबर आ सोहरक अपन विभाग छैक। 'युद्धगीत' नामक सेहो एक विभाग छैक जे कि मैथिली गीतक क्षेत्र मे एक दुर्लभ विषय कहल जाएत। लौकिकता प्रधान छैक, धार्मिकताक गीतक एक विभाग अलग छैक जकरा 'देवभावगीत' कहल गेल अछि। 'नानार्थदेवीगीतसंग्रह' नाम सँ हुनक गीत सभक एक संग्रह पंडित सुन्दर झा शास्त्री 'फूलपात' (काठमाण्डू, सितंबर 1972) क एक विशेषांक मे प्रकाशित केलनि। एकर भूमिकाक अपन विशिष्ट महत्व छैक जाहि पर आगू बात करब। डॉ. रामदेव झा एहि संग्रहक विषय-विस्तार कें देखैत एकर नाम 'नानार्थगीतसंग्रह' कहब बेसी उपयुक्त बुझलनि अछि, आ इहो देखौलनि अछि जे एकर अनेक गीत 'गीतावली' सँ यथावत लेल गेल अछि। 'पद्यसमुच्चय'क चर्चा पहिनहुँ भ' चुकल अछि जकर संकलन जगत्प्रकाश राग-शिक्षाक निमित्त कयने छलाह। 'दशावतारगीत' नेपालीय मैथिली कवि लोकनिक प्रिय विषय छल जाहि पर स्वयं जगज्ज्योतिर्मल्लक संकलन प्रकाशितो अछि। एहि विषय पर एक संकलन जगत्प्रकाशोक छनि। 'नानार्थगीत'क नाम सँ एक वृहद संग्रह राष्ट्रीय अभिलेखागार मे पाओल जाइछ जकरा संबंध मे ई कहल गेल अछि जे एकर प्रतिलिपि हुनकर प्रधान अमात्य पप्रसिंह भारोक कएल छनि। 'नानारंगगीत संग्रह' अथवा 'नाना रागगीतम्' नाम सँ एक पृथक् संग्रह भेटैत अछि जे कि पंचक शैली (प्रत्येक विषय-विभाग मे पाँच-पाँच गीत) मे अवश्य अछि, मुदा ई हुनक एक अन्य गीतसंग्रह 'गीतपंचक' सँ भिप संग्रह थिक। ऐतिहासिक महत्वक दृष्टि सँ 'गीतपंचक' हुनक सर्वाधिक मूल्यवान संग्रह थिक, जाहि मे देल गेल सूचनाक अनुसार एकर रचना ओ अपन प्रिय बन्धु चन्द्रशेखर सिंह सँ चिरविरह भ' गेलाक उपरान्त शोकाकुलताक उद्वेग मे कयने छलाह।

अपन गीत-काव्यक कैक गोट विशेषताक कारण जगत्प्रकाशमल्ल मध्यकालीन मैथिली साहित्यक परिदृश्य पर एक लीजेन्ड बनि क' ठाढ़ छथि। एहन चारि गोट

विशेषता हमरा लोकनिक दृष्टिपटल पर आबि सकैत अछि। यद्यपि कि एहि रूपक निर्णायक अध्ययन हुनका पर एखन धरि नहि भेलनि अछि।

मध्यकालीन मैथिली कविताक परिदृश्य देखने लगैत छैक जे एहि काल मे जे काज भ' रहल छलैक ओ नेपाले मे भ' रहल छलैक। बंगाल संग मैथिली गीतक गमनागमन सतरहम शताब्दीक शुरू होइते बंद भ' गेल छलैक। बंगाल मे जे आब लिखल जा रहल छल ताहि पर बंगाली अस्मिता हाबी छल। एम्हर मिथिला मे जे काज भ' रहल छल, ओहि मे रचनात्मकताक घोर अभाव छल। ओ सब मानू साफ कहैत हो जे ओकर पूछ नहि छल, ने स्तरे एहन छल ने गुणग्राहके। एही कारणें ओहि रचना सब मे हमरा लोकनि कें भक्तिक उल्लास नहि, भक्तिक दण्डविधान ओकरा माथ पर सवार देखाइत अछि। जखन कि ओही काल मे ओम्हर नेपाल मे मैथिली राजकीय रंगशाला मे शोभित भ' रहल छल। जनता मे मैथिली कोना, कतबा छल, तकर तँ कतहु बाते नहि भेल अछि। कबीर आश्रम सब मे मैथिली छलै मुदा ओकरा तँ इतिहासकार लोकनि 'मैथिली' कहियो मानबे नहि केलनि। जनताक भाषा जे मैथिली मे अभिव्यक्त भ' रहल छल, तकर कथा हम आगू कहब। राजदरबार मे जँ कतहु मैथिली बचल छल, तँ सेहो नेपाले मे बचल छल। खण्डवलाकुल कें हमरा लोकनि कहियो मैथिली कें स्थान दैत नहि देखैत छिऐक। ओतए पंडित वर्ग हावी छलैक। पहिने जतए दार्शनिक लोकनि कें हमरा लोकनि सम्मानित होइत देखैत छिऐक ओकरा बदला मे आब पिष्टपेषण प्रजातिक साधारण शास्त्रवेत्ता कहि सकैत छिऐक—सृजन अत्यन्त कम छल, जे छल व्यक्तिगत छल, आ ओहि पर मर्यादाबुद्धि हावी छल। कलाक विकास, साहित्यक विकास जे एक टा न्यूनतम उन्मुक्तता चाही, मुदा ताहि लेल चाही उदार हृदय, तकर पंडित लग तँ अभाव रहबे करय स्वयं राजन्यवर्गो मे ई चीज नहि छलनि। किएक नहि छलनि, से निर्णय करबाक विषय इतिहासकार लोकनिक छियनि जिनक विवेचन एखनहु प्रतीक्षिते अछि। साहित्यिक साक्ष्य यैह साबित करैत अछि जे हुनका लोकनि मे रुचि आ उत्साह नहि छलनि, केन्द्रीय प्रशासन सँ ओ लोकनि अपने परेशान-परेशान रहैत छला, अचल समय अपने विलास-भोग मे डूबल रहबाक, जँ ताहि सँ बचल तँ अतीतजीवी प्रगतिविरोधी बुद्धिविलासी लोकनिक बतकुच्चनि करेबा मे व्यस्त। जनता मे जे एहि काल मे साहित्य-सृजन भेल आ भिप-भिप कलारूप, अभिव्यक्ति-माध्यम मे काज सम्पप भेल ताहि पर हम आगू बात करब।

जगत्प्रकाशक कविता मे हमरा लोकनि देखैत छी जे काम-केलिक तुलना मे प्रेमक महत्व सर्वोपरि छैक। काम-केलि यौनिकताक एक बहिर्मुखी अभिव्यक्ति थिक जखन कि प्रेम आन्तरिक संबंधक गहराइ कें देखबैत छैक। प्रेमक महत्व

विद्यापतियो लग बहुत छनि मुदा ओतय ओ बहिर्मुखी अभिव्यक्तिक पूरक थिक। वायवीयता सँ भरल भव्यता ओहि समस्त दृश्यावलि कें जटिल बना दैत छैक। जगत्प्रकाश एकदम आम लोक जकाँ देह कें अलग, प्रेम कें अलग रखैत साधारण ढंग सँ अपन बात रखैत छथि, जखन कि कतेक आश्चर्यक बात थिक जे विद्यापति राजाक दरबार मे रह' बला कवि छलाह जखन कि जगत्प्रकाश स्वयं राजा रहथि। हुनक टेक छनि—'पिरिति करह जइसे जल-मीन।' प्रीत करू तँ एना करू जेना माछ जल संग करैत अछि। स्त्रीक लेल हुनक आप्तवाक्य छनि—'न होअ पति बिनु रति।' रति तखने भ' सकैत अछि जँ अपन हिस्साक पुरुष हो। तहिना पुरुषक लेल छनि—'कि कर पर नारि आस।' पर-नारी सँ संभावित संतुष्टि पर कतेक भरोस कयल जा सकैत अछि? प्रेम हुनका नजरि मे सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु थिक जे परम आनन्दक एक साधन थिक। स्वाभाविक थिक जे ई स्त्री आ पुरुष दुनू दिस सँ समतुल्य हेबाक चाही। ओ कहितो छथि—'पहुक प्रेमरस दुहु तनु लागल/ रससागर प्रभु जाय।' प्रेमरसक सागर मे प्रेमी आ प्रेमिका दुनूक मन-प्राण निमज्जित भेल रहैत छैक। मध्यकालक प्राय: समस्त कवि लोकनि सँ ओ एहू बात मे अलग छथि जे हुनका लग प्रेम आ भक्ति अलग-अलग अछि। एकर पर्याप्त साक्ष्य अछि जे अपन कुलदेवी तुलजा भवानीक प्रति भक्ति रखबाक संग-संग ओ कोनहु आम मैथिल जकाँ शिवभक्त सेहो छथि। राधाकृष्णक प्रसंग सेहो ओ अपन रचना मे खूब उठौलनि मुदा ओहि ठाम मधुरा भक्ति सन कोनो अभिप्राय ताकब नितान्त व्यर्थ होयत। श्रृंगार रसक रंग सेहो हुनका मे पूरा प्रगाढ़ छनि। एतय धरि जे अपन आराध्य देव शिव कें सेहो ओ नहि छोड़लनि अछि। 'उषाहरण' नाटक मे शिव-पार्वतीक काम-क्रीडाक उन्मुक्त वर्णन अछि, मुदा देखबाक थिक कविक केन्द्रीय दृष्टि। एहि क्रीड़ाक अवसर पर जे गीत चलैत अछि ताहि मे शिवक उक्ति छनि—'अनुभव माँगब रंगरस कौतुक हँसि-हँसि देखि तोहि मोमो सुखे।' स्वयं शिव प्रेमक एहि तल पर छथि जतय अपन संगिनी कें अपन आध देह बना लेबाक संकल्प जगैत छैक, कारण जे 'बहु दिन लेब मोमो सुखे'। क्यो जँ बहुत दिन, मने जनम भरि सुख मे रहय चाहैत अछि तँ एहि परस्पर समर्पणक अतिरिक्त कोनो दोसर उपाय नहि छैक। हुनकर तँ साफ कहब छनि जे 'सबहि रस पर प्रेम बड़ रस, प्रेम सम नहि आन ओ/ प्रेमहि के हुति जिअए शिशुवधु, प्रेमहि विभुति परान ओ।' संसार मे चाहे जतेक प्रकारक रस (आनंद) होअए, प्रेमरस ओहि समस्त मे प्रधान थिक कारण एकरे पाबि क' स्त्री जिबैत अछि आ पुरुष अपन प्राण मे विभूति (पराक्रम) धारण करैत अछि।

कहबाक आवश्यकता नहि जे सहजिया वैष्णव लोकनिक ओतय परकीया प्रेमक जतेक महत्त्व छैक, तकर सर्वथा तिरस्कार हमरा लोकनि जगत्प्रकाश लग मे पबैत छी। रामदेव झा कहैत छथि—'वैष्णव दर्शन मे परकीया भावक श्रेष्ठता अछि। जगत्प्रकाश स्वकीया भाव कें श्रेयस्कर मानैत छथि। वैष्णवमतक श्रृंगार अलौकिक प्रेमा भक्तिपरक अछि, जगत्प्रकाशक श्रृंगार लौकिक अछि तथा भक्ति भावक कोनो संकेत नहि अछि।'[39] यैह सब कारण थिक जे हुनकर गीतावली मे जँ स्त्री-विरहक विभाग अछि तँ पुरुष-विरहक सेहो अपन अलग विभाग अछि। आर तँ आर, अपन दिवंगता पत्नीक चिरविरह मे जे गीत सब ओ लिखलनि अछि, आ जाहि तरहें लिखलनि अछि, स्पष्ट कहय पड़त जे अपन रचना मे ओ मध्यकालीन बोध-सीमाक अतिक्रमण केलनि अछि।

रचना मे वैयक्तिक अनुभूतिक शब्दश: कथन, जाहि मे कविक व्यक्तित्व साफ-साफ देखार पड़ैत रहय, ई आधुनिक साहित्य-मूल्य थिक। जखन चन्दा झा कें हमरा लोकनि आधुनिक युगक उद्भावक कहैत छियनि तँ तकर अभिप्राय यैह रहैत छैक जे हुनकर अनेको कविता सब मे स्पष्ट रूप सँ हुनका व्यक्तित्व कें हुनक समयक परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकैत छी। आश्चर्यजनक थिक जे वैयक्तिकताक ई गुण हमरा लोकनि जगत्प्रकाशक कविता मे देखि सकैत छी। हुनकर वैयक्तिक सुख-दुख, चिन्तन-व्यवहार, हुनकर आक्रोश, हुनकर रणनीति—सब कथू एहि तरहें स्व-सन्दर्भित भ' क' हुनकर कविता मे अबैत छैक जे रचनाकारक आत्मा कें साफ-साफ खोलैत अछि। स्वयं रामदेव झा कहैत छथि—'मध्यकालक मैथिली साहित्य मे जगत्प्रकाश प्राय: एकमात्र कवि थिकाह जनिक काव्य मे सर्वथा वैयक्तिक भावावेश ओ आत्मानुभूतिक कारुण्यपूर्ण, निश्छल ओ अनाविल अभिव्यंजना देखल जाइछ।'[40]

जगत्प्रकाशक एहन गीत सभक संख्या बड़ बेसी अछि जकर भणिता मे वा कि मध्य मे एक टा नाम अबैत छैक—चन्द्रशेखर सिंह। कतहु चाँदशेखर, कतहु चन्द्र अथवा चाँद तँ कतहु चाँदशेखर सिंह रहैत छैक। के छलाह ई चन्द्रशेखर सिंह? डॉ. जयकान्त मिश्रक तँ सोचबे अलग अछि जे जगत्प्रकाश मे कोनो काव्य-प्रतिभा छलनिहे नहि, जे किछु हुनकर लिखल भेटैत अछि, से एही चन्द्रशेखर सिंहक लिखल थिक।[41] हुनक कथन सँ बिलकुल स्पष्ट अछि जे चन्द्रशेखर नामांकित गीत सब कें पढ़बाक आ तकर मर्म ग्रहण करबाक कष्ट ओ नहि केलनि अछि। एहि संबंध मे प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' सेहो दिमाग लगेबा सँ काते रहलाह अछि जखन कि हुनका लेखन-समय (2010) सँ बहुत पहिने एहि विषयक शोध उपलब्ध छलैक। ओ यैह जानकारी दैत रहलाह जे चन्द्रशेखर सिंह हुनक एक दरबारी कवि रहथिन।[42] एहि संबंध मे नेपालक एक आधुनिक मैथिली कवि सुन्दर झा शास्त्री खोज कयने छलाह आ 'फूलपात' पत्रिकाक एक विशेषांक अपन सम्पादन मे बहार कयने छलाह

(सितंबर 1972) जाहि मे सम्पूर्ण 'नानार्थदेवदेवीगीत संग्रह' प्रकाशित कयल गेल छलैक, जकर चर्चा पहिनहुं कयल गेल। एहि मे प्रकाशित शास्त्री जीक लेख सँ चन्द्रशेखर सिंहक विषय तँ अनावृत्त होइते छैक, जगत्प्रकाशक किछु गीत मे जे 'जगच्चन्द्र' भणिता भेटैत अछि तकरो समाधान भ' जाइछ। अपन शोधक क्रम मे ओ मल्लकालीन मूर्त्ति सभक अधययन सेहो केलनि। एक युगलमूर्त्तिक विषय मे ओ लिखलनि—'भक्तपुर स्थित भैरव मंदिर मे जगच्चन्द्रक ढलौत कयल एक आसन पर दू मूर्त्ति पाओल जाइछ। एक मूर्त्ति नमहर परन्तु कम आयुक एवं डाँर मे बान्हल पेटीक छोर ठेहुन धरि लटकल तथा दोसर मूर्त्ति छोट परन्तु मध्यवयस्क, कपार मे त्रिपुण्ड चानन एवं गरदनि मे आभूषण विशेष पहिरने। ई निस्सन्देह जे त्रिपुण्डधारी मूर्त्ति चन्द्रशेखर सिंहक छनि।'[43] कहब अनावश्यक जे पहिल मूर्त्ति स्वयं जगत्प्रकाश मल्लक छनि। आशय सेहो स्पष्ट अछि जे ओ जे क्यो छलाह, जगत्प्रकाश सँ जेठ आ हुनक अति निकट छलाह।

चन्द्रशेखर सिंहक प्रति जगत्प्रकाशक हृदय मे कतेक प्रगाढ़ प्रेम आ मैत्री छलनि तकर वर्णन हुनकर अनेको गीत मे भेल अछि। एक ठाम ओ कहैत छथि 'जगत्प्रकाश नृप चाँदशेखर सिंह जानह दुहु एक जने।' अर्थात एहि दुनू गोटे कें दू व्यक्ति नहि, एक्के व्यक्ति मानल जाय, ततेक प्रेम। एक ठाम अछि—'जगतचन्द्र दुहु एकहि जिब दुय परम पद दुहु पाबे।' एक पद मे अबैत अछि—'चाँदशेखरसिंह तुअ तुल नहि जन, मोरि हृदि तोहहि विराजे।' एहि काल मे 'जगतचन्द्र' नामक एक अन्य नामक उल्लेख बहुतो गीत मे बहुतो ठाम आएल अछि। ई क्रम जगत्प्रकाशक समय सँ शुरू भ' हुनक पुत्र जितामित्रमल्ल धरि चलैत अछि। असावधान इतिहासकार लोकनि जगतचन्द्र कें एहि दुनू राजाक आश्रित कवि बतौलनि अछि। मुदा नामे जाहि तरहें प्रयोग होइत छैक, स्पष्ट लगैत अछि जे ओ कोनो राजा छलाह, जखन कि एहि नामक राजाक कोनो उल्लेख नेपालक राजवंशावली मे, एहि काल मे, कतहु दूर-दूर धरि नहि छैक। पंडित सुन्दर झा शास्त्री एकर जे समाधान देलनि अछि से अत्यन्त सटीक अछि। जगत्प्रकाश आ चन्द्रशेखर सिंह मे ततेक प्रेम रहनि जे हुनकर देहान्तक बाद कवि अपन नामक 'जगत' आ हुनकर नामक 'चन्द्र' मिला क' अपना लेल ई नव नाम तैयार केलनि। एहन उदाहरण मैथिली संसार मे अन्यत्र ताकब कठिन। हमरा लोकनि अवगत छी जे जगत्प्रकाशक आरंभिक नाटक 'प्रभावतीहरण' मे हुनक दू गोट पत्नी—पप्रावती आ चन्द्रावतीक उल्लेख भेटैत अछि। आगू ओ एक आर स्त्रीक संग विवाह केलनि, जिनकर नाम शिलालेख सब मे अपपूर्णा लक्ष्मी बताओल गेल अछि। यैह स्त्री छली जे हुनकर जीवन कें सौरभ सुवास सँ भरि देलखिन। एही पत्नीक प्रति अपन प्रेमक प्रतीक स्वरूप राजधानीक निकट ओ भवानीशंकर मंदिरक स्थापना कयने छलाह आ

ओहि मे परम्परा सँ हटि क' ओ भवानी-शंकरक युगल मूर्त्तिक प्रतिष्ठापन कयने रहथि। ओहि मंदिरक शिलालेख मे जगतप्रकाशक ई गीत खोधल भेटैत अछि—'जेहि मोर जिव तुल चन्द्रशेखर सिंह, सेहि देलि एहि धनि बारि।/ जगतप्रकाश भूप पावलि घरिनि वर, अपपुरना नाम नारि।।/ सोहि धनि कयलिह प्रासाद अति भल, तवहु देवहि शिवमूल।/ नेपालमंडलका संबछल आवे, बाजि वसु मुनि मोति कूल।।/ माघक महिना दशमि सुतिथि पर, जेठनक्षत्र वज्रयोगे/ गुरुवार सुदिवस कनक कलश भल, चढ़ावल धरमक भोगे/ भनय प्रकाशभूप गीतहि मनोहर एहि खने ऋतु ऋतुराजे/ चाँदशेखर सिंह तुअ तुल नहि जन, मोरि हृदि तोहहि विराजे।' एहि शिलालेख मे चन्द्रशेखर कें 'महावीर' तँ कहले गेल अछि, 'स्वप्राणोपम' आ 'वरामात्याग्रणी' कहल गेल अछि।

गीतक बीच मे ज्योतिषक संकेत-भाषा अयलैक अछि, तिथि-गणनाक निमित्त, ओहि ठाम कविता ताकब निरर्थक। मुदा देखबाक ई थिक जे ई शिलालेखक भाषा थिक, पवित्र आ कालजयी, ई स्थान सब दिन संस्कृते कें भेटलैक। ओकरो भाषा मे कतहु कविता नहि, निछच्छ सूचना आ सेहो प्रवाहहीन भाषा मे। मुदा एहि शिलालेख मे जे मैथिली कविता छैक तकरा जँ देखी तँ ई अद्भुत व्यंजना लेने छैक। चन्द्रशेखरक चर्च सँ गीत शुरू होइत छैक आ हुनके पर खतम। ओहि व्यक्तिक उपकार की छैक? उपकार यैह जे अपपूर्णा सन धनी हुनका देलकनि। पंडित सुन्दर झा शास्त्रीक ई समाधान एकदम सटीक छनि जे चन्द्रशेखर सिंह जगत्प्रकाशक जेठसार, अपपूर्णाक पैघ भाइ रहल हेताह मूर्त्ति मे मुदा त्रिपुण्ड देखि क' शास्त्री जी हुनक ब्राह्मण हेबाक अनुमान करैत छथि, जखन कि रामदेव झा कें एहि मे असंगति बुझा पड़ैत छनि, केवल एहि लेल जे जगत्प्रकाश क्षत्रिय छलाह। एहि गीत कें देखी तँ इहो जेना शास्त्री जीक मतक समर्थन करैत हो। प्रासाद सहित मंदिर बनबौलनि अछि अपपूर्णा, मुदा शिलालेख मे हुनका सँ बेसी बड़ाइ चन्द्रशेखर सिंहक छैक। जँ पुरुषक दृष्टि सँ देखी तँ ई स्त्री पाबि क' कवि जेना अपन 'प्राणक विभूति' पाबि गेलाह अछि आ हुनक कृतज्ञता ओहि व्यक्ति लेल छैक जे ई स्त्री ओकरा पर 'बारि' देलक—एहि मे 'कुर्बान करब' सन के कशिश छैक जकर मूल्य जातीय श्रेष्ठताक दृष्टि सँ सेहो देखल जा सकैत अछि। मुदा हमरा सदति नीक यैह लागत जे कविता कें भाव-संपदाक दृष्टि सँ देखल जेबाक चाही। अपपूर्णा लेल एहि ठाम ओ एक्के टा विशेषण प्रयोग केलनि अछि—'घरिनि वर'—श्रेष्ठ गृहिणी। कहब आवश्यक नहि जे एहि गृहिणीक अनुगूंज बड़ी दूर धरि जाइत छैक। अतिप्रिय मे लोक कें आत्मबुद्धि होइत छैक आ एहि ठाम तँ ई स्त्री प्रियातिप्रिय छथि। तें ओ दुनू मिलि क'—एक जीब दुइ देह भ' क' अपन जेठ भाइक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत छथि। एहि ठाम एकरा आर शब्द आएल अछि 'धरम-भोग'—अपपूर्णा जे आजुक शुभदिवस मे एहि मंदिरक कनककलश उत्थापित

क' सकलीह, एहि चिर अभिलषित इच्छाक पूरा होयब हुनक धरम-भोग छियनि। धरम-भोगे सँ ओ ई क' सकली। 'कर्मभोग' तँ हमरा लोकनि मिथिला समाज मे खूब सुनैत छी मुदा 'धर्म-योग' नहि, जखन कि बहुतो लोक कें अपन चिर अभिलषित इच्छाक पूर्त्ति एतहु होइत हेतनि। एतय ई तँ कविक कवित्व छियनि। एहन घरनी कें पाबि कवि पूर्ण तृप्त छथि आ उपकार मानैत छथि जे हे चन्द्रशेखर अहाँ सन हमरा लेल क्यो नहि, हमरा हृदय मे अहाँ बिराजै छी। विद्वान लोकनिक इहो कहब छनि जे चन्द्रशेखर सिंह राजाक सेनापति रहथि। रामदेव बाबूक अनुमान छनि जे प्रतापमल्लक एक भयानक आक्रमण मे, जाहि मे कि भक्तपुर मे जन-धनक बहुत विनाश भेल छलैक, सेनापति चन्द्रशेखर सेहो शहीद भेलाह। 'गीत-पंचक'क ओ गीत सब अत्यन्त मार्मिक अछि जतय ओ आर्त भ' क' अपन मृत सहयोगी कें स्मरण करैत छथि—'परकास भन चाँदशेखर परान/ कुण्डलविहीन भेल कान।' तहिना, 'खन मनि दुर गेल हृदयक हार।' अल्पायु भेलाह जगत्प्रकाश, किन्तु कहल गेल अछि हुनक एहि श्रेष्ठ घरनी अपपूर्णाक देहान्त हुनकहु सँ पहिने भ' गेल छलनि। हुनकर चिरविरह मे लिखल गीत सब देखबा योग्य अछि। हुनकर एक टा गीत छनि—'निरधनि कर सँ खसल सुहीर/ मोहि लग साजनि नहि भेलि थीर/ हरि हरि हम बड़ पापिनि वारि/ हरि लेलि ईसर हमर अधारि/ तोह सन हित सखि हमर न आन/ तोहे बिनु मोहि लेखे जगत मलान/ परकाश कयलहुँ तोहर धेआन/ चाँदशेखर शिव करू अवधान।' हमसब कहि सकैत छी जे सर्वथा वैयक्तिक भावावेश आ आत्मानुभूतिक एहन कारुण्यपूर्ण निश्छल अभिव्यक्ति मध्यकालीन मैथिली कविता मे दुर्लभ अछि जे हमरा लोकनि कें जगत्प्रकाश लग मे भेटैत अछि।

भक्तपुर शाखाक परवर्ती राजा लोकनि

जगत्प्रकाशक निधनक बाद हुनक पुत्र जितामित्रमल्ल (1672-1696) राजा भेलाह। डॉ. रामदेव झा एहि बातक लेल जगत्प्रकाशक बहुत प्रशंसा कयने छथिन जे ओ अपन जीता जी जितामित्र कें राज-काज मे ओ सांस्कृतिक रचना-आयोजन मे पूरा बढ़ावा देलखिन। यैह कारण भेल जे अल्पायु मे पिताक निधनक बादो जितामित्र कें ने राज चलेबा मे संकट भेलनि ने नाटक-सृजन मे। हुनका बाद भूपतीन्द्रमल्ल (1696-1722) भेलाह आ अंतिम राजा रणजितमल्ल (1722-72) भेलाह, जनिका समय मे सेहो साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधि पर्याप्त निरन्तरता बनौने राखलक। जितामित्रक सात गोट नाटकक चर्चा मौन जी अपन इतिहास मे कयने छथि—सती-वियोग, कलियमथनोपाख्यान, जैमिनीय भारत, वरुथिनीहरण, मदालसाहरण, महाभारतनाटक आ रामायण नाटक। डी.आर. रेग्मी एक आर नाटक जोड़ैत छथि—अश्वमेध नाटक। डॉ. जयकान्त मिश्र चारि गोट नव नाटक जोड़लनि—गोपीचन्द्र नाटक, उषाहरण, नवदुर्गानाटक आ भाषा नाटक। उमारमण झा एक टा आर जोड़लनि—मंगलमहोत्सव नाटक। रामदेव झा एक टा आर जोड़लनि—कोलासुरवधोपाख्यान। एहि प्रकारें एखन धरि हुनक चौदह गोट नाटकक पता लागि सकल अछि। जितामित्रक अलग सँ कोनो गीत-संग्रह प्राप्त नहि होइत अछि। जयकान्त बाबूक अध्ययन छनि जे अपन नाटको मे, आ शिलालेख सब मे सेहो, ओ जतेक गीत लिखलनि, सब भक्तिपरक अछि जाहि मे कि तँ भगवतीक स्तुति अछि वा शिवक। ओ हिनकर नाटकक भाषाक बहुत प्रशंसा केलनि अछि।

भूपतीन्द्रमल्लक 11 नाटकक अतिरिक्त हुनक गीतोक संग्रह 'भाषागीत' भेटल अछि जाहि मे हुनकर 91 गोट गीत संकलित छनि। डॉ. जयकान्त मिश्र यद्यपि हिनक गीत सभक प्रशंसा केलनि अछि किन्तु हिनक भाषा-प्रयोगक मादे लिखैत छथि—'ई शुद्धतावादी नहि छलाह आओर यत्र-तत्र बांग्ला आ हिन्दीक तकरो प्रयोग करैत छलाह।'[44] एहि शाखाक अंतिम राजा रणजितमल्लक जँ एतबे विशेषता रहितनि जे अंतो अंत काल धरि साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधि बनौने राखि सकितथि, तँ सेहो कम नहि होइत। मुदा हमरा लोकनि देखैत छी नेपाल मे मैथिली साहित्यक सृजन आ आयोजन मल्लवंशक तीनू खूटक सब राजा मिला क' सब सँ बेसी, आ पर्याप्त निरन्तरताक संग हिनके समय मे भेल। हर एक अवसर पर गीत-गानपूर्वक नव नाटकक मंचन। आ ई अवसर सब केहन होइत छल ? किछु धार्मिक अवसरक झाँकी जयकान्त बाबू देलनि अछि—'उषाहरणक अभिनय अपन इष्टदेवताक मन्दिर-जीर्णोद्धारक अवसर पर भेल छल, 'अन्धकासुरवधोपाख्यान' इष्टदेवक प्रीत्यर्थ अभिनीत भेल, 'कृष्णचरित' नाटक हुनक मंदिर मे छोटका घंटाक स्थान मे बड़का घंटाक स्थापनोत्सवक स्मृत्यर्थ भेल, आओर 'कोलासुरवधोपाख्यान'क अभिनय हुनक प्रतिमा कें नीलकमल सँ अलंकृत करबाक उत्सवकाल मे भेल छल।'[45] एहने-एहने अनेको अवसर ताकि निकालल जाइक। राजकीय आ पारिवारिक उत्सव पर होअ' बला नाटक सब तँ एकरा अतिरिक्त छल। एक्के नामक अनेक नाटक अलग-अलग राजाक लिखल भेटैत अछि। एहि सभक बीच किछु समानता छैक तँ अन्तरो कम नहि छैक। एहि विषयक अध्ययन अपेक्षित छैक जे अपना-अपना समयक समकालक कतबा प्रकाश एहि रचना सब पर पड़ि सकल अछि।

नेपाल दरबार मे मैथिली आ बांग्लाक प्रतिस्पर्धा

ऊपर जयकान्त बाबूक कथन, जितामित्रक भाषा मे बांग्ला-प्रयोग कें ल' क' उद्धृत कयल गेल। ओतय देखब जे ओ बांग्ला-प्रयोग कें कविक व्यक्तिगत सीमा बतबैत

छथि आ दोष दैत छथि जे ओ शुद्धतावादी नहि छलाह। असल मे देखी तँ मामिला एतेक सरल नहि रहैक। अनेक नाटक भिप-भिप दरबार मे लिखल गेल जाहि मे बांग्लाक अपन ठाठ रहैक। सैकड़ो गीत बांग्ला मे लिखल गेल। मिश्रित भाषा मे सेहो जाहि मे बांग्ला आ मैथिली कें अलग-अलग चीन्हल जा सकैत अछि। ई ब्रजबुलि दौर सँ बाहरक वस्तु छल। बांग्लाक प्रयोग मे बंगाली अस्मिताक अपन स्पष्ट धमक रहैक। ई दुनू आधुनिक भारतीय भाषा—मैथिली आ बांग्लाक—तत्कालीन रूप छल। एकर प्रभाव गँहीर छल। दरबार मे जेना मैथिल विद्वानक चलती रहनि तहिना बंगालियो विद्वानक रहनि। स्थान-काल-पात्रभेदें कमी-बेसी होइत रहल हो, से अलग बात।

अपन अध्ययन मे डॉ. सुकुमार सेन पौलनि अछि जे नेपाल मे मैथिली आ बांग्ला गीतिकविताक प्रवेश, एक्के संग, चौदहम शताब्दी मे भेल, जकर उद्‌भावक हरसिंहदेव छलाह। ओ कहैत छथि जे सुरू मे ई रचना सब नाट्यगीतिक रूप मे छलैक जे बाद मे पदावलीक रूप लैत गेल। मध्य अवधि अंधकारकालक सत्य भने ई होअए, मुदा मल्लकाल मे तँ दुनू कें हमसब संग चलैत देखैत छी। मुदा एही क्रम मे सुकुमार बाबू इहो कहि उठलाह जे 'मोरंग-नेपाल की राज्यसभा के प्रभाव से, बांग्ला-मैथिली पदावली के मिश्रण एवं अवहट्ठ के ठाठ से ब्रजबुलि की उत्पत्ति हुई थी।'[46] ई हुनकर अपन मत छियनि जे 'हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर' मे व्यक्त कएल गेल हुनके मत सँ विपरीत रहय। एहूठाम ओ लिखलनि अछि जे 'मेरा अनुमान है कि...'। ई अनुमान असम्यक् छलनि तें लोक हुनकर पहिले मतक, जाहि मे एहि पाछू विद्यापतिक स्पष्ट प्रभाव कहल गेल रहैक, कें मानैत रहल।

नेपालक दरबार मे मैथिल आ बंगाली विद्वानक बीच कोन रूपक प्रतिस्पर्धिता चलैत रहैत छल, तकर एक परिणामिक अध्ययन, 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्' के परिप्रेक्ष्य मे, पंडित गोविन्द झा केलनि अछि। ई नाटक रामभद्र शर्माक लिखल बताओल गेल अछि। एही नाम सँ ई छपलो अछि। रामभद्र शर्माक उल्लेख सुकुमार बाबू सेहो 'विद्यापति गोष्ठी' मे केलनि अछि। स्पष्ट अछि जे ओ बंगाली थिकाह। पंडित गोविन्द झा एक अलगे प्रश्न उठबैत छथि जे रामभद्र मात्र ओहि नाटकक 'लेखक' छलाह, रचयिता नहि। मुदा हुनकर अध्ययन किछु आओर कहैत छनि। 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्' मे चौदह गोट पात्र छैक। ई पात्र सब दू भाषा बजैत अछि—मैथिली आ बांग्ला। एहि पर पात्रनुसार भाषाक प्रयोग-स्थिति पर विचार करैत ओ लिखैत छथि—'चौदह मे केवल पाँच बांग्ला बजैत अछि, आर सब मैथिली। गीत लगभग सब मैथिली मे अछि। अत: नाटक मे मैथिलीक बाहुल्य स्पष्ट अछि। परन्तु मात्र मे मैथिली भनहि अधिक हो, प्रतिष्ठा मे बांग्ला बहुत ऊपर राखल गेल अछि। राजा ओ हुनक सकल परिजन, वनपाल ओ व्याध समेत, बांग्ला बजैत अछि। प्रतिष्ठित पात्र मे केवल ऋषि विश्वामित्र मैथिली बजैत छथि। मुदा जानि नहि किए, हुनकर उक्ति बहुतो ठाम लुप्त

अछि। आन जे केओ मैथिली बजैत अछि से सब अधम पात्र थिक। विचित्र बात जे अधम पात्र मे तीन गोट ब्राह्मण अछि आ तीनूक व्यक्तित्व भ्रष्ट देखाओल गेल अछि। एहि सँ मैथिली आ मैथिल ब्राह्मण दुनूक अधोगति लक्षित होइत अछि।'[47]

ई नाटक कान्तिपुर (काठमाण्डू) दरबार मे सिद्धिनरसिंहदेवक समय अभिनीत भेल छल। नाटक मे नियमानुसार हुनकर गुण-वर्णन कयल गेलनि अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे अलग-अलग दरबार मे भाषाक प्रभाव कालानुसार बदलैत रहैत होयत। एकरा विद्वानक प्रभावक दृष्टि सँ देखल जा सकैत अछि। एक ठाम एक समय जँ वंशमणि झा प्रभावी छलाह तँ दोसर-दोसर ठाम दोसर समय रामभद्र आदिक प्रभाव रहनि। तें, रमानाथ झा एक अलगे तरहक चिन्ता केलनि अछि। राजा सभक नाम पर रचित एहि घनेरो नाटक आ गीतक पाण्डुलिपि देखि क' ओ 'भाषा गीतसंग्रह'क भूमिका मे लिखलनि—'ई सब टा गीत ओहि राजाहिक रचित थिक से तँ हम नहि मानैत छीट्ठ हँ, एतबा निश्चय जे ओ सब गीत हुनके आश्रित कवि लोकनिक रचना थिक, सब टा हुनके दरबार मे रचित भेल, ओ सम्भव थिक ओहि मे कतोक ओहि राजाक अपनो रचना होइन्ह।'[48] कहब जरूरी नहि जे ई एक अलगे प्रश्न थिक। जँ ओ राजा सब रचयिता नहि छलाह तँ आखिर के छलाह? की हुनका ठीक-ठीक चीन्हल जा सकैत छनि? ओहि युगक दरबारी कवि लोकनिक जे रचना प्राप्त अछि, ओहि सँ शैली-भेदें स्पष्ट भिपता देखाइत छैक। जँ मानि लेल जाय जे क्यो आन छलाहो, जेना संस्कृत मे धावक कवि—तँ ओ आब विलुप्त छथि। ओ अपन जीवन आ सृजन कें ओहि राजा मे निमज्जित क' देने छथि। दोसर एक समस्या इहो छैक जे एहि प्रश्न कें खोचाड़ने अनेक प्रश्न सब आबि क' उपस्थित भ' जायत। ऐतिहासिक तथ्य साक्ष्य पर आधारित होइत छैक। एना भ' सकैत अछि जे राजा लोकनि रंग-कर्मक जानकार लेखक (स्क्रिप्ट-राइटर) कें अलग सँ नियुक्त करैत हेताह जे राजाक आइडिया, हुनका योजनानुसार, भिप-भिप विद्वान सब सँ गीत ल' ल' क' संपादित क' दैत छल हेतनि। मंचन एहि सँ बिलकुल अलग एक दोसर मामिला छल होयत। वैह मुख्य होइत हएत। एतेक उल्लास, एतेक उत्सवधर्मिता तें ल' क' एेहि मे छैक। ओहि मे उत्सव आदिक विषयक तात्कालिक उत्साह सेहो छैक। मुदा, तैयो ई रचना तँ राजेक कहल जेतैक। एहि विषयक अपसोच तखनहि किछु काजक भ' सकैत छलैक जँ एम्हर मिथिलो मे एही स्तरक रचनाशील माहौल रहल रहितैक!

वंशमणि झा आ चतुर चतुर्भुज

नेपालक संस्कृतिप्रेमी राजा लोकनिक दरबार मे कैक-कैक गोट आश्रित कवि लोकनिक हेबाक सूचना हमरा लोकनि कें विभिप स्रोत सँ प्राप्त होइत अछि। कहबाक

चाही जे ई क्रम बहुत पहिनहि सँ चलैत आबि रहल छल, जाहि मे पन्द्रहम शताब्दीक बाद कवि-नाटककार आदिक आश्रयत्व मे वृद्धि भेल। मकवानी दरबार मे उमापतिक चर्चा हमरा लोकनि पहिनहि क' आएल छी। मोरंग दरबार मे सेहो कैक कविक हेबाक प्रमाण भेटैत अछि जाहि मे भीषम, गंगाधर, गोपीनाथ, जीवनाथ, धीरेश्वर आदि छलाह। प्राचीन गीतक संग्रह सब मे हिनका लोकनिक रचनो भेटैत अछि। मल्ल राजा लोकनिक दरबार मे सेहो यैह क्रम रहल। त्रैलोक्यमल्लक दरबार मे कवि रामचन्द्रक हेबाक सूचना भेटैत अछि। महामहोपाध्याय वंशमणि झा राजा जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रधान साहित्य-सचिव रहथि, से विभिप विद्वान लोकनि लिखलनि अछि। चतुर चतुर्भुज अपन कैरियरक शुरुआत मोरंग नरेश नरनारायणक दरबार सँ कयने छलाह, पछाति जगज्ज्योतिर्मल्लक आश्रय मे आबि गेलाह, आ हुनक निधनक बाद सिद्धिनरसिंहमल्लक दरबार मे चलि गेलाह। काशीनाथ जगत्प्रकाशक आश्रित रहथि जे भूपतीन्द्रक काल धरि ओत्तहि बनल रहलाह। श्रीधर आ द्विज शिवहरि जितामित्रक तथा धनपति आ गणेश भूपतीन्द्रक आश्रित रहथि।

एहि समस्त आश्रित कवि लोकनि मे दू गोटे मुख्य छथि जे रचनात्मक स्तर पर आ नेपाल दरबार मे सांस्कृतिक माहौल बनौने रखबा पर सेहो अपन प्रभावकारी भूमिका राखि सकलाह। ई लोकनि वंशमणि आ चतुर चतुर्भुज छलाह। वंशमणि बेलोंचे मूलक भारद्वाजगोत्रीय मैथिल ब्राह्मण रामचन्द्र आ जयमतिक पुत्र छलाह, जेना कि ओ अपन संस्कृत महाकाव्य 'हरिकेलि' मे स्वयं सूचना देलनि अछि।[49] जगज्ज्योतिक आश्रय मे रहि ओ संगीतशास्त्रक अनेक पुस्तक लिखलनि। डॉ. जयकान्त मिश्र हुनक लिखल दू नाटक 'गीतदिगम्बर' तथा 'मुदितमदालसा'क सूचना देलनि अछि।[50] जगज्ज्योतिक निधनक बाद जखन प्रतापमल्लक आक्रमण बढ़बाक कारण वा दोसरो कारण सँ भक्तपुरक सांस्कृतिक गतिविधि समाप्तप्राय भ' गेल तँ वंशमणि प्रतापमल्लेक आश्रय पकड़लनि, एहि सँ मैथिल पंडित लोकनिक दुर्बल निष्ठाक सेहो एक पक्ष देखार होइत अछि। 'गीतदिगम्बर'क अभिनय राजा प्रतापमल्लक महातुलादानक अवसर पर कयल गेल छल, जेना कि जयकान्त मिश्र सूचित करैत छथि। लेखनाथ मिश्रक लेख मे ओहू रचना सब कें वंशमणिक कृतिक रूप मे गनाओल गेल अछि जे सब कि जगज्ज्योतिर्मल्लक नाम सँ प्रकाशित अछि। एहि पाछू जे मनोविज्ञान अछि तकर चर्चा भइये चुकल अछि। जगत्प्रकाशमल्लक सांस्कृतिक सक्रियताक बाद वंशमणि एक बेर फेर कान्तिपुर दरबार छोड़ि क' भक्तपुर आबि गेलाह। मुदा, रामदेव झाक आकलन छनि जे ताबे धरि ओ ततेक वृद्ध भ' गेल छलाह जे आगू हुनक कोनो नाटक-रचना नहि आबि सकलनि। जगत्प्रकाशक नाट्यकृति 'प्रभावतीहरण' कें सेहो लेखनाथ मिश्र वंशमणिक कृति बतबैत छथि, तकर प्रमाण दैत छथि जे ओकर आरम्भ मे वंशमणिक गीत छनि। ई गीत राजवर्णना थिक। नेपालक नाटक-परंपराक एक चलन छल जे प्रस्तावना मे राजवर्णना (राजा एवं ओकर वंशक प्रशस्ति) तथा देशवर्णनाक गीत देल जाइत छल। एहि भ्रमक निवारण करैत रामदेव झा लिखलनि अछि—'राजा द्वारा रचित नाटक मे आत्मप्रशंसाक दोष सँ बचबाक लेल अन्य कवि द्वारा रचित प्रशस्ति-गीतक समावेश क' देल जाइत छल। एही परिपाटीक अनुसरण करैत 'प्रभावतीहरण' मे वंशमणिक गीतक समावेश कयल गेल अछि।'[52] जगज्ज्योतिक 'हरगौरीविवाह' मे वंशमणिक दू गोट गीतक समावेश कयल गेल अछि। स्वाभविके जे ई गीत शिवविषयक अछि। अर्द्धनारीश्वरक स्तुतिक किछु पाँति देखल जाय—'गगन गगन सम जलधि जलधि सम, ताहि उपमा नहि आने/ जे हर से हरि, जे हरि से हर, एक ओहे रहथि निदाने।।/ एक कर तिरशुल, एक कर सारंग, एक कर डमरु बजावे/ एक कर पंकज धरिए एक भए दुइ तनु लोक देखाबे/ सुकवि वंशमणि नृप जगजोति दुहु, हरिशंकरगुण गाई/ कुराग गान अवस होअ पातक भैरवि तह दुर जाई।'

अपन पुस्तक 'उमापति' मे डॉ. रामदेव झा उमापति तथा चतुर चतुर्भुजक आपसी संबंधक एक उल्लेख कयने छथि। उमापतिक पत्नी मनोरमा खंडवलाकुल वंशक कामदेव ठाकुरक कन्या, जिनकर संबंध पण्डितराय परिवार संग छलनि, एवं प्रकारें 'मनोरमाक माय ओ उमापतिक सासुक माम छलथिन चतुर्भुज।'[53] हुनक प्रवेश मोरंग दरबार मे आ मकवानी दरबार मे पहिनहि सँ छलनि। हिनके माध्यमे हिनक भगिनीक जमाय कोइलखवासी उमापतिक प्रवेश मकवानपुर राजसभा मे भेलनि आ यैह उमापति ओतय 'पारिजातहरण' लिखलनि।'[54]

रघुनन्दन रायक पुत्र चतुर्भुज राय, चतुर चतुर्भुज नामें जानल जाइत छथि। पंजी मे हिनका नाम संग 'माकमानीपातिशाह' विशेषणक प्रयोग कएल गेल अछि जे पाण्डित्यक संग-संग हुनक ऐश्वर्यशाली हेबाक सेहो एक प्रमाण थिक। पहिने तँ ओ मोरंग नरेश वीरनारायणक दरबार मे रहलाह, पछाति जगज्ज्योतिक दरबार मे आबि गेलाह आ तकरो बाद सिद्धिनरसिंहमल्लक आश्रय मे रहलाह।

विभिप प्राचीन संग्रह सब मे चतुर्भुजक गीत संकलित पाओल जाइत अछि। 'रागतरंगिणी', 'भाषागीतसंग्रह' तथा 'रागभजनसंग्रह' मुख्य थिक। हुनक एक टा गीत ग्रियर्सन अपन संकलन 'ट्वेन्टी वन वैष्णव हिम्स' मे संकलित कयने छथि। हुनक समस्त उपलब्ध गीत सभक एकत्र संग्रह डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा 'चतुर चर्तुभुज एवं गीतसप्तदशी' (1969) मे केलनि अछि। 'भाषागीतसंग्रह' मे संकलित एगारह गोट गीत मे सँ एक गीत बांग्ला मे छनि, जकर कारण बतबैत रमानाथ झा कहलनि अछि जे मानसिंह सँ सम्बद्ध हेबाक कारण ओ बंगाली संस्कृति सँ सेहो जुड़ल छलाह। चतुर्भुजक कैक गोट गीत लगनी थिक, तकर अत्यन्त प्रशंसा करैत रमानाथ झा अन्यत्र

लिखलनि—'लगनी मिथिला मे प्रचलित एक गोट प्रसिद्ध गीत थिक जकर दू गोट रूप छल, साहित्यिक जे एम्हर दू सए वर्ष सँ कतेक सत्कवि अपन रचनाक विषय बनौने छथि मुदा एकर दोसर रूप अछि लोकगीत, जाँतपरक लगनी, जे स्त्रीगण श्रमक काज करबाक काल मन कें दोसर दिशि लगएबाक हेतु गबैत छथि। नेपाल मे चतुर्भुज रायक रचित कैक गोट जाँत परक लगनीक स्तर मे गीत भेटल अछि जे मिथिला मे नहि भेटल छल।'[55] एहि बात कें रमानाथ बाबूक ओहि विचार संग जोड़ि क' देखल जा सकैत अछि जतए ओ नेपाल मे कएल गेल काज कें मिथिला सँ कतेको बड़ मूल्यवान माननलि अछि।

नगेन्द्रनाथ गुप्तक 'विद्यापति पदावली' मे एक टा एहन पद पाओल जाइछ जकर भणिता मे विद्यापतिक नामक संग चतुर चतुर्भुजक नामक उल्लेख भेलैक अछि—'भनइ विद्यापति सुन वरनारि।/ चतुर चतुर्भुज मिलित मुरारि।।' एहि उल्लेख पर मन्थन करैत विद्वान लोकनिक एक तबका एहि दिशा मे साक्ष्य ताकब शुरू क' देने छलाह जे चतुर्भुज विद्यापतिक समकालीन छलाह। स्वयं शैलेन्द्रमोहन झाक पुस्तक 'चतुर चतुर्भुजक गीतसप्तदशी' मे एहि विचारक पर्याप्त छाया छैक। मुदा, जखन 'भाषागीतसंग्रह' प्रकाशित (1969) भेल, ठीक वैह पद 'वसुविस पावे हरल पिया मोर। अन्धतनयपिय सखि भेल थोर।।' के भणिता एहि तरहें अंकित देखल गेल—'भनइ विद्यापति एहु रस जान।/ राए शिवसिंह लखिमा देइ रमान।' चतुर्भुजक पद तँ एहनो पाओल गेल अछि जाहि मे एक्कहि संग वंशमणि आ जगज्ज्योतिर्मल्लक समवेत उल्लेख भेल अछि—'नृप जगजोति वंशमणि गाव/ चतुर चतुरभुज जुगुति बुझाव।।' एकर एक अर्थ इहो लगैत छैक जे नृप जगजोति आ वंशमणि वैह लिखैत छलाह जकर युक्ति (आइडिया) चतुर्भुज दैत छलखिन। डॉ. रामदेव झाक अनुमान छनि जे वंशमणियेक सहयोग सँ मल्ल दरबार मे चतुर्भुजक प्रवेश भेल छलनि। हुनकर समाधान छनि जे 'जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ वंशमणि दुहू मिलि कए प्राय: हिनक कवित्वशक्तिक परिचय पयबाक लेल कोनो काव्य-समस्या हिनका देलथिन जकरा ओ गीतक माध्यम सँ पूर्ण कयलनि आ भणिताक चरण मे जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ वंशमणि दुहूक उल्लेख कयलनि।'[56] अस्तु। एहन उल्लेख सब मे परवर्ती लोकनिक अनेको कलाकारी भ' सकैत छैक तें प्रामाणिकताक जाँच लेल कठोर होयब जरूरी। हिनक महत्वक जहाँ धरि प्रश्न अछि, स्वयं रामदेव झा लिखलनि अछि जे 'चतुर चतुर्भज मैथिली ओ संस्कृत, उभय भाषा मे अनवद्य रचना करैत छलाह आ कहक चाही जे 1620 ई.क पश्चात बीस-पच्चीस वर्ष धरि नेपाल उपत्यका मे साहित्यिक क्रिया-कलापक वंशमणिक सूत्रधारत्व मे महान सहयोगी बनल रहलाह। वंशमणि ओ चतुर चतुर्भुज महान स्तम्भ छलाह ओहि कालक नेपालीय मैथिली-साहित्य-मंदिरक।'[57]

चतुर्भुजक कवित्व-विवेचन करैत डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा ठीक लिखलनि अछि जे ओ विद्यापति-गोष्ठी58क कवि छलाह आ हुनक कवि-व्यक्तित्वक आवर्तन मे विद्यापतिक योगदान सुस्पष्ट अछि। विद्यापतिये जकाँ सुनागर कृष्ण तथा वरयौवति राधा हुनकहु कविता मे पार्थिव नायिकाक रूप मे प्रकट भेल छथि। विद्यापतिक भाषा, शब्दचयन, काव्यरीति, स्वरसंगीत सब किछु एक गोट उत्तराधिकारक रूप मे मानू हुनका प्राप्त भेल छलनि। विद्यापति जेना लोकजीवन कें अपन काव्य मे अन्योन्याश्रित क' लेने छलाह तकर स्पष्ट विकास हमरा लोकनि चतुर्भुजक पद सब मे देखि सकैत छी। लगनी आदि तकरे प्रमाण थिक। हुनकर दू टा लगनी-गीत देखल जाय—'तोहें सखि लेहे कंगनमा ओ लेथु हरबा रे।/ दुहुँ मिलि देह मनाएक अपन ओसरबा रे।।/ आज आओत पिअ पाहोन चिर परबसिआ रे/ आन पिसान कैसन होएत/ ओ बड़ रसिया रे।।/ पिसए बैसलि बरकामिनि चौदिस झाँपय रे।/ गुन गबइतें सर गदगद करतल काँपय रे।।' एकरे जोड़ा लागल एक आर लगनी एहि रूपक अछि—'आध वदन तनु आधे ओ आध पयोधर रे।/आँचर वसने झँपाइए गाब मधुार सरे रे।।/ पिसय बैसलि धनि कौतुके समुचित सखि संगे रे।/ दगध मनोज जिआवए अनुखन तनुभंगे रे।।/ पीन पयोधर धर भरें दुहु दुहु पेलए रे।/ मनमथनृपति निदेसे जौबनगज खेलए रे।।/ सेदसलिलें तनु लागल अपरुब अंसुक रे।/ धनि बेकताएल अभिनव नख खत किंसुक रे।।/ चतुर चतुरभुजें गाओल रस बुझ नागर रे।/ कृष्णचरण गुणसागर त्रिभुवन आगर रे।।'

राधा-कृष्णक प्रेम-विषयक जे हुनकर पद सब अछि, ताहू मे कैक ठाम एहि तरहक अभिव्यक्ति भेलनि अछि जकरा सुभाषित जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि—'भनइ चतुरभुज भज जे जाही/ बड़ नहि परिहर लघु दोसे ताही।' संबंध-निर्वाहक लेल आत्मीयजनक छोट-छोट दोष (अपराध) कें क्षमा क' देब कतेक जरूरी होइत छैक, से हम सब गोटे जनैत छी। तखन ई बात भिप जे विद्यापतिक जे अपन अपूर्व सूक्ष्मता छलनि, जकरा दोसर शब्द मे हुनकर विद्यापतित्व कहि सकैत छी, तकरा लग-पास धरि पहुँचब कोनो आन कवि बुतें संभव नहि भ' सकैत छलनि।

सन्दर्भ

1. रमानाथ झा/ भूमिका/ भाषागीत-संग्रह/ पृ. 'ए'
2. भीमनाथ झा/ मैथिली साहित्य आ नेपाल/ विमर्श/ पृ. 158
3. रमानाथ झा/ उपर्युक्त/ पृ. अ आ
4. रमानाथ झा/ विद्यापति/ पृ. 63
5. रामदेव झा/ प्रस्तावना/ हरगौरीविवाह/ पृ. 2

6. रामदेव झा/ जगज्ज्योतिर्मल्ल/ पृ. 10
7. उपर्युक्त/ पृ. 10–11
8. राधाकृष्ण चौधरी/ मिथिलाक इतिहास/ पृ. 117
9. पं. गोविन्द झा/ अतीतालोक/ पृ. 91
10. रमानाथ झा/ भाषागीत-संग्रह/ पृ. ओ
11. उपर्युक्त/ पृ. इ
12. उपर्युक्त/ पृ. आ
13. हंसराज/ नेपालक मैथिली काव्य/ मैथिली काव्यक विकास (साहित्य अकादेमी)/ पृ. 75
14. सुकुमार सेन/ विद्यापति-गोष्ठी/ पृ. 64
15. रामदेव झा/ जगज्ज्योतिर्मल्ल/ पृ. 20
16. उपर्युक्त/ पृ. 85–86
17. रामदेव झा/ जगत्प्रकाशमल्ल/ पृ. 17
18. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन/ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 58
19. सुकुमार सेन/ विद्यापति-गोष्ठी/ पृ. 64–65
20. पद सब मैथिली अभिलेखगीतमाला (संपादक डॉ. जयमन्त मिश्र) मे संकलित अछि।
21. डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा/ सिद्धिनरसिंहमल्ल/ पृ. 5–6
22. उपर्युक्त/ पृ. 4–5
23. सुकुमार सेन/ विद्यापति-गोष्ठी/ पृ. 65
24. डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा/ उपर्युक्त/ पृ. 8
25. उपर्युक्त/ पृ. 8–9
26. हरिश्चन्द्रनृत्यम्/ विश्वम्भर फाउन्डेशन/ पृ. 24
27. डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा/ सिद्धिनरसिंहमल्ल/ निवेदन/ पृ. ग
28. उपर्युक्त/ पृ. 16
29. डॉ. रमानन्द झा रमण/ नेपाल मे मैथिली साहित्यक दशा आ दिशा/ भजारल/ पृ. 123
30. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन/ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 63
31. उपर्युक्त/ पृ. 61
32. रमानाथ झा/ भाषागीत-संग्रह/ पृ. 175
33. सुकुमार सेन/ विद्यापति-गोष्ठी/ पृ. 60–61
34. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन/ नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 45
35. डॉ. रामदेव झा/ उमापति/ पृ. 62
36. डॉ. रामदेव झा/ जगत्प्रकाशमल्ल/ पृ. 18
37. उपर्युक्त/ पृ. 39
38. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 54
39. डॉ. रामदेव झा/ जगत्प्रकाशमल्ल/ पृ. 107
40. उपर्युक्त/ पुस्तकक बैककवर पर अंकित 1
41. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास (1998)/ पृ. 54
42. नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 54
43. मैथिली शैवसाहित्य (डॉ. रामदेव झा) मे उद्धृत/ पृ. 300–301
44. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 138
45. उपर्युक्त/ पृ. 156
46. डॉ. सुकुमार सेन/ विद्यापति-गोष्ठी/ पृ. 62
47. पं. गोविन्द झा/ अतीतालोक/ पृ. 93
48. रमानाथ झा/ भूमिका/ भाषागीत-संग्रह/ पृ. इ
49. डा. लेखनाथ मिश्र/ म.म. वंशमणि झा/ मिथिला भारती/ 1/3–4 (1969)/ पृ. 215
50. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 159
51. डॉ. रामदेव झा/ जगत्प्रकाशमल्ल/ पृ. 27
52. उपर्युक्त/ पृ. 26
53. डॉ. रामदेव झा/ उमापति/ पृ. 32
54. उपर्युक्त/ पृ. 32
55. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड 2/ पृ. 23
56. डॉ. रामदेव झा/ प्राक्कथन/ मैथिली प्राचीन गीतावली/ पृ. 71
57. डॉ. रामदेव झा/ उपर्युक्त/ पृ. 75
58. 'विद्यापति-गोष्ठी'क अर्थ अछि—विद्यापतिक प्रभामंडल मे अबैबला, हुनके भाव, बोध आ लालित्य सँ प्रभावित भ' लेखन केनिहार कवि-समुदाय। एहि शब्द-युग्मक आदि-प्रायोजक डॉ. सुकुमार सेन छथि जे बांग्ला मे अपन पुस्तक 'विद्यापति-गोष्ठी' लिखलनि। एहि पुस्तकक हिन्दी अनुवाद डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा कयने छथि।

    अपन पुस्तकक भूमिका मे सुकुमार बाबू लिखने छथि—'तेरहवीं शताब्दी से लेकर सतरहवीं शताब्दी तक, प्राय: पांच सौ वर्षों की अवधि में मिथिला-मोरंग एवं नेपाल के राजाश्रय में जिस साहित्य की सृष्टि हुई थी, विद्यापति-रहस्य के ग्रन्थिमोचन के लिए यहाँ मैंने उसके धारावाहिक इतिहास को देने की चेष्टा की है। साथ ही मैंने बंगाल के साथ इन समस्त देशों का जो घनिष्ठ संबंधसूत्र था उसे भी व्यक्त करने का प्रयास किया है।' (पृ. क)

    अपन पुस्तकक समापन ओ एहि अनुच्छेद सँ कयने छथि—'मैथिली-ब्रजबुलि पदावली आरम्भ से ही सामयिक क्षणभंगुर साहित्य नहीं है। इसमें अमरत्व का बीज निहित है। यही कारण है कि प्रारम्भिक तुच्छ रचनाओं के बोझ को छोड़कर केवल ये सभी ही अनेक शताब्दियों की धारा से बहकर आधुनिक-काल के घाट पर आ लगे हैं। हमारी यह जिम्मेदारी है कि इन्हें भविष्य के बन्दरगाह तक पहुँचा दें।' (पृ. 80)

गोविन्ददास आ मनबोध

मध्यकालीन मैथिली कविताक इतिहास मे, विद्यापतिक परवर्ती जे दू गोट महान कवि मानल जाइत छथि, ताहि मे सँ एक गोविन्ददास (सोलहम शताब्दी) छथि तँ दोसर मनबोध (अठारहम शताब्दी)। एहि दुनू गोटे कें आम तौर पर अलग-अलग देखल जाइत छनि। एक जँ विद्यापतिक परम्परा मे आगू सर्वाधिक प्रतिभाशाली कवि भेलाहट्ठ तँ दोसर कें ई श्रेय देल जाइत छैक जे ओ विद्यापतिक परम्पराक अतिक्रमणक सुन्दर प्रयास केलनि। गोविन्ददासक काव्यकर्म कें पूरा महत्व दैतो हुनका संबंध मे पंडित गोविन्द झा (गोविन्ददास पर मोनोग्राफक लेखक) लिखलनि—'गोविन्ददास मे मौलिकता ताकनिहार कें एतबा स्पष्ट रूपें बूझि लेबाक होयतनि जे गोविन्ददास पूर्णत: परम्पराक पथिक छलाह। धर्म हो, कि जीवन-दर्शन हो कि काव्य हो, कतहु ओ प्रगतिशील वा क्रान्तिकारी नहि छथि। प्रत्युत हुनका रूढ़िवादी कही तँ अनुचित नहि होयत।'[1] दोसर दिस, अपन इतिहास-पुस्तक मे प्रो. मायानन्द मिश्र मनबोधक संबंध मे लिखलनि—'मनबोध मध्यकालीन मैथिली काव्यक एक टा क्रान्तिकारी कवि छथि। मनबोध मैथिलीक मध्यकालीन वर्गीय परम्पराक विपरीत पुन: जनकाव्य-परम्परा ठाढ़ करबाक चेष्टा कयलनि।'[2] मुदा, तखनहु दुनू कें एक संग देखब एहि दुआरे जरूरी अछि जे मैथिलीक जातीय कविताक आन्तरिक संघर्ष कें हम सब बूझि पाबी जे काव्यक एक रूप जखन अपन लगातार चर्वितचर्वण आ कलाकारीपूर्ण कथितकथन सँ अपन चमक हेरा बैसैत अछि तँ युगक कोनो प्रतिभाशाली कवि जातीय कविता सभक प्रयोगशाला सँ एक भिप रूपक काव्य ल' क' कोना प्रकट होइत अछि, आ गतिहीनता, एकर एक तात्पर्य मृत्युओ अछि, सँ कविताक रक्षा करैत अछि।

गोविन्ददास

मैथिली कवि गोविन्ददासक जखन हम बात करैत छी तँ स्पष्ट बुझबाक थिक जे वैह गोविन्ददास जिनका बंगालक कविता-परम्परा मे ब्रजबुलिक महान कविक दरजा भेटल छनि आ चैतन्य परम्परोक्त भक्ति-मार्ग मे प्रमुख आचार्य लोकनिक सूची मे

जयदेव आ विद्यापतिक बाद गोविन्ददासेक नाम अबैत छनि। स्वयं डॉ. सुकुमार सेन अपन पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर' (1935) मे गोविन्ददासे कें सब सँ प्रमुख स्थान देने छथिन, विद्यापति कें नहि, कारण ताबे धरि विद्यापतिक मैथिल आ मैथिली कवि हेबाक तथ्य संपुष्ट भ' गेल छलैक, सुकुमार बाबूक परवर्ती लेखन, आ कि कमोबेश ओहू लेखन मे हुनका मोनक ई मलाल देखार पड़ि रहल अछि, मलाल ई जे मैथिलीक एक कवि विद्यापति, एते शताब्दी धरि, बंगालक कविता कें अपना पाछू-पाछू चलौलनि। मजेदार बात ई छैक जे एहि पुस्तक (हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर) मे प्रकाशित भेलाक एक दशक पहिने इहो तथ्य बंगालक विद्वज्जनक समक्ष उद्घाटित भ' गेल छल जे गोविन्ददास सेहो बंगाली नहि अपितु मैथिल छथि। आ ई तथ्य क्यो आन नहि, स्वयं नगेन्द्रनाथ गुप्त सामने अनने छलाह। हुनक लेख 'मिथिलार कवि गोविन्ददास' बांग्ला मासिक वसुमती (1924) के कार्त्तिक अंक मे प्रकाशित कयल गेल छल। पुन: पुन: एहि तथ्य कें ओ अपन अलग-अलग लेख सब मे दोहरौलनि जे बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका भाग 35 (1928) तथा मॉडर्न रिव्यू (जुलाई, 1930) मे छपल। सुकुमार सेनक परवर्ती पुस्तक 'विद्यापति-गोष्ठी' मे एहि निष्कर्षक प्रति एक टा सूक्ष्म अवज्ञा-भाव देखल जा सकैत छथि, मुदा ठामहि मन मसोसि क' रहि जेबाक लचारी सेहो देखाइत छैक।

गोविन्द बाबूक पुस्तक 'गोविन्ददास' मे एहि बातक संभावना देखल गेल अछि जे नगेन्द्रनाथ गुप्त कें एहि तथ्यक सूत्र चन्दा झा सँ तहिये भेटल छलनि जखन ओ विद्यापतिक खोज मे मिथिला मे आबि हुनका संग कयने गाम-गाम घूमि रहल छलाह। मुदा चन्दा झा कें ई सूत्र कतय सँ भेटल छलनि? रमानाथ झाक कहब छनि जे गोविन्ददासक पद सब हुनका (चन्दा झा कें) मिथिला मे भेटल रहनि। मुदा वास्तविक स्थिति ई छल जे मिथिला मे गोविन्ददास एकदम्मे प्रचलित नहि रहथि। तकर प्रत्यक्ष प्रमाण थिक जे ग्रियर्सनक कुल्लम संकलन मे गोविन्ददासक एकहु टा पद शामिल नहि अछि, जखन कि मनबोधक प्रबन्धकाव्यक दस अध्याय ओ संकलित कयने छथि। रमानाथ झा अपन लेख सब मे दू तरहक परस्पर विरोधी बात कहलखिन, एक तँ मिथिला मे हुनकर गीत सब प्रचलन मे नहि रहनि, दोसर जे ई गीत सब चन्दा झा कें मिथिला मे भेटलनि। कामवीनाथ झा किरण एही बात कें पकड़लनि अछि।

बांग्लाक वैष्णव पदावली सब मे गोविन्ददासक पद संकलन कयल जायब 1660-70क आसपास शुरू भ' चुकल छल, जेना कि गोविन्द झा अपन पुस्तक मे सूचना देलनि अछि। ई संकलन 'रसमंजरी' छल। एकर बाद तँ संकलित तमाम संग्रह मे ओ पाओल जाइत छथि। मुद्रित भ' क' प्रकाशित भेल पहिल संकलन गोविन्द झाक सूचनानुसार 'पदकल्पतरु' थिक जे 1914 मे प्रकाशित भेल। किरण जीक

सूचना-सूत्र भिप अछि। ओ पहिल संकलन 'वैष्णव-पद-लहरी'क उल्लेख करैत छथि जे दुर्गादास लाहिड़ीक संपादन मे 1905 मे बंगवासी कार्यालय सँ प्रकाशित भेल रहय। अन्यत्र पंडित गोविन्द झा एहि वैष्णव पद लहरीक उल्लेख अपन लेख सब मे कयनहु छथि। चन्दा झाक निधन 1907 मे भेलनि। किरण जीक संकेत छनि जे चन्दा झा कें लाहिड़ीक ओ संकलन देखल रहनि आ 'गोविन्द दास कवि मैथिल छथि जे नवद्वीप मे जा बसलाह आ बहुतो पदावली लिखलनि'—ई सूचना हुनका जनश्रुति मे भेटल हेतनि तें ओ एहि विषय दिस बेसी जागरूक भेल हेता आ तखने ई संग्रह हुनका हाथ एलनि। रमानाथ झाक समय मे चन्दा झाक हाथक उतारल गोविन्द गीतावलीक प्रति राजपुस्तकालय दरभंगा मे उपलब्ध छल। देवनागरीमे 'गोविन्द गीतावली'क प्रथम, प्रकाशन 1932 मे पुस्तक भंडार, लहेरियासराय सँ भेल, जकर संपादक राज पुस्तकालयक पुस्तकाध्यक्ष मथुरा प्रसाद दीक्षित छलाह। दीक्षित जी पर रमानाथ झाक आरोप छनि जे एक तँ चन्दा झाक संकलनक ओ तृतीयांशे लेलनि, दोसर बांग्ला संग्रह सँ लिप्यन्तरित क' क' आरो पद सब ल' लेलनि, तेसर आरो आर जे गोविन्द नामधारी कवि लोकनि मिथिला मे विभिप काल मे भेलाह अछि, सभक गीत कें, बिनु परीक्षणक एहि मे शामिल क' लेलथिन।[3] 1939 मे स्वयं रमानाथ झा 'शृंगारभजन-गीतावली' प्रकाशित केलनि जकरा बारे मे कहल गेल जे चन्दा झाक संग्रह सँ स्वयं डॉ. अमरनाथ झा एकरा उद्यमपूर्वक उतारि रमानाथ झा कें उपलब्ध करौने छलखिन। काञ्चीनाथ झा किरण एहि बात पर सन्देह करैत छथि। हुनक कहब छनि जे जँ ई सत्य रहैत तँ एहि संग्रहक लेल डॉ. अमरनाथ झा भूमिका अवश्य लिखने रहितथि। डॉ. किरण उदाहरण द' क' बतौलनि जे एहि मे संकलित गीत सब मथुरा प्रसाद दीक्षितक पाठ सँ किञ्चित हेर-फेर क' क' ल' लेल गेल अछि।[4] कुल मिला क' स्थिति यैह स्पष्ट होइत छैक जे गोविन्ददासक गीत सब बंगाल सँ मिथिला आएल, यैह सत्य थिक ने कि ई जेना रमानाथ झा कहैत छथि जे 'एकरे (चंदा झाक संग्रहक) एक प्रति प्राय: बंगाल गेल जाहि मे आओरो आओरो बांग्लाक गोविन्ददास-भणिताक गीत सब मिलाए शद्धो गीतक बांग्ला स्वरूप बनाए बंगालक संस्करण सब भ' गेल।'[5] स्वयं गोविन्द झा लिखलनि अछि जे बांग्लाक वैष्णव पदावली सब मे गोविन्ददासक गीतक संकलन 1660-70क दशके सँ शुरू भ' गेल छल। तें रमानाथ बाबूक ई अतिकथन निरर्थक छनि। मुदा, डॉ. किरण दोसरो बात कहैत छथि—'नगेन्द्रनाथ गुप्त तँ गोविन्ददासक गीत मिथिला मे पाबि मैदान मे फानि पहुँचतथि। ओ कथमपि बंगाली कविक गीत कहि प्रकाशित नहि होबय दितथि।'[6] नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग रहथिन जस्टिस सारदाचरण मित्र। जँ ई पद सब चन्दा झा सँ ओ लोकनि लेने रहितथि जे पश्चात् प्रकाशन हेतु दुर्गादास लाहिड़ी कें देलखिन आ से दुर्गादास धन्यवादक तँ

कोन कथा जे हुनक नामक चर्चो नहि केलखिन, डॉ. किरणक अनुसार 'एहन कथा बाजब तँ सहजहिं जे एकर कल्पनो पाप थिक।'[7]

मिथिला मे गोविन्ददासक पद सब किएक प्रचलित नहि छल, एकर कारण ताकब कनेको कठिन नहि अछि। पहिल तँ कारण छल हुनक कविताक भाव-गरिष्ठता जे विद्यापतिक गीतक ठीक विपरीत छल, दोसर ओहि मे जे ध्वनि-संगीत छल से वैष्णव कीर्त्तन मंडली मे गाओल जेबाक लेल उपयुक्त छल आ एम्हर मिथिला मे ने वैष्णवधर्मक कोनो चलन छल ने एहन कीर्त्तनमंडलीक। तेसर जे विद्यापति जीवन भरि मिथिला मे बसलाह आ हुनक गीतक प्रचार हुनक जीवनकाले मे, पर्याप्त रूप सँ जारी रहल, दोसर दिस गोविन्ददासक सम्पूर्ण जीवन नवद्वीप (बंगाल) मे बितलनि। वैष्णवधर्म मध्यकालीन मिथिलाक लेल कतेक भयंकररूपें त्याज्य छल, तकर कारण प्रो. मायानन्द मिश्र अपन इतिहास-पुस्तक मे बतौलनि अछि—'अस्पृश्य जातिक दक्षिण भारतक आलवार भक्त लोकनि तथा वज्रयान सँ विकसित बंगाल-उड़ीसाक सहजयानी वैष्णव लोकनि, वर्णव्यवस्थाक प्रति विरोधे टा नहि, विद्रोह भाव सेहो रखैत छलाह। ई वर्णविद्रोह भाव मिथिला कें स्वीकार्य नहि भ' सकैत छल। वल्लभाचार्य (1478-1530) एहि वैष्णवबोधकें विशेषत: कृष्णभक्ति कें भागवत पुराणक शास्त्रीयता दैत दक्षिण भारत सँ उत्तर भारत मे अनलनि। मिथिला छोड़ि समस्त उत्तर भारत मे मान्यो भेल। मिथिला वैदिक परम्पराक भूमि छल जकरा वैष्णव भक्ति अनुकूल नहि छल, अनुकूल छल कर्मकाण्ड ओ वर्णाश्रम। किन्तु अठारहम शताब्दीक पश्चात् विजातीय आक्रमणक प्रभाव जखन मिथिलाक संस्कृति कें प्रभावित कर' लागल जकर संवाहक सामंतवाद छल तँ हारि क' वैष्णवमत स्वीकार कर' पड़ल ताधरि वैष्णवमतक वर्णविद्रोही स्वभाव मलिन पड़ि गेल छल।'[8] डॉ. दिनेश कुमार झा अपन इतिहास-पुस्तक मे एक अन्य कारणक उल्लेख केलनि अछि—'आश्रयदाता राजाक अभाव।' ई कारण हास्यास्पद तँ अवश्य अछि मुदा मैथिली कविताक संकीर्ण चयन-बुद्धि कें नांगट सेहो करैत अछि जे एहि प्रान्त मे 'लोकप्रिय' अथवा संग्रहणीय ओकरे टा मानल जायत जे कोनो राजाक आश्रयत्व मे लिखल गेल हो।

मायानन्द मिश्रक एहि कथनक सूत्र पकड़ि क' इहो बूझब आसान भ' जाइत छैक जे बीसम शताब्दीक आरम्भ मे जखन बंगाली विद्वान लोकनि घोषित क' देलनि जे गोविन्ददास मैथिल छलाह तँ मिथिलाक तत्कालीन पंडित लोकनि किएक हुनका येनकेन प्रकारेण अप्पन साबित करबाक लेल सपद्ध भ' गेलाह। उपरका दृष्टान्त सँ हमरा लोकनि इहो पता पाबि सकैत छी जे एहन-एहन उत्साहक अवसर पर कोना आलोचना स्वयं उपन्यासो सँ बेसी कल्पना-प्रिय भ' उठैत छैक! वैष्णवमतक विद्रोही स्वभाव आब मलिन, निर्विष, दन्तहीन भ' चुकल छल। आब ओ व्यक्ति—

गोविन्ददास—महापुरुष रूप मे ख्यात एहि जातिक गौरव बढ़ा सकैत छलाह। एहि समस्त प्रक्रियाक एक चित्र पंडित गोविन्द झा एहि तरहें घिचलनि अछि—'बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग कविवर चन्दा झा जखन विद्यापतिक गीतक संग्रह करैत रहथि तखन हुनका हाथ मे बंगाल मे प्रकाशित वैष्णव पदावली सभक पोथी अवश्य आएल होएत। ओहि मे हुनका गोविन्ददासक गीत सभक भाषा विद्यापतिक भाषाक परम निकट बुझेलनि। तें एकरा सब कें मैथिलीक रचना बूझि ओ एक पोथा मे उतारैत गेलाह। एहि क्रम मे हुनका मिथिलाक इतिहास मे गोविन्ददास नामक एक एहन व्यक्ति भेटि गेलथिन जे सुविधापूर्वक ओहि गीत सभक रचयिता मानल जाए सकथि।—–चन्दा झाक उक्त पोथाक गीत सब कें रमानाथ झा 'शृंगारभजन–गीतावली'क नाम सँ प्रकाशित कयलनि आ गहन अनुसन्धान द्वारा एहि गोविन्ददासक विस्तृत परिचय दैत ई प्रतिपादित कयलनि जे यैह गोविन्ददास झा वैष्णव गीत सभक रचयिता थिकाह आओर एहि गीत सब मे प्रयुक्त भाषा तथाकथित ब्रजबुलि नहि, शुद्ध मैथिली थिक।'[9]

एहि विषय पर विद्वान लोकनिक बीच पर्याप्त तर्क वितर्क भ' चुकल अछि जे मिथिलाक चारि टा तथा बंगालक छव टा कुल दसटा गोविन्द नामधारी कवि लोकनि मे सँ एहि पद सभक रचयिता के गोविन्द छलाह! चन्दा झाक जे खोज छलनि, विद्वान लोकनिक बहुमत ताही दिस अछि। तदनुसार कुजौलिबार–भखरौली मूलक मैथिल ब्राह्मण गोविन्ददास झाक जनम 1570 ई.क आसपास रैयाम (मधुबनी) गाम मे भेल छलनि।'दास' लागल विचित्र सन नाम एहि महामहोपाध्याय मैथिल ब्राह्मणक किएक छलनि, एहि बारे मे गोविन्द झाक कहब छनि जे हुनकर पितामहेक समय मे ई परिवार वैष्णव भ' गेल छल, तें शुचिकर झाक बालक शिवदास झा भेलाह आ तिनक बालक कृष्णदास झा। एहि कृष्णदासक चारि पुत्र—गंगा, गोविन्द, हरि तथा राम—मे सँ चारूक नाम मे दास लागल भेटैत अछि। पंजी-ग्रन्थ मे गंगादासक बालक सभक जे नाम आएल अछि, ओहि मे सँ किनकहु संग दास लागल नहि भेटैछ। एहि तरहें वैष्णव धर्मधारणाक ई क्रम कुजौलिवार वंशक एहि परिवार मे मात्र तीनि पीढ़ी धरि चलल। पंजी मे सेहो उल्लेख अछि आ अन्यत्रे साक्ष्य भेटैत अछि जे ई चारू भाइ कवि छलाह। जेठ भाइ गंगादासक दू गोट काव्यकृतिक सूचना चन्दा झा दैत छथि जे अद्यावधि प्राप्त नहि भेल अछि, मुदा छोट भाइ रामदासक 'आनन्दविजय' नाटक तँ सुविदित अछि। हरिदासक एक गीत रागतरंगिणी मे संकलित भेटैत अछि, जखन कि गोविन्ददास ओतय संकलित नहि छथि।

ई मैथिल वैष्णव गोविन्ददास नवद्वीप कोना पहुँचलाह, ताहि संबंध मे पंडित गोविन्द झाक कहब छनि जे हुनक व्यक्तित्व त्रिमुखी रहनि। एक्कहि संग दुद्धर्ष नैयायिक, प्रगाढ़ कृष्णभक्त आ विलक्षण कवि–प्रतिभासम्पप।न्यायशास्त्रेक अभिज्ञताक

कारण हुनका महामहोपाध्यायक पदवी भेटल रहनि। सोलहम शताब्दीक अंत अबैत-अबैत हमरा लोकनि देखैत छी जे न्यायक ज्ञान-तीर्थ जे पहिने मिथिला छल, आब, रघुनाथ शिरोमणि (1477-1547)क बादे सँ आब नवद्वीप भ' गेल छल। गोविन्द बाबू कहैत छथि—'खूब संभव जे महत्वाकांक्षी गोविन्ददास 1590 ई.क आसपास अध्ययनार्थ नवद्वीप गेलाह आ ओतए महाप्रभु चैतन्यदेव द्वारा प्रवर्तित अभिनव वैष्णव सम्प्रदायक सरस धारा मे प्रवाहित भए आजीवन ओतहि रमि गेलाह आ प्राय: घूरि कें कहियो घर नहि अयलाह। प्राय: एही कारणें मिथिलाक लोक अपन एहि आजीवन-प्रवासी कें बिसरि गेल।'[10] एहि बिसरबाक प्रमाण थिक जे नवीन संग्रह कें तँ के कहय जे पुरानो कोनो संग्रह मे गोविन्ददास संकलित नहि छथि। गोविन्द नामक क्यो कवि जँ भेटितहु छथि तँ जाँचोपरान्त ओ कोनो दोसर गोविन्द प्रमाणित होइत छथि, गोविन्ददास नहि।

देवनागरी मे प्रकाशित एहन संग्रह सब जाहि मे गोविन्ददास कें मैथिल, मैथिली कवि मानल गेल अछि, संख्या मे प्रमुखत: पाँच अछि। मथुराप्रसाद दीक्षितक संग्रह 'गोविन्द-गीतावली'क चर्चा ऊपर भ' चुकल अछि। एहि मे 360 पद अछि। एहि पोथीक संग महामहोपाध्याय गंगानाथ झाक सम्मति सेहो प्रकाशित अछि। मुदा, एकर सब सँ पैघ समस्या ई छैक जे एकर उल्लेख कत्तहु नहि छैक जे ई गीत सब दीक्षित जी कें कोना, कोन स्रोत सँ भेटलनि। रमानाथ झा द्वारा संपादित 'शृंगारभजन-गीतावली'क चर्चा सेहो ऊपर भेल अछि। ई पहिने रमानाथ झा द्वारा संपादित त्रैमासिक पत्रिका 'मैथिली साहित्यपत्र' मे 1936 सँ 1938 धरि धारावाहिक प्रकाशित भेल, पाछाँ 1939 मे दू भाग मे छपि क' आएल। पहिल भाग मे 160 तथा दोसर भागमे 169 गीत रहैक। बाद मे एकर समेकित प्रकाशन (प्राय: 1946 मे) सेहो भेल, जाहि मे संकलित गीतक संख्या 335 बताओल जाइत अछि। बाद मे मैथिली मंदिर, दरभंगा सँ सुरेन्द्र झा सुमन संपादित 'गोविन्द गीतावली' प्रकाशित भेल, जकरा मादे कहल गेल जे हुनकर समस्त उपलब्ध गीत एहि मे आबि गेल अछि। कुल गीतक संख्या 340 अछि। पंडित गोविन्द झा द्वारा संपादित अर्थ-व्याख्या-सहित संस्करण 'गोविन्ददास भजनावली'क नाम सँ 1982 मे मैथिली अकादमी सँ छपल। एहि मे 120 गीतक व्याख्या अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना सँ, बीस वर्ष धरि अर्ध मुद्रितावस्था मे रहलाक पछाति 2001 मे नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार संपादित 'गोविन्द-गीतावली' सुविस्तृत भूमिका तथा अर्थसहित प्रकाशित भेल जाहि मे 368 गीत अछि। विद्यालंकार जी गोविन्ददास कें विद्यापतिक समकालीन श्रीधरदासक कुल मे उत्पप मैथिल कायस्थ मानैत छथि, मुदा काल-निर्धारण कें ल' क' प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य सब एहि मतक विरुद्ध जाइत अछि।

रमानाथ झा सहित मैथिलीक अनेको विद्वान आलोचक गोविन्ददासक गीतक

विशिष्टता सभक चर्चा कयने छथि। स्वयं गोविन्ददासक कविता सँ पता लगैत अछि जे ओ विद्यापति कें अपन काव्य-गुरु मानैत छलाह, मुदा एक योग्य शिष्यक अनुरूपे ओ हुनकर अनुसरण नहि केलनि अपितु विकास केलनि। एहि ठाम ध्यान रखबाक बात इहो अछि जेना कि पंडित गोविन्द झा कहैत छथि—'गोविन्ददास भाषा ओ शिल्प मे भनहि मतिमान कविपति विद्यापति सँ प्रभावित होथु, भनहि हुनक अनुकरण पर किछु गीत लिखने होथु, परन्तु हुनक भक्तिभावनाक आ वैष्णव दर्शनक प्रेरक विद्यापति नहि छलाह, से छल होयताह रूपगोस्वामी जे महाप्रभुक भक्तिरस-दर्शन कें शास्त्रबद्ध कयल।'[11] विद्यापतिये जकाँ ओ रागताललयाश्रित प्रेमगीत लिखलनि, मुदा विद्यापतिक गीत मे जतय लौकिक शृंगार रसक परिपाक भेल अछि, गोविन्ददास अपन समस्त गीत सुसंकेतित रूप सँ राधा-राधाकृष्णक प्रेमविषयक लिखलनि, जे मधुरा भक्तिक अनुरूप छल आ तें हुनका द्वारा प्रयुक्त रस कें शृंगार रस नहि, मधुर रस मानल गेल अछि। विद्यापतिक गीत सब मे जतय हम सब प्रसाद गुणक प्रमुखता पबैत छी तकर विपरीत गोविन्ददासक काव्य मे ध्वनिक प्राचुर्य, व्यंग्यक प्रधानता अछि। रमानाथ झा हुनकर काव्य कें संस्कृत कवि भारविक कविताक समान मानैत छथि जे अपन अर्थ-गौरवक लेल विशिष्ट मानल जाइत छथि मुदा सामान्य सकल पाठकक लेल दुरूह। गोविन्ददासक एहि काव्य-दुरूहताक मुख्यत: दू कारण रहल अछि। एक तँ हुनक पांडित्य, ताहू मे न्यायशास्त्रक। ई सही थिक जे पांडित्यबला लोक कें सरल, प्रसादगुणयुक्त भाषा लिखबाक लेल सतत अभ्यास करय पड़ैत छैक जकर हुनका मे अभाव छलनि। एहि रूपक भाषा लिखबाक पाछू विद्वान लोकनि कारण बतौलनि अछि जे ओ परभाषा-भाषी लोकनिक बीच 'अपन भाषा' मे लिखि रहल छलाह, तें भाषाक तत्समबहुलताक प्रति अतिरिक्त आयासशील देखल जाइत छलाह जाहि सँ हुनक रचनाक स्वीकार्यता सर्वभारतीय भ' सकय। दुरूहताक दोसर कारण थिक जे चैतन्य महाप्रभुक मधुराभक्तिक अनेक सम्प्रदायगत विशिष्टता छलनि, जाहि पर आगू सिद्धान्तग्रन्थ (भक्तिरसामृतसिन्धु) आ काव्यशास्त्र (उज्ज्वलनीलमणि) सेहो लिखल गेल छल। गोविन्ददासक निज सम्प्रदायक आंतरिक अवधारणा-गत परिभाषिकी आ तकनीक सँ अवगत नहि रहने सेहो हुनक काव्य-बोध मे पाठक कें दिक्कत होइत छनि। दुरूहताक किछु आर कारण रमानाथ झा बतबैत छथि—'तद्भव शब्दक प्रचुरतया प्रयोग करब जाहि मे कतोक शब्द सर्वथा अभिनव रूपें तद्भव बनाओल गेल अछि। अर्थबोधक हेतु आवश्यक पद यथा क्रियापद, तकरा छोड़ि देब, एकहि गीत मे कए व्यक्तिक उक्ति देब, जाहि मे कोन अंश वा कतबा अंश ककर उक्ति तकर कोनो संकेत नहि रहब, भगवल्लीलाक घटना-विशेष अथवा स्थिति-विशेषक वर्णन जे जनसाधारण कें बूझल नहि रहब, अपनहि सँ अर्थक अनुरूप ध्वनिक शब्द बनाए ओकर प्रयोग करब इत्यादि।'[12] विद्यापति सँ अन्यो अर्थ मे हुनक पृथकता छनि। विद्यापतिक दृष्टि जतय बहुमुखी (जाहि मे सम्पूर्ण 'लोक' आबि गेलनि अछि) छलनि ओतहि गोविन्ददासक दृष्टि एकमुखी छनि, अर्थात् अपन आराध्यदेव राधाकृष्णक प्रणय-लीला पर, जे कि एक भक्तक हिसाबें उचिते कहल जाएत। दोसर, जतए विद्यापतिक परिवेश ग्रामीण छनि ओतहि गोविन्ददासक नागर। हुनक काव्य-भाषा कें ल' क' रमानाथ झा एक महत्त्वपूर्ण बात ई कहलनि अछि जे चैतन्यसम्प्रदायक अन्यान्य कवि लोकनिक भाषा मे जतए विद्यापतिक भाषाक अनुकरण अछि, ओतहि गोविन्ददासक भाषा 'विद्यापतिक गीतक भाषाक अनुकरण नहि थिक प्रत्युत वैह थिक।'[13] वैह अर्थात मैथिली। ई बात उचित एहू दुआरे लगैत छैक जे गोविन्ददासक नेनपन आ किशोरावस्था मिथिला मे बितल रहनि आ भाषा अर्जित करबाक निर्णायक समय यैह होइत छैक। तें, ब्रजबुलि कविक रूप मे नहि, मैथिली कविक रूप मे ओहिना गोविन्ददासोक अध्ययन कयल जाएब उचित थिक जेना विद्यापतिक कएल जाइत अछि। एहिठाम इहो विचारणीय जे मैथिलीक अनुकरण पर ब्रजबुलिक प्रचलन कें निर्णायक रूपें अमल मे अनबाक दिशा मे गोविन्ददासक काज स्वयं चैतन्यसम्प्रदायो मे मीलक पाथर छलनि, यद्यपि कि एहि विषय मे कोनो उल्लेखनीय शोध एखन धरि नहि भेल अछि। एक बात इहो ध्यान देबा योग्य अछि जे बंगाल मे गोविन्ददासक समकालीन अथवा हुनकर परवर्ती वैष्णव कवि लोकनि राधाकृष्णक संग-संग अपन-अपन सम्प्रदायक महान आचार्य लोकनि, यथा स्वयं चैतन्य आ हुनक उत्तराधिकारी लोकनिक स्तुति मे सेहो गीत लिखलनि। एहि प्रकारक साम्प्रदायिक गीतक गोविन्ददास लग मे सर्वथा अभाव अछि। विद्यापतिक प्रशंसा मे जे हुनक लिखल गीत भेटैत अछि, यद्यपि ओकरो प्रामाणिकता पर किछु गोटे प्रश्नचिह्न लगौलनि अछि, ओहू मे विद्यापतिक काव्य-वैशिष्ट्येक अभ्यर्थना छैक, चैतन्य अथवा हुनका सम्प्रदायक कोनो आन आचार्यक नहि।

एक आर जे सब सँ महत्त्वपूर्ण अंतर छैक से थिक भणिताक प्रयोग। विद्यापतिक भणिता सब पर विद्वान लोकनिक बहुतो लिखल उपलब्ध अछि। तकर सार ई जे हुनका गीत सब मे भणिताक कोनो काव्यगत निर्णायक महत्व नहि रहैत छल। ओहि ठाम गीत कें अलग आ भणिता कें अलग देखल जा सकैत छल। दुनूक काव्यत्व मे सेहो पैघ अन्तर। ओ मानू समयानुसार बदलैत रहैबला चीज होइत छल। नेपाल पदावली मे जे 'भनइ विद्यापतीत्यादि' लिखि क' भणिताक पूरा प्रसंगे कें गोल क' देल गेल अछि, से ओहि समयक प्रयोजन रहल हेतै। अपन-अपन आश्रयदाताक उल्लेख गायक लोकनि क' सकैत छलाह,केवल विद्यापतिक नामक उल्लेख जरूरी रहत—एहि संक्षेपणक सैह भाव बुझाइत अछि। विद्यापतिक बारे मे ई जे बात कहल

गेल अछि जे ओ दरबारी कवि भने छलाह मुदा दरबारक चापलूस कवि नहि छलाह, तकर प्रमाण हुनकर भणिता सब अछि। कम्मे गीतक संग एहन भेल अछि जे जाहि मे भरल काव्यत्वक पसार भणिता धरि पहुँचि सकल अछि। एहन ठाम भणिता एक निर्णायक परिस्थितिक पंक्ति बनल अछि। मुदा, एहन गीत सब ओ अधिकतर शिवसिंहक जबाना मे लिखने छलाह, ओहि दुनू व्यक्तिक संग हुनक संबंध हृदयक तल धरि पहुँचल छल तें ओहि ठाम काव्यत्वक सुगन्धि छै, आ तें ओ भणिता मूल्यवान अछि। गोविन्ददासक संग एकर ठीक उनटा छनि। ओ तँ एकमात्र 'नंदनंदन'क दरबारी थिका। निच्चा पृथ्वी पर, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र अपनहि, आन क्यो आका-हुकुम नहि। हुनका भणिता सब मे कोनो राजाक नाम नहि अबैत अछि। जिनका मे अबैत छनि जे 'गोविन्द' थिकाह 'गोविन्ददास' नहि। दोसर, ओ निश्चित रूप सँ अपन नाम मे 'दास' जोड़िये क' बजता—चाहे पहिने, चाहे बाद मे। देखबाक बात ई थिक जे हुनका गीतक सब टा भणिता सार्थक छनि, ओकर निर्णायक भूमिका छैक, ओहि मे ने मात्र काव्यत्व छैक, बल्कि ओतहि आबि क' कविता अपन शिखर पर पहुँचैत अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई छैक जे गीतक आन्तरिक विषयवस्तु भने किएक ने श्रृंगार होइक, भणिता मे आबि क' ओ भक्ति मे निमज्जित भ' जाइत छैक। ई गोविन्ददासक अद्भुत रसायनशास्त्र छनि, जकर अनुकरण तँ ब्रजबुलिक सब कवि केलनि मुदा एहि स्तर धरि क्यो पहुँचि नहि सकलाह। मधुरा भक्तिक जखन काव्यशास्त्र निर्मित भेल, उज्ज्वलनीलमणि रूपगोस्वामी रचित, तँ उदाहरणक रूप मे अधिकतर गोविन्देदासक गीत उद्धृत कयल गेल, एकरा अकारण नहि बुझबाक चाही। श्रृंगार आ भक्तिक परस्पर विरोध कें अपन कौशल सँ कोना ओ दिल मे उतरि जाइ योग्य तरल संवेद्य बना देलनि से देखबा जोग अछि। ठीक ओहि अनुभूति कें ओ कविता मे रूपान्तरित केलनि जे चैतन्य महाप्रभुक हृदय मे चलैत रहैत छल हेतनि। ई हुनकर अपन आध्यात्मिक पहुँच छलनि। लौकिक समाज मे ओ प्रचलित नहि भ' सकलाह तकर कारण स्पष्ट अछि जे कविता मे जाहि आध्यात्मिक समझ के अभिव्यक्ति छैक, से एहि ठामक समाज लेल, पंडित लेल अबूझ रहैक। कतेक ठाम एहन भेल छैक जे भणिता मे ओ अपना कें पागल कहलनि अछि। एकरा लौकिकता-दृष्टिक प्रति हुनक संबोधन बुझबाक चाही। कतय हुनकर आध्यात्मिक अनुभूति आ कतय ई लौकिक दृष्टि! हुनका ओतय ई जगत एक टा उत्सव थिक, जतय हर पल, हर क्षण एक महारास चलि रहल अछि। नायक थिकाह कृष्ण आ बाँकी सब ओहि समूहक सखी। तें ओहि ठाम भावमय गानक, नृत्यक आ बेसुधीक बहुत महत्त्व छैक। ई सब हुनका लोकनिक सिद्धान्तशास्त्रे मे छनि। रूपगोस्वामीक 'पद्यावली' मे एक टा श्लोक अबैत अछि—'परिवदतु जनो यथा तथायं/ ननु मुखरो न विचारयाम:/ हरि-रस-मदिरा-

मदादिमत्ता भुवि विलुठाम, नटाम, निर्विशाम।' जिनका जे कहबाक होइन से कहथु, किनको हम जवाब नहि देबनि, कारण हम ओतय छी, जतय बूझि सकैत छी जे हम बहुत ठीक छी। लौकिकताक प्रति संबोधन थिक इहो। गोविन्ददासक भणिता मे किछु ठाम अबैत छैक—'गोविन्ददास प्रमाण।' अथवा 'गोविन्ददास एक साखि'। ओतय साक्षी रहबाक बात छैक—जे एहि बातक साक्षी हम स्वयं छी। किछु ठाम अबैत छैक—'आनन्द निरखै गोविन्ददास', 'मुगुधल गोविन्ददास' आ तखन 'लुबधल गोविन्ददास'। आ तकर बाद—'गोविन्ददास प्रशंस', 'गोविन्ददास गुण गाय'। एहि सभक बीच एक पौर्वापर्य सूत्र ताकल जा सकैत अछि। संतोषक बात थिक जे गोविन्ददासक ई पौर्वापर्य हुनकर कविता-विषय पर सेहो प्रभाव छोड़लक अछि, यद्यपि बुझले बात अछि जे हुनकर काव्य-विषयक क्षेत्र बड़ छोट छनि, केवल राधाकृष्णक प्रेम। प्रेम अपना मे एक टा समुच्चा संसार कोना होइत छैक एकर ठीक-ठीक पता वैह बता सकैत छथि जे प्रेम मे जीबि क' देखलनि अछि आ तखनहु किछु कहबाक स्थिति मे बचल रहि गेल छथि। पूर्वांचलक वैष्णव कविता कें एहि मामिला मे कृतकार्य बुझबाक चाही।

गोविन्ददासक काव्यवस्तुक परीक्षण करैत पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि—'गोविन्ददास निस्सन्देह भक्तकवि छलाह। ई जे किछु लिखलनि से हिनक हृदयक भक्तिक उद्गार थिक, भनहि ऊपर सँ ओ लौकिक प्रणय-लीला बूझि पड़ओ। हिनका पूर्णरूपें बुझबाक हेतु हिनक गीतक त्रितलीय व्याख्या करए पड़त। पहिल स्तर पर लौकिक प्रीति अछि, ताहि सँ निचला तल पर राधाकृष्णक दिव्य प्रेम अछि आ तकरो तर मे आध्यात्मिक सन्देश अछि।'[14] हुनकर जे काव्यविषय सब छनि यथा वंदना, प्रीति, अभिसार, मिलन, रास-विहार, मान, विरह, रूप-कीर्तन आदि, से सब टा चैतन्यक वैष्णवभक्ति सम्प्रदाय मे सिद्धान्तीकृत विषय सब अछि। एकर अतिरिक्तो केलि-क्रीड़ा, नौक्रीड़ा, जलक्रीड़ा आदि अछि। नायिकाक अनेक रूप—अभिसारिका, वासकसज्जा, उत्कण्ठिता, विप्रलब्धा, खण्डिता, मानिनी, कलहान्तरिता, स्वाधीनभर्तृका आदिक अवस्था सब अछि, जाहि मे रहैत राधा कृष्ण संग प्रेम करैत छथि। गोविन्ददासक गीत सभक मादे इहो कहल गेल अछि जे अपन सम्प्रदाय मे परिभाषित सिद्धान्तक ठीक-ठीक अनुरूप ओ गीत लिखलनि। मुदा एहि समस्त सरंजामक बीच गोविन्ददासक अप्पन भक्तिक की स्वरूप छलनि? पंडित गोविन्द झा विमानबिहारी मजूमदारक कथन उद्धृत करैत छथि—'तिनि मंजरी भावेर उपासक।' ओ मंजरी-भावक उपासक छलाह। आशय स्पष्ट करैत गोविन्द झा लिखलनि—'कवि कर्णपूरक 'गौरगणोद्देश-दीपिका' मे कहल गेल अछि जे वृन्दावन मे जे स्वामी लोकनि छलाह से सभ सखी-भाव सँ कृष्णक उपासना करैत छलाह आ तदनुरूप 'मंजरी' शब्द लगाए अपन-

अपन नाम रखने छलाह, जेना रूपगोस्वामी छलाह रूपमंजरी, सनातन छलाह रतिमंजरी, गोपालभट्ट रहथि अनंगमंजरी इत्यादि। एहि मंजरी-भावक प्रवर्त्तक रहथि रूपगोस्वामी।'[15] गोविन्ददास रूपगोस्वामी सँ अत्यधिक प्रभावित रहथि, तकर अनेक साक्ष्य अछि। ओहो गुप्त रूप सँ अपन नाम कोनो मंजरी राखने होथि से पूर्ण संभव, हुनक गीत सब मे तँ एकर छाया स्पष्टे अछि। सखी-भावे हुनक एहि शृंगारिक गीतवली कें भजनक दरजा धरि ल' जाइत अछि, एकरे दिस संकेत करैत डॉ. जयधारी सिंह, असल मे 'शृंगार-भजनावली' नामकरणक औचित्य स्पष्ट करैत, लिखलनि अछि—'कविक उपासना-पद्धति मे सखा-भाव कें श्रेय देल गेल अछि। महान दम्पतिक संग सखाभावक परिणति मे भक्तिक विचित्र रूप भेटैत अछि। एहि प्रगल्भ भावधारा मे भक्तिक चमत्कारक संग जे अलौकिक प्रसाद, आह्लाद भेटैत अछि तकर हेतु अछि उपास्य-दम्पतिक रतिकेलिलीलादर्शनक साक्षात्कार।'[16]

गोविन्ददासक कल्पनाक संसार बहुत छोट छलनि जखन कि हुनकर पाण्डित्य आ कवित्व बड़ पैघ। कैक ठाम तँ रमानाथ झा हुनका विद्यापतियो सँ बीस पबैत छथि। अपन छोट कल्पना-संसार मे ओ अपन पैघ कवि-पाण्डित्य सँ एक सँ एक करतब करैत छथि। जेना, एक एहि पद कें देखी जतय ओ राधा-माधवक काम-केलि पर युद्धक आरोपण केलनि अछि—'कुटिल कटाक्ष विशिख घन बरखन, रणबाजन पिक-राव।/ दूअओ चढ़ल मनोरथ कुंजर परिमल अतिकुल धाव।।/ देख देख राधा-माधव मेलि/ दुअओक चपल चरित नहि समुझिअ किअ कलह किअ केलि।।' कहैत छथि, एहि दुनूक चपल चरित कें बूझब कठिन थिक जे काम-केलि क' रहल छथि कि युद्ध? दुनू दिस सँ कटाक्षक वाण-वृष्टि भ' रहल अछि। कोकिल रणवाद्य बजा रहल अछि। दुनूक दुनू मनोरथरूपी हाथी पर सवार छथि। आदि। कृष्णक प्रेमानुभूति सँ अभिभूत राधा कें कखनहु कृष्ण सोनार सन, कखनहु सर्प सन, कखनहु चोर सन तँ कखनहु किछु आरो सन देखार पड़ैत छनि। ताहि-ताहि प्रवृत्तिक आरोपण एहि गीत सब मे भेलैक अछि। सोनार बला पद तँ बहुत लोकप्रिय अछि—'वेणुक फूक धूक मदनानल कुल इन्धनहि पजारि/ दरश पाणि दुहु उपर सोहागल श्रमजल बोरल वारि/ सजनी, कान्ह से छैल सोनार/ मोर मन कांचन अपन प्रेममणि जोरि पिन्हायल हार।' बाँसक फोंफी सँ फूकि-फूकि आगि तेज करबाक जे काज सोनार करैत अछि, सैह काज कृष्ण अपन वेणु सँ करैत छथि। एहि लेल ओम्हर काष्ठाग्नि चाही तँ एम्हर कामाग्नि। ईंधनक काज कुलशील क' रहल अछि जे जरि-जरि क' स्वाहा भेल जाइछ। जल चाही तँ से स्वेदबिन्दु थिक, आभूषण चाही तँ से अनुराग थिक। काव्यशास्त्र मे निर्दिष्ट दस कामदशा—अभिलाष, चिन्तन, स्मृति, गुणगाथा, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, संज्वर, जड़ता, मरण—एहि मे सँ अधिकांशक

आजमाइश गोविन्ददास ठाम-ठाम केलनि अछि। हुनकर एक खास विशेषता छनि जे चाहे प्रलाप सन तर्कहीन कथन किएक ने हो, ओ चकित क' देब' योग्य तर्कसंगति ताकि अनैत छथि। डॉ. अमरनाथ झा एहि कलाकारी मे हुनकर नैयायिक सत्प्रतिपक्षक भूमिका देखैत छथि। ओ लिखलनि अछि—'सत्प्रतिपक्ष न्यायशास्त्र मे वर्णित एक टा एहन तर्क-विधान थिक जाहि द्वारा प्रतिवादीक तर्कक व्याख्या वादी द्वारा एहि रूपें क' देल जाइत अछि जाहि सँ प्रतिवादीहिक वचन सँ वादीक अर्थ-समर्थन होअय लगैत अछि। बहुत किछु ताही प्रकारक प्रयोग गोविन्द दासहुक कविता मे अनेक ठाम देखैत छी।'[17] अभिसारक मध्य राधा फूल तोड़य लगैत छथि तँ कृष्ण हुनका बरजैत कहैत छनि जे अहाँ किए फूल तोड़ैत छी, अहाँ तँ अपने फूलक भंडार छी, अहाँक सब अंग तँ स्वयं फूलेक बनल अछि—'कानने कुसुम तोड़सि किए गोरि/ कुसुमहि निरमित सब तनु तोरि।' आ बादक पाँती सब मे हुनकर एक-एक अंग कें एक-एक फूल साबित क' दैत छथिन। जहाँ धरि काम-केलिक मुद्रा आ आसन सभक प्रश्न अछि, विद्यापति सँ कम ओ कतहु नहि छथि। विपरीत रतिक वर्णन कयलनि अछि—'रति-रस-सर मे श्याम-हिय सूतलि शरद-इन्दुमुखि बाला/ मरकत मदन कोटि जनु पूजल दए नबकामचन माला/ श्याम-वदन पर वदन बिराजए उर पर कुच-युग साजे/ कनककुम्भ जनि उलटि बैसाओल मदनमहोदधि माँझे।' चतुरता हुनक यैह छनि जे 'विपरीत रति' सचित्र नहि कराए ओ राधा कें कृष्णक छाती पर सुता दैत छथि।

एहि ठाम कनेक रुकि क' हमरा लोकनि मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखन पर अपसोच क' ली, से उचित बुझि पड़ैत अछि। एक टा एहन इतिहास, जकरा लग मैथिली जातिक अपन कोनो परिकल्पनो धरि नहि अछि! बरु एकर उनटा अछि। अज्ञानक अपन निष्कलुषता होइत छैक, से एहि ठाम नहि अछि, अज्ञाने नहि अछि तँ ओकर निष्कलुषता की हेतैक? उनटा अछि जे अजीर्ण ज्ञान अछि। ततेक अछि जकरा कि सम्हारब कठिन भ' जाइत छैक। ई ज्ञान अप्पन प्रशंसाक थिक। माने ब्राह्मणक प्रशंसाक। मैथिली जातिक भाषा आ ओहि मे रचल जाइत साहित्यक चिन्ता नहि, गौरव एहि बातक जे हमर सभ्यता-संस्कृति, मने ब्राह्मणक, कते उपत रहल अछि। ई गौरव हमरा लोकनि रमानाथ झा मे छहछह करैत देखाइत अछि, प्राय: तें ओ इतिहास लिखब नहि गछलनि, कारण एहि लेल हुनका वर्तमानो मे उतरय पड़तनि आ तकर दशा अवनत छल। जयकान्त मिश्र मे ई गौरव सूक्ष्म बनि चुकल रहनि, प्राय: एहि दुआरे जे ओ यूरोपियन जबाना देखने अकादमीशियन छलाह। मैथिली साहित्य लग मे कैक टा एहन ओझरी सब छैक जकरा लग आबि क' इतिहासकार लोकनिक योग्यता-परीक्षा होइत छनि। योग्यता इतिहास-दृष्टिक। एहि ओझरी सब

मे सँ एक ओझरी गोविन्ददास सेहो छथि। गोविन्ददास विषयक जे विमर्श एखन धरि भेल अछि तकरा पर एक नजरि देल जा सकैत अछि।

रमानाथ झा सत्य आ तथ्य जनैत छलाह, मुदा तकनीक लगा क' प्रमाणित कर' चाहैत छलाह। ई हुनकर भाषाई राजनीतिक रणनीति छल। अब्राह्मण लोक आ अब्राह्मण परंपरा सँ हुनको ओतबे परहेज छलनि जतबा किनको आन कें। तत्काल ओ भाषा कें आधार बना क' गोविन्ददास कें आयत्त क' लेब' चाहैत छलाह आ हुनकर पक्का अनुमान छलनि जे ब्राह्मण गोविन्ददासक अब्राह्मण परंपरा कें आन-आन लोक ठोकि-पीटि क' आगां दुरुस्त क' लेताह। हुनकर अनुमान बिलकुल सही बहरेलनि। गोविन्ददासक परम्परा आ पद्धति पर जयकान्त मिश्र लगभप चुप रहि गेलाह आ अध्ययनक मुँह काव्यशास्त्र दिस घुमा देलखिन। ओ काव्यशास्त्र कें आधार बनौलनि आ एतय धरि जे अपना मुँहें नहि किछु कहि बहुत चतुरता सँ सुकुमार सेनक एक लम्बा उद्धरण सँ काज चला लेलनि। मुदा जेना कि रमानाथ बाबूक अनुमान छलनि, तुरन्त एक आन विद्वान मैदान मे फानि उतरलाह। ओ क्यो आन नहि, हुनकर जानल-मानल प्रतिपक्षी काञ्चीनाथ झा किरण छलाह। किरण जी सुच्चा ब्राह्मण विचारकक मुद्रा मे गोविन्ददासक भक्तकवि होयबे पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ क' देलखिन। ओ लिखलनि—'हमरा विश्वास अछि जे गोविन्ददासक शुद्ध शृंगारिक गीत नजरि पर अयला पर ककरो हृदय हुनका सुच्चा भक्तकवि नहि मानत।'[18] ओ तँ अलग सँ एक लेख लिखि ई साबित करबाक चेष्टा केलनि जे भक्ति जँ एहने होइत हो, तँ असल भक्त कवि विद्यापति छलाह, गोविन्ददास नहि। गोविन्ददास तँ सुच्चा शृंगारिक कवि छलाह। हुनकर एहि लेखक शीर्षके छल—'गोविन्ददास शृंगारिक कवि, विद्यापति नहि।'[19] कबीर व्यक्तियोक रूप मे अब्राह्मण छलाह आ हुनकर परम्परा सेहो अब्राह्मण छलनि। ओ जँ स्वीकार्य होइतथि तखनहु ई हुनक अपमानजनक स्वीकार्यता होइतय, जेना डाकक मामला मे भेल, जिनकर माय कें व्यभिचारिणी कथित कएल गेल। गोविन्ददास कें ब्राह्मण हेबाक लाभ भेटलनि। मुदा, एहन लाभो कोन काजक? हुनकर भक्ति-परम्परा सदा एतय प्रश्नक घेरा मे बनल रहल।

जे रमानाथ झा गोविन्ददासक पांडित्य आ काव्यत्व पर मुग्ध छलाह आ दुरूहताक दोषक अछैतो कैक गुण मे हुनका विद्यापतियो सँ आगू मानैत रहथि, ओही रमानाथ बाबूक शिष्य डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश अपन इतिहास-पुस्तक मे लिखलनि—'अपरिपक्व अवस्थाक कविक भाषा मे, जकरा मे अभ्यासक अभाव छैक आओर जे सम्प्रदाय विशेषक हेतु झालि मृदंग मे गयबा योग्य शब्दाडम्बर सँ युक्त पदक रचना कएल अछि, एहन दोष आबि जाएब स्वाभाविक।'[20] अभ्यासक अभाव बला बात रमानाथ झा सेहो कहने छलाह। हुनक आशय छलनि जे पंडित कें सरल भाषा लिखि सकबाक लेल अभ्यासक जरूरति होइत छैक, जकर अभाव गोविन्ददास मे छलनि। गोविन्ददासक निज अपन की स्थिति छलनि, ताहि दिस क्यो नहि देखलाह। हुनका विद्यापति जकाँ जन-जन मे पहुँचबाक जरूरतिये नहि छलनि, हुनकर काव्य-प्रयोजने भिप छलनि। कठिन भाषा सँ ओहि मे कोनो क्षति नहि रहैक। सुकुमार सेन कहलनि अछि—'गोविन्ददासक गीत जखन शुद्ध कीर्तनशैली मे गाओल जाइत अछि तखन एकर रमणीयता शिखर पर पहुँचि जाइत अछि।'[21] ओकर प्रयोजन एहि ठाम सँ निर्धारित होइत छैक। मुदा मात्र एही कारणें जे ओ ब्राह्मणधर्म सँ इतर सम्प्रदाय मे गाओल जाइत छल, एहि मे दुरूह भाषा आ शब्दालंकार (जकर श्रीश जी अपना शब्द मे शब्दाडम्बर कहलनि अछि)क प्रयोग बहुश: भेल छैक, कवि गोविन्ददास हुनका लेल अपरिपक्व कवि भ' जाइत छथि। मजाक बात ई जे श्रीश जीक एहि इतिहासक भूमिका स्वयं रमानाथ झा लिखने छथि, आ सेहो 'आमुख' रूप मे। स्वाभाविक छल जे ई क्रम निधोख जारी रहल। अगिला इतिहासकार डॉ. बालगोविन्द झा व्यथित लिखलनि—'भाषा गोविवन्ददासक मैथिली अछि किन्तु गीत हुनक मैथिली गीतपरम्पराक आधार पर नहि अछि, प्रत्युत हुनक गीत बंगालक वैष्णव परम्पराक पालन करैत अछि। हुनक गीत मे आवरण अछि शृंगारक किन्तु थिक ओ कीर्त्तन। तात्पर्य ई जे गोविन्ददासक रचना परस्परविरुद्ध प्रमाणपुंजक प्रतिपादन करैत अछि।'[22]

हमरा लोकनि सब ठाम देखैत छी जे कोनो सामर्थ्यशील साहित्यक इतिहास-लेखन मे निरंतर विकास होइत जाइत छैक। एकर कारण वैज्ञानिक बोधक निरंतर प्रगतिमान आ इतिहास-दृष्टिक परिशुद्ध होइत जायब थिक। ई आशा कयल जाइछ जे आधुनिकताक उत्तरोत्तर विकास सँ इतिहासकार लोकनिक वैचारिक उदारता बढ़ैत छनि आ समस्त विवादित मुद्दा सब क्रमश: अपन वैज्ञानिक तर्कसंगति सँ नीकतर ढंगें व्याख्यायित भेल जाइछ। मैथिलीक इतिहास-लेखन मे एहि विकासक सर्वथा अभाव देखैत छी। कहबाक चाही जे एतय एकर उनटा भेल अछि। उत्तरोत्तर बाह्मण-वर्चस्व, असहिष्णुता आ कूममंडूकताक वृद्धि होइत गेल अछि मानू मैथिली साहित्यक विद्यार्थी कें जड़ बनौने रखबाक कोनो सुचिन्तित एजेन्डा पर बढ़ब लक्ष्य होइ। नवीनतम इतिहास प्रो. मायानन्द मिश्रक छनि, जे लिखल तँ गेल बीसम सदीक आखिरी दशक मे, मुदा लेखकक एहि संकल्प पर जे एकर प्रकाशन हुनकर जिबैत जी नहि हेबाक चाही, 2013 मे मायानन्द मिश्रक निधनक लगले बाद 2014 मे ई प्रकाशित भेल। गोविन्ददासक मुद्दा पर माया बाबूक की कहब छनि तकरा देखब अत्यन्त रोचक होयत।

सब सँ पहिने तँ मायानन्द मिश्र तमाम ऐतिहासिक साक्ष्य कें दरकिनार करैत

आ तकरा बदला मे आन कोनो ऐतिहासिक साक्ष्य बिना रखनहि ई घोषित क' दैत छथि जे गोविन्ददास कहियो बंगाल नहि गेलाह। अपना हिसाबे गोविन्ददासक बंगाल जेबाक ओ कोनो प्रयोजने नहि देखैत छथि, कारण मायानन्द मिश्रक हिसाबें न्यायदर्शन मे मिथिला तखनहु सर्वोपरि छल। कोना, तकर कोनो प्रमाण नहि देने छथि, जेना परम निश्चिन्त होथि जे जे बात ओ लिखि देताह, सैह स्वत: प्रमाण हेतैक। ओ तँ प्रश्न करैत छथि जे 'जँ गोविन्ददास गेलाह तँ कोन उपलब्धि ल' क' अयलाह? (मानू जा क' घुरि आयब एक अनिवार्य नियति होइक!) कहाँ कोनो ग्रन्थक सूचना भेटैत अछि? मात्र मधुरभाव आन' गेलाह? आ सेहो चंडीदासक परकीया भावक मधुरोपासना जे वज्रयानक 'मुद्रा' केर रूपान्तरण छल? की ई परकीया भाव मिथिलाक परिवारक सामाजिक व्यवस्थाक अनुकूल छल? एहन कल्पना पर आश्चर्य भ' सकैछ।'[23] किनकहु लागि सकैत छनि जे दारूक निशां मे मायानन्द मिश्र एतय अल्ल-बल्ल लिखि देलनि अछि, मुदा ई निशां ब्राह्मण-श्रेष्ठताक निशां थिक जकरा बौद्ध धर्म सँ घोर घृणा छैक आ मधुरोपासना मे जे वज्रयानक अवशेष-सन बचल किछु देखार पड़ैछ, एहि मधुरोपासना कें सेहो ओ तद्वते घृणास्पद मानैत छथि। ओ सर्वथा विश्वास करैत छथि जे एक उच्च कुलक ब्राह्मण एहि सब फेरा मे कहियो नहि पड़ि सकैत अछि। इतिहास हुनका लेल कल्पना छियनि आ ब्राह्मण-श्रेष्ठताक लौह-प्राचीर कें ओ ततेक अच्छेद्य-अभेद्य मानैत छथि जे वर्णाश्रमी ब्राह्मणधर्मक विरुद्ध कोनो वर्ण-विद्रोही विचार मिथिला मे प्रवेश धरि नहि क' सकैत छल। आ तें विद्यापतिक एक प्रसिद्ध पदवी 'अभिनव जयदेव' जकर कि उल्लेख स्वयं विद्यापतियो अपन भणिता मे कयल बताओल जाइत छथि, कें सेहो अनुचित कहैत छथि—'मैथिली मे जँ केओ अभिनव जयदेव हेताह तँ ओ विद्यापति नहि, अपितु गोविन्ददासे हेताह।'[24] प्रश्न उठत जे से कोना? मायानन्द मिश्र विद्यापति कें बहुआयामी आ बहुव्यापक व्यक्तित्वबला कवि पबैत छथि, जे गुण जयदेव मे नहि रहनि, ओ केवल राधा-कृष्णक लीला-विलास मे डूबल रहलाह, से गुण एम्हर आबि गोविन्ददास मे देखल जाइछ, तें ओ अभिनव जयदेव। कड़गर आत्मविश्वास, कठोर हठ, उच्च कोटिक असहिष्णुता, बहुलताक संभावना धरि कें ध्वस्त क' देब' बला कट्टर उद्यमशीलता एहि ठाम साफ देखल जा सकैत अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि जे जयदेव लग मे तँ भक्तिक प्रतिश्रुति अछि, जे विद्यापति मे तँ नहि अछि मुदा एम्हर गोविन्ददास मे तँ पूरा अछि। तखन तँ अहाँ एहि भक्ति कें स्वीकार करैत छिऐक! मुदा मायानन्द मिश्र लिखैत छथि—'जहाँ धरि भक्तिक प्रश्न अछि मिथिला मे परिचित शैव-शाक्त भक्ति-भावना सम्भव अछि। वैष्णव आन्दोलन जे वर्ण-विरोधी थिक, मान्य नहि भ' सकैछ।'[25] ई सब तर्कक जाल भ' सकैए अहाँ कें तर्कातीत लागय, जे कि उत्साही ब्राह्मणधर्मक प्रमुख

लक्षण थिक। मायानन्द मिश्रक असहिष्णुताक तँ ई स्तर अछि जे वर्ण-व्यवस्था पर वर्त्तमानकालिक खतराक बात तँ छोड़ू, इतिहासक बीतल समय मे सेहो हुनका वर्णव्यवस्थाक टूटब सह्य नहि होइत छनि। ऐतिहासिक तथ्य आ तर्क सब कें ओ अपन तर्कातीतता सँ जीति लैत अछि। जेना कि ऊपर हुनक विचार उद्धृत कएल गेल, आब गोविन्ददासक लग मे एक्केटा रस्ता बचि गेलनि जे जँ हुनका मैथिली साहित्य मे रहबाक होइन तँ चुपचाप शृंगारिक कवि बनि क' रहथु। इतर प्रश्न एक ई बचैत अछि जे तखन फेर गोविन्ददासक गीत बंगाल कोना पहुँचल? मायानन्द एहि पर चुप रहि गेल छथि मुदा हुनकर निस्संशय कें देखैत सहजहि अनुमान कयल जा सकैत अछि जे ओ रमानाथ झाक एहि बात पर भरोस करैत हेताह जे ओ गीत सब नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग बंगाल पहुँचल होयत। जँ ई प्रश्न हो जे सतरहम शताब्दीक वैष्णव-पदावली पाण्डुलिपि सब मे ओ कोना पाओल जाइछ, तँ ओ कि तँ ओकरा फरजी बता सकैत छथि अथवा कहि सकैत छथि जे बंगाली न्याय-शिशिक्षु विद्यार्थीक मिथिला आगमन आगाँ सेहो बदस्तूर जारी रहल आ जाहि तरहें विद्यापति गेलाह तहिना गोविन्ददासो गेल हेताह। एहि मुद्दा पर ओ किछुओ कहि सकैत छथि। ओ तँ मिथिलाक बुद्धिजीवी (जे कि निश्चिते ब्राह्मणे टा भ' सकैत छथि) लोकनि सँ प्रश्न करैत छथि—'वैष्णव आन्दोलन वैदिक वर्णाश्रमक विरोधिये नहि, पौरोहित्यक सेहो विरोधी थिक जे मिथिलाक विरोधी थिक। तथापि हिनका हमरा लोकनि भक्तकवि सिद्ध करबा मे अपस्याँत छी। की एहि सँ हिनक महानता बढ़ि जाएत जे शृंगारिक कवि भेने घटि गेल अछि? की स्वयं शृंगार निकृष्ट वस्तु थिक?'[26] एक जाति, एक झंडा, एक शास्त्र—यैह टा मात्र कोना मिथिला थिक, से एहि ठाम नग्न देखल जाइत अछि, जकरा कारण ब्राह्मण होइतो गोविन्ददास डाक-गति कें प्राप्त होइत छथि।

असल मे, गोविन्ददास भक्तिक ओहि तल पर पहुँचल व्यक्ति छलाह जे अपन सम्पूर्ण जीवन कृष्ण कें सौंपि देलखिन। भक्ति ओहि ठाम अलग सँ केवल भक्ति नहि रहल, जीवनोद्देश्य आ जीवनमूल्य बनि गेल। ई मैथिल समाजक भक्ति अवधारणा सँ भिप स्थिति छल। गोविन्ददासक जीवने जें कि कृष्ण कें समर्पित छलनि, ओहि ठाम कविताक लेल अलग सँ कोनो मूल्य नहि रहि गेल छल। स्वाभाविक रूपें जीवनक संगहि ओहो समर्पित छल। हुनकर अपन सम्प्रदाय छलनि। ताहि मे कीर्त्तन करैत-करैत बेसुध भ' जाएब पद्धति छल। ओहि ठाम नृत्य प्रधान छल। बेसुधी मे जे-जे भ' सकैत अछि, सब किछु ओहि ठाम स्वीकार्य छल। गोविन्ददासक कविता मे ओ नृत्य, ओ बेसुधी व्यक्त भेल अछि। अनेक रूप ल' ल' क' व्यक्त भेल अछि। नृत्यक पाछू छैक प्रेम। ओ राधा-कृष्णक प्रेम थिक। ओहि ठाम देह छैक, ओकर मिलन छैक, अदा-दर-अदा छैक। भक्तिक सूत्र यैह थिक जे ई बेचारे भक्त अपना

कें राधाक सखी मानैत छथि आ अपन एहि प्राणप्यारी सखीक एक-एक अदा पर मुग्ध छथि। ई हुनकर सम्प्रदाय थिक। ओ यैह सिखलनि अछि। एकरे अपन जानप्राण अर्पित क' देलखिन अछि। विशेषता केवल यैह छनि जे ओ कविता लिखब जनैत छथि। आ से कविता, समय कें चीरि क' हमरा सब धरि पहुँचि गेल अछि।

गोविन्ददासक कविताक भाषा थिक मैथिली आ वैह मानू कि हुनका लेल जानक जपाल भ' गेल अछि। पाण्डित्यप्रिय मैथिली विद्वान लोकनि हुनका मे ततेक सधल कवित्व देखै छथिन आ भाषा ततेक मैथिली, जे हुनका अपन मुकुटमणि बनेबाक लोभ होइत छनि। एहि मे मुदा समस्या ई अबैत छनि जे मैथिलक मुकुटमणि कें जेहन हेबाक चाही, आ गोविन्ददास वास्तव मे जेहन छथि, एहि दुनूक बीच भारी विरोध अछि। एहि विरोधक विषबोड़ल बोल सब हम सब ठाम-ठाम सुनैत रहल छी। हमरा बुझने मैथिली साहित्यक असल समस्या ई थिक जे ई बहुलवाद के समर्थक नहि अछि। एक खास आग्रहक पाछू चलबाक जिद छैक। आ एकर पहचान एकदम स्पष्ट अछि जे ओ ब्राह्मण-आग्रहक वस्तु थिक। जीवन कें देखबाक दृष्टि ब्राह्मण-दृष्टि थिक। ओहि ठाम कर्मकाण्ड प्रधान छैक आ नृत्य प्रतिबंधित। मुदा, पौरोहित्य, पंडावाद मान्य।

तखन एक टा प्रश्न ई छैक जे बहुलवादक प्रति ई विरोध-भाव मध्यकालक समस्या थिक कि आधुनिक? मध्यकालक जँ ई समस्या रहैत तँ आइ ई रचना सब हमरा भेटितय कोना? स्पष्ट अछि जे कतहु गोविन्ददास छथि तँ कतहु कबीरदास। हुनका सभक अपन-अपन अनुयायी छनि। जे लिखब जनैत अछि से लिखि क', अन्यथा कण्ठस्थ क' क' ओ समाज अपना धारोहर कें आगू ल' चलि रहल अछि। हमरा लोकनि धरि ई समस्त वस्तु पहुँचि पाबि रहल अछि। ताहि हिसाब सँ देखी तँ ई मध्यकालक समस्या नहि थिक। ई पूर्णत: आधुनिक समस्या थिक जे मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि, विद्वान लोकनि पैदा कयने छथि। अपन संकीर्णताक कारण। बहुलवादी व्यापक दृष्टि नहि अपना सकबाक कारण। जड़ि मे जा क' देखी तँ श्रेष्ठतावादी हेबाक अपन मूल स्वभावक परित्याग हुनका क' नहि भेलनि अछि जखन कि काज कोनो भाषाक अतीत-लेखनक दस्तावेजीकरणक क' रहलाह अछि। आवश्यक अछि जे ई खंडितमनस्कता हुनकर कृतित्व कें छोट करैत छनि।

ध्यान देल जाय तँ ई संकीर्णता मामूली नहि अछि। ओहि मे अपना सँ इतर, यथा कबीरदास, कें शामिल नहि करबाक जिद तँ छैके, ककरो जँ लाचारी मे स्वीकार करैयो पड़ैत छैक तँ ओकर परिचिति आ सम्प्रदाय कें छोट करब जरूरी बूझल जाइत छैक। एकर उदाहरण हमरा लोकनि गोविन्ददासक प्रकरण मे पाबि सकैत छी। गोविन्ददास कें शृंगारी कवि सिद्ध करबाक कोशिश अपन मूल आशय मे वैष्णव सम्प्रदाय कें छोट करब थिक जखन कि ओ इतिहास थिक, वर्तमान नहि।

तें आजुक मैथिली अध्येता कें अपना बुद्धि आ हृदय कें व्यापक क' क' रखबाक जरूरति छैक, कारण ओ एक भाषाक प्रतिनिधित्व क' रहल छथि। भाषा कोनो एक जातिक, एक धर्मक, एक सम्प्रदायक नहि भ' सकैत छैक। जाति आदि सँ पैघ विस्तार भाषाक होइत छैक। ओ सब कें अपना भीतर अँटौने रहैत अछि।

गोविन्ददास जँ अपन मौलिक रूप मे मैथिली साहित्य मे स्वीकार्य हेता तखनहि ओहि स्वीकारक मूल्य अछि, अन्यथा ओ मात्र एक बेइमानी थिक। बेइमानी एहि तरहें जे हुनकर झूठ परिचय अहाँ चारू दिस प्रचार क' देलियै। ई पुराण सभक तरीका छल। पौराणिक आख्यान मे परिवर्तित होइतहि आन सब वस्तु अपन-अपन रंग-रूप हेरा दैत छल। ओ एकरंग भ' जाइत छल। मायानन्द मिश्रक इतिहास, अपन निहितार्थ मे एकरे एक आधुनिक प्रस्तुति थिक। गोविन्ददास की मात्र एहि दुआरे स्वीकार कयल गेला जे ओ एक ब्राह्मण छलाह, अन्यथा आनो लोक आ आनो लोकविधाक रचना शामिल कयल जइतैक, जे कि मैथिली मे छल, मुदा ओकर कर्त्ता वा प्रयोक्ता अब्राह्मण छलाह। ई आशये राखब भाषाक कद कें आ तें ओकर भविष्य कें छोट करब थिक। आधुनिक मैथिली अध्येता कें अपना कें व्यापक बनेबाक चाही आ सब कथू कें समेटि क' अपन भाषाक प्रतिनिधित्व करबाक चाही।

मनबोध

एहि अध्यायक सुरुहे मे चर्चा भेल अछि जे गोविन्ददास कें जतय गोविन्द झा गतानुगतिक मानैत छथि ओतहि मनबोध कें मायानन्द मिश्र क्रान्तिकारी। हुनकर ई क्रान्ति कोन रूपक छलनि, ओ कहैत छथि—'शृंगारक स्थान पर भक्ति, गीतकाव्यक स्थान पर प्रबंधकाव्य परम्परा, शास्त्रीयताक स्थान पर जनकाव्य तथा कृत्रिमताक स्थान पर सहजताक प्रतिपादनक कारणे मनबोध मध्यकालीन मैथिलीक महान क्रान्तिकारी कवि छथि तथा हुनक 'कृष्णजन्म' तत्कालीन मिथिलाक समाज, भाषा ओ संस्कृतिक दर्पण मानल जायत।'[27]

पछिला अध्याय सब मे ठाम-ठाम रमानाथ झाक एहि मंतव्यक उल्लेख भेल अछि जे कोना छौ सौ वर्ष धरि विद्यापतिक अनुकरण मे मैथिली गीत लिखल जयबा सँ ओ खिप रहथि। एहि परवर्ती गीत सब मे मौलिकता तँ निपत्ते छल, शब्द आ अलंकारक बाजीगरी टा एतेक दिन धरि मैथिली कवि लोकनि करैत रहलाह। आधुनिको युग कें ओ एहि अंधप्रवृत्ति सँ मुक्त नहि देखैत छथि जतय एखनहु अनेको कवि विद्यापतिक अनुकरणे कें माँ मैथिलीक प्रति 'सच्ची श्रद्धांजलि' मानैत छथि। एहना स्थिति मे मनबोधक सब सँ पैघ अवदान तँ यैह छियनि जे ओ विद्यापतिक

श्रृंगारिकगीत-रचनाक फान सँ बहार भेलाह। एक सर्वथा भिन्न ढंग सँ मैथिली मे कविता लिखबाक प्रयास केलनि। कतोक कारण सँ हुनकर रचना मे आनो आनो गुण आबि गेल, ई बादक बात थिक। प्रारंभिक ई थिक जे परिपाटी कें तोड़ि ओ एक नव प्रयास केलनि। मनबोधक एहि कृति 'कृष्णजन्म'क प्रशंसा मे रमानाथ झा लिखलनि अछि—'विद्यापतिक रचना-शैली कें छोड़ि एक गोट नवीन काव्य-रचनाक शैलीक प्रवर्त्तक होएबाक कारणें एहि 'कृष्णजन्म'क मैथिली साहित्य मे बड़ विशिष्ट स्थान छैक ओ काव्यगुणहु मे ई ग्रन्थ तेहन मधुर ललित, प्रसाद गुण सँ परिपूर्ण, सरल ओ रोचक भाषा मे निर्मित भेल अछि जे उचिते एकर एतेक प्रचार ओ सम्मान होइत आएल अछि।'[28]

मनबोधक एहि कृतिक पहिल चर्चा हमरा लोकनि बुकाननक पूर्णिया जिला रिपोर्ट मे पबैत छी जतय एकरा ओहि इलाका मे लोकप्रिय भाषा-काव्यक रूप मे प्रतिवेदित कयल गेल छैक।[29] बालगोविन्द झा व्यथित अपन पुस्तक 'मैथिली कविदर्शन' मे लिखलनि अछि जे एहि पुस्तकक तीन गोट पाण्डुलिपि दरभंगा जिला मे भेटल छल। परसरमा (सुपौल) गामक निवासी सदाशिव झा लग मे एकर एक भिन्न पाण्डुलिपि रहय जकरा ओ तहिया 'मिथिलामोद' मे प्रकाशित करौने छलाह।[30] आइ हमरा लोकनि कें 'कृष्णजन्म'क जे रूप भेटैत अछि तकरा सर्वप्रथम प्रकाशित करेबाक श्रेय जॉर्ज ग्रियर्सन कें छनि जे 1882 मे एकरा प्रकाशित करौने छलाह।[31] एहि पुस्तक मे दस अध्याय छैक। कृष्णजन्म कें महाकाव्य हेबा मे जे समस्या छैक ताहि मे एक इहो छैक जे ई 'अध्याय'मे विभक्त अछि, जखन कि महाकाव्य मे 'सर्ग' होइत छैक। सब सँ मजेदार बात छैक जे सब ठाम मनबोधक एहि कृतिक नाम 'कृष्णजन्म' कहल जाइत छैक मुदा ग्रियर्सन एकर नाम 'हरिवंश' देलनि अछि। बुकानन सेहो एकर नाम 'हरिवंश' लिखलनि, कारण यैह नाम लोक-प्रचलित छल। बाद मे एकरा 'कृष्णजन्म' कहल जाय लागल। एकर तात्पर्य ई लगैत अछि जे कृतिक नाम 'हरिवंश' थिक जे एक संस्कृत पुराण (अथवा महाभारतक एक खिल) छल, आ ताहि पुस्तकक प्रथम खण्ड जकर नाम कृष्णजन्म अछि। विद्वान लोकनि कें एहि नामक लेल आपत्तियो रहलनि जे एकर कथा-प्रसंग कृष्ण-जन्म सँ बहुत आगू धरि जाइत अछि।

ग्रियर्सनक पश्चात पंडित धरेश्वर झाक संपादन मे एकर एक अन्य संस्करण यूनियन प्रेस, दरभंगा सँ प्रकाशित भेल। एहि मे रचनाकारक नाम भोलन झा बताओल गेलैक। एकर एक आर संस्करण 1934 मे महामहोपाध्याय उमेश मिश्र प्रकाशित करौलनि जाहि मे 18 अध्याय छलैक। मुदा अतिरिक्त जोड़ल आठ अध्याय कें रमानाथ झा भाषा-शैली आ कवित्व-स्तरक आधार पर अप्रामाणिक करार देलनि

आ 1948 मे जे अपन संपादन मे 'कृष्णजन्म'क प्रकाशन केलनि ओहि मे वैह (ग्रियर्सन बला) दस अध्याय छलैक। एहि संस्करणक भूमिका मे ओ लिखलनि—'वस्तुत: जे चमत्कार आदित: दस अध्याय मे छैक से तकर पश्चात नहि अछि ओ तें हमर धारणा इएह अछि जे एहि ग्रन्थक विशुद्ध पाठ दसे अध्यायक उपलब्ध होइत छैक।'[32]

ई मनबोध के छलाह एहू बारे मे विद्वान लोकनिक बीच मतभेद देखल गेल अछि। महामहोपाध्याय उमेश मिश्र जतय हिनका पलिवार जमदौली मूलक मंगरौनी ग्रामवासी सोनमणि झाक बालक मानैत छथि, ओतहि रमानाथ झाक कहब छनि जे मनबोध बढ़ियाम पवौली मूलक चाना झाक बालक छलाह। जयकान्त मिश्र हुनकर गाम जमसम बतौलनि अछि। रमानाथ झा पंजी मे उल्लेखक आधार पर अठारहम शताब्दीक मिथिला मे मनबोध नामक एक आर व्यक्ति कें पबैत छथि। मुदा, बढ़ियाम पबौली मूलक मनबोधहि कें 'कृष्णजन्म'क रचयिता मानबाक कैक गोट आधार देखैत छथि। एक तँ पंजी मे भोलन कें 'भाषा-कवि' कहल गेलनि अछि। यूनियन प्रेसक संस्करण मे मनबोधक प्रसिद्ध नाम भोलन झाए कें रचनाकार बताओल गेल अछि। तेसर जे ग्रियर्सन कें जाहि सूत्र सँ एकर पाण्डुलिपि भेटल रहनि ततहि सँ परिचय सेहो, जे भोलन झा नामधारी ओ यैह मनबोध छलाह। मनबोधक विवाह भिखारी झा नामक कोनहु व्यक्तिक कन्या सँ भेल छलनि आ भिखारी झाक एक पौत्र पूर्ण दीर्घायु भ' क' 1878 मे स्वर्गवासी भेलाह, एहि समस्त सूत्र सब कें जोड़ैत ग्रियर्सन लिखलनि जे 'मनबोध लगभग 1195 फसली साल (1788 ई.) मे स्वर्गीय भेलाह।'[33]

एखने हमरा लोकनि देखलहुँ जे 'कृष्णजन्म'क नाम ग्रियर्सन 'हरिवंश' देने छथि। हुनक पाठ मे दसम अध्यायक अन्त मे ई उल्लेख कयल भेटैत अछि—'इति कविमनबोधकृते हरिवंशे दशमोध्याय: भाषायां।'[34] गौर करबाक बात थिक जे एहि ठाम पुस्तकक नाम 'कृष्णजन्म' नहि 'हरिवंश' देल गेल अछि। 'भाषायां' अर्थात् मैथिली हरिवंश। मिथिलाक सम्भ्रान्त वर्गक स्मृति मे ई बात बनल रहल अछि जे मनबोध हरिवंशक मैथिली पद्यानुवाद कयने छलाह, तकर चर्चा अनेक विद्वानक लेखादि मे भेल अछि। रमानाथ झा एहि कृति कें मैथिलीक प्रथम महाकाव्यक दरजा देलनि अछि—एहि कृति मे 'महाकाव्यक सब टा लक्षण नहियो भेटैत अछि तथापि हम एकरा मैथिलीक प्रथम महाकाव्य सैह कहब।'[35] मुदा, दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहास मे प्रबन्धकाव्यक अन्तर्गत एकरा 'अनुवाद'क श्रेणी मे रखलनि अछि। ओ कहैत छथि—'परम्परया सुनल जाइत अछि जे मनबोध मैथिली मे सम्पूर्ण हरिवंशक पद्यानुवाद कयने छलाह। हिनक एहि अनुवादक यथोपलब्ध अंश समस्त उत्तर मिथिला मे परम प्रचलित अछि।'[36] यद्यपि जयकान्त

बाबूक ई आग्रह रहलनि जे 'कृष्णजन्म'क अठारहे अध्याय कें एकत्र सम्पूर्ण पुस्तक मानल जाय, जे आगू ने तँ स्थापित भ' सकलनि आ ने प्रचलित। तखन, रमानाथ झाक सेहो ई आग्रह जे ई प्रथम महाकाव्य थिक, सेहो स्थापित आ प्रचलित नहि भ' सकलनि। आइ 'कृष्णजन्म' कें एक टा प्रबन्धकाव्य तँ अवश्य मानल जाइछ मुदा महाकाव्य नहि। ई सेहो स्थापित भ' चुकल अछि जे असल मे ई 'हरिवंश'क अनुवाद थिक।

'हरिवंश' की थिक, एहि बात कें हमरा लोकनि कें कनेक देखि लेबाक चाही, जकरा देखबाक चेष्टा ने तँ क्यो इतिहासकार ने आलोचक कयने छथि। 'पौराणिक कोश'क अनुसार हरिवंश 16374 श्लोकबला एक पुराण-श्रेणिक ग्रन्थ थिक जकरा महाभारतक अंग मानल गेल अछि।[37] स्कॉटिश भारतविद् जे.एन. फरफ्यूहर पुराणविषयक बड़ आधिकारिक अध्येता भेल छथि। हुनक मत छनि जे 'हरिवंश' कें ओकर विशिष्ट गुणक कारणें महापुराणक सूची मे स्थान भेटबाक चाही। ओ एकरा बीसम महापुराण माननलि अछि। स्पष्ट अछि जे परम्परा सँ एहि पुस्तक कें महाभारतक एक खिल (अंग) मानल जाइत रहल अछि। तकर साक्ष्य स्वयं महाभारत आ हरिवंशो मे भेटैत अछि जतय एकरा 'खिल' कहल गेल अछि आ देखाओल गेल अछि जे महाभारत कें जे 100 पर्वक ग्रन्थ कहल गेल अछि, तकर गणना मे हरिवंश कें शामिल कयलाक बादे पूर्ण होइत छैक। दोसर दिस, ब्राह्मण परम्परा मे जे पुराणक पंचलक्षण कहल गेल अछि—सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय), वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित—ई पाँचो पूराक पूरा हरिवंश पर लागू भेटैत अछि। एहि मे तीन पर्व अछि—हरिवंश पर्व, विष्णु पर्व आ भविष्य पर्व। दोसर पर्व 'विष्णु पर्व' मे कृष्णक जीवन-चरित आयल अछि, जतए हुनक जन्म सँ ल' क' द्वारका मे हुनक राज्यकाल धरिक कथा विस्तारपूर्वक वर्णित भेल अछि। एहि मे कुल मिला क' 128 अध्याय मे कृष्णक जीवनचरित वर्णन भेल अछि। एकर आगू भविष्यपर्व अछि, ओहू ठाम प्रसंगानुसार कृष्णक कथा आयल छैक आ अंत मे द्वारकाक विनाश आ कृष्णक मृत्युक सूचना भविष्यक घटनाक रूप मे मात्र दू श्लोक मे देल गेल छैक। मनबोधक 'हरिवंश' कें जँ देखी तँ एहि मे विष्णुपर्वक प्रथम अध्याय सँ ल' क' छत्तीसम अध्याय धरिक कथा संक्षिप्त रूप मे आयल अछि। तें एकरा ठीक-ठीक अनुवादो नहि कहल जा सकैत अछि, सार-संक्षेपण बूझल जा सकैत अछि।

हरिवंश अवश्ये एक वैष्णव पुराण थिक, मुदा एहि मे वर्णित वैष्णवधर्म परवर्ती वैष्णव पुराण सब-विष्णुपुराण, पद्मपुराण, भागवत आदि सँ कतोक अर्थ मे भिन्न अछि। अध्येता लोकनि हरिवंशक रचनाकाल तेसर शताब्दी ई. नियत केलनि अछि जखन कि भागवतक रचनाकाल छठम शताब्दी थिक। हरिवंशक वैष्णवधर्म मे हमरा लोकनि पांचरात्रक सर्वथा अभाव देखैत छी जखन कि आगू ई प्रमुखता प्राप्त करैत गेल। तहिना एतय हमरा लोकनि वैष्णवक संगहि शाक्त आ शैव विचारधारा सब कें सेहो अर्द्धविकसित अवस्था मे देखि सकैत छी। कृष्णक प्रसंग मे जँ देखी तँ भागवतक विपरीत वेणुगीत आ माखनलीलाक एहि ठाम कोनहु चर्चा नहि अछि। से चर्चा मनबोधक एहि कृति मे सेहो नहि अछि। तहिना रास कें जे प्रमुखता भागवत मे भेटल से एतय नहि अछि, बहुत संक्षिप्त सन प्रसंग अछि जकरा बिच्चहि मे एक विघ्न उपस्थित हेबाक कथा सेहो आयल अछि। 'रास' शब्दक प्रयोग हरिवंश मे नहि भेल अछि, ओहि ठाम एकरा 'हल्लीस' कहल गेल अछि। मनबोध मे एतबा अंतर देखैत छियनि जे चर्चा तँ संक्षिप्त अछिये, विघ्नोक कथा अछि, मुदा 'हल्लीस' नहि 'रास' कहल गेल अछि। आगू बढ़ल अतीतक काज आगामी काज कें एतबा तँ प्रभावित करितहि अछि। एहने एक टा प्रभाव एक ठाम आर देखार दैत अछि। कालियदमन प्रसंग मे नागक पत्नी लोकनि द्वारा कृष्णक स्तुति कयल जयबाक प्रसंग हरिवंश मे नहि अछि, मुदा मनबोध एक चौपाई मे तकरा समेटि लेलनि अछि। एहि सँ इहो स्पष्ट होइछ जे प्रचलित कथा विना अपन उपजीव्यक परवाह कयने आगू उद्धृत भ' जाइछ मुदा तें एकरा भागवतक प्रभाव कही, तकरा तात्विक रूप सँ हम सही नहि पबैत छी, कारण से भेने रचनाक मूलध्वनिक प्रभावित होयब अवश्यम्भावी रहैत छैक। मनबोधक मूलस्वर हरिवंशेक छनि, से निस्सन्देह।

मैथिलीक अध्येता लोकनि मे दू गोट रचना-गुणक कारण मनबोध कें बेस प्रतिष्ठा देल जाइत छनि। पहिल तँ जे मनबोधक कृष्ण विद्यापतिक कृष्ण सँ सर्वथा भिन्न छथि। राधा आ गोपी लोकनिक संग लीला-विलास बला हुनकर विद्यापतीय छवि सँ मनबोधक छवि एहि तरहें भिन्न छैक जे एहि ठाम कृष्ण एक लोकोपकारी आ लोकसंग्रही नायक छथि। डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र लिखने छथि—'हिनक कृष्ण विद्यापतिक कृष्ण जकाँ बहुवल्लभ आ रतिकेलि मे रत नहि वरन एक सामाजिक कृष्ण छथि जनिका कवि प्रारम्भ मे ग्वाल-बालक रूप मे देखैत छथि मुदा पश्चात हुनके लोकोपकारी एवं लोकसंग्रही रूप सेहो देखाओल गेल अछि।'[38] ओ पुन: इहो लिखैत छथि जे मैथिली मे कृष्णक व्यावहारिक चरित्र कें मनबोधे सब सँ पहिने रचना मे अनलनि आ वात्सल्य, जे कि पहिने मात्र एक टा भाव बूझल जाइत छल तकरा रसक रूप मे स्थापित केलनि। तहिना, नारीक मातृरूपक अंकन अद्यपर्यन्त कोनो कवि हिनका सँ पहिने नहि कयने छल। मनबोधक एहि विशेषताक विवरण मायानन्द मिश्र दैत छथि—'एखन धरि शृंगारिक काव्य मे नारी कें एकमात्र विलासिनी मानि क' चित्रण कयल गेल छल, मनबोध यशोदाक माध्यमे मातृरूप केर सहज वात्सल्यक मर्मस्पर्शी चित्रण क' कें सात्विक भावक कारणे जन-जन कें मुग्ध क' देल।'[39]

हरिवंश पुराणक विष्णुपर्व कें सामने राखि क' देखी तँ उपर्युक्त समस्त

विशेषता जकरा हमरा लोकनि मनबोधक आविष्कार क' क' मानैत रहल छी से वस्तुत: अपन मूल रूप मे हरिवंश मे उपलब्ध अछि। मातृत्व, बाललीला, लोकोपकार, लोकसंग्रहक समस्त गुण ओहि ठाम कृष्ण मे वर्णित भेल छैक। ओतय हुनका विष्णुक अवतार आ अलौकिक शक्ति-सम्पप मानल गेल अछि मुदा व्यावहारिक जीवन सहज-स्वाभाविक रूप मे आयल अछि, यद्यपि कि अवतारवादी मान्यताक अनुरूपे अतिरंजनाक तत्त्व सगरे व्याप्त अछि। हरिवंश एक आरम्भिक पुराण थिक। भागवत सँ कम सँ कम 300 वर्ष पूर्वक ई रचना थिक जाहि मे वैष्णवधर्मक आरम्भिक स्वरूप भेटैत अछि। डॉ. वीणापाणि पाण्डे हरिवंशक सांस्कृतिक पक्ष पर उच्च स्तरक शोध कयने छथि जे प्रकाशितो अछि। अनेक साक्ष्यक संग ओ देखौलनि अछि जे ने केवल तहिया वैष्णवधर्म अपन आरम्भिक चरण मे छल अपितु वैष्णव आ शैव मत कें एक दोसरक विरुद्ध घोषित करैबला विचारक खंडन अनेक स्थान एहि ठाम उपलब्ध अछि। ई कृति अपन मूल आशय मे धार्मिक समन्वयक प्रयास करैत देखाइत अछि। तहिना ओ इहो देखैत छथि जे 'महाभारत के बाद सर्वप्रथम दुर्गा का व्यापक व्यक्तित्व प्रस्तुत करने के कारण शक्तिपूजा के दृष्टिकोण के विकास के दृष्टिकोण से भी हरिवंश का स्थान महत्त्वपूर्ण है।'[40] एहि सब बातक स्पष्ट प्रभाव हमरा लोकनि 'कृष्णजन्म' पर देखैत छी। हरिवंश मे शृंगार भावक अभाव अछि, तें से अभाव कृष्णजन्महु मे अछि। ओहि ठाम कला आदि-सांस्कृतिक तत्वक प्रमुख भागीदारी अछि, तकर प्रभाव हमरा लोकनि एकर एहि अनुवादो मे देखैत छिऐक। एहि सब कारण सँ, ई बात कहब, जेना कि मायानन्द मिश्र आदि केलनि अछि जे शृंगारक स्थान पर भक्ति कें, विलासक स्थान पर मातृत्व कें स्थापित करब मनबोधक क्रान्तिकारी अवदान छलनि, हमरा अतिवादी बुझना जाइत अछि। ई सब वस्तु हुनका अपन स्रोतकृति सँ भेटल छलनि। शक्तिक स्मरण सँ ओ ग्रन्थारम्भ केलनि, से समेत स्रोतग्रन्थक प्रेरणा थिक। ई समस्त बात एतेक स्पष्ट होइतहु कोना विद्वान लोकनि एहि कृतिक आधार भागवत कें मानलनि, आश्चर्यजनक थिक, कारण कथाक कतहु अन्यत्रे भेटब मुख्य नहि थिक, मुख्य थिक मूल प्रतिपाद्य। हमरा लोकनि जँ मनबोध कें स्त्रीक प्रति आ वर्णव्यवस्थाक प्रति उदार रुखि रखैत देखैत छी तँ हमरा बूझल रहबाक चाही जे ई रुखि मूलत: हुनकर स्रोतकृतिक छियनि। तहिना जँ ओ कृष्ण कें वत्सल, लोकसंग्रही आ कलापूर्ण पबैत छथि तँ ताहू मे अवदान स्रोतकृतिक अछि जकर ओ अपन दुर्लभ कवित्वशक्ति सँ मानू प्रतिरूप रचि देलनि अछि।

एहि कृतिक अस्सल जे दू गोट महत्व अछि, से थिक—एक तँ एकर काव्य-परिवेश, मिथिलाक वास्तविक जन-जीवनक चित्र जे विद्यापतिक बाद कदाचित पहिले बेर कविता मे स्पष्ट देखार पड़ैत अछि, आ दोसर एकर काव्य-भाषा, जे आगूक कवि-समाज लेल तहिना एक परिपाटी बनि क' ठाढ़ भ' गेल जेना अपना युग मे

विद्यापतिक भाषा भेल छलनि। एहि कृतिक काव्य-परिवेशक विवरण दैत डॉ. वासुकीनाथ झा लिखलनि अछि—'प्रतीक रूप मे पुराण सँ कथा लए मिथिलाक सांस्कृतिक ढाँचा मे ढ़ारि ओकरा विस्तार कए रोचक ओ स्वाभाविक बनेबा मे कवि सिद्धहस्त छथि। अतएव मैथिल संस्कृति पर प्रकाश देबाक कारण सेहो ई ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण अछि।'[41]

हुनक दोसर विशेषता थिक हुनक काव्य-भाषा, जकरा मायानन्द मिश्र 'जनभाषा' कहैत छथि। एकर तात्पर्य बुझबाक थिक जे विद्यापतिक भाषा मध्यकालीन भाषा छल जे बराबर जनप्रयोगक कारण आब, पाँच सौ बरस बाद, ओहने नहि रहि गेल छल। आब लोक जे भाषा बजैत छल से विद्यापतिक भाषा सँ भिप भाषा छल, ई काव्य ओही भाषा मे लिखल गेल अछि। बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल, भाग-2, 1882 मे 'मनबोधक हरिवंश' कें मूल मे प्रकाशित करैत जे संक्षिप्त टिप्पणी ग्रियर्सन लिखने छलाह, ओहि मे आधुनिक मैथिली भाषाक उदाहरण हर्षनाथ झाक कविता कें कहने छलाह, आ विद्यापतिक भाषा कें प्राचीन मैथिली, आ एहि दुनूक बीच मनबोधक भाषा कें 'कनेक्टिंग लिंक' कहने रहथि।[42] आधुनिक काव्यभाषाक नमूना उठेबा मे ग्रियर्सनक अपन सीमा छलनि, आ ताहि मे अनैसम शताब्दीक उत्तरार्धक हुनक काल-सीमा सेहो छलनि जखन कि परिप्रेक्ष्य पूरा साफ नहि भेल छलैक। एहि बारे मे मायानन्द मिश्र कहैत छथि—'मनबोध सँ पूर्वक मैथिली काव्य, अलंकार ओ तत्सम, सामासिक बहुल शब्दयोजना, अलंकार विशेषत: शब्दालंकारक संघटनक अतिशयता, व्यंग्य ओ लाक्षणिक प्रयोगक प्रचुरता, रागताल तथा काव्य-शास्त्रक शास्त्रीयता एवं पाण्डित्य प्रदर्शनक चमत्कार सँ वर्गीय भ' गेल छल, जनमानस ओ जनजीवन सँ दूर हटि गेल छल। मनबोध पुन: काव्य कें जनजीवनक निकट आनि देल जाहि मे सहायक भेल हुनक प्रबन्धात्मकता तथा वर्णनशैलीक सहजता। ठेठ शब्दावली ओ लोकोक्ति-प्रयोग सँ हिनक रचना आरो अधिक निखरि उठल, ग्राह्य। जेना मैथिली कें पहिलुक बेर अपन शब्दात्मा भेटि गेल हो। कालान्तर मे एही प्रवृत्तिक कारणे कवीश्वर चन्द्र, ज्योतिषाचार्य सीताराम झा, जनकवि यात्री जी अधिक ख्यात भेलाह।'[43] मायानन्द मिश्रक एहि कथन मे हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे जाहि भाषा कें ग्रियर्सन 'कनेक्टिंग लिंक' कहने छलाह, से वस्तुत: कोन प्रकारक काव्यभाषा छल आ एकर मौलिक प्रयोक्ता लोकनि के छलाह।

रमानाथ झा लिखने छथि जे विशुद्ध अपन भाषा मे, जे कि हमरा लोकनि बजैत छी ताही प्रचलित काव्य-भाषा मे लिखल कविता मे एक गोट आत्मीयताक भान अबैत छैक जे काव्यक रसास्वादन सँ किछु विशेष होइत छैक। 'मातृभाषा मे लिखल काव्य मे एक गोट विलक्षण चमत्कार होइत छैक जकर प्रभाव हृदय कें बड़ शीघ्र ओ बड़े प्रबलता सँ ग्रहण क' लैत छैक। जे काव्य जतेक अधिक प्रचलित भाषा

मे लिखल जायत ताहि मे से ततेक बेसी होयतैक।'[44] मनबोधक काव्यक लोकप्रियताक पाछू ओ मूल कारण एकरे पबैत छैक जाहि दुआरे गामे गाम 'आबालवृद्धवनिता सब प्रेम सँ पढ़ैत छल, राग लगाए गबैत छल, कण्ठस्थ क' रखने छल।'

मुदा, जे बाट मनबोध पकड़ने छलाह, मैथिलीक पण्डिताउ परिवेश मे ई सहजहि मान्य भ' जाइत सेहो संभव नहि छलैक। हुनक काव्य-भाषा पर अशुद्धि, कृत्रिमता, अतिप्रयोग आदिक आरोप सेहो लगाओल गेल। आलोचक लोकनिक एहि दू वर्गक विचार-सार डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एहि शब्दें व्यक्त केलनि अछि—'यद्यपि किछु आलोचक कें मनबोधक भाषा अत्यन्त शुद्ध, वाक्य ओ शब्दक विन्यास रुचिगर ओ कटगर बुझाइत छनि किन्तु किछु आलोचक मनबोधक भाषा कें पण्डिताम भाषाक प्रतिक्रिया मे ठेठ गमैया भाषाक प्रयोग बुझैत छथि। मनबोध भाषा कें गमैया बनयबाक फेर मे वृक्ष कें ब्रिच्छ, वृत्तान्त कें विरतान्त ओ तृण कें त्रिण लिख' लगलाह जाहि सँ भाषा मे कृत्रिमता आबि गेल।'[45] मुदा, हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे अपन सम्पूर्ण काव्य मे मनबोध सरल शब्द द्वारा वर्णनात्मक आख्यानक शैली अपनौलनि अछि जाहि मे ठेठ शब्दक बाहुल्य अछि आ अल्पज्ञ जनसाधारण सेहो आराम सँ एकरा बूझि सकैत अछि आ काव्यक पूर्ण रसास्वादन क' सकैत अछि। अपन एहि प्रयोगक लेल ओ एक अभिनव छन्दक प्रयोग केलनि, जकर नाम आइ चौपाइ थिक। मैथिली मे सिद्ध-साहित्यक जबाना मे भने एहि छन्दक कतोक ठाम प्रयोग भेल होउक मुदा ई मैथिलीक प्रचलित छन्द नहि छल। आ मनबोध अपन सम्पूर्ण काव्य एही एक छन्द, चौपाइ मे लिखलनि।

अपन काव्यक आरम्भ मनबोध एहि तरहें करैत छथि—'प्रणमौं हिमगिरि कूमरि चरन/ जे बल कबि सभ त्रिभुवन वरन/ हमहुँ कैल अछि मन बड़ गोट/ कृष्ण जनम परिनय नहि छोट/ कोनपरि ह्वैत तकर निरबाह/ एखन लगै अछि अगम अथाह/ ह्वैत कदाचित हो पुनु नीक/ नहि हो तकरो संका थीक/ तें डर पुनु पुनु मंगल करिअ/ हरिपद कमल ह्रिदय हम धरिअ।' वर्णन आ भाषाक सहजताक पता हम सब एहि ठाम पाबि सकैत छी। मुदा किछु बात आरो ध्यान देबाक योग्य थिक। 'हिमगिरि कूमरि' अर्थात पार्वतीक विनती सँ ओ ग्रन्थारम्भ भेल अछि। सोचला पर लागत जे ई प्रचलन सँ हँटि क' तँ जरूर अछि, मुदा मिथिलाक लेल अस्वाभाविक नहि अछि। मुदा गहिराइ सँ जँ देखी तँ हरिवंश पुराणक परायण ओ कतेक ध्यानपूर्वक कयने छलाह आ कोना ओकर आत्मा हुनका भावगम्य भ' गेल छलनि, तकर किछु पता एहि ठाम लगैत अछि। पहिनहि कहल गेल जे हरिवंश मे शाक्त धर्मक आदि-रूप भेटैत अछि। ओहि ठाम देवी एकानशाक वर्णन आयल अछि जे योगमाया पार्वती थिकीह। फरफ्यूहर एवं अन्य अध्येता लोकनिक निष्कर्ष विस्तार सँ बतबैत वीणापाणि पाण्डे लिखलनि अछि—'हरिवंश में एकानशा तथा पार्वती के समन्वय का आदिरूप देखा जा सकता है। आर्या एकानशा तथा पार्वती के समन्वित रूप के दर्शन इस प्रसंग में दो प्रकार के विशेषणों में होते हैं।'[46] पार्वती एहि ठाम ज्ञान आ कवित्वक देवी थिकी। मनबोधरचित हरिवंशक मूल मैथिली पाठ प्रकाशित करबाक अतिरिक्त ग्रियर्सन दू टा आरो काज केलनि जे आगू 1884 मे ओही जर्नल (बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल) मे प्रकाशित भेल। एक तँ दसो अध्यायक अंग्रेजी अनुवाद आ दोसर अत्यन्त परिश्रमपूर्वक काव्य मे प्रयुक्त शब्द सभक विस्तृत अनुक्रमणिका। ओ सदैव एहि कृति कें 'हरिवंश' कहलनि। 'हरिवंश'क अनुवाद अथवा रूपान्तरणक प्रयास आधुनिक भारतीय भाषा सब मे पहिनहु सँ होइत आएल अछि आ एहि क्रम मे तेलुगुक चौदहम शताब्दीक कवि एर्रन के 'हरिवंशमु' कें देखल जा सकैत अछि। एकर कृष्णजन्म नामकरणक पाछू तथ्य एतबे संभव जे 'कृष्णजन्म परिणय नहि छोट' ओ कहैत छथि। मुदा एहू हिसाबें जँ देखी तँ एकर नाम 'कृष्णजन्म परिणय' हेबाक छल। अस्तु। एहि काव्यक रचनाक (वा एकर सारलेखनक) जे 'बड़ गोट मन' ओ बनौलनि अछि से हुनका अगम-अथाह लगैत छनि, तँ एकरा मात्र कविक विनम्रशील वचन मात्र नहि बुझबाक चाही, एकरा पाछू अनेक कारक अछि जाहि मे सँ एक सांस्कृतिक समन्वयन सेहो थिक। एहि ठानल काज कें ओ क' सकताह, ताहि संबंध मे इमानदारीक संग ओ तीन गोट संभावना देखैत छथि—(1) सम्भव थिक जे ओ ई काज क' जाथि आ तकरा नीक मानल जाय। (2) सम्भव थिक जे काज पूर्ण हो मुदा ओकरा नीक नहि मानल जाय। (3) सम्भव थिक जे एकरा ओ पूरे नहि क' पाबथि। आश्चर्यजनक थिक जे हुनकर ई तीनू संभावना सत्य साबित भेल। एकरा ओ क' सकलथि तें आइ हमरा सब कें प्राप्त अछि। इहो सत्य जे हुनक कयल ई काज बहुत नीक मानल गेल आ आइ एकरा एक युगान्तकारी रचनाक स्थान प्राप्त छैक। तखन, इहो सत्य जे ओ एकरा पूरा नहि क' सकलाह। 'हरिवंश' प्रकाशित करैत ग्रियर्सन जे परिचायिका लिखने छलाह ताहि मे देने छथिन जे एहि काव्यक दू गोट पाण्डुलिपि हुनका जोगियारा गामक बाबू नारायण सिंह सँ भेटल रहनि। एक मे दस अध्याय रहैक, दोसर मे नौ अध्याय। नौ अध्याय बला पाण्डुलिपि अपेक्षाकृत अशुद्ध आ अयोग्य लेखकक प्रतिलिपि कएल छल।[47] महामहोपाध्याय उमेश मिश्रक संस्करण मे जे शेष आठ अध्याय देल गेल अछि ताहि मादे रमानाथ झाक ई आकलन पूर्ण विश्वासयोग्य अछि जे ई कोनो दोसर कविक लिखल थिक जे एहि अपूर्ण ग्रन्थ कें पूर्ण करबाक श्रद्धा रखैत छल मुदा मनबोध-सन विलक्षण कवित्व सँ रहित छल। दोसर दिस एहू बात पर भरोस करब कठिन लगैत अछि जे मनबोध-सन कवि एकमात्र यैह कृति रचने हेताह।[48] हुनकर आन कोनो रचना प्राप्त नहि होइत अछि, तकरा पाछू सम्भव जे पुरान पोथाक संरक्षणक प्रति मैथिल समाजक उद्यमहीनता तथा स्वयं नदीमातृक मिथिलाक आबोहबा जिम्मेदार हो। अंत मे मनबोध कहैत छथि जे जें

कि एहि लेखन मे विघ्न-बाधाक सम्भावना अछि तें एहि डर सँ ओ निरन्तर हरिक स्मरण करैत छथि जे सब मंगल हो।

मिथिले मे नहि, सम्पूर्ण देशक धार्मिक हिन्दू जनता मे अदौ सँ ई जनविश्वास रहल अछि जे नि:संतान अथवा पुत्रहीन दम्पती कें हरिवंशक पाठ सुनबाक चाही। एक रोचक बात हमरा लोकनि ई देखैत छी जे 1882 मे मूलपाठ प्रकाशित करैत ग्रियर्सन जे परिचायिका लिखने छलाह ताहि मे सूचना देल गेल जे मनबोध नि:संतान छलाह। मुदा 1884 मे जखन ओ एकर अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करौलनि तँ ओहि संगे सेहो एक छोट टिप्पणी जोड़लनि जाहि मे लिखलनि जे पहिने जे हम मनबोध कें नि:संतान लिखने छलहुँ से सही नहि छल, ओ एक कन्याक पिता छलाह जे (कन्या) वर्त्तमान महाराजक कुल मे ब्याहल गेल छली।[49] पंजीक आधार पर रमानाथ झा एहि बात कें सत्य मानैत छथि जे कन्या छलनि, मुदा वर्त्तमान महाराज हुनकर सन्तति-प्रक्रम मे पड़ैत छथिन, ताहि सँ ओ असहमत भेला। ओ कहैत छथि—'हँ, मधुबनीक बड़ा तरफक बाबूसाहेब लोकनि हुनक सन्तान थिकथिन।'[50]

कोनो मनोकामना सँ मनबोध एहि कृतिक रचना कयने होथु तकर कोनो संकेत कतहु नहि देने छथि।[51] दस मे सँ केवल दू अध्याय अछि जकर अंत मे ओ फलश्रुति देने छथि। चतुर्थ अध्याय जाहि मे कालियदमनक वर्णन अछि, के अंत मे अबैत अछि—'कालीदमन पढ़त जे सुनत/ से जम कें त्रिन बत कै गनत।' अर्थात एकर श्रवण सँ मृत्यु-भय नाश होइत अछि। तहिना गोवर्धन-धारण बला पंचम अध्यायक अन्त मे अबैत अछि—'जे गोवर्द्धन सुन मन लाय/ भवसागर तरि हरि पुर जाय।' अर्थात एकर श्रवण सँ बैकुण्ठ भेटैत छैक। आदि। रचनाक धार्मिक अभिप्राय स्पष्ट छैक, जे कृष्णेक विषय मे लिखल विद्यापतिक अभिप्राय सँ सर्वथा विपरीत अछि। ई धर्मधारणा पौराणिक छैक, अर्थात वैदिक नहि, जे कि आगुओ मिथिला मे चलती पकड़ने रहल।

कृष्णजन्मक रचनावैशिष्ट्य पर अनेको बात अनेक विद्वान लोकनि विभिप ठाम कहने-लिखने छथि। ओहि सब वस्तु कें देखने मनबोधक कवित्व-प्रतिभाक भान होइत अछि। एहि रचनाक मूल स्वभाव वर्णनात्मक अछि। मनबोध मितभाषी कवि छथि जे शब्दक सम्यक् प्रयोग करब जनैत छथि। एहि मे प्रकृति-वर्णन सेहो अछि आ मानव-स्वभावक सेहो मुदा से जरूरतिये भरि अछि तें गझिन आ लसिगर अछि। थोड़बे मे ओ तेहन वर्णन करैत छथि जे आँखिक आगू आबि चित्र ठाढ़ भ' जाइत अछि। जयकान्त मिश्रक कथन छनि जे 'एहि मे ने कवित्वक उड़ान अछि आ ने पाण्डित्यपूर्ण कल्पनाक चमत्कार—एहि मे अछि सोझ डाँड़िए कथा कहबाक कौशल।'[52] मुदा रमानाथ झाक कहब उनटा छनि जे कथाक चमत्कार एहि मे अछिये नहि। एहि ठाम सब चमत्कार कविक वर्णनहि मे अछि। कथा मे वार्तालाप मुख्य

अंश होइत अछि, मुदा से एहि ठाम बहुत कम अछि, आ से जँ अछियो तँ अपन रचना-स्वभावक कारणें रोचक अछि। हुनक कहब छनि—'एकर वर्णन सब ततेक सजीव अछि आ तदुपयुक्त भाषा मे उपनिबद्ध, जे वर्णित विषयक चित्र आँखिक समक्ष उपस्थित क' दैत अछि।'[53]

प्रो. मायानन्द मिश्र अपन इतिहास मे मनबोध कें क्रान्तिकारी कहैत छथि, मुदा तकरा पाछू जे कारण सब बतबैत छथि, से वैह बात सब थिक जे आनो इतिहासकार आ आलोचक लोकनि अपना अपना ठाम लिखने छथि। असल मे क्रान्तिकारी तँ ओ कहलनि अछि ठीक, मुदा तकरा पाछू जे मूल कारण छैक मनबोधक आधुनिकता, तकर विस्तार मे जेबा सँ ओ परहेज क' गेल अछि। वास्तविकता ई थिक जे आधुनिक कविता कें सभतरि प्रभावित केनिहार मनबोध एकर एक आदिम पुरखा छलाह। हुनका कविता सब मे जे आधुनिकताक रूप सब आएल अछि तकरा सब कें देखने हुनक एहि विशेषता कें लक्षित कएल जा सकैत अछि।

एक विशेषता हुनक छनि जे अपन वर्त्तमान स्थान-काल-पात्र कें बेरोकटोक ओ कविता मे उतारि अनैत छथि। परम्परित ढंगक कविता लिखनिहार कवि-समाजक लेल ई बात कतेक कठिन अछि, तकर अनुमान हम सब क' सकैत छी आ पहिने ठाम-ठाम एहि बातक चर्चा सेहो भ' चुकल अछि। एक एहन कृतिकार, जिनका लग मे मौलिक लिखबाक आत्मदंभो धरि नहि छनि, घोषित रूप सँ ओ हरिवंशक रूपान्तरण क' रहलाह अछि, एहन कविक लेल ई काज कतेक कठिन होयत, तकर अनुमान क' सकैत छी।

दोसर जे एना उपजीव्य कें वर्तमान कें उतारैत ओ ऐतिहासिकताक अवज्ञा करैत होथि, सेहो नहि अछि। हुनक रचनाक एक स्वभावगत आभामंडल बनि गेल छैक जाहि मे इतिहास आ वर्तमान अपन सही-सही जगह पहुँचि क' फिट होइत चलैत छैक। सर्वभारतीय बनाम स्थानीय के समस्याक समाधान सेहो संगहि चलैत रहैक छैक। किछु उदाहरण ल' क' बात कयल जाय तँ बात बेसी स्पष्ट होयत।

कृष्णक जन्म भेल छलनि सुदूर मथुरा मे। हरिवंश लिखल गेल ओहू सँ सुदूर धुर दक्षिण भारत मे, जेना कि विद्वान लोकनिक मत छनि।54 मुदा मनबोध एकर रूपान्तरण मिथिला मे क' रहल छला तँ रचनाक समूचा कलेवर ने केवल मैथिली भाषा सँ, अपितु मिथिलाक लोक सँ, ओकर संस्कृति आ परम्परा सँ, रीति आ रेबाज सँ भरल-पुरल अछि। कृष्णक जन्मक अवसर पर जे स्त्रीगण डोमकछ नाच केलनि, सेहो कतेको-कतेक ठाम, कोनहु दल अँगना मे क' रहल छथि तँ कोनो दल दुआरे पर शुरू क' देलनि। नाचि नाचि क' जे सोहर गाओल गेल, ओ तकर वर्णन करैत छथि। पंक्ति छनि—'क्यो घर अँगना केअओ दुआरि/ कै ठाम डोमकछ नाच गोआरि/ सोहर गाब भाब बेकताओ/ नाचितहिं जाए पुनु नाचितहिं आओ/ नाच काछ सब

तरहक भेल/ अपन अपन घर सब क्यो गेल।' भाव बेकछा-बेकछा क' सोहर गेबाक दृश्य छैक। गौनिहारि सभक हृद्गत भाव गीतक भाव कें कोना बहुगुणित करैत अछि, तकर प्रमाण स्त्रीगण लोकनिक उमंग थिक जे नृत्य बनि क' उमड़ल अछि—नाचितहि जाए पुनु नाचितहि आउ। कृष्ण जखन खेलबा-धुपबा जोगर भेलाह तँ जे खेल ओ सखा लोकनिक संग खेलाइ छथि से मिथिलाक खेल थिक—टेलबा टेलइ। ओहि खेलक जे नियम छैक ओ तकरो उल्लेख कयने छथि। ऐतिहासिक अनवधानकताक तँ संशये छोड़ी, ओ तँ ततेक सजग छथि जे उल्लेखपूर्वक कहैत छथि जे एक दिन ब्रज मे ई खेल भेलैक—'एक दिन ब्रज मे खेड़ि बड़ भेलइ/ नाम तकर थिक टेलबा टेलइ/ हारि जीति ओहि ओतबे निबह/ जे जित तकर भार से उबह।' एहि खेल मे हारल खेलाड़ी विजेता कें अपन पीठ पर ऊघि क' ठाम पर धरि ल' जाइत छैक। कंसक वध सँ कुपित जरासंध जखन अपन विशाल सेना साजि क' मथुरा पर हमला केलक तँ ओहि सेना मे कोन-कोन राजक सैनिक सब शामिल छलाह? मनबोध हिसाब दैत छथि—'सोरठ भोरठ और गढ़पाल/ अंग, बंग आएल नेपाल/ बेतिया, तिरहुति और जे देस/ त्रिपति हंकारल सकल नरेश/ अटल न कटक कोट छल जतहु/ मगह जगह नहि रहले कतहु।' ऐतिहासिक बुद्धिएँ देखी तँ लागत जे ई सब प्रान्त जरासंधक साम्राज्यक अन्तर्गत अबैत छल हो वा नहि, मुदा अतीत आ वर्तमानक धमाचौकड़ी एहि कृति मे बेस मजगर भेल अछि।

स्थानिकताक सन्दर्भ आरो अनेको ठाम आयल अछि। तकरा मिथिलाक लोक-संस्कृतिक रंग मे पूरा रंगल देखल जा सकैत अछि। शिशुक जन्म भेला पर कोना घर-घर हकार देल जाइछ, आएलि स्त्रीगण कें तेल-सिन्दूर लगाओल जाइत छैक। कृष्णजन्मक प्रसंग वर्णन करैत लिखलनि अछि—'ह्वैत प्रात भेल नग्र हकार/ तखनुक हरख कहए के पार/ तेल सिन्दुर सब देलन्हि ओ आरि/ चरि चरि चुर देअ मथा गोआरि/ हरि महिमा कथुहुक नहि खागि/ ठेहुन तर गेल सिन्दुर लागि।' पूतना जखन कृष्णक हत्या करए अबैत अछि, ओतेक विशालकाय स्त्रीक स्तन मे लटकल बाल कृष्णक ओ बिम्ब बनौलनि अछि—'सबहु देखलअन्हि जे छल जागल/ तारक तरु तर लबनी लागल।' केहन देशज दृश्य अछि—ताड़क गाछ मे ताड़ी जमा करबाक लेल लटकल लबनी। एहना-एहना स्थिति मे माइ यशोमतिक जे विकलता होइत छनि तकर वर्णन अनेक ठाम आएल अछि—'आगे माइ आगे माइ अजगुत भेल/ ई कहि जसोमति निज सुत लेल।' पिताक प्रतिक्रिया थोड़ेक भिप तरहक होइत छैक—'कीदहु पढ़ि हरि नन्द चुमौल/ आसिख दै हरि हृदय लगाओल।' अनिष्ट सँ बचेबाक लेल धिया-पुता कें चुमाओल जेबाक रेबाज आइ धरि अछि। मुदा, मनबोध जँ कनेको कच्चा कवि होइतथि तँ 'कीदहु पढ़ि' नहि लिखितथि, ओहि मंत्रक संकेत करितथि जे चुमाएल जेबा काल पढ़ल जाइत छल आ सैह बतबैत वैदिक ब्राह्मणधर्मक गुणगान

करय लगितथि आ एम्हर कविता दूरि भ' जाइत। गाम-घर मे धिया-पुता कें डरेबाक लेल मुँहबौआक डर एखनो परंपरित समाज मे देखाओल जाइछ। कंश जखन अपन सहायक केशी कें एहि दिस पठाओल तँ ओ मुँहबौआक रूप धारण क' क' अबैत अछि। वर्णन अछि—'एक दिन गोकुल भै गेल हौअ/ हए रूप धए पहुँचल मुँहबौअ/ झट झट ओठ जीह लए चाट/ खट खट खूरै मेदनि काट/ धैलक तरह जेहन गोट थीक/ कैलक गोप गोटेक टंग झीक/ जपबह रुद्र भखब हम सूद/ घोड़ न कूदै बाकर कूद।' घोड़ो ओना कूदि नहि सकैत अछि जेहन ओकर कूद छल। कृष्ण ओकरा मारलनि। मुदा मुइल असुर छुइना गेल छलनि तें आपस आबि पहिने गंगाजल छिटलनि—'मुइल असुर गोट छुइला गेल/ तखन कृष्ण गंगाजल लेल।' गंगाजलक प्रति ई आस्था शुद्ध स्थानिक थिक। कृष्ण जखन कंशक आमंत्रण पर मथुरा लेल विदा भेलाह, गोपी लोकनि अनिष्ट शंकावश नहि चाहैत छलि जे ओ जाथि। ओ लोकनि गामक ज्योतिषी कें अनुकूल करबाक प्रयास करैत छथि जे ओ कहि देथि—यात्रक योग नहि अछि, भदबा अछि—'हम भरि जनम सुदिनि भए रहब/ पूछथि अन्हि तँ भदबा कहब।' एहन-एहन अवसर पर घटाटोप संगे भार पठेबाक प्रथा सेहो स्थानिक थिक। नन्द जेठरैयत छला। बाइस सौ भार जे जा रहल अछि, एक एक कें सुनिश्चित करैत छथि जे एको टा दही अधलाह नहि हो—'बाइस सए फरमाइस भार/ दहि दुध घ्रित लए चलल गोआर/ नन्द महर जैठरैअति ताहि/ एकओ दहि नहि लेल अधलाहि।' कृष्ण जखन विदा होइत छथि, स्त्रीगण गोरहा पर चढ़ि चढ़ि हुनका देखैत छनि जे ओ दूर धारि देखार पड़ि सकथि। एक-एक गोरहा पर चारि-चारि स्त्री चढ़ि गेली आ विरहक मातलि तेना नोर चुबबैत रहली, मनबोधक कवि-कल्पना छनि—'एक गोरहा चरि-चरि गोटि चढ़लि/ की रह संच भए विरहक डढ़लि/ सब गोरहा गोबर भए गेल/ ओरख फिरि गेल लोरक लेल।'

मनबोधक काव्य-रचनाक एक अन्य विशेषता थिक जे कवि कें अपनहु हुनकर कविता मे उपस्थित देखल जा सकैत अछि। प्राचीन कवि-परिपाटीक ई विरुद्ध बात थिक जतए कवि कें अपना उपस्थित हेबा सँ वा कि वस्तुस्थिति कें ओकर नाम ल' क' सुनिश्चित अंकित करबा सँ रोकल जाइत छैक। कविक उपस्थिति कतोक तरहक भ' सकैत अछि। जेना हमरा लोकनि जगत्प्रकाशमल्लक कविता मे देखैत छी एक टा तेना, अथवा जेना कि आगाँ चन्दा झा मे देखैत छी, जे अधिकतर आत्मनिवेदनक रूप मे आएल अछि। मनबोधक कवि एहि सब सँ भिप छथि आ ओ अधिकतर कवितावाचकक रूप मे अबैत छथि। ध्यान देने पाएब जे हुनकर कथा-तत्त्व मे जे क्षिप्रता छनि, जे निश्चिते काव्यत्वक पटुता सँ पुष्ट अछि, ओहि मे स्वयं कविक उपस्थितियोक कम योगदान नहि अछि। अपन उपस्थितिक भान ओ तीन तरहें करबैत छथि। एक तँ हरेक अध्यायक अंत मे ओ निश्चित रूप सँ उपस्थित होइत छथि आ

चौपाइक अंतिम दू, कतहु कतहु तँ चारि चरण कें भणिताक रूप दैत छथि। किछु ठाम तँ ई पाँती कथा-समापनक सूचनाक रूप मे आएल अछि। जेना तृतीय अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध हम अपन गेआन/ बरनल बालगोविन्दक धेआन।' अथवा चतुर्थ अध्यायक अन्त मे—'भन मनबोध सभ हरखित भेल/ गीत न्रित्य करितहि सभ गेल।' अथवा दशम अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध मगह पति फिरल/ घन घन जे ऐलाह से मरल।' किछु ठाम एहन भेलैक अछि जे कथा ओहि अध्याय मे पूर्ण नहि भ' सकलैक अछि वा कि कथा-सूत्रक कोनो आन शाखा अगिला अध्याय मे अयबा लेल छैक। एहना ठाम एकर संकेत ओ पंक्ति मे दैत छथि। जेना प्रथम अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध पछाँ किछु रहल/ कथा प्रसंग आगु हम कहल।' अथवा नवम अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध कंश वध कहल/ अग्रिम सो पुनु कहबां रहल।' मुदा किछु ठाम एहन होइत छैक जे अध्यायक कथा-तत्त्व हुनका मुग्ध कयने रहैत छनि आ से मुग्धता स्वयं कविक उपस्थिति संग मुखरित होइत अछि। जेना द्वितीय अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध हरि अवसर पाओल/ रति एक महिमा अपन देखाओल।' ध्यान देबाक थिक जे 'रति' शब्दक प्रयोग एतय मापक इकाइक रूप मे भेल अछि जे कि लोकसाहित्य मे तँ आम अछि मुदा शिष्ट साहित्यक लेल ई विरल प्रयोग थिक। किछु ठाम तँ हुनकर ई मुग्धता कौतुक दिस बढ़ि जाइत छनि। जेना आठम अध्यायक अंत मे—'भन मनबोध हृदयां एह सूझ/ रंगभूमि किछु बरनए बूझ।' किछु ठाम ओ एहू सँ आगू जाइत छथि जतए हुनक मुग्धता विस्मय मे बदलि जाइत अछि आ तदनुरूपे भाषा ग्रहण क' लैत अछि। जेना छठम अध्यायक अंत मे, जतए अक्रूर कें कृष्ण सँ भेंट भेला पर जे हर्ष भेलनि—'भन मनबोध अकरूड़क हरख/ बरनिअ तों बित बारह बरख।' ओहि हर्षक वर्णन करय लागी तँ बारह वर्ष बीति जाएत। दोसर हुनकर एक प्रवृत्ति ई देखब जे समाजक धार्मिक धारणाक अनुरूपे कोनहु विशेष प्रसंगक ओ फलश्रुति सुनबैत छथि आ कहैत छथि जे एहि प्रसंग कें सुननिहार कें कोन प्रकारक पुण्य हेतनि। कहब जरूरी नहि जे ई पौराणिक शैलीक अनुगमन थिक, जकर आश्रय ओ चारिम आ पाँचम अध्यायक अंत मे लेलनि अछि। किछु ठाम तं ओ अध्यायक बीचहि मे उपस्थित भ' जाइत छथि। जेना, सातम अध्याय मे, जतए कृष्णक रूप-वर्णन करैत लिखलनि—'सहस वदन होउ तौं रुप कहिअ/ देखइक मन होअ देखितहिं रहिअ।' किछु ठाम हुनकर उपस्थिति लोकोक्ति सभक प्रयोगक रूप मे अकानल जा सकैत अछि। जेना नवम अध्याय मे मल्लयुद्धक समय कंशक अत्युच्च आसन देखि क' हुनकर प्रतिक्रिया छनि—'कालक हाथ कतहु केओ बांच!'

मनबोधक एक आन विशेषता हुनकर वर्णन-कौशल छनि जे अत्यन्त संक्षेप मे बात कें रखितहु ततेक प्रभावकारी भ' क' प्रस्तुत होइछ मानू दस्तावेजीकरणक

सजीव दृश्य सन लगैत अछि। अपन सघन बिम्बात्मकता, आ सधल देसी उक्ति-प्रणालीक कारणें प्रबन्धात्मकताक अधीन होइतहु ओ एक स्वतंत्र सुंदर मुक्तक कविताक हैसियत बना लैत छथि। एहन कम सँ कम पाँच टा स्थल अछि—कृष्णजन्म, कृष्णक बाललीला, कालियदमन, गोकुल पर इन्द्रक प्रकोप आ कंसक अखाड़ा मे मल्लयुद्धक वर्णन, जाहि मे वर्णित यथार्थ अपन बिम्बात्मकता, दस्तावेजीकरण तथा देसिल अभिव्यक्तिक कारण अत्यन्त विशिष्ट अछि। कृष्णजन्म-काल मे जे अन्हरिया राति छैक, अन्हारक वर्णन करैत छथि—'सुइ लए बेधिअ गांथिअ ताग/ हाथ छुबिअ तों हाथहि लाग।' सघन अन्हार कें सूचीभेद्य तँ कहल जाइत रहल अछि मुदा से केहन होइत अछि एहि ठाम तकर दृश्य छैक। आ एहन अन्हार राति मे जखन लगातार पानि पड़ि रहल हो, 'लागल झड़ी भुलल सब दिग्ग/ पसु पच्छी सभ परल अदिग्ग।' दुर्दिवस मे दिग्ग लागि जाएब ओकर भयावहताक पराकाष्ठा थिक। मुदा 'भुलल' क्रियापद कें देखी, आइ क्यो लिखता तँ शुद्धतावादी लोकनि हुनका हिन्दीक नकलची कहतनि!

कृष्णक जे बाललीलाक वर्णन कयने छथि, से तँ बहुत प्रचलित अछि—'कतो एक दिवस जखन बिति गेल/ हरि पुनु हथगर गोड़कर भेल/ से कोन ठाम जतए नहि जाथि/ कै बेर अंगनहुं सँ बहराथि/ कै बेरि साप धरए लै जाथि/ कै बेर चून दही बदि खाथि/ कौसल चलथि मारि कहुँ चाल/ जसोमति काँ भेल जिबक जंजाल।' 'कतो एक दिवस जखन बिति गेल'—मनबोधक प्रिय वाक्य छनि जकर प्रयोग ओ आनो ठाम केलनि अछि, जतए कथा-प्रसंग कें किछु बेसी आगू हुनका घीचि ल' जेबाक रहैत छनि। 'से कोन ठाम जतए नहि जाथि'—एहि किसिमक वाक्यक प्रयोग हुनक सिद्ध कवित्व कें दरसाबैत अछि जे कि एहना प्रसंग मे कोनो पौराणिक कविक कलम सँ बहराएब कठिन अछि।

मुदा एहि सब सँ ऊपर मनबोधक असल महत्व हुनकर काव्य-भाषा ल' क' अछि। काव्य-भाषाक तात्पर्य एहि ठाम दुनू अर्थ मे अछि। एक टा तँ ओ मैथिली, जे ओ लिखलनि आ जे आगू चलि क' आधुनिक मैथिली कविताक भाषाक आदर्श-निर्माण केलक। दोसर, कविताक हुनकर मुद्रा, हुनकर रूप-छवि, उक्ति-प्रणाली, विषय-वस्तु चुनबाक विवेक, जे कि काव्यभाषा कें अनिवार्य रूप सँ प्रभावित करैत अछि। अपन विषय भने ओ पुराण सँ लेने होथु, हुनकर काव्य-समय आ काव्य-देश मिथिलाक तत्कालीन समाज थिक। यद्यपि कि ओ भक्ति-काव्य लिखलनि आ ताहू मे प्रबन्धात्मक, ई दुनू हुनका सीमाबद्ध कयने रहलनि, एकर वाबजूद ओ तत्कालीन समाजक धुकधुकी कें रचना मे उतारि अनलनि। हुनकर आधारशिला मिथिला-समाज छल, ओहि मे सँ मात्र एक तत्त्व कें ओ विषय बनौलनि, भक्ति कें, मुदा एक कविक रूप मे जे मिथिला समाज कें देखबाक हुनक दृष्टि छल, से एहि ठाम पूरा उतरल अछि। एकर सब सँ स्पष्ट प्रमाण हुनकर भाषा-नीति थिक।

मैथिलीक बारे मे जे हुनकर राय छलनि, से ततेक तात्विक छल जे एकरा हुनक अपन भाषा-नीति सँ कम नहि कहबाक चाही। जखन ओ तृण कें त्रिन आ नृप कें न्रिप लिखैत छथि तँ एकर असल तात्पर्य की थिक? एकर असल तात्पर्य थिक जे ओ उच्चरित भाषा कें महत्व दैत छथिन, ने कि कोश मे लिखित, तत्सम भाषा कें। हमरा लोकनि अतीत मे जा क' देखी तँ ठीक एहने भाषा-नीति विद्यापतिक देखैत छियनि। ई स्पष्टत: मैथिली कविताक भाषा-आदर्श निर्मित करब छल। आगू जे हमरा लोकनि कें चन्दा झा कें होइत देखैत छियनि, जिनका आधुनिक मैथिली कविताक प्रवर्तक कहल जाइत छनि। मजा के बात छैक जे असली अर्थ मे युग-प्रवर्तक ओ छथि तँ अपन प्रकीर्ण कविता सभक कारण, ने कि अपन प्रसिद्ध कृति (मिथिलाभाषा रामायण)क कारण। ई अलग बात छैक जे रामायण कें लिखल जयबा कें आगूक आचार्य लोकनि मैथिलीक इयत्ता आ आत्मगौरव सँ जोड़ि क' एकरे आधुनिकताक प्रमुख लक्षण बना देलखिन। मुदा ओ कविता सँ बाहरक मामला थिक, मूलत: राजनीतिक। कविता हुनक वैह काजक छनि जाहि मे भने नचारीक भास मे हो कि मुक्तक फकड़ाक रूप मे—अपन समकालीन समयक दुर्दशा कें ओ अभिव्यक्ति देलनि। दोसर एक इहो बात भेल जे एकरा नहि देखि, इयत्ताक राजनीति कें, ओहू मे धार्मिक बाना द' क' स्थापित करबाक बड़ भारी दंड मैथिली कविता कें भोगय पड़लैक। प्रबन्धात्मक लेखन के तेहन महत्व बढ़ल जे आगू एकर झड़ी लागि गेल, आ फेर वैह सब कथू आगू तमाम समय होइत रहल जे विद्यापतिक बाद अनुसरण-गीतक रूप भेल छल, आब ई महाकाव्य छल। मौलिक भाषा-नीति सँ मैथिली कविता दूर चलि गेल आ पण्डितक भाषा मे पाण्डित्यपूर्ण तत्सम रस-वर्षण, ध्वनि-आलोड़न होइत रहल। अपन वास्तविक जगह पर सँ उठाओल काव्य-भाषा आगू फेर हमरा लोकनि यात्रिये जी लग मे देखैत छी। अतीतक दिस देखी, आर भीतर जड़ि मे जा क' देखी तँ एकर सभक पाछू मिथिलाक जातीय कविता थिक जे एतहुक लोकसाहित्य मे निबद्ध छैक। एहना मे महाकाव्य लिखैत क्यो बूढ़ महाकवि ई निष्कर्ष करथि जे 'भाषा-सौन्दर्यक गति न आन'—अर्थात भाषाकविता (ई नाम ओ मैथिली कविताक राखने छथि) कें संस्कृत काव्यक अनुसर्त्ता-अनुप्रयोक्ता हेबाक अतिरिक्त कोनो आन गति नहि छैक, तँ हम सब बूझि सकैत छी जे वृद्ध महाकवि कतेक गलत बात कहि रहलाह अछि।

सन्दर्भ

1. पं. गोविन्द झा/ गोविन्ददास/ पृ. 64
2. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 139
3. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 203

4. किरण समग्र/ पृ. 28-35
5. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 203
6. किरण समग्र/ पृ. 30
7. उपर्युक्त/ पृ. 30
8. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 131-32
9. पं. गोविन्द झा/ गोविन्ददास/ पृ. 17-18
10. उपर्युक्त/ पृ. 19
11. उपर्युक्त/ पृ. 26
12. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 176
13. रमानाथ झा/ प्राचीन गीत/ पृ. 103
14. पं. गोविन्द झा/ गोविन्ददास/ पृ. 134
15. उपर्युक्त/ पृ. 136
16. डॉ. जयधारी सिंह/ गोविन्द काव्यालोक/ पृ. 30-31
17. डॉ. अमरनाथ झा/ गोविन्ददास (मैथिली अकादमी)/ पृ. 31
18. किरण समग्र/ पृ. 103
19. उपर्युक्त/ पृ. 87
20. दुर्गानाथ झा श्रीश/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 137
21. डॉ. जयकान्त मिश्रक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे उद्धृत/ पृ. 134
22. डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित'/ मैथिली साहित्यक इतिहास (1988)/ पृ. 79
23. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 132
24. उपर्युक्त/ पृ. 131
25. उपर्युक्त/ पृ. 134
    एतय ध्यान देबाक बात थिक जे वास्तव मे ऐतिहासिक रूप सँ सत्य आ तथ्य 'की छल', प्रो. मायानन्द मिश्र तकर बात नहि करैत छथि, 'की हेबाक चाही' हुनकर कसौटी यैह थिक! इतिहास-लेखन मे उजड्ड धार्मिक हठधर्मिताक ई वीभत्स दृष्टान्त थिक।
26. उपर्युक्त/ पृ. 134
27. उपर्युक्त/ पृ. 141
28. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 214
29. अपन पूर्णियां जिला रिपोर्ट (1809-10) मे बुकानन मैथिली-क्षेत्र मे लोकप्रिय काव्य आदिक विवरण देने छथि। ताहि क्रम मे मनबोधक विषय मे लिखने छथि—'Another work of the same name as composed by a Mithila Brahman named Manbodh. This person has also left a poem called Haribansa, which is said to detail the genealogy of Krishna. this author has used in his works the higher dialect of Mithila with little or no admixture, so that he is understood by all of decent rank or education.' (An account of district of Purnea in 1809—10/ पृ. 174)

30. डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित'/ मैथिली कविदर्शन/ पृ. 28
31. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल/ 1882 (भाग-दू)/ पृ. 129-150 पर प्रकाशित एहि कृतिक शीर्षक ग्रियर्सन देने छथि—'Manbod's Haribans'.
32. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 212
33. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल/ 1882 (भाग-दू)/ पृ. 129
34. उपर्युक्त/ पृ. 150
35. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 213
36. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 212
37. राणा प्रसाद शर्मा/ पौराणिक कोश/ पृ. 548
38. डॉ. नवीनचन्द्र मिश्र/ प्रबन्ध-पारिजात (मैथिली अकादमी)/ पृ. 14
39. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 140
40. वीणापाणि पाण्डे/ हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन (लखनऊ, 1960)/ पृ. 110
41. डॉ. वासुकीनाथ झा/ अनुशीलन अवबोध/ पृ. 100
42. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल/ 1882 (भाग-दू)/ पृ. 129
43. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 141
44. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 214
45. डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित'/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 97
46. वीणापाणि पाण्डे/ उपर्युक्त/ पृ. 129
47. ग्रियर्सन/ उपर्युक्त/ पृ. 129
48. पूर्णियां जिलाक अपन रिपोर्ट मे बुकानन मनबोधक सब सँ लोकप्रिय काव्यक नाम 'दानलीला' लिखने छथि, जकर चर्चा बाद मे आनो लोक सब अपन-अपन लेख मे केलनि, मुदा ई कृति एखन धरि कतहु उपलबध नहि भेल अछि।!
49. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल/ 1884 (भाग-एक)/ पृ. 1
50. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 212
51. अपन मनोकामनाक संकेत भने मनबोध नहि देने होथु, मुदा ग्रियर्सन कें जे हुनक नि:सन्तान हेबाक जनश्रुति 1882 मे भेटल रहनि, तकरो अकारण नहि कहल जा सकैए! साबिक मिथिला-समाज मे एक टा कहबी प्रचलित छल—'एक टा टका टका नै, एक टा बेटा बेटा नै।' जाहि समाज मे एक पुत्रक पिता कें सेहो निपुत्र हेबाक भागी मानल जाइत हो ततय एक टा कन्याक पिता अपना संग जुड़ल निपुत्र पद कें छोड़ेबाक लेल पुत्रक कामना सँ हरिवंश पर काज कयने होथि, एकरा असंभव नहि कहल जा सकैत अछि।
52. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 212
53. रमानाथ झा/ उपर्युक्त/ पृ. 212
54. पौराणिक कोश/ पृ. 458

मध्यकालीन कविताक स्वभाव

एहि बातक चर्चा पहिनहु भ' चुकल अछि जे मिथिला मे मध्यकालीन मैथिली लेखनक जे दशा रहैक ताहि सँ रमानाथ झा खिप रहथि। हुनकर ई मान्यता छनि, आ हमहूँ एहि मे हुनकर समर्थक छी जे विद्यापतिक बाद मैथिली कविता बंगाल आ नेपाल मे विकास प्राप्त केलक, बंगालक असर उड़ीसा पर रहलैक आ ओम्हर आसाम मे तँ ओ अपन अलगे रूप कायम क' लेलक, जखन कि एम्हर मिथिला मे एहि स्फूर्त्तिक सर्वथा अभाव रहलैक। रमानाथ झा प्रश्न करैत छथि—'विद्यापतिक पश्चात् एहि पाँच सए वर्ष मे सैकड़ोक हिसाब सँ कवि भेलाह आ हजारक हिसाब सँ गीत लिखल गेल, मुदा साहित्यक प्रगति की भेल ?'[1] ओ फेर कहै छथि—'पाँच सए वर्ष मे पण्डित लोकनि मिथिलाभाषा कें हथिआए एकर विकासक मार्ग कें अवरुद्ध कयने रहलाह। ई सांस्कृतिक अपकर्षक लक्षण थिक।'[2] एहि पाँच सए वर्षक मिथिला मे लिखल कविता कें ओ गतानुगतिक, एकांगी, अनुकरणात्मक, कृत्रिम आ वर्गीय कहलनि अछि। ई एक अलग प्रसंग थिक जे मिथिला मे ताही समय मे एक टा आर काव्य-परम्परा चलायमान छलैक जे पण्डित लोकनिक हथिआएब सँ दूर छलैक आ ओहि मे परिपूर्ण जीवन्तता प्रकट भ' रहल छलैक। मुदा आधुनिक पण्डित लोकनिक युग मे जखन मैथिली साहित्य कें संकलित-संपादित करबाक दौर चलल, ओहि जीवन्त काव्य कें संकीर्णतावश साहित्य मे आन' सँ छोड़ि देल गेल। एहनो बात नहि जे ओ जीवन्त साहित्य पूराक पूरा अलिखिते होइक आ तें लोकसाहित्यक प्रकीर्ण सीमा मे ठेलि देल जेबाक लेल अभिशप्ते हो।

मजेदार बात ई छैक जे पाँच सए वर्षक लिखित आ दस्तावेजीकृत जाहि कविता कें रमानाथ झा विद्यापतिक अनुसरण मे लिखल गतानुगतिक आ कृत्रिम कहलनि तकरा बारे मे इतिहासकार लोकनिक विचार एहि सँ सर्वथा भिप छल। डॉ. जयकान्त मिश्रक मन तँ मात्र एतबे सँ संतुष्ट रहनि जे कोनहुना मैथिली मे लेखनक प्रमाण छिटपुट जीवित रहल, ओकर विकास भेल कि नहि ओ ताहि पर नहि जाइत छथि, एकरा ओ अपन विषये नहि बुझैत छथि। ओ लिखलनि—'विद्यापति ओ हुनकर

समकालीन कवि लोकनि गीत-काव्य कें जे एक टा स्वरूप देलनि सेँ मिथिला मे पुश्त-पुश्तैनी कविलोकनि कें अनुप्राणित करैत रहलनि।'[3] जकरा रमानाथ झा अनुसरण कहलनि तकरा जयकान्त मिश्र अनुप्राणन कहैत छथि। जेना हुनका बूझल हो जे एहि (अनुसरण) सँ मुक्त हेबाक संभावना एखनहुं कतहु शेष होइक! ई एकर बावजूद छल जे अपन इतिहासक एक खण्ड ओ लोकसाहित्यो पर लिखने छलाह जे कि बाद मे प्रकाशित भ' सकल। आन इतिहासकारक स्थिति तँ आर विचित्र छनि। डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश तँ एहि समुच्चा रचना-परम्परा कें 'विद्यापतिक सम्प्रदाय'क कहलनि अछि। जेना बंगाल-आसाम मे वैष्णव सम्प्रदाय, तहिना एम्हर मिथिला मे विद्यापति सम्प्रदाय। एहि विद्यापति सम्प्रदायक जे सैद्धान्तिक धर्मनिष्ठा की छल, स्वयं सिद्धान्ते की छल, गुरु-परंपरा कोना आगू चलल, विचारधारा की छलैक आ तकर विकास कोना-कोना भेल, ताहि पर ओ किछुओ नहि लिखलनि अछि, मुदा एहि बात के हुनका कोनो परबाह नहि छनि जे कविताक विकास भेल कि नहि भेल, असल लक्ष्य थिक ओकरा हीन नहि साबित होअए देब। मजेदार बात थिक जे श्रीशजी रमानाथ झाक संरक्षण मे इतिहास लिखि रहल छलाह आ एते धारि जे एहि किताबक भूमिका स्वयं रमानाथ झा लिखने छलाह। ओहू सँ मजेदार बात जे ऊपर जे रमानाथ झाक मान्यताक हम उल्लेख कयलहुँ सेहो ओ एही किताबक भूमिका मे लिखने छथि।

मध्यकालीन कविता सभक दू महत्त्वपूर्ण संकलनक महत्व ख्यापित करैत डॉ. श्रीश लिखलनि—'विद्यापति-सम्प्रदायक काव्यधाराक क्रमबद्ध ओ ऐतिहासिक रूपरेखा प्रस्तुत करबाक दृष्टिमों कविशेखर बदरीनाथ झा ओ प्रो. रमानाथ झाक प्राचीन गीतिक पदक संकलन बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।'[4] कविशेखर जीक संग्रह 'मैथिली गीत रत्नावली'क द्वितीय संस्करण 1961 मे छपल, प्रथम संस्करण प्राय: एहि सँ दस वर्ष पहिने आएल छल। रमानाथ झाक संकलन 'प्राचीन गीत' एकर बादक संकलन थिक, जकर दोसर संस्करण 1968 मे आएल। ई असल मे मैथिली कविता-लेखन परम्परा कें सम्पूर्णता मे देखबाक दृष्टिमों संपादित हुनक पुस्तकत्रयी—'प्राचीन गीत', 'मैथिली कथाकाव्य' तथा 'नवीन गीत'क प्रथम भाग छल। एकर भूमिका मे ओ लिखलनि—'प्रथम खण्ड मे विद्यापति ओ हुनक सम्प्रदायक गीत अछि तकर नाम भेल प्राचीन गीत।'[5] एहि सँ इहो स्पष्ट अछि जे 'सम्प्रदाय' शब्दक प्रथम प्रयोक्ता स्वयं रमानाथ झा छलाह। प्रो. मायानन्द मिश्र अपन इतिहास मे 'विद्यापतिक परम्परा' शब्दक प्रयोग करैत छथि। मुदा डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एहि 'सम्प्रदाय' आ 'परम्परा'क झोल मे पड़बा सँ बचैत सरलीकृत भाव मे लिखलनि—'विद्यापति मैथिली मे जाहि नवीन धाराक सूत्रपात कयलनि तकरा समाज आदरक दृष्टिमों अपनौलक। फल ई भेल जे विद्यापतिक परवर्त्ती कवि लोकनि हुनक रचनाक आधार पर साहित्य भंडारक

श्रीवृद्धि मे योगदान देलनि। विषयवस्तु प्राय: सैह रहि गेल जे विद्यापतिक समय मे छल किन्तु ओकर चित्रण भिप-भिप कवि लोकनि भिप-भिप दृष्टिमों कयलनि।'[6] तात्पर्य जे 'अनुसरण' ओ मानबे नहि केलनि, एकरहु श्रीवृद्धिये माननलि। प्रो. मायानन्द मिश्र 'अनुकरण' तँ अवश्य मानैत छथि मुदा तकरा पाछू जे ठोस कारण सब छल तकर विस्तार मे जाइत छथि।

मध्यकालीन कविताक प्राचीन संकलन सभक बात करी तँ एहू दिशा मे प्रथम उद्यम ग्रियर्सनेक कएल भेटैत अछि। 1882 मे ओ 'मैथिली क्रिस्टोमैथी' तथा 'ट्वेन्टी वन वैष्णव हीम्स' प्रकाशित करौलनि जाहि मे जनकंठ सँ प्राप्त कविता कें सेहो स्थान देल गेल छल। 'मिथिला गीत संग्रह' (सं.-भोल झा) 1917 मे प्रकाशित भेल तथा 'मिथिला भक्ति प्रकाश' (सं. बाबू ललितेश्वर सिंह) 1920 मे। डॉ. श्रीश अपन इतिहास मे एहि सभक अतिरिक्त तीन गोट अमुद्रित हस्तलेखक उल्लेख केलनि अछि—(1) मंगरौनी हस्तलेख, जकर उपयोग महामहोपाध्याय उमेश मिश्र केलनि। (2) गजहरा हस्तलेख, जकर उपयोग डॉ. जयकान्त मिश्र केलनि, तथा (3) जितेन्द्रनारायण झाक अधिकारक 'प्राचीन गीत संग्रह' जकर उपयोग करैत कविशेखर बदरीनाथ झा 'मैथिली गीत रत्नावली' प्रकाशित करौलनि। दू अन्य मध्यकालीन स्रोत 'रागतरंगिणी' (लोचन) तथा 'भाषागीत संग्रह' (बाद मे रमानाथ झाक संपादन मे प्रकाशित) थिक। रमानाथ झा अपन 'प्राचीन गीत' मे एहि समस्त स्रोतक उपयोग केलनि। आगाँ एही प्रकारक आनो संकलन सब प्रकाशित भेल यथा 'मैथिली प्राचीन गीतावली' (सम्पादक सुरेन्द्र झा सुमन, रामदेव झा/ 1977) तथा 'मैथिली प्राचीन गीत मंजरी' (सम्पादक रामदेव झा/1991)। डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा तथा डॉ. रामदेव झा एहि दिशा मे आगुओ बहुत काज करैत रहला, अनेक मध्यकालीन कवि लोकनि पर पुस्तिका संपादित कयलनि। एहि सब संकलनक पाछू संकलयिताक दृष्टिक जँ बात करी तँ पबैत छी जे ग्रियर्सनक दृष्टि सर्वाधिक स्फीत आ व्यापक छलनि जे 'मैथिली'क अभिज्ञानक वास्ते समस्त संभावित स्रोत, जाहि मे जनकंठ सेहो छल, धरि गेलाह। आरंभिक किछु संकलन सब मे एकर असर देखल जा सकैत अछि। मुदा, ग्रियर्सन बुते जे एक बेर छुटि गेल से सदाक लेल छूटल रहि गेल। आगूक संकलयिता लोकनिक दृष्टि उत्तरोत्तर संकीर्ण होइत गेलनि आ राजदरबारक पाण्डुलिपि सब पर ओ लोकनि एकमेवाश्रित भ' गेलाह। एकर परिणाम अछि जे राजदरबार मे दरबारी लोकनि जे मैथिली लिखलनि, सैह मैथिली कविता बनि क' रहि गेल। एहि सँ बाहर मिथिलाक जनसमुदाय मे, मठ आ नाट्यमंडली सब मे जे साहित्य निर्मित भेल छल से इतिहासक अंग कहियो नहि भ' सकल। दरबारी लेखनक कोष्ठबद्धता, मिथिला मे, हमरा लोकनि उत्तरोत्तर बढ़ैत जाइत देखैत छिऐक। शिवसिंह सन उदार

आश्रयदाता राजा फेर मिथिला मे दोसर क्यो नहि भ' सकलाह। तें मध्यकालीन मैथिली कविता जँ रमानाथ झा कें गतानुगतिक, एकांगी, अनुकरणात्मक, कृत्रिम आ वर्गीय लगैत छनि तं एहि बात मे सार छैक। एकर कारण सभक खोज करब उचित छल, आ स्रोत-सामग्रीक स्वीकार्यता कें बढ़ा क' एकर समाधान ताकब श्रेयस्कर छल, मुदा एकरा बदला विद्वान लोकनि एहि कमी दिस सँ आँखिए मुनने रहबाक जतन करैत रहलाह।

ई बात पहिनहु प्रसंगवश आबि चुकल अछि जे ओइनवार वंशक पतनक बाद आ खण्डवलाकुलक स्थापनाक सेहो बहुत दिन बाद धरि मिथिलाक साहित्यिक आ शास्त्रीय गतिविधि कुप्रभावित रहल। मुदा तकरा बाद जे मैथिली साहित्य भेटैत अछि, मुख्यत: तकरे पर गतानुगतिकता आ कृत्रिमताक बात रमानाथ झा कहैत छथि। प्रो. मायानन्द मिश्र अपन इतिहास मे एकर कारण तकबाक प्रयास केलनि अछि। एकर मुख्य कारक ओ स्वयं खण्डबलाकुलक शासन-प्रबन्धे कें मानैत छथि। कहैत छथि—'खण्डबलाकुलक शासन-व्यवस्थाक प्रधान उद्देश्य छल प्रजा सँ अधिकाधिक राजस्व (लगान)क उगाही करब, अपनहु भरण-पोषण करब तथा अपन स्वामी मुगल ओ अंगरेजो कें देब। तैं एहि ठाम प्रजा पर दोहरा कराधानक भार छल जे मिथिलाक दरिद्रताक प्राथमिक ओ प्रारंभिक कारण थिक। दरभंगा राजकर्मचारीक शोषण-व्यवस्था तेहन कठोर छल जे प्रजा कें अपनहुँ भूमि पर रोपल गाछक लाभ लेबाक अधिकार नहि छल। बेगारी प्रथा जे सामन्तवादक अन्यतम अभिशाप थिक एहि ठाम तीव्रतम रूप मे छल। एहि सभ कारणे एहि ठामक बुद्धिजीवी क्षुब्धेटा नहि भेल अपितु कुंठितो भ' गेल। एहन क्षोभ ओ कुंठा तथा दोहरा सामंती व्यवस्था मे वैचारिक नवीनता सभ नहि छल। यैह कारण थिक जे प्राय: समस्त मध्यकालक साहित्य विद्यापतिक भाव, भाषा ओ शैलीक अनुकरण पर लीखल गेल। ओ नवीनता सँ हीन, गतानुगतिकताक साहित्य थिक।'[7]

प्रश्न अछि जे सामन्त लोकनि तँ शोषण करैत छलाह आम जनताक। बुद्धिजीवी कवि लोकनि तँ प्राय: समस्त हुनकर आश्रिते छल, हुनका सँ वेतन आ पुरस्कार पबैत छलाह, तखन हुनका लोकनिक क्षुब्ध आ कुंठित हेबाक कतय प्रश्न छल? एहि प्रश्नक कोनो उत्तर मायानन्द मिश्र लग मे नहि छनि। असल मे कविताक शाश्वत स्वभाव थिक आम जनक पक्ष मे ठाढ़ होयब, जकर एहि ठाम कोनो संभावना नहि छल। कविता जँ शोषक आ आततायी वर्गक समर्थन लेल, ओकर मनोरंजन लेल लिखल जाएत तँ ओहि मे गतानुगतिकताक होयब अनिवार्य थिक। प्राणहीन, स्पन्दनहीन शब्दक बाजीगरीक अतिरिक्त एहि स्थिति मे आर कयले की जा सकैत छल? एहि गतानुगतिक कविता मे हमरा लोकनि कें सर्वत्र, चाहे ओ नाटकक गीत हो वा कि मुक्तक, शृंगार रसक प्रधानता भेटैत अछि। मायानन्द मिश्र एकरा सामंतवादी कविताक 'निजी विशेषता' मानैत छथि, ओ होयब एही दुआरे जरूरी छल जे श्रीमन्त वर्ग कें अपन परिपूर्ण भोगक वास्ते स्त्रीक बाद दोसर जाहि वस्तुक खाँहिस भ' सकैत छल से शृंगारिक वातावरणेक, जकर निर्माण संगीत आ कविता मिलि क' करैत छल। शृंगारिक चित्रण करैत भने कतहु मिथिलाक संस्कृति आ लोकाचारक वर्णन आबि गेल हो मुदा 'मिथिलाक सामान्य जन-जीवनक शोषणक व्यापक चित्र' ओतय नदारद अछि। मायानन्द मिश्र कहैत छथि—'एतेक धरि जे विद्यापतिक कीर्तिलता जकाँ विजातीय अत्याचारक संकेतो मात्र नहि अछि आ ने कविकोकिलक नचारी जकाँ जनजीवनक वेदने कतहु व्यक्त भ' सकल।'[8]

रमानाथ झा जतय पाँच सए वर्षक एहि गतानुगतिकता कें 'सांस्कृतिक अपकर्षक लक्षण कहलनि, ओतहि शास्त्र-लेखनक सन्दर्भ सेहो दैत लिखलनि जे 'पक्षधर मिश्रक पश्चात् मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्ष ह्रासोन्मुख रहल ई कथा सर्वविदित अछि।'[9] न्यायक ज्ञान-परम्परा कें मिथिला सँ बंगाल स्थानान्तरित भ' जेबाक ऐतिहासिक घटनाक एहिठाम स्मरण अछि। एकर बाद जे शास्त्र मिथिला मे लिखल गेल तकरा बारे मे मायानन्द मिश्र कहैत छथि—'मौलिक प्रतिभाक सर्वथा अभाव मध्यकाल मे देखबा मे अबैत अछि। एहि दिशा मे मात्र भाष्ये अधिकांशत: लिखल गेल। संभवत: एकरहु कारण मध्यकालीन सामंती कुंठे थिक।'[10] मजेदार बात ई थिक जे ई स्थिति एकरा बावजूद छल जे राजा लोकनि अपनहु पंडित होइत छलाह, आ शास्त्रकार पंडित लोकनि कें पूर्ण प्रोत्साहन दैत छलाह, जेना कि डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' लिखलनि अछि—'खंडबलाकुलक राज्य स्थापित भेला सँ पुन: अध्ययन ओ अध्यापनक क्रम एहिठाम चललैक तथा ओहि वंशक राजा लोकनि स्वयं सेहो विद्याक अत्यन्त प्रेमी होइत छलाह। ओ लोकनि पंडित हेबाक कारणें संस्कृत विद्या कें पूर्ण प्रोत्साहन देलथिन।'[11] विद्याक प्रति 'अत्यन्त प्रेम' होयब आ प्रजाक भयावह शोषणक प्रति सेहो तेहने 'अत्यन्त दुर्दान्त' होयब, एहि दुनूक मेल सँ कदाचित एहने काव्य-परिदृश्य बनैत हो, जेना कि हमरा लोकनि मिथिला मे बनैत देखैत छी। ओ राजा लोकनि 'संस्कृत विद्या कें पूर्ण प्रोत्साहन देलथिन, से कहबाक पाछां व्यथित जीक एक अनुपस्थित आशय छनि जे एहि प्रकारक कोनो प्रोत्साहन मिथिला-भाषाक लेल नहि छलैक। रमानाथ झा गतानुगतिकताक एक टा आर कारण बतबैत लिखैत छथि—'पाँच सए वर्ष धरि ओएह एकेटा मैथिली रचनाक रीति रहल ओ यदि कही जे एकर मूल प्रेरक संगीत छल, काव्य नहि, तथापि कोनो अत्युक्ति नहि।'[12] राजाक इच्छानुसार जे वातावरण निर्माण क' सकए—शृंगारिक वा भक्तिक—ताहि प्रकारक संगीतक चलन छलैक आ गबैयाक बंदिश लेल जे शब्दसमूह चाही, सैह मैथिली कविता छल।

आगां तं एकरो धकिया क' ई स्थान ब्रजभाषा दफानि लेलक।

मायानन्द मिश्रोक कुल्लम राय यैह छनि जे 'मैथिलीक समस्त मध्यकालीन साहित्य, ओहि कालक सामंती कुंठा, निराशा तथा अवरोधक साहित्य थिक जे अपन युग मे मात्र गतानुगतिक बनि क' रहि गेल, जकरा मे शिल्पक चमत्कार तँ अछि, नवीनताक टहंकार नहि अछि, पांडित्यक प्रदर्शन तँ अछि, लोकचेतनाक निदर्शन नहि अछि।'[13] भारतीय साहित्य मे नवप्राणवत्ता, नव उन्मेष जगेबाक काज कमोबेश 1857क विद्रोह केलक। मायानन्द मिश्र एकरा 'स्वाधीनता आन्दोलनक आदिम विस्फोट' कहैत छथि मुदा एकर कोपहु टा प्रभाव मिथिला पर पड़ल नहि देखाइत छनि। किएक ? एकरहु कारण ओ खंडबलाकुलक शासनें बतबैत छथि—'मिथिला मे एहन विद्रोह कहियो नहि भेल जकर कारण भेल खण्डबलाकुलक शासन। ई शासन पहिने मुसलमानक प्रति 'वफादार' रहल पाछू अंगरेजक। एहि कारणें मिथिलाक प्रजाक स्थिति आरो दयनीय रहल।'[14]

मैथिलि गीत सभक सब सँ प्राचीन संकलन 'रागतरंगिणी' (रचनाकाल 1685 ई. लगभग) कें मानल जाइत अछि। एकर रचयिता लोचन छला जे अपनहु एक नीक कवि छलाह। ओ मिथिलानरेश महिनाथ ठाकुर (1625–1665)क सभाकवि छलाह। मायानन्द मिश्र हुनका 'विद्यापतिक बाद, मध्यकालीन मैथिली काव्यजगतक प्रथम महत्त्वपूर्ण नाम' कहलनि अछि। तकर कारण ओ ई बतबैत छथि जे 'लोचन कवि सँ पैघ संगीतज्ञ छथि किन्तु ताहू सँ पैघ गवेषक छथि।'[15] फेर ओ लिखैत छथि जे 'रागतरंगिणी सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे भारतीय संगीत परम्परा मे मिथिलाक (घरानाक) अपन विशिष्टता छल तथा एहि क्षेत्र मे जनजीवनक भासगीत जे मिथिलाक अपन संगीत सम्पत्ति थिक से विशिष्टे नहि विकसितो छल।' एही दुआरे ओ हुनका कवि सँ पैघ संगीतज्ञ कहनहु छथि। असल मे ई (रागतरंगिणी) संस्कृतग्रन्थ थिक जे संगीतक विषय मे लिखल गेल अछि आ रागक दृष्टान्त देबाक क्रम मे जतय कतहु हुनका गीतक जरूरति भेलनि, मैथिली गीत उद्धृत केलनि अछि। मायानन्द मिश्र एहू बातक लेल हुनकर सराहना केलनि अछि जे ओ बहुभाषाविद् छलाह। ओ ब्रजभाषा गीतक दृष्टान्त सेहो देने छथिन, आ आगू हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिलीक जगह घटैत गेल, ब्रजभाषाक बढ़ैत गेल। ई मिथिला पर आधुनिकताक प्रभाव थिक जकरा पाछू रामभक्ति आ पारसी थियेटर कें जिम्मेदार ठहराओल जाइत छैक। किन्तु एहि मैथिली विरोधी 'आधुनिकता'क प्रथम प्रायोजक स्वयं लोचन कें मानल जा सकैत छनि जे उदाहरण–गीत तं अवश्य मैथिलीक देलनि किन्तु अपने संस्कृत कारिकाक भाषानुवाद मैथिली मे नहि, ब्रजभाषा मे देब आवश्यक बुझलनि, जाहि सँ बेसी सँ बेसी पाठकक बीच ई बोधगम्य भ' सकैक। रागतरंगिणी मे कुल

145 दृष्टान्तगीत सब मे 103 मैथिली मे छैक, विद्यापति गीतक दृष्टान्त अधिकतर (53) देल गेल अछि ताहि सँ हुनकर लोकप्रसिद्धिक पता लगैत अछि। तकरा बाद ओ अपन। लोचनक आठ टा गीत एहि ठाम उपलब्ध अछि आ एकरा अतिरिक्त हुनक गीत आन कत्तहु नहि भेटैत अछि। सत्ताइस गोट आर दोसर–दोसर कविक पद ओ लेलनि, से सूचना महत्त्वपूर्ण थिक। ई कवि लोकनि छलाह—पन्द्रहम शताब्दीक भवानीनाथ, अमृतकर, गजसिंह, सिंहभूपति, चन्द्रकला, कंसनारायण, गोविन्द कवि,—सोलहम शताब्दीक लक्ष्मीनारायण, जसोधर, जीवनाथ, दशावधान, सदानन्द, भीषम, चतुर्भुज आ श्यामसुन्दर—सतरहम शताब्दीक कवि हरिदास, गंगाधर, श्रीनिवास मल्ल, प्रीतिनाथ, चतुरानन, रतनामाी, लखनचन्द राय, जयकृष्ण, धरणीधर आ मधुसूदन।

दोसर जे प्राचीन संकलन अछि, ओ थिक नेपालक मल्लनरेश सिद्धिनरसिंहमल्ल (1620–1657)क दरबार मे संकलित कयल गेल कृति 'भाषागीत संग्रह।' अन्तर ई अछि जे ई संगीतशास्त्रेक नहि, कोनहु शास्त्रक पुस्तक नहि थिक। विशुद्ध मैथिली गीतक संकलन थिक, जे बादोक युग धरि मिथिला–नेपाल मे प्रचलित रहलैक। शास्त्रक हस्तक्षेप एहि मे एतबे छैक जे हरेक गीतक पहिने ओकर रागक नाम लिखल छैक। कुल 46 गीत मे सँ एहू मे सर्वाधिक विद्यापतियेक गीत छनि—नव–नव। सिद्धिनरसिंहमल्लक एहि मे सात टा गीत छनि, मुदा हुनको सँ बेसी बारह–बारह टा गीत चतुर चतुर्भुज आ गोविन्दक छनि। चतुर चतुर्भुजक मादे हमरा लोकनि पहिने जानि चुकल छी। ई गोविन्द, गोविन्ददास सँ भिप कवि छलाह, जिनकर पहिचान डॉ. रामदेव झा ओइनवारनरेश कंसनारायणक आश्रित आ हुनक मंत्रीक रूप मे केलनि अछि, जे 'नलचरित' नाटकक रचनाकार सेहो छथि।[17] आन संकलित कवि लोकनि छथि—सिंहनृपति, नृपसिंह, दशावधान, लखिमिनाथ, कंसनारायण, भिखारी मिश्र कविराज, काशिनाथ, गजसिंह, गोपीनाथ, अमियकर, सदानन्द, भीषम, नव कविराज, मल्लदेव, भगीरथ, राजनंदन, भवेश, रामनाथ, कवि कुमुदी, भरत कवि, वीरनारायण आ यशोधर। एहि संकलन मे किछु नव कवि सभक नाम भेटैत अछि जे सतरहम शताब्दी सँ पहिने भेल छलाह आ विद्वान लोकनि हुनकर परिचय पता लगेबाक प्रयास जगह–जगह केलनि अछि।

मोरंग (विजयपुर)क सेनवंशी राजा लोकनिक संरक्षण मे तैयार कयल गेल संकलन 'नानारागगीतम्' नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखागार मे पाओल गेल अछि, ताहि मे किछु आर कवि सभक गीत उपलब्ध होइत अछि। एहि मे संकलित छथि—गोकुलभाट, चक्रपाणि, दामोदर, दिनमणि, दुजनाभ, धनपति, नृपति भुवन, नृप वैद्यनाथ, नृप शिवसिंह, वरिलिनाथ, वेनिकर, भवानी, राजा संग्राम साह, रामदास,

राय राघव, राय हरिहर, रूपनारायण, सुनमणि, सूरदास आ हरिदास। मल्लनरेश जगज्ज्योतिक समय संकलित 'रागभजनसंग्रह' मे संकलित कवि सब छथि—चतुर चतुर्भुज, गोविन्द, सदानन्द, नृपतिसिंह, वंशमणि, बुद्धिनाथ, सकुल आ नरमेदि। हुनकर 'हरगौरीविवाह' नाटक मे जे 49 गोट पद व्यवहृत छैक ओहि मे विद्यापति आ जगज्ज्योतिक अतिरिक्त विष्णुपुरी, सुकवि सदानन्द, वंशमणि, गोविन्द, करण महेश, कृष्णराय, कवि रतन, चतुर चतुर्भुज, जगदीश आ शशिशेखर सिंहक गीत संकलित अछि।

ग्रियर्सन जे 1882 मे अपन 'ट्वेन्टी वन वैष्णव हीम्स' प्रकाशित करौलनि, ओहि मे एहि कवि सभक रचना लेलनि जकर अनुवाद सेहो केलनि—उमापति, नन्दीपति, मोदनारायण, रमापति, महीपति, जयानन्द, भानुनाथ, चतुर्भुज, सरस राम, केशव, भंजन, चक्रपाणि आ हर्षनाथ। हर्षनाथक सोलह गोट गीत ओ 'मैथिली क्रिस्टोमैथी' मे सेहो शामिल केलनि, जे (हर्षनाथ) ओहि समय महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सभापंडित छलाह। दोसर जाहि एकमात्र जीवित कविक रचना ओ संकलित केलनि ओ फतूरी वा फतूरलाल कवि छलाह, जे 1781क अकाल पर 'कवित्त अकाली' लिखने छलाह। ओ कविता अनुवाद सहित ओतय शामिल अछि।

रमानाथ झा अपन संकलन 'प्राचीन गीत' मे एहि समस्त स्रोत सँ उपलब्ध कवि लोकनिक यथेच्छित कविताक उपयोग केलनि। उपैसम शताब्दीक अन्त धरिक 48 कवि कें ओतय संकलित देखल जा सकैत अछि। अनेक कवि कें ओ संकलित करबा सँ छोड़ि देलनि। एकर भूमिका मे ओ लिखलनि—'विद्यापति सँ लए आजुक उदीयमान कवि धरिक, रचना संग्रह कयलहुँ अछि ओ एहि मे संदेह नहि जे कवि बहुत छूटि गेलाह अछि परन्तु काव्यशिल्प अथवा रचनाशैली जँ कोनो छूटि गेल अछि तँ से एहि हेतु जे ओ रचना हमरा भेटि नहि सकल, नहि तँ लक्ष्य हमर यैह रहल अछि जे सब प्रकारक रचनाक समावेश भए जाए ओ से नहि भेल से नहि कहि सकैत छी।'[18] हुनकर कथन सँ स्पष्ट अछि जे छह सए वर्षक मैथिली कविताक प्रगतिक एक झाँकी ओ प्रस्तुत कर' चाहैत रहथि आ से भेल अछि, तकर हुनका विश्वास छलनि।

कविशेखर बदरीनाथ झा द्वारा संपादित संकलन 'मैथिली गीतरत्नावली' महत्त्व एहि सँ भिप एहू दुआरे अछि जे एकर स्रोत दू गोट प्राचीन हस्तलेख छैक, जे हुनका चण्डीनाथ झा तथा जितेन्द्र नारायण झा सँ भेटल रहनि, जिनका प्रति धन्यवादो ओ पुस्तकक भूमिका मे व्यक्त कयने छथि। एहि मे विद्यापति समेत 82 कविक 112 गोट कविता संकलित छैक। ध्यान देबाक एक विशेष बात इहो छैक जे संकलयिता बीसम शताब्दीक कवि धरि कें एहि मे समेटि लेलनि अछि। हुनकर अंतिम कवि तंत्रनाथ झा (जन्म 1909) छथिन। एहि मामिला मे रमानाथ झा तँ आर आगू छथि जे आरसी प्रसाद सिंह (जन्म 1911) धरि कें अपन 'प्राचीन गीत' मे समेटि लेलनि अछि, जखन कि एही वर्ष (1911)क यात्री कें 'नवीन गीत' मे रखलनि अछि। एकरा पाछू कारण रहल अछि रचनाक शैली आ कविक 'सम्प्रदाय'। रचनाक प्रवृत्ति अपन जे रूप ध' क' रचना मे प्रस्तुत भेल रहैत अछि, ओकर पता लगैत अछि रचनाक शैली सँ। तें 'खण्डक विभाजन (प्राचीन गीत, कथाकाव्य, नवीन गीत) शिल्पक आधार पर कयल अछि। प्रथम खंड मे विद्यापति ओ हुनक सम्प्रदायक गीत अछि तकर नाम भेल प्राचीन गीत।'[19]

दुनू गोटेक संकलन-दृष्टि मे किछु आर अंतर अछि। रमानाथ झाक दृष्टि मे विद्यापति आ गोविन्ददास सर्वाधिक महान छथि तें हुनकर गीतक चयन मे अनुपातक ध्यान नहि राखल गेल, विद्यापतिक 102 तथा गोविन्ददासक 26 पद ओ संकलित केलनि। शेष कवि लोकनि मे सँ 4 पद जिनकर लेलनि से उमापति छलाह आ 3 गीत बला कवि सब छथि—अमृतकर, लोचन, रमापति, हर्षनाथ आ चन्दा झा। 2 गीत बला कवि लोकनिक सूची मे छथि—गजसिंह, गोविन्द, कंसनारायण, चतुर्भुज, महेश ठाकुर, रामदास, नन्दीपति, रत्नपाणि आ जीवन झा। शेष कवि लोकनिक एक-एक पद लेल गेल अछि। एहि सँ कविक महत्त्व ख्यापित करबाक हुनक प्राथमिकता कें बूझल जा सकैत अछि। कविशेखर बदरीनाथ झा चयन मे मात्र तीन कोटि बनौने छथि। प्राथमिकता बला कवि लोकनिक 3 गीत लेल गेलनि अछि, ताहि मे छथि—विद्यापति, रामदास, उमापति, भंजन, रमापति, हर्षनाथ झा, चन्दा झा आ स्वयं बदरीनाथ झा। 2 गीत बला कवि लोकनि छथि—जयानन्द, कमलनयन, चक्रपाणि, कृष्णपति, निधि, श्रीकान्त, लाल, नन्दीपति, मोदनारायण, वेणीदत्त, रत्नपाणि, भाना झा आ जीवन झा। शेष कविक एक-एक गीत लेल गेलनि अछि। चयन-विवेक की थिक से स्वत: एहि सूची कें देखने स्पष्ट भ' जाइत अछि। कविशेखर जीक सूची मे नव-नव नाम सब बेसी अछि, जखन कि रमानाथ झा महत्त्व कें आधार बनौलनि अछि। एहि सब कें देखने मुदा पूर्णत: स्पष्ट भ' जाइछ जे ठीके, सैकड़ो कवि हजारो गीतक रचना केलनि।

विद्यापति-बादक मध्यकालीन काव्य-पीढ़ीक बारे मे मायानन्द मिश्र लिखने छथि—'विद्यापति अपन भाव, भाषा तथा शैलीक कारणे ततेक लोकप्रिय भेलाह जे देश ओ देशान्तर सबठाम हुनक अनुकरण पर काव्यक रचना भेल। किन्तु जहिना पैघ गाछक समीप मे कोनो अन्य गाछ प्राकृतिक दृष्टिमों संभव नहि अछि, तहिना विद्यापतिक अनुकरण पर रचना केनिहार कवि लोकनि मे तत्काल केओ महान विशिष्ट कवि दृष्टिगोचर नहि होइत छथि।'[20] ओही ठाम माया बाबू इहो लिखलनि

अछि जे अन्ततः डेढ़ सए बर्खक बाद सतरहम शताब्दीक आरम्भ मे मैथिलीक मध्यकालीन काव्यक उत्कर्षकाल शुरू होइत अछि, जकर प्रमुख स्तम्भ लोचन, गोविन्ददास तथा उमापति छलाह। गोविन्ददासक संबंध मे पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि। लोचनक महत्त्व हुनका लेल कवि सँ बेसी संगीतज्ञ आ ताहू सँ बेसी गवेषकक रूप मे छल, से अपनहि मानलनि अछि। तहिना, उमापतिक संबंध मे ओ ई तँ अवश्य मानैत छथि जे ओ 'जतबे महान नाटककार छलाह, ततबे श्रेष्ठ कवियो छलाह।' मुदा, संगहि ओ इहो कहैत छथि जे 'उमापतिक लेल पांडित्य-प्रदर्शन ओ शिल्पगत चमत्कार उपस्थित करब अधिक अभीष्ट छलनि, तथापि उमापति कें अभिनव गोविन्ददास कहब असंगत नहि होयत, काव्य-प्रवृत्तिक समानताक आधार पर सेहो तथा अपन-अपन स्तर पर कथा तारतम्यक निर्वाहक सतर्कताक दृष्टिमों सेहो।'[21] मुदा, नहि। उमापतिक असली महत्त्व, मैथिली साहित्य मे जाहि ल' क' छनि, अर्थात हुनकर नाटक 'पारिजातहरण'—एहि नाटकक विषय मे आगू जा क' ओ लिखैत छथि—'मैथिली मे कीर्तनियाँ नाटक परम्परा कें सुव्यवस्थित ढंग सँ विकसित ओ प्रचारित करबाक श्रेय एही कृति कें देल जाइत अछि।' एहि तरहें हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे लोचन तँ एहि लेल महान छलाह जे मिथिलाक संगीत-परम्परा कें सुव्यवस्थित शास्त्र-रूप देलनि, गोविन्ददास एहि लेल जे मिथिला मे अनचिन्हार होइतहु बाहर पूर्ण यशस्वी छलाह, आ उमापति एहि लेल श्रेष्ठ छलाह जे ओ मिथिलाक नाट्यपरम्परा कें सुव्यवस्थित आ प्रचारित केलनि। स्पष्ट अछि जे माया बाबूक दृष्टि मिथिलाक अस्मिता आ गौरव दिस छनि, ने कि कविता दिस, आ जें कि क्यो अपन एक उपलब्धि मे महान छलाह तँ सर्वतोभावेन हुनका महान कवि सेहो घोषित करबा मे हुनका कोनो हर्ज नहि देखाइत छनि।

ईमानदारीक बात ई थिक जे रागताललयाश्रित गीतक माध्यमें उत्कट शृंगारक, आ भक्तिक सेहो जे परिपाटी विद्यापति विकसित कयने छलाह, अत्यन्त प्रतिभावान होइतहु ई तीनू कवि ओहि परिपाटीक अनुसरण सँ अपना कें मुक्त करबाक तँ कोन कथा जे एहि पर लगातार मुग्ध बनल रहलाह। उमापति आदि सँ बहुत पहिने विद्यापति आ हुनकहु सँ पहिने ज्योतिरीश्वर नाटक लिखने छलाह, ओ नाटक सब लगभग ओही ढंग पर छल जकर अनुसरण पाछाँ उमापति आदि केलनि। मुदा एक टा बड़ पैघ अंतर ई छल जे बादक प्रायः समस्त मध्यकालीन नाटक पौराणिक कथा पर आधारित अछि, जखन कि ओहि दुनू महान रचनाकारक उपजीव्य पुराण नहि छल। मायानन्द मिश्र लिखलनि अछि—'आश्चर्यक विषय थिक जे प्रारम्भक धूर्त्तसमागम ओ गोरक्षविजय नाटक पौराणिक विषय पर नहि अछि, जकर पाछाँ विकास भेल।'[22] की ई सत्ते आश्चर्यक विषय थिक? स्वयं मायानन्द मिश्रेक स्थापना छनि जे राजाक कुशासन आ शोषण सँ बुद्धिजीवी वर्ग क्षुब्ध आ कुंठित छल। मुदा एहि क्षोभ आ कुंठाक परिणामस्वरूप जखन पौराणिक कथाचक्रक चपेट मे शताब्दीक शताब्दी घूर्णित अवस्था मे बीति जाइत अछि तँ एहि बात पर हुनका आश्चर्य होइत छनि। विद्यापति एक धर्मनिरपेक्ष शृंगारिक कवि छलाह, मुदा आगूक कवि लोकनिक लेल शृंगारिकता तँ अनुकरण-योग्य रहल मुदा धर्मनिरपेक्षता नहि, एहि बात कें तँ आरो बेसी आश्चर्यक विषय मानल जायत। शृंगारिक विषय रहल—राधाकृष्णक केलि-लीला, मुदा, हुनका प्रति देवत्व भाव सेहो आरोपित कयल जायब आवश्यक बनल रहल। जन-सामान्यक शृंगार-वर्णन जतय आएल अछि एहन एकाध गीत कें देखल जाय। 'भाषागीत-संग्रह' मे ई झूला गीत संकलित अछि जकर कवि अज्ञात छथि—'सरद समय पिया विदेसल अवधि कइए मधुमास रे/ अबे पाउस पिया परदेस कत कए देब हिय आस रे/ की सखि झुलब हिडोरबाँ/ मोर मन झुलए अकास रे/ मेघ पवन घन सीतल मोरे लेखें कारि कबाछु रे।'[23] सखि लोकनि द्वारा झूला झुलबाक आग्रह पर जे विरहिणीक उत्तर अछि से बेस मार्मिक अछि। एही संग्रह मे एक गीत दोकानदारिन पर अछि—'देखलि सोहाउनि मानिक हटिआ/ कनके बंधाउलि बटिया/ अगर चांदन के गढ़ल ओसरबा/ विधुमुखि बैसलि पसरबा/ परसि परेखए हृदयक हरबा/ ताँ भुलि रहल गमरबा/ एकहि पसरबा दिवस गमाबए/ पुनु किन पुनु बहुराबए/ कतन जतन कए मागए रसिआ/ लाखहुँ न मिल बिहुँसिआ।' तहिना, 'नानारागगीतम्' सँ एक गीत 'मैथिली प्राचीन गीतावली' मे संकलित अछि, जाहि मे पियाक अनुरागक मनोरम वर्णन भेलैक अछि—'केहु बोले शीतल पूर्णिमा को चन्दा/ केहु बोले शीतल नव अरविन्दा/ केहु बोले शीतल चंदन राग/ मोर मन शीतल पिया अनुराग।'[24] एहि तीनू गीतक रचयिताक नाम उपलब्ध नहि अछि, ताहि सँ कदाचित इहो लगैत अछि जे धर्मनिरपेक्ष भ' क' जन-सामान्यक चित्र अंकित केनिहार कवि लोकनि लेल विलुप्त भ' जेबाक खतरा लगातार बनल रहैत छल होयत।

जखन हमरा लोकनि ई कहैत छिऐक जे पाँच सए वर्ष धारि मिथिलाक कवि लोकनि विद्यापतिक अन्धाधुंन्ध अनुसरण केलनि तँ एकर तात्पर्य थिक जे हिनका लोकनिक काव्य-विषय वैह रहल जे विद्यापतिक रहनि आ शैली सेहो वैह जे हुनक रहनि। विद्यापतिक विषय सभक सूचीकरण ग्रियर्सन मैथिली क्रिस्टोमैथी मे एहि तरहें केलनि अछि—नायिकाक वयःसन्धि, पूर्वराग, नायिका रूप, नायक-नायिकाक मिलन, अभिसार, लाथ, मान, विरह, विरहान्त, गीत नानाप्रकार (देवताक स्तुति, शुद्ध शृंगारिक पद आदि)। रामवृक्ष बेनीपुरी अपन 'विद्यापति पदावली' मे विषय सभक वर्गीकरण एहि तरहें कयने छथि—वन्दना, वयःसन्धि, नखशिख, सद्यःस्नाता, प्रेम-प्रसंग, दूती, नोंकझोंक, सखी-शिक्षा, मिलन, सखी-संभाषण, कौतुक, अभिसार, छलना, मान,

मान-भंग, विदग्ध विलास, वसन्त, विरह, भावोल्लास प्रार्थना और नचारी। विद्यापतिक शैली छलनि—रागताललयाश्रित (जाहि मे राग, ताल आ लय तीनू हो), एहन आमजन प्रयुक्त मैथिली। जखन कहल जाइछ जे अनुसरण केलनि तँ अर्थ थिक जे एही सभक अनुसरण केलनि।

मुदा मनुष्यक स्मृति एतेक निस्सन नहि होइत अछि जे सैकड़ो वर्ष धरि ओ पीढ़ी-दर-पीढ़ी ठीक ओही चीजक अनुसरण करैत रहि सकय। पीढ़ीक संग राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक दशा बदलैत छैक, एहि सभक प्रभाव स्मृति पर अनिवार्य रूप सँ पड़ैत छैक। से एहि रचनो सब मे देखार होइछ। विद्वान लोकनि एहि परिवर्त्तन सब पर सेहो यथावसर विचार कयने छथि। विद्यापति आमजन प्रयुक्त भाषा आ भावाभिव्यक्तिक प्रयोग केलनि। एहि मे हुनकर अपन व्यक्तिगत समाजसरोकारीक गुण तँ छलन्हिहे, ओहि समयक युगसत्य आ आदर्श सेहो एकर अवकाश दैत छल। बाद मे हमरा लोकनि देखैत छी जे आमजनप्रयुक्त भाषाक चलन घटैत गेल आ एकर स्थान संस्कृतनिष्ठ पण्डिताऊ भाषा लैत गेल। ई ओहि ओहि कवि लोकनिक अपन-अपन सरोकारक रहस्य खोलैत अछि। दोसर देखैत छी विद्यापति यथावसर अलंकारक प्रयोग खूब केलनि मुदा से ओहि रचनाक आन्तरिक आवश्यकतावश होइत छल आ एकर बिम्ब ओ अपन सहज सुमति सँ जुटबैत छलाह। हुनका जे मानव-स्वभाव, प्रकृति आ देश-देशान्तरक अपन सूक्ष्म निरीक्षण सँ प्राप्त अनुभव छलनि, से सब हुनक रचना मे प्रकट होइत छल। आगाँक कविता मे हमरा लोकनि अलंकारक घटाटोप उत्तरोत्तर बढ़ैत जाइत देखैत छी। ध्यान रखबाक चाही जे अलंकार रचनाक आन्तरिक सौन्दर्य नहि होइत अछि, ओ बस ओहि आधुनिकताक रूप-सज्जा-सन थिक जे स्पा आ ब्यूटीपार्लर सँ बाहर निकललाक बाद देखाइ दैत अछि। एकरहि संग पधारैत अछि उक्ति-चमत्कार। जखन अहाँ लग कहबाक लेल कोनो नव बात नहि रहैत अछि तँ अक्सरहाँ एही उक्ति-चमत्कार सँ बात कें घुमा क' कहि सकैत छी जे थोड़े अलग सन, नव-सन लागय। मायानन्द मिश्र एहि प्रवृत्ति पर सटीक टिप्पणी कयने छथि—'मैथिलीक मध्यकालक काव्यक सर्वाधिक अपन विशेषता थिक काव्यक कलात्मकता जे अलंकार-संघटन ओ उक्तिक चमत्कार पर आधारित अछि जकर मूल मे अछि लाक्षणिकता। ई प्रवृत्ति विद्यापति परम्परा सँ एक प्रकारक भिपता थिक आ यैह गुण प्रसादगुणक अभावक कारणो बनैत अछि। आ एहि कारणे एहि युगक काव्य वर्गीयकाव्य बनि कें रहि जाइत अछि, जकरा नाट्यकृति, किछु अंश मे तोड़ि पबैत अछि।'[25] एहि ठाम प्रसादगुणक अभावक अर्थ थिक—अर्थबोध मे कठिनता। आ वर्गीय होयबा सँ तात्पर्य थिक—पण्डितवर्गक (अथवा राजन्यवर्गक) भीतरहि जकर प्रसार भेल होअय।

अपन टिप्पणीक अंत मे मायानन्द मिश्र संकेत कयने छथि जे ओहि वर्गीयता कें किछु अंश मे तोड़बाक जे काज केलक से मध्यकालीन नाटक सब छल। सौंसे भारतक नाटक सब मे सँ मिथिलाक नाटक मे एक टा जे खास विशेषता भेटैत अछि से थिक एकर त्रिभाषिक रचना होयब। पात्रक बीच संवाद तँ संस्कृत आ प्राकृत मे चलैत छैक मुदा गीत जे बीच-बीच मे अबैत अछि से रहैत अछि मैथिली मे। संस्कृत नाटक मे ई काज संस्कृत श्लोके द्वारा कयल जाइत छल। ज्योतिरीश्वरक जबाना सँ हमरा लोकनि मैथिली गीत कें संस्कृत श्लोकक स्थानापप होइत देखैत छिऐक। मध्यकालीन मैथिली नाटक सब मे भारी संख्या मे मैथिली गीतक अँटाबेस हमसब देखैत छी आ आगां एहि प्रवृत्ति मे उत्तरोत्तर वृद्धिये होइत जाइत छैक। मध्यकालीन मैथिली कविताक रूप मे आइ जे गीत सब उपलब्ध अछि ताहि मे अधिक संख्या एहन गीतक अछि जे नाटक सँ लेल गेल अछि। किछु गीत तँ एहनो अछि जकर मूल नाटक अनुपलब्ध अछि, एखन धरि कतहु नहि भेटल अछि मुदा लोकप्रियताक कारण ओकर गीत बचल रहि गेल अछि। जेना, अमृतकरक नाटकक गीत, जे कि सागरिका आ वत्सराजक प्रेमप्रसंग कें ल' क' लिखल गेल छल होयत अथवा भीषम कविक गीत, जाहि सँ पता लगैत अछि जे ओ उर्वशी आ पुरुरवाक प्रेम-प्रसंग पर लिखल कोनो नाटकक गीत थिक।

मध्यकालीन नाटक सब मे मैथिली गीतक एते भारी संख्या मे प्रयोग कयल जेबाक मामिलाक अध्ययन रमानाथ झा केलनि अछि। एकर कारण ओ बतबैत छथि जे अपन संरचना मे जे गीत प्रसादगुण सँ हीन छल, सेहो जखन नाटक मे प्रयोग होअय तँ नाटकक वातावरण, कथा-प्रसंग, वक्ता आ बोद्धाक प्रत्यक्षीकरणक कारण सम्प्रेषण लेल सहज भ' जाइत छल। बरु ओ तँ प्रसादगुणहीनेक नहि, समस्त मुक्तक कविताक ई समस्या बतबैत छथि जे 'मुक्तक मे रस-परिपाक ओतेक सुगम नहि छैक, कारण, रस अवबोध व्यंजना-वृत्ति सँ मानल गेल अछि ओ व्यंजना-वृत्तिक हेतु वक्ता एवं बोद्धव्यक संग-संग प्रसंग वा प्रकरण सेहो कहल गेल छैक। प्रसंग वा प्रकरणक बोध मुक्तक मे कठिन होइत छैक। प्रबन्धकाव्य मे अथवा नाटक मे से सुलभ छैक।'[26] मैथिलीक मध्यकालीन कवि लोकनिक खोज (आविष्कार) एकरा कहल जा सकैत अछि जे अपन मुक्तक गीतक अधिकाधिक भरती ओ लोकनि नाटक सब मे केलनि। विद्यापतिक जे गीत 'गोरक्षविजय' मे शामिल छल तकरा बारे मे ई बात नहि कहल जा सकैए जे ओ गीत नाटकक दुआरे लोकप्रिय भेल, मुदा उमापति वा नन्दीपति आदि नाटककार सभक जे गीत लोकप्रिय भेल तकरा बारे मे निस्सन्देह कहल जा सकैत अछि जे ओ नाटकेक दुआरे लोकप्रिय भेल। रमानाथ झा तँ लिखलनि अछि जे 'हम तँ एतेक धरि मानैत छी जे ई गीत सब मुक्तक

जकाँ रचित भेल ओ पश्चात तत्तत् प्रकरण मध्य मे नाटक मे सिपविष्ट क' देल गेल।'[27] मध्यकालीन नाचक किछु रूप यथा बिदापत—आइ जाहि रूप मे उपलब्ध अछि, ओहि ढांचा सँ एहि बातक प्रमाणो भेटैत अछि जे गीतेक प्रस्तुतीकरणक लेल जेना नाटकक आयोजन कयल गेल हो। तखन इहो बात जे नाटकक ई संसर्ग गीतक भाषा पर सेहो असर केलक आ जनसामान्यक जे भाषा शुष्क वर्गीय भ' गेल छल तकरो मे पुन: लोक दिस प्रवृत्ति भेलैक। नेपालक नाटक सब, जाहि मे सामान्य जन सेहो एक पैघ संख्या मे दर्शक होइत छलाह, एकर प्रमाण भ' सकैत अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार मिथिलो मे त्रिभाषिक नाटकक दर्शकक स्थिति सैह छल—'दर्शक वर्ग मे महामहोपाध्याय सँ लए निरक्षर भट्टाचार्य धरि रहैत छलाह। दुनू प्रकारक दर्शकक उद्देश्य एक्के रहैत छल—मनोरंजन। कण्ठ-संगीत ओ वाद्य-संगीत तँ रहितहि छल, बीच-बीच मे बिपटा सेहो दर्शक कें हँसबैत रहैत छल।'[28] मुदा, जेना कि रमानाथ झा सेहो लिखलनि अछि, एहि नाटक सभक महत्त्व ओकर नाटकीयता ल' क' ओतेक नहि अछि जतेक ओकर गीत सब पर नृत्य-अभिनय ल' क' अछि। कविता कें ओ मूर्त क' दैत छल।

एहि पाँच सए वर्षक भीतर काव्य-भाषा मे कोना परिवर्त्तन आएल एकरा देखबाक लेल एतय दू टा उदाहरण देल जा रहल अछि। पहिल गीत नवकविशेखर यशोधरक छियनि जे हुनकर नाटक 'कृष्णचरित्र' मे आयल अछि आ ई गीत 'रागतरंगिणी' मे सेहो संकलित अछि। रमानाथ झा यशोधरक काल 1489-1533 ई. निर्धारित कयने छथि। गीत अछि—'तोंह हम पेम जते दुरें उपजल सुमरबि सेहे परिपाटी/ आवे परसमनि रंगरसे भुललाहे कओन कलाएँ हम घाटी/ भमरवर, मोरे बोलें बोलब कन्हाइ/ विरहतन्त जदि बुझिअ मनोभव की फल अधिक जनाइ/ तुलिअ सुमेरु साधुजन जानिअ सबकाँ धैरज धने/ से निअ लोभें ठाम जओं छाड़ए गरिमा धरबि कओने/ पुरुष हृदय जल दुइयो सहजें चल अनुबंधे बाँधल साइ/ से जदि फुटल रह सहस धारें बह उचेओ नीच पथें जाइ।'[29] भाषा आम बोलचालक अछि, यद्यपि कि प्राचीन अछि। विद्यापतिक काव्य-भंगिमाक प्रभाव अत्यधिक छैक। मर्म तते व्यापक अछि जे से सब टा जेना शब्द सब मे अँटि नहि पबैत अछि आ ओकर चमक बाहर धरि पसरल देखाब दैत अछि।

दोसर गीत नन्दीपतिक छनि, जे हुनकर नाटक 'कृष्णकेलिलीला' सँ लेल गेल अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक मतानुसार मैथिली कीर्तनियाँ नाटक कें शीर्ष ऊँचाइ धरि ल' गेनिहार त्रिमूर्त्ति नाटककार—उमापति, लालकवि आ नन्दीपति—मे सँ नन्दीपति तेसर छथि, जिनका ओ महाराज माधवसिंह (1776-1808)क समकालीन माननलि अछि। लगभग पूर्वेक प्रसंग पर नन्दीपतिक गीत छनि—'माधव एहन दिवस मोर भेला/ अपन करमफल हम उपभोगब ताहि दोस कोन तोरा/ जाहि नगर चानन नहि चीन्हथि अड़ड़ आदर कए रोपे/ बिनु गुन बुझले जेकर अनादर उचित न तापर कोपे/ सगुन पुरुष निरगुन चीन्हल जौं जौवन जड़ कहि देला/ जौं करमी फुल सबहुँ सराहिअ तों कि कमल गुन गेला/ थल-गुन आन ठाम परगासल तैं कि तनिक अभेला/ गिरि दरि ताहि तिमिर रहु ता पर रवि महिमा हिन भेला/ जनिक सरस मन, ताहि कहिअ गुन पशु शिशु अबुध न बूझे/ नन्दीपति भन जौं देखु दरपन आन्हर काँ की सूझे।'[30] मध्यकालीन मैथिली काव्य-भाषाक गतानुगतिकता एहि ठाम एकदम स्पष्ट अछि। विद्यापतिक असर अछि मुदा भाषाक अर्वाचीनता जेना ओकरा धो-माँजि देने छैक। कवि अपना समयक बिम्ब कें पकड़ैत अछि, ओतए जँ करमी सन उपेक्षित फूल छैक तँ सगुन-निर्गुण के कोलाहल सेहो छैक। अपना युगक मोताबिक मोहाबरा रचबाक प्रयास छैक। आ लोकोक्ति सेहो—बिनु गुन बुझले जे कर अनादर उचित न तापर कोपे। सब सँ प्रमुख बात छैक जे कविताक मर्म भाषा मे नीक जकाँ अँटाबेस लेने छैक आ तें सम्प्रेषण मे आसान अछि। आब ई बात भिप जे कविक पाण्डित्य आ पाडित्य-प्रसिद्धि गुणें व्यक्तिगत काव्य-भाषा प्रभावित होइत रहल अछि जेना कि 'कविपण्डितमुख्य' उमापतिक भाषा देखैत छियनि आ एतय धरि जे राजभवनक मुख्य सभापंडित हर्षनाथ झाक सेहो, जिनका रमानाथ झा प्राचीन काव्य-धाराक, आ 'विद्यापति-सम्प्रदाय'क सेहो, अंतिम कवि कहैत छथिन।

मध्यकालीन बोध आ भाषाक गंभीर सीमा सब सँ बान्हल रहितो ओ कवि लोकनि कविताक आंतरिक संसार मे कम प्रयोग कयने होथि, सेहो नहि छल। कविता, मध्यकाल मे ओ सही छल जे एक टा दृश्य बनबैत हो, मार्मिकता सँ भरल दृश्य, जे विचारशीलता सँ भरि दिअए, प्रश्नात्मक बना दिअए। एकर आदर्श स्वयं विद्यापति छलाह, कबीर सेहो काव्यात्मकताक मामिला मे एही पथक राही रहलाह।

एक टा कवि भेलाह—मधुसूदन। हुनकर कविता दुर्लभ अछि। 'रागतरंगिणी' मे हुनकर एक टा गीत आएल अछि आ ओतहि सँ रमानाथ झा 'प्राचीन गीत' मे संकलित कयने छथि, तें स्वाभाविके जे ओ 1650 ई. सँ पूर्वक कवि छथि। मधुसूदनक कविपरिचय मे रमानाथ बाबू 'अज्ञात' लिखलनि अछि, मुदा हुनकर कविताक विशेषता बतौलनि जे 'मनोभावनाक विलक्षण 'चित्रण' अछि। अज्ञात रहि जाएब एहू दुआरे सहज संभावित जे भणिता मे राजनामांकित नहि अछि। एहि गीत मे, स्त्रीक भयंकर विपपताक वर्णन भेलैक अछि, एक दुखी स्त्री जे अपन प्रेमीक धोखा सँ टूटि चुकल अछि। स्त्रीक जे दशा अछि तकरा बारे मे रमानाथ बाबूक शब्द छनि—'विरहक उत्ताप मे संशय मे पड़लि।' 'विरह' असल मे स्त्रीक विपपता आ हाहाकारक सौन्दर्यीकृत नाम थिक। 'टुटन' के नाम 'संशय' देब असल मे पुरुष वर्चस्वक आदिम

संस्कार थिक। पुरुष बहुत दयालु (महान?) होइत अछि, ओकरा पर सँ भरोस नहि तोड़बाक चाही भने जीवने किएक ने चलि जाय! दोसर दिश मुदा ई आशावाद अछि जे मनुष्य कें कखनो हारि नहि मानबाक चाही। मध्यकालीन आशावादक सीमा यैह थिक जे ओ स्त्रीक विपपताक लहास पर आशावादक गीत गबैत अछि। मधुसूदनक गीत देखल जाय—'की परवचने कन्त देल कान/ की परकामिनि हरल गेआन/ की तन्हि बिसरल पुरुबक नेह/ की जौबन आबे पड़ल संदेह/ की परिनत भेल पुरुबक पाप/ की अपराधें कएल विधि साप/ की सखि कओन करब परकार/ की अविनय दहुँ पड़ल हमार/ की हमे कालकला एक घाटि/ कीदहुँ समयक इहे परिपाटि/ मधुसूदन भने मन अवधारि/ की धैरजें नहि मिलत मुरारि।'[31] एक पुरुष द्वारा जाहि कोनो कारण सँ परित्यक्त क' देल जेबाक दुराशंका कयल जा सकैत अछि, एहि कविता मे ओ समस्त कारण सब अलग-अलग शब्द मे आएल अछि। आवश्यकता छैक स्वतंत्रता, समानता आ बन्धुत्वक—तकर कोनो निसान दूर-दूर तक नहि छैक, आ ने ई आधुनिक अवधारणा मध्यकालीन कवि कें बुझले छैक, तें कारणक अज्ञानता सँ पूर्वजन्मक पाप आ बिधनाक लिखलाहा के संदर्भ आएल अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे दू सय वर्ष बितैत-बितैत विद्यापतिक ई पाँती जे 'धैरज धय रहु मिलत मुरारि' मिथिला मे लोकोक्ति जकाँ प्रसिद्ध भ' गेल छल। एहि पाँतीक प्रयोग एहि कविता मे बड़ विशिष्ट ढंग सँ भेल छैक—की धैरजें नहि मिलत मुरारि? मने, ई जे कहबी छैक सेहो की मिथ्या छैक? सामंती मूल्य सब कें प्रश्नांकित करबाक जे प्रवृत्ति हमरा लोकनि विद्यापति मे देखैत छी तकरा एहिठाम कैक गुना बढ़ल देखल जा सकैत अछि। एक स्त्री समस्त आचार-शास्त्र पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत कतेक दुखी आ क्षुब्ध भ' सकैत अछि, से दुख आ क्षोभ एहि ठाम आएल छैक। एक बात इहो देखैत छी जे एहि ठाम कृष्णक अथवा हुनक प्रतीक वस्तु सभक कोनो उपलब्धता नहि अछि, भक्तिक तँ प्रश्ने नहि अछि, एहि तरहें ई एक धर्मनिरपेक्ष रचना थिक। विद्यापति मे जतबा प्रश्नात्मकता छलनि, ततबा तँ 'लोक' उठा सकैत छल, मुदा एहि ठाम किछु बेसी अछि। दोसर जे विद्यापति राजनामांकित पदवीधारी छलाह तें हुनका बहुतो तरहें संरक्षण प्राप्त छलनि। मधुसूदन कें से नहि छलनि। सतरहम शताब्दीक समय सामंतवादी पुरुष-मूल्यक घोर उत्कर्ष काल छल, जेठक जरैत दुपहरिया-सन। एहि स्थिति मे जँ मधुसूदन बिसरा देल गेलाह तँ से मैथिल समाजक हिसाबें स्वाभाविके छल। कोना ने कोना 'रागतरंगिणी' मे एक टा पद संकलित रहि गेलनि। एहि सँ हमरा लोकनि रागतरंगिणियोक महत्त्व बूझि सकैत छी।

अनुकरण सेहो सर्वथा प्रयोगहीन नहि होइछ, मध्यकालीन कविता मे एकरो किछु उदाहरण अछि। रमानाथ झाक एक निरीक्षणक उल्लेख हम पहिने क' आएल छी जे कोना खण्डिता नायिकाक प्रसादन लेल लिखल हुनक 'मान' गीतक अनुकरण मे ने केवल सैकड़ो मानगीत कैक शताब्दी धरि लिखल जाइत रहल, अपितु ओकर भेद-प्रभेद, राग-भास धरि मे एक टा पैघ व्यापकता आएल। मानिनी कें प्रसप करबाक लेल नायक सगर राति प्रयास करैत रहल, अन्ततः भोर भ' गेलैक। विद्यापतिक एक गीत एहि भोरुका भाव-दशा पर अछि। ई गीत अपन मार्मिकताक कारण ततेक अनुप्रेरक भेल जे कविलोकनि आब राग प्रभाती मे मान वर्णन लिखय लगलाह। ओ लिखलनि अछि—'विद्यापतिक अनुकरणक ई परम्परा एतेक दृढ़ भ' गेल जे हुनक परवर्ती कवि लोकनिक रचना मे भणिताक पद मात्र द्योतित करैत अछि जे ई गीत अमुकक रचल थिक, भणिता जँ हटाए दिऐक तँ ई कहब बहुधा असंभव भ' जाएत जे कोन गीत ककर थिक।'[32] मुदा दोसर दिस, विद्यापतिक जे गीत मिथिला मे लोकप्रिय रहल, से समष्टि रूपें 'तिरहुति' नामें विख्यात भेल मुदा आगूक समय मे अनुसरणकर्त्ता लोकनि भिप-भिप विषय तथा भासक आधार पर ने केवल एकर वर्गीकरण—बटगमनी, उचिती, योग, सोहर, मान, फागु, मलार, चौमासा, चैती, लगनी, गोआलरि आदिक नामें केलनि, एकर सभक रचनाक एक विराट अभियान चलि निकलल। ई बात भिप जे एहि मे सँ बहुत छोट अंश मात्र इतिहासबद्ध भ' सकल अछि। रमानाथ झा कहैत छथि—'एकहु जातिक गीत यदि विद्यापति एक सँ अधिक भासक रचल तथा ओ प्रचार मे आएल तँ ओहि जातिक ओतेक भासक गीत चलि गेल।'[33] काव्यक दृष्टि सँ भने ई प्रगतिक समय नहि रहल हो, मनोरंजनक उद्देश्य सँ, कविपरिपाटीक प्रयोगशीलताक दृष्टिमों तँ पूरा समय चहल-पहल सँ भरल देखाइत अछि।

मध्यकालीन कविता मे शृंगारक बाद दोसर जे प्रवृत्ति मुख्य रहल से थिक भक्ति। पहिनहु ई बात कतोक ठाम कहल जा चुकल अछि जे राधा-कृष्ण मे भने विद्यापतिक बादक कवि लोकनि देवत्व आरोपित क' लेने होथु, मुदा जखन हुनका लोकनिक गीत लिखल गेल, प्रमुख विषय शृंगारिक लीला-वर्णने रहलैक। एहन पद ओना तँ विद्यापतियो लग छनि जाहि मे माधवक प्रति भक्तिपूर्ण आत्मनिवेदन कएल गेल छैक, आ से बादोक कवि लोकनिक छनि, मुदा विद्यापतिक ई गीत सब संख्या मे अत्यल्प आ प्रकृति मे आपवादिक अछि। एहि ठाम भक्तिक असल विषय रहलाह शिव आ शक्ति। एहि दुनूक भक्तिपद विद्यापतियो लिखलनि मुदा आगू एहि मे अधिकाधिक वृद्धि भेलैक आ प्रयोग सेहो। ई एतेक धरि व्याप्त अछि जे आधुनिक युग मे सेहो कवि लोकनि प्राचीन कविता किएक लिखैत छथि, ई प्रश्न उपस्थित भेला पर रमानाथ झा तीन कारण बतबैत छथि—1. प्राचीनताक पक्षपाती लोकनि प्राचीने लिखि सकैत छथि, 2. व्यवहारक हेतु जे गीत लिखल जाइछ से प्राचीनेक

कोटि मे आएत, आ 3. देवताक वन्दना मे रचल गीत। रमानाथ बाबू इहो लिखब जरूरी बुझलनि जे 'वन्दना प्राय: एहि समयक (प्राचीन) गीतक सब सँ प्रधान विषय रहि गेल अछि, यद्यपि देवताक स्थान मे आब देशहुक वन्दना पूर्ण प्रचलित भ' गेल अछि।'[34]

'मैथिल भक्ति प्रकाश' प्राचीन शाक्त-गीतक संकलनक दृष्टि सँ एक महत्त्वपूर्ण संकलन थिक। ई पुस्तक 1912 ई. मे बाबू ललितेश्वर सिंहक संपादन मे प्रकाशित भेल छल, जाहि मे महावैयाकरण दीनबन्धु झाक पूरा सहयोग छलनि। एखन हाल (2017) मे एकर दोसर संस्करण पंडित भवनाथ झाक संपादन मे प्रकाशित भेल अछि। एहि मे 15 कविक 51 टा गीत संकलित छैक तथा एक गीत अज्ञात रचयिताक सेहो अछि। ई रचनाकार लोकनि चौदहम शताब्दी सँ उनैसम शताब्दी धरिक छथि। 15 कवि छथि—रत्नपाणि, महामहोपाध्याय महेश ठाकुर, महाराज महिनाथ ठाकुर, विद्यापति, महामहोपाध्याय शंकर मिश्र, उमापति, कृष्णपति, जयकृष्ण, वागीश्वर, देवनाथ, रामनाथ आदिनाथ, सुकवि, दुर्गादत्त सिंह, दीनबन्धु झा। एहि संग्रहक एक महत्व एहू ल' क' अछि जे विद्यापतिक अतिप्रसिद्ध गीत 'जय जय भैरवि' सर्वप्रथम एही संग्रह मे संकलित पाओल जाइछ। (पंडित गोविन्द झाक ई मत प्रसिद्ध अछि जे 'जय जय भैरवि' विद्यापतिक लिखल गीत नहि छियनि।) संग्रहक आरम्भ पंडितवर रत्नपाणिक लिखल दशमहाविद्याक अलग-अलग संस्कृत ध्यान सँ होइत अछि आ अंत सेहो पंडित दीनबन्धु झाक दू गोट संस्कृत गीत सँ, बीच मे मैथिली गीत सब अछि। स्पष्ट अछि जे भाषा आ भाव दुनू संस्कृतानुगामी अछि, शास्त्रीय अछि आ एकर विषयवस्तुक तुलना ओहि लोकप्रचलित भगवती गीत सब सँ नहि कएल जा सकैछ, जे कतेको ठाम शास्त्र आ पुराण सभक विरुद्धो जँ लोकस्मृति मे किछु छैक तँ तकरो पता दैत अछि। मिथिलाक महाराज, जमींदार, बबुआन, अधिकारी लोकनि शक्तिक उपासक छलाह, कारण 'शक्ति (पावर) के सब सँ बेसी जरूरति हुनके लोकनि कें छलनि। तें, एहि गीत सब मे शास्त्रेक्त ध्यान, विधि, उपचार आदिक गीतमय वर्णन तँ अवश्य अछि मुदा ओहि मे हार्दिकता नहि अछि। गीतक उद्देश्य जे अन्तत: छैक सेहो गीत मे आयल छैक। जेना, महाराजाधिराज महिनाथ ठाकुरक काली-गीतक अंत मे ई काव्यात्मक पाँती आएल अछि—'बसिय मसान ध्यान सब ऊपर योगिनि गण रहू साथे/ नरपति पति राखिय जग ईश्वरी करु महिनाथ सनाथे।'[35]

एहू संग्रह मे एक दुर्लभ कवि संकलित भेटैत छथि, जिनक बहुत कविता नहि भेटैत अछि। ई छथि वागीश्वर। जेना कि पंडित भवनाथ झा परिचय देने छथि, मंगरौनी गामक फन्दहवार मूलक वागीश्वर 1600-1675 ई.क बीच भेल रहथि। एहन प्रतीत

होइत अछि जे कवि शक्ति-साधना मे गहन उतरल साधक छलाह। हुनकर अनुभूति के जे चित्र एहि एकमात्र गीत मे आयल अछि, मानू शक्ति-साधनाक पूरा दर्शन आ अध्यात्म मूर्त्त भ' उठल अछि। गीत अछि—'जय जय निगुन सगुन तनु धारिणि गगन विहारिणि मा हे/ कत कत विधि हरिहर सुरपति गन सिरिज सिरिज तोहे खाहे/ निगुन कहब कत सगुन जत तत मत कै रहु वेदे/ थाकि थाकि बैसल छथि झखइत नहि पावल परिछेदे/ तोहरहि सौं सभ तन सब तोहरेहि तन्त्र-मन्त्रक तलाशे/ केओ नारि तन केओ पुरुष तन' अपन अपन कै भाषे/ सुदृढ़ भक्ति रस बस तुअ अनुपम ई बुझिये परिनामे/ भक्ति मुक्ति वर दिय हे गोआउनि कवि वागीश्वर भाने।' शक्ति-आराधना मे लिंग आ वर्ण-भेद, सगुण आ निर्गुण भेद वर्जित अछि आ एकर उद्देश्य मुक्ति थिक—ई सब बात कतेक आंतरिकताक संग एहि गीत मे आएल छैक!

मिथिलाक शिष्ट-सम्भ्रान्त वर्गक द्वारा जे भगवती-गीत लिखल जाइत छल आ मिथिलाक जनसमुदाय मे जे भगवती-गीत प्रचलित छल, लोक-रचनाक एक प्ररूपक रूप मे—दुनूक बीच पैघ अन्तर छल। ई अन्तर ने मात्र शब्द, वाक्य, शैली आ भावक छल अपितु अन्तर्निहित जे शक्ति-अवधारणा छल, ततय धरि जाइत छल। एकर बादो, एकरे कम नहि मानल जेतै जे सम्भ्रान्त वर्ग अपन पूजा मे मैथिलीक प्रयोग करैत छल, आधुनिक काल मे आबि क' ई चलन पतराइत गेल आ मैथिली गीतक स्थान संस्कृत स्तोत्र ल' लेलक। जनसामान्य मे तँ समूचा पूजा-विधाने जें कि मैथिली मे होइत छल तें स्वाभाविक रूप सँ गीत सेहो मैथिलीक रहैत छलैक। से आइयो अछि। गीत सभक अन्तर्वस्तु मे जहाँ धरि अन्तरक बात अछि, एतय हम दू गोट काली-गीत प्रस्तुत करब। पहिल गीत छियनि पण्डितवर रत्नपाणिक जे एक निविष्ट सम्भ्रान्त छलाह। हुनक पहिचान महाराज छत्रसिंहक आश्रितक रूप मे कयल गेल अछि जे 1830 सँ 1850क बीच राजदरभंगा मे राजपंडित रहलाह। गीत अछि—'जय जय जननि, ज्योति तुअ जगभरि दक्षिण पदयुत तुअ नामे/ अति द्युति पीन पयोधर उपत सजल जलद अभिरामे/ विकट दशन अति वदन भयानक फूजल मंजुल केशा/ शोणितमय रसना अछि लहलह श्रीकवयस्त्रिदेशा/ तीन नयन अति भीम राव तुअ अस दुइ कुण्डल काने/ शव कर काटि सघन पाती कय चौदिश कटि परिधाने।'[36] ध्यान देने स्पष्ट होयत जे कालीक सुप्रसिद्ध ध्यानमंत्र सब जे छनि, तकर सभक भाव कें पकड़ि ओकर मैथिली काव्यानुवाद एतय क' देल गेल अछि, जाहि क्रम मे स्वयं 'काव्य'क लेल कदाचिते कोनो जगह छोड़ल गेलैक अछि। आब दोसर गीत 'लोक' सँ लेल गेल देखल जाय, जकर रचयिताक कोनो ठेकान नहि अछि। गीत अछि—'जाहि दिन कालिका के जनम भेल छै, मा हे, से दिन जानै ने कोइ/ जानै हे जानै मैया बासुकी चरैया, मा हे, पाछू सँ भैरव भाइ/ कानि कानि चिठिया लिखथि कालिका,

मा हे, मा देहो मै भैरव हाथ/ कनी टा सँ पोसल असुरा दैत्य कें हे, मा, करत से हमरा सँ ब्याह/ हँसि हँसि चिठिया लिखै भैरव भैया, मा हे, देहो कालिका के हाथे/ हे माँ, असुरा के देबै बलिदान।'[37] एहि गीत कें देखी तँ एहि ठाम काव्यत्व आ कल्पनाक पर्याप्त विस्तार भेटत। भैरव कालीक भाइ छथिन। कालीक रहस्यमय जीवनक ज्ञाता बासुकी छथि। असुर ओकर पड़ोसी छैक। काली चिट्ठी लिखैत छथि। भैरव रणनीति मे माहिर छथि, हुनक चिट्ठी मे छनि जे असुर यदि काली सँ ब्याह करय चाहैत अछि तँ ब्याह करा देल जाय, एही सँ ओकर (असुरक) बलिदानक अवसर सुलभ होयत आदि-आदि।

मैथिली शिवगीतक स्थिति मुदा एहि सँ सर्वथा भिन्न अछि। पहिनहु चर्चा भेल अछि जे शिव मिथिलाक लोक लेल घरबारी देवता थिकाह। ऐतिहासिक-पुरातात्विक साक्ष्य सब कें देखी तँ शिव मिथिला-भूभागक प्राचीनतम देवता तँ छथिहे, ओ नवीनतम सेहो छथि, कारण हरेक युगक जनसामान्य अपन-अपन दुख-सुखक मोताबिक हुनकर स्वरूप गढ़ैत गेलाह अछि। तें देखब जे पुण्य आ मोक्ष प्रदान केनिहार शिवक स्वरूप अल्पे मात्र मे आयल अछि, से ने केवल लोकसाहित्य मे अपितु मध्यकालीन कवितो मे। एहि ठाम हुनकर जीवन-प्रसंग बेसी वर्णित अछि। जे जे संकट एहि लोकक जीवन मे छैक—गरीबी, बदहाली, अव्यवस्था, अन्यायपूर्ण सामाजिक प्रथा—से सभक सब शिव-पार्वती के जीवन मे सेहो छनि। कहबाक चाही जे शिव एही प्रकार सँ एहि भूभागक लोक कें मुक्ति प्रदान करैत अयलाह अछि। अपन दोख-रोख, अपन दुख-चिन्ता मानू शिवक माथ पर उझीलि लोक मुक्त होइत रहलाह अछि। अकर्मण्यता जँ एहि ठामक लोकक जीवन-पद्धति मे छल तँ से शिव पर आरोपित कयल गेल। तहिना निशांखोरी। तहिना, दायित्व सँ पलायनक प्रवृत्ति। शिव-पार्वतीक विवाहक जे प्रसंग अछि से तँ मानू लोककविक लेल कविताक खजाना रहल। गौरी-शंकरक प्रेम पर मध्यकालीन कवि लोकनि एक सँ एक कविता लिखलनि। 'रागतरंगिणी' मे संकलित कवि हरिदासक गीत छनि—'देखहो गे माइ जोगि एतए कतए/ फिरय गौरी संगे जतए ततए/ सिंगी भरि पुरलन्हि मधुरिम बानी/ भिखिओ न लेअ जोगी माँगइ भवानी/ जहाँ जहाँ सखी संगे गौरी खेलाए/ तहाँ तहाँ नाचए जोगी डमरू बजाए/ जोगिया रंगिया निते निते आब/ तर तह कह जोगी गौरी देखाब।'[38]

एहि ठाम आब भने कवि-सत्य मे पौराणिक तथ्यक अपलाप देखार पड़य आ कि कविकुलगुरु कालिदासक कवि-सत्य सँ विरुद्ध दिशा मे गमन करैत बुझाय, मिथिलाक मान्यता यैह रहलैक अछि जे 'भिखियो ने लै छै जोगी, मुखहु न बोलै/ घुरि फिरि गौरा कें निहारै रे की।' तात्पर्य जे एतए तपस्या पार्वती कें नहि, शिव कें करय पड़ैत छैक। शिव आ पार्वतीक आयु मे जे पैघ अन्तर रहनि, से तँ मानू स्त्री

लोकनिक दुर्दशाक आधारशिला बनि गेल मिथिला मे। बिकौआक अनमेल बहुविवाहक प्रथा पर शैव मान्यताक प्रभाव पर एखन शोध होयब बाँकी छैक। मुदा दोसर दिस, स्त्रीक हृदयक जे हाहाकार छैक सेहो मानू शिव-पार्वतीक विवाह आ दाम्पत्य-प्रसंगेक बहपे अभिव्यक्ति पौलक। 'लोहा मे सटि गेल सोना/ हम बाजब कोना/ एक तँ बूढ़ा कारी खट खट/ दोसर भूत समाना।' वर-कन्याक ई अनमेलता वास्तविक रूप सँ समाज मे व्याप्त रहैक, केवल बहपा टा शिवगीतक छल। मिथिलाक 'लोक' आ मिथिलाक 'शिष्ट' साहित्य अलग-अलग तरहें कोना सोचैत अछि? एक टा लोकगीत मे, विवाह-काल मे गौरीक हृदयक चीत्कार के वर्णन भेल अछि—'सभ पैसि जोड़लनि, एको नहि गुन छनि/ नव छौंड़ी कें बूढ़ जमाइ गे माइ/ गौरी के मन छल होइत प्रथम वर होइत पंडित वर, हम पुजितहुँ साँझ गे माइ/ गौरी के मन छल करितहुँ सुन्दर वर/ आब हम देखि करब कोन उपाय गे माइ।' एक दुलहाक रूप मे गौरी कें शिव एको रत्ती नहि पसिप—ई लोकसाहित्यक संसार थिक। मुदा, लालकवि (1750 ई. लगधग)क एक प्रसिद्ध गीत मे तथ्य दोसर बताओल गेल अछि। भने शिव बूढ़ छथि, भूत सभक बीच भूते सन लगैत छथि, गरल पिबैत छथि बघम्बर पहिरैत आ बसहा पर सवारी करैत छथि मुदा 'देखिअ तपोधन हरलनि मोर मन हे।' तमाम अवगुणक अछैत गौरी कें हुनका सँ प्रेम भ' गेलनि अछि। गौरी अपन स्वजन-परिजन कें कहैत छथि—'जाह सबहुँ फिरि गेह नेह जनु बिसरह हे।' कि सब घुरि क' अपन-अपन घर जाउ आ हमरा बिसरि जाउ। आब हम एही जोगी के भ' क' रहब। शिष्ट साहित्य मे पौराणिक अन्विति भेले ताकय। शिवक दू टा रूप एहन रहलनि—नटराज आ अर्द्धनारीश्वर—जकर अत्यन्त भव्य कवि-कल्पना विद्यापति केलनि। नटराजक गीत 'आजु नाथ एक बरत महासुख लागत हे' मे तँ हुनक काव्यात्मक उड़ान ततेक ऊँच रहलनि जे परवर्ती कवि लोकनि कें ओकर लगो-पास धरि पहुँचब कठिन रहलनि, बाँकी अर्द्धनारीश्वर रूप अनेक-अनेक कवि अपन-अपन रंग द' क' अंकित करबाक प्रयास करैत रहलाह। मध्यकालीन काव्यक अलबेला नायक रहलाह शिव, जिनका पाबि गौरी कें कृतकार्य मानल गेलनि। चन्दा झाक भाषा मे कही तँ गौरी ई कहैत उद्धृत कयल गेली जे 'हृदय-नयन मे बसथि निरन्तर करुणाकर शिव दानी/ त्रिजगत एक सदाशिव देखथि हृदय हमर दृढ़ ध्यानी।'

सन्दर्भ

1. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड 2/ पृ. 18
2. उपर्युक्त/ पृ. 19
3. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 142

4. डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 219
5. रमानाथ झा/ भूमिका/ प्राचीन गीत/ पृ. 3
6. बालगोविन्द झा 'व्यथित'/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 122
7. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 122
8. उपर्युक्त/ पृ. 122
9. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 19
10. प्रो. मायानन्द मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 123
11. बालगोविन्द झा 'व्यथित'/ उपर्युक्त/ पृ. 75
12. रमानाथ झा रचनावली/ खंड 2/ पृ. 18
13. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 123
14. उपर्युक्त/ पृ. 121
15. उपर्युक्त/ पृ. 126
16. उपर्युक्त/ पृ. 129
17. डॉ. रामदेव झा/ भूमिका/ मैथिली प्राचीन गीतावली/ पृ. 50-51
18. रमानाथ झा/ भमिका/ प्राचीन गीत/ पृ. 2
19. उपर्युक्त/ पृ. 3
20. प्रो. मायानन्द मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 124
21. उपर्युक्त/ पृ. 138
22. उपर्युक्त/ पृ. 153
23. भाषागीत-संग्रह/ पद संख्या 99
24. मैथिली प्राचीन गीतावली/ पृ. 237
25. प्रो. मायानन्द मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 126
26. रमानाथ झा/ प्राचीन गीत/ पृ. 119
27. उपर्युक्त/ पृ. 120
28. डा. जयकान्त मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 166
29. मैथिली प्राचीन गीतावली/ पृ. 149
30. प्राचीन गीत/ पृ. 128-29
31. उपर्युक्त/ पृ. 91
32. उपर्युक्त/ पृ. 72
33. उपर्युक्त/ पृ. 71
34. उपर्युक्त/ पृ. 137
35. मैथिल भक्ति-प्रकाश/ पृ. 17
36. उपर्युक्त/ पृ. 11
37. मैथिली लोकगीत (अणिमा सिंह)/ पृ. 21
38. प्राचीन गीत/ पृ. 97

इतिहास-वंचित मैथिली काव्यधारा

मैथिली साहित्येतिहासक प्रथम ग्रन्थ डॉ. जयकान्त मिश्रक 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' थिक, जे दू भाग मे क्रमश: 1949 तथा 1950 मे प्रकाशित भेल। बाद मे जे अनेक इतिहास-ग्रन्थ सब समय-समय पर प्रकाशित होइत गेल, राजमोहन झाक शब्द मे 'अद्यावधि सभ इतिहास-ग्रन्थ लेल ई महाजनक काज कयलक अछि, कारण जे बाद मे लिखल गेल सभ इतिहास-ग्रन्थ कोनो ने कोनो रूप मे एकरे सँ ट्टण-पैंच लैत गेल अछि।'[1] डॉ. विश्वेश्वर मिश्र तँ एक ठाम खेदपूर्वक लिखलनि अछि जे 'एहि इतिहासक प्रकाशनक पश्चात किछु रचना ओ रचनाकारक नव सूचना प्राप्त होइतहु हिनक पश्चातक इतिहासकार मूलत: एही इतिहास पर निर्भर रहलाह अछि। हिनक सीमा ओ संभावना सँ आगू केओ नहि बढ़ि सकलाह।'[2] एहि ठाम डॉ. मिश्र दू टा सार्थक संज्ञाक प्रयोग कयने छथि—सीमा आ संभावना। स्वाभाविक रूप सँ प्रत्येक इतिहासकारक अपन सीमा होइत छैक, जाहि सँ आगू बढ़बाक अपेक्षा आगामी इतिहासकार सँ कयल जाइत अछि। तहिना, प्रत्येक इतिहासकार अपन ग्रन्थ मे अपन सीमा सभक दुआरे जे नहि क' पौने रहैत अछि, तकर संभावनाक बीज हुनक ग्रन्थ मे छीटल देखल जा सकैत अछि। आगामी इतिहासकार सँ एकरो पल्लवित—पुष्पित करबाक अपेक्षा रहैत छैक। अपन जाहि लेख मे डॉ. विश्वेश्वर मिश्र अपन उपर्युक्त विचार लिखने छथि, तकर शीर्षक देल गेल अछि—'साहित्येतिहास-लेखन एक व्यक्ति सँ संभव नहि अछि।' किएक संभव नहि अछि? लेखक अन्त मे ओ एकर कारण बतौलनि अछि—'मैथिलीक अभिमन्युक कोन कथा जे एकर भीष्म पितामह पर्यन्त संकीर्ण मनोवृत्ति सँ आक्रान्त छथि। अवसर भेटितहि पक्षपात करबाक लोभक संवरण नहि क' पबैत छथि।'[3] एहि तरहें, हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे 'इतिहास-वंचित काव्यधारा' सन अध्यायक आवश्यकता किएक पड़ैत अछि!

साहित्येतिहासक मूल प्रयोजन की होइत छैक, एहन बात नहि जे तकर जानकारी अंग्रेजी, फ्रेंच आ रूसी भाषे बला लेखक टा कें रहैत हो। एकर जानकारी मैथिली लेखक लोकनि कें सेहो रहलनि अछि। उदाहरणक लेल एक बेर पुन: राजमोहन झा

कें देखल जाय, अपन ओही लेख मे एकठाम ओ कहैत छथि—'साहित्येतिहास भूत आ भविष्य दूनू सँ जुड़ल वर्त्तमान कें व्याख्यायित करैत अछि। भूत आ भविष्यक शृंखलाक, जकर मध्य वर्त्तमान कड़ीक काज करैत अछि, क्रमिक विकासक अध्ययन सँ जे हमरा सभ कें उपलब्ध होइत अछि, से खाली घटनाक क्रमबद्ध विवरण वा विश्लेषण आ ओहि सँ होब' बला परिवर्त्तनक इतिहास नहि होइत अछि, प्रत्युत ओहि भाषाक जातीय साहित्यक निरूपण करैत अछि।'[4] एहन इतिहासकार सँ की अपेक्षा कएल जाइत अछि, तकरा बारे मे ओ आगू कहैत छथि—'इतिहासकारक दृष्टि एक दिस जत' इकाइक रूप मे कोनो साहित्यिक ग्रन्थ अथवा कालखण्डक साहित्यिक ग्रन्थ सभक सार ग्रहण करैत अछि, ततहि संग-संग समग्र रूप मे साहित्यक निरन्तर प्रवहमान भण्डार मे सँ एक टा अथवा कयटा एहन सूत्र घीचि अनैत अछि, जकरा कोनो भाषाक अपन साहित्यक चरित्र वा वैशिष्ट्यक रूप मे चीन्हल जा सकैत अछि। से चिन्हबाक आ पकड़बाक अपेक्षा इतिहासकारक आँखि सँ कयल जाइत अछि।'[5] कोनो भाषा-साहित्यक जातीय स्वभाव कें अकानैत एहन सूत्र घीचि आनी जाहि सँ एहि साहित्यक चरित्र आ वैशिष्ट्य सोझा आबि जाय, ताहि लेल चाही समग्रता। एकभगाह भेने ई क' पायब संभव कोना भ' सकैत अछि? जाति, धर्म, सम्प्रदाय, परम्परा मे विभाजित भाषा-भाषीक जातीय एकता कें तकबा लेल अनेकता दिस सेहो ताकय पड़ैत छैक। राजमोहन झा आगू कहैत छथि—'जेना-जेना युग बदलैत अछि, साहित्य बदलैत अछि, तेना-तेना एहि जातीय संस्कार मे सेहो परिवर्त्तन होइत रहैत अछि। तें एकरा ठाम-ठाम पकड़' पड़त। आ एतबे मे इतिहासकारक काज समाप्त नहि भ' जाइत छनि। एकताक संग-संग अनेकता कें सेहो हुनका व्याख्यायित-विश्लेषित करबाक छनि। एहि लेल एक टा आँखि हुनका एकता पर आ दोसर अनेकता पर रखबाक प्रयोजन होइत छनि। प्रकृति-समता कत' अछि, किए अछि आ तहिना विभिपता की अछि, किए अछि।'[6] तँ की मैथिलीक इतिहास सब राजमोहन झा कें हुनक अपेक्षा पूर करैत भेटल छलनि, तकर पता ओहि लेखकक शीर्षके सँ लागि जाइत छैक 'साहित्येतिहास: लेखनक बाट तकैत'। लेखक अन्त मे ओ लिखलनि—'इतिहास हमरा सभ मे सँ एहन कृतीक प्रतीक्षा क' रहल अछि जे ओकर अपेक्षा सब कें पूरा करैक। हमसब मैथिली लेखक अपन युवा एवं तरुण पीढ़ी सँ अपेक्षा करैत छी जे ओ लोकनि आन्तरिक आ बाह्य सब प्रकारक लेखकीय संकट पर विजय प्राप्त क' इतिहासक एहि अपेक्षा कें पूरा करबाक दिशा मे अग्रसर होयताह। अतीत जखन निराश करैछ तँ आशा भविष्ये सँ कयल जा सकैत अछि।'[7] यैह आशा पुन: हम, एहि पोथीक लेखक करैत छी।

इतिहासकारक कमी ताकब एहि ठाम प्रयोजनीय नहि अछि। मूल बात एतबे

जे ई मिथिलावासीक जातीय साहित्यक रूप मे एकर प्रवृत्ति आ स्वभाव कें सामने आनि राखि सकय, से नहि भेल। आ तकर मुख्य कारण भेल संकीर्णता। आ तें इतिहास-वंचित काव्यधारा दिस एक नजरि देब आवश्यक भ' जाइत अछि।

इतिहास-वंचित रचनाशीलता मुख्यत: तीन प्रकारक अछि। एक तँ हमरा लोकनि स्पष्ट देखैत छी जे मिथिलाक जे अन्वेषक आ इतिहासकार लोकनि भेलाह से अपन वर्गीय मनोवृत्ति सँ बाहर नहि निकलि सकलाह। एहि कारण इतिहासकारक लेल जे निष्पक्षता अपेक्षित छैक तकरा स्थान पर ओतय एक जाहिल किस्मक संकीर्णता देखार पड़त। एक बेर फेर दोहराबी जे भाषा एक पैध आ व्यापक वस्तु थिक जकरा भीतर एक्कहि संग अनेक धर्म, सम्प्रदाय आ जाति अबैत अछि। समस्त भाषा-भाषीक अपन काव्यात्मक अभिव्यक्ति होइत छैक आ से भाषा-साहित्यक अनुशासन मे देखबा काल धर्म-सम्प्रदाय-जाति निरपेक्ष भइये क' देखल जा सकैत अछि। किन्तु एतय हमरा लोकनि देखैत छी जे जे रचना ब्राह्मणधर्मक आदर्श पर नहि लिखल गेल छल, ने अपन स्वभाव मे पौराणिक छल, अपितु पुराण-विरोधी छल, तकरा पूर्णत: वंचित क' देल गेलैक। कबीरक कविताक संग जे व्यवहार भेल तकर विवरण पहिनहि आबि चुकल अछि। आगाँ हमरा लोकनि देखैत छी जे कबीरक बाद कहियो एहन समय मिथिला मे नहि आयल जखन हुनकर आदर्श कें ल' क' मैथिली गीत-रचनाक परम्परा अवरुद्ध भेल होअय। ई आइयो धरि अनवरत जारी अछि। हमर आचार्य लोकनि कें प्रथमे दृष्टि मे ई बात ग्लानिपूर्ण लगतनि जे ठीक-ठीक विद्यापतिये जकाँ कबीरोक भणिता जोड़ि क' हजारो गीत मिथिला मे रचित भेल। हजारो अनुयायी भेलाह हुनकर, जिनका मे काव्यात्मक प्रतिभा रहनि आ ओ लोकनि मैथिली कें अपन अभिव्यक्तिक भाषा बनौलनि। स्पष्ट रूप सँ ई रचना सब ब्राह्मणधर्मक आदर्श सँ दूर छल, बरु विरुद्ध छल। कोनो एक साम्प्रदायिक मान्यता कें ल' क' जाहि समय मे भाषाक अन्दरक कोनो एक वर्ग रचनाशील रहैत अछि, ठीक ओही समय मे कोनो दोसर वर्ग सर्वथा विपरीत मान्यता कें ल' क' ओही भाषा मे चलैत रहि सकैत अछि। आनो आन भाषा मे सगुण आ निर्गुण भक्ति-धारा कें हमरा लोकनि समानान्तर चलैत देखि सकैत छिऐक। मैथिली मे ई भेल जे निर्गुण धारा दिस सँ सर्वथा आँखि मूनि लेल गेल जेना कि ओकर अस्तित्वे नहि हो। आँखि मूनि लेब अनस्तित्व प्रमाणित करबाक प्रमाण नहि भ' सकैत अछि, कहबाक आवश्यकता नहि अछि। इतिहासकार लोकनिक संकीर्णता अनुमानो सँ बेसी भयावह रहलनि अछि, तकर किछु प्रसंग पहिनहु आबि चुकल अछि। ब्राह्मणधर्म, जकरा फैशन मे लोक हिन्दूधर्म वा हिन्दुत्व सेहो कहैत छथि, विचारि क' देखी तँ एक व्यापकताक अपेक्षा करैत अछि, कारण एहि धर्मक भीतर अनेक सम्प्रदाय अबैत अछि, कैक टा तँ परस्पर

विरोधी, आ तहिना अनेक जाति सेहो, जकर अपन अलग-अलग परम्परा छैक। मुदा मैथिलीक विद्वान लोकनि पौराणिक स्मार्तधर्म सँ आगू नहि बढ़' चाहलाह अछि आ ने ब्राह्मण जातिक सीमा सँ आगू बढ़बाक प्रयास केलनि अछि। गोविन्ददासक प्रसंग पहिनहि आबि चुकल अछि। ब्राह्मणधर्मेक एक अन्य सम्प्रदाय सँ ओ अबैत छलाह, मुदा ओहू सम्प्रदायक प्रति एहि ठाम सदाशयता नहि देखाओल जा सकल। जें कि ओ पंजीबद्ध ब्राह्मण छलाह तें मैथिली साहित्य मे हुनकर अंटाबेस बनेबाक लेल तँ अनेक कुचक्र कयल गेल, मुदा, जेना काठ कें फ्रेम मे सेट करबाक लेल ओकरा साइजक मोताबिक काटि-छाँटि देल जाइछ, लगभग तेहने व्यवहार हुनकर सम्प्रदायगत मान्यताक संग कयल गेल। एहना स्थिति मे कोनो शूद्र वा दलितक रचल मैथिली निर्गुणगीत, जे कि आक्रामक रूप सँ ब्राह्मण-आदर्श-विरोधी छल, ओकरा मैथिली साहित्य कोना मानल जा सकैत छल?

इतिहास-वंचित कयल जेबाक दोसर कोटि जे हमसब देखैत छी, सेहो कम रोचक नहि अछि। ब्राह्मणेतर आदर्शक रचनाक बात तँ ऊपर भेल, हमरा लोकनि देखैत छी जे ब्राह्मणधर्मक अनुयायी, स्वयं ब्राह्मण आदर्शक रचना केनिहार एहनो कवि लोकनि एक पैघ संख्या मे इतिहास-वंचित कयल गेलाह, जे राजाक दरबारी नहि छलाह, अथवा जिनका राज्याश्रय प्राप्त नहि रहनि। मनबोधक प्रसंग ऊपर विस्तार सँ लिखल जा चुकल अछि। जानि नहि, ग्रियर्सनक नजरि पर जँ हुनकर रचना नहि आयल रहितनि तँ हुनका इतिहास मे शामिलो हेबाक सौभाग्य भेटि सकितनि वा नहि। इतिहासक लेल स्रोत-सामग्री प्राप्त करबाक लेल ग्रियर्सन सन अध्येता कें हमरा लोकनि समाजक बीच जाइत देखैत छियनि, एकर बादो कि ओ पुस्तकालय सेहो जाइत छलाह। मुदा आगू समुच्चा स्रोत राजकीय संग्रहालय आ पुस्तकालय पर अबलम्बित भ' गेल आ वैह कवि इतिहासबद्ध भ' सकलाह जिनकर साक्ष्य राजदरबारक स्रोत सँ भेटैत छल। एकर कतेक भीषण परिणाम भेल, हमरा लोकनि कें थोड़बा बात एहू पर करबाक चाही।

हमरा लोकनि एहि बात सँ अवगत छी जे उत्तर मध्यकाल मे मिथिलाक राजदरबार मे कयल गेल मैथिली काव्य-रचनाक मुख्य उद्देश्य साहित्य-सृजन नहि छल, अपितु संगीत मे ढालि क' राजसभा मे गायक द्वारा गाबि क' मनोरंजन वा इष्ट-वंदन आदि करब छल। तात्पर्य जे काव्यात्मकता मुख्य नहि छल, संगीतात्मकता मुख्य छल। एहू बातक प्रमाण अछि जे राजदरबार मे आनो प्रान्त, आनो भाषाक कवि आ गायक लोकनि आश्रय पौने रहैत छलाह। तात्पर्य जे मैथिलीक एकाधिकार नहि छल। लोचन (1650-1725) क संगीत-ग्रन्थ 'रागतरंगिणी' कें एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेजक महत्त्व हासिल अछि जाहि मे 29 गोट मैथिली कवि तथा किछु अज्ञात

कविक 103 गोट गीत संकलित अछि। मुदा, भाषाक एकाधिकारक जहाँ धरि प्रश्न अछि, मैथिलीक स्थिति दुर्बल कहल जा सकैत अछि। कारण, पाँच कल्लोल मे संयोजित 'रागतरंगिणी' मूल मे तँ संस्कृत मे लिखल गेल अछि जाहि मे संगीत शास्त्रगत परम्परानुसार राग-रागिनी आदिक लक्षण बताओल गेल अछि। तकर जे दृष्टान्त देल गेल अछि, से मैथिली गीत थिक। मुदा दृष्टान्तक अवसर मात्र दुइये कल्लोल—तृतीय आ चतुर्थ—मे आएल अछि। बाँकी जतेक ठाम संस्कृत श्लोक अछि, प्रत्येक राग-रागिनीक मूर्त्तिक लक्षण ब्रजभाषा मे दोहरा क' देल गेल अछि। एकरा काव्यानुवाद कहल जा सकैत अछि। मुदा, एकर भाषा ब्रजभाषा किएक, मैथिली किएक नहि? कारण बतबैत लोचन लिखने छथि—'इदन्तु सकल लोक-साधारण झटित्युद्बोधहेतु—मध्यदेशभाषामाश्रित्यापि लिख्यते।'[8] तात्पर्य अछि जे सकल लोक-साधारण बुझि सकथि तें एकर भाषा मध्यदेशीय (ब्रजभाषा) सेहो राखल गेल अछि। सेहो अर्थात् संस्कृतक अतिरिक्त। हुनका नजरि मे 'सकल लोक-साधारण' ओ छल जे मैथिली नहि जनैत छल, मने मिथिला सँ बाहर रहैत छल। लोचन खण्डवलाकुलक राजा महिनाथ ठाकुर तथा नरपति ठाकुरक आश्रित कवि छलाह। ब्रजभाषाक प्रयोग सँ स्पष्ट लगैत अछि जे दरबार मे आन-आन प्रान्तक विद्वान लोकनिक प्रबल प्रभाव छल, दोसर जे लोचन मे सर्वभारतीय आदर्श विद्यमान छलनि आ अपन रचनाक दूर-दूर क्षेत्र मे प्रसारक ओ आकांक्षी रहथि। बिना कोनो पुष्ट आ पर्याप्त कारण के डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहास मे लिखने छथि जे 'नि:सन्देह विशेष अनुराग हिनका (लोचन कें) मैथिली सँ छलनि।'[9] मुदा सत्य मात्र यैह जे अपन पुस्तक मे उदाहरण ओ मैथिली गीतक देने छथि।

'रागतरंगिणी'क अवलोकन सँ लगैत अछि जे मिथिलाक गायक लोकनि जे राग-रागिनी गबैत छलाह, तकर बंदिश मैथिली गीत होइत छल। मुदा, आधुनिक युगक मिथिलाक घरानेदार गायक लोकनि सँ जखन हमरा लोकनि प्राचीन बंदिश सब सुनैत छी तँ ओ मैथिली मे नहि भेटैत अछि, ओकर भाषा ब्रजभाषा रहैत छैक। ब्रजभाषाक ई गीत सब के लिखलनि, की ओ लोकनि मध्यदेशक वासी छलाह? संभव जे ओ मध्यदेशक होथि आ मिथिला दरबार मे आश्रय पौने होथि। मुदा इहो संभव जे ओ लोकनि मैथिल होथि आ ब्रजभाषा मे लिखने होथि तकर एक साक्षात उदाहरण लोचन स्वयं छथि, जे ब्रजभाषाक नीक ज्ञाता छथि। तात्पर्य ई जे संगीतहुक क्षेत्र मे मैथिली कें लगातार अपदस्थ करबाक क्रम जारी छल। दोसर जे दरबारी पंडित कवि लोकनि जे छलाह हुनकर प्रतिबद्धता मैथिली रचनाशीलताक लेल न्यूनतम छल, जकरा काञ्चीनाथ झा किरण 'बोझ परहक आँटी' अथवा 'गोग्रास' समान कहलनि अछि। एहि परिवेश सँ बिल्कुल बाहर जे मिथिलाक जन-समाज छल, तकर सर्वविध

उपयोगक भाषा मैथिली छलैक आ जे सर्ववर्ग-सर्ववर्ण मे समाविष्ट छल, मुदा ओ सब तँ रैयत छलाह। मानक मैथिली कें शोषकक भाषा बना क' राखि देल गेलैक जतय शोषितक लेल कोनो गुंजाइश नहि छल। ई अवश्य अछि जे एहन, मानक नहि अपितु आनक, कविता सभक खोज वा शोध एक कठिन उद्यमक माँग करैत अछि, मुदा जे अनिवार्य आवश्यकता होइत छैक से जँ अत्यन्त महग होअय तैयो तँ लोक ओकरा उपलब्ध करबाक लेल प्रयत्नशील होइतहि अछि। मैथिलीक इतिहास—लेखन मे हमरा लोकनि एहि प्रयत्नशीलताक अभाव देखैत छी।

मैथिलीक मध्यकालीन साहित्य नाटक-प्रधान अछि। मिथिलाक दरबार सब मे लिखल गेल आ मंचित भेल ओहि मैथिली नाटक सब कें 'मैथिली नाटक' कोना कहल जाय, सेहो एक प्रश्न थिक, कारण एहि नाटक सभक संवाद के जे भाषा अछि, से संस्कृत आ अपभ्रंश थिक। नाटक विधाक जे प्रकृति थिक तदनुसार संवादे ओकर प्रधान तत्त्व थिक। संस्कृत मे लिखल गेल सैकड़ो-हजारो नाटक एहिना लिखल गेल अछि। अन्तर केवल एतबे अछि जे संस्कृत नाटक मे जतय बीच-बीच मे भावनात्मक वा काव्यात्मक अभिव्यक्तिक लेल कविताक जरूरति पड़ल अछि, संस्कृत श्लोक व्यवहार कयल गेल अछि, एकर बदला मिथिलाक नाटक मे मैथिली गीत कें ल' लेल गेल अछि। आब जें कि ओ मिथिलाक दरबार मे लिखल गेल, पौराणिक कथा पर, ब्राह्मण-आदर्श पर ब्राह्मणक द्वारा लिखल गेल ओकरा सब कें 'मैथिली नाटक' घोषित क' देल गेल। एकर एक सटीक उदाहरण ज्योतिरीश्वरक लिखल 'धूर्तसमागम' भ' सकैत अछि। एक संस्कृत प्रहसन (नाटकक एक भेद)क रूप मे एकर मुद्रित प्रकाशन अतिकाल पूर्वहि 1838 मे लैटिन टिप्पणीक संग क्रिश्चियन लैसेनक संपादन मे प्रकाशित भ' चुकल छल। संस्कृत मे एकर लोकप्रियता केहन छलैक तकर अनुमान एहि सँ कयल जा सकैत अछि जे एकर एक भिप संस्करण 1883 ई. मे सी ? कैपलरक संपादन मे प्रकाशित भेल। एहि दुनू संस्करण मे, संस्कृत नाटक-परम्पराक अनुरूपहि संवादादि संस्कृत आ प्राकृत मे देल गेल छलैक आ मैथिली गीतक कतहु नामोनिशान नहि छल। मुदा प्रथम प्रकाशनक लगभग सवा सौ वर्ष बाद डॉ. जयकान्त मिश्र कें नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखागार मे एहि नाटकक एक खंडित प्रति भेटलनि जे अविकल एवं पूर्ण तँ नहि छल, मुदा जतबे छल ओहि मे बीच-बीच मे मैथिली गीतक प्रयोग कयल गेल रहैक। वर्तमान मे जे 'धूर्तसमागम' हमरा लोकनि कें भेटैत अछि, तकर पाठ मुख्यत: प्रथम-द्वितीय संस्करणक आधार पर तैयार भेलैक अछि मुदा मैथिली गीत समावेशित क' क' आइ 'मैथिली नाटक'क रूप मे ई मिथिला मे प्रतिष्ठाप्राप्त अछि।[10] रमानाथ झा सन विद्वान एक दिस तँ ई घोषणो करैत रहलाह जे ई सब मैथिली नाटक थिक आ दोसर दिस अपसोच सेहो करैत रहलाह जे जकर संवाद सेहो मैथिली मे होइक, तेहन नाटक आसाम आ नेपाल मे तँ जरूर लिखल गेल मुदा मिथिला मे नहि लिखल जा सकल। वास्तविकता अछि जे संस्कृत नाटक मे मैथिली गीत कें समाविष्ट करबाक आविष्कार सेहो मिथिला मे नहि, नेपाल मे भेल छल।

विचारणीय थिक जे राजदरबारक जे सत्य रहैक, सैह की 'लोक'क सत्य सेहो रहैक ? अध्येता लोकनि एहि मादे पर्याप्त अध्ययन केलनि अछि जे लोकनाट्यक आविर्भाव काल मध्यकाल थिक। मिथिलाक गाम-गाम मे नाचक परम्परा छल, ताहि संबंध मे पर्याप्त साक्ष्य हमरा लोकनि लग मे उपलब्ध अछि। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर सब अर्थें मैथिलीक एक महान कृति थिक जे मिथिलाक 'लोक'क संबंधा मे विपुल जानकारी सँ भरल अछि। मुदा ओतय हमरा लोकनि देखैत छी जे 'नाच' के वर्णन तँ अवश्य भेल अछि मुदा 'नाट्य' वा 'नाटक'क कोपहु उल्लेखक सर्वथा अभाव अछि। मिथिला मे नाच होइत छल। एहू बात कें स्वीकार करबाक लेल पर्याप्त आधार छैक जे पूर्व मध्यकाल मे जतय लोकायत महापुरुषक गाथा रचल गेलनि, पश्चात नहुँ-नहुँ प्राय: एहि समस्त गाथा सब पर नाच तैयार कयल गेलैक, जकर मंचन गाम-गाम मे होइत छल। एहि सब मे लोरिक नाच सर्वाधिक प्राचीन अछि, जकर चर्चा ज्योतिरीश्वर सेहो केलनि अछि। कीर्तनियाँ नाच कहल गेल। कीर्तनियाँ नाच कें साहित्यिक गरिमा प्रदान कयल जेबाक प्रश्न पर रमानाथ झा आ जयकान्त मिश्रक बीच जे विवाद चलल छल तकर विवरण अनेक ठाम आयल अछि। तात्पर्य जे रमानाथ झा एकर पक्ष मे नहि छला। 'पारिजात हरण' नाटक कहबैत अछि जखन कि सल्हेस नाच। बिदापत नाच। एहि नाच सभक भाषा सम्पूर्णत: मैथिली थिक। समस्त संवाद मैथिली आ गीत सेहो मैथिली। मुदा, पारिजातहरणादिक कथावस्तु जतय पौराणिक छैक, एहि नाच सभक विषय लौकिक थिक। ब्राह्मण-धर्मक आदर्शक जतबा मात्र लोक मे सर्वस्वीकृत भ' गेल छल से तँ अवश्य एहि सब मे अबैत अछि, मुदा जें कि ई रचना दरबारीक रचना नहि, आमजनक चौपाल परहक रचना थिक, अनेक ठाम ब्राह्मण-आदर्शक अतिक्रमण देखल जाइत अछि। इतिहास-वंचित कयल जेबाक प्रमुख कारण ई रहलैक। एहि तरहें देखी तँ रमानाथ झाक ई अपसोच जे सम्पूर्णत: मैथिली नाटक मिथिला मे नहि लिखल जा सकल, एक प्रकारें धृतराष्ट्रक अरण्यरोदन कहल जा सकैत अछि, जे अपनहि चौबगली प्रचलित परम्परा सँ मात्र एहि दुआरे आँखि मुनने रहलाह जे ओ हुनकर आदर्श आ परम्परा सँ मेल नहि खाइत अछि।

एहि सब परिस्थितिक अवलोकन लेल काञ्चीनाथ झा किरणक लेख 'कीर्तनियाँ नाच छल की नाटक ?' कें देखब बेस रोचक होयत। ओहि ठाम ओ लिखलनि अछि जे धार्मिक त्योहारक अवसर पर वा फरमाइस भेला पर कीर्तनियाँ लोकनि संस्कृत

पंडित लग सम्पूर्ण मंडली बैसि नाटकक अर्थ, ओकर संवाद, ओकर आदि-अन्त सूनि, समझि लैत छलाह आ अभ्यास क' क' मैथिली मे ओकर मंचन क' दैत छलाह। एतय धरि जे ओहि मे जे गीत रहैत छल तकरो अपना हिसाबें ग्रहण क' लैत छलाह। किरण लिखलनि अछि—'कीर्तनियाँ नटुआ रहितहु पारिजातहरण, गौरी-स्वयंवर तथा कृष्णजन्म नाटक करैत छल। ओकरा सभक नाटक कें नाटक नहि कहब निर्धन मनुक्ख कें मनुक्ख नहि कहबाक समान थिक।'[11] तहिना, कीर्तनियाँ लोकनिक कठिन परिस्थिति आ विपुल योगदानक प्रसंग एही लेख मे आगू ओ लिखने छथि—'प्राचीन काल (तात्पर्य मध्यकाल सँ अछि) मे ब्राह्मणे टा पढ़ैत छल। मिथिलाक विद्वान लोकनि दर्शन-धर्मशास्त्रे मे डुबल रहलाह, भाषा संस्कृत, विषय परलोकगत। हँ, किछु क' काव्यकलाक संग संबंध मनोरंजनार्थ रखैत छलाह, तकरो भाषा संस्कृत। परिणामस्वरूप एहि जीवनक उपयोगी गीत, नाच, चित्र, शिल्प आदि कला अनपढ़क हाथे मे रहि गेल। ओकरा सब कें क्यो शिक्षक नहि रहैत छल। तखन तँ जेना-तेना एहि सब कला कें जीवित रखलक, सैह बहुत।'[12]

एहि दिस सँ आँखि मुनबाक पाछू जे तर्क देल जाइत अछि, सेहो विचित्र अछि। लोक मे जे साहित्य रचल जाइत अछि, वा विकसित होइत अछि, शिल्प आ अलंकरणक दिस रचनाकारक ध्यान कम रहैत छैक, बेसी ध्यान वस्तुक मार्मिकता दिस रहैत छैक। आजुक साहित्य-समझक आधार पर देखी तँ ई कतहु बेसी उपादेय गुण छैक। मुदा, प्रश्न उठाओल जाइछ जे एहि रचनाक रचयिता के छला, कतयक निवासी, की हुनक जीवन-परिचय आदि-आदि। मानू साहित्येतिहास लेखन लेल स्वयं साहित्यक अपन कोनो मूल्य नहि होइछ, जे होइछ से बस साहित्यकारेक होइछ। कहब आवश्यक नहि जे ई जिद्‌भरल मान्यता जातीय साहित्य-लेखनक संस्कार आ संघर्ष कें अनावृत्त करबाक इच्छाशक्ति सँ पूर्णत: शून्यतेक स्थिति मे संभव भ' सकैत अछि। खास क' क' तखन तँ ई आरो आपत्तिजनक भ' उठैछ जखन ओहू कवि सभक ठीक-ठीक परिचय इतिहासकार कें प्राप्त नहि रहैत छनि, जिनका ओ लोकनि इतिहास मे शामिल कयने रहैत छथि। जेना कैक गोट मध्यकालीन कविक बारे मे रमानाथ झा लिखलनि जे हुनकर कोनो परिचय प्राप्त नहि भ' सकल। आब जँ पूछल जाय जे अपर धाराक आन-आन कवि लोकनिक पद जे लोक-समाज मे प्राप्त होइत छैक, भने हुनको लोकनिक कोनो जीवन-परिचय प्राप्त नहि होइक, तँ हिनका लोकनि कें किएक ने शामिल कयल गेलनि तँ एकर उतारा मे भने मैथिल नैयायिकताक संग जते उतारा देल जाय, भीतरी बात यैह पाओल जायत जे लोक-समाज मे प्रसार इतिहास मे शामिल कयल जेबाक नि:सन्दिग्ध आधार नहि भ' सकैछ। अर्थात राजदरबार, आ जँ से नहि तँ ब्राह्मण-आदर्श, सेहो जँ नहि तँ इतिहासकारक दरबार धरि ओकर पहुँच अनिवार्य

होइछ। एहना मे तँ क्यो मनबोध एही ल' क' भाग्यशाली प्रमाणित भ' सकैत छथि जे हुनका पर कोनो अंग्रेज बहादुर के नजरि पड़लनि। दोसर दिस, अनेक ऐतिहासिक संकलन मे देखल जाइछ जे ओतय अज्ञात रचनाकारक रचना सेहो सिपविष्ट छैक। मुदा लोक-समाज मे जे अज्ञात रचनाकारक ओहू सँ बेसी मार्मिक आ कदाचित कलात्मक सेहो, रचना छिड़ियाएल छैक तकरा सब कें इतिहास-वंचित कयल जयबाक की तर्क? तर्क भने कतोको देल जाउक, बूझल यैह जा सकैत अछि जे एहि मामला मे पर्याप्त अराजकता व्याप्त रहलैक अछि आ इतिहास-वंचित कयल जेबाक जे तीनटा कारण ऊपर बताओल गेल अछि, ओही मे सँ कोनो-ने-कोनो कारण लागू रहैत छैक।

मानि लेल जाय जे 'रागतरंगिणी' मे कोनो अज्ञात रचनाकारक रचना संकलित भेल। ई कोना भेल होयत? अनुमान कयल जा सकैत अछि जे लोक-समाज मे प्रसारित कोनो अज्ञात कविक रचना लोचन धरि पहुँचि गेल हेतनि। इहो संभव जे स्वयं उद्यमपूर्वक एहि रचना सभक ओ संकलन आ ऐतिहासिक विवरण प्राप्त कयने होथि। एहि सँ ई प्रमाणित होइछ जे राजदरबार आ लोक-समाजक बीच जतेक पैघ फाँक आधुनिक विद्वान आ इतिहासकार लोकनि पैदा केलनि, एहि पर जतेक असहिष्णुता देखौलनि ततेक वास्तविक रूप सँ हमरा लोकनिक परम्परा मे नहि छल। नेपाल आ बंगालक प्राचीन संकलन सब मे सेहो हमरा लोकनिक सहिष्णुता आ उदारताक पर्याप्त उदाहरण देखि सकैत छी। ई कट्टरता आ असहिष्णुता संभव अछि, मैथिल महासभाक देन हो अथवा खण्डवलाकुलक शोषक राजतंत्रक परवत्ती राजा लोकनिक नीति हो—एहि विषय पर फराक सँ अध्ययनक आवश्यकता अछि।

जेना कि पहिनहुँ चर्चा भ' चुकल अछि, विद्यापति आदि कविक गीते जकाँ कबीर आदिक पद कें लिखि क' राखल जेबाक परम्परा मिथिला मे बहुत पुरान समय सँ छल। साक्षरताक प्रतिशत जेना-जेना बढ़ैत गेल ई प्रवृत्ति आनो-आन वर्ग दिस ससरैत गेल। मुदा, कोनो-कोनो ड्योढ़ी मे गीतक पोथा भेटल, जेना कविशेखर बदरीनाथ झा कें भेटल रहनि, तँ साहित्यिक इतिहास मे शामिल क' लेल गेल मुदा कोनो आम मैथिल जनताक घर मे जे गीतक पोथा सब भेटल, जेना डॉ. अणिमा सिंह कें यत्र-तत्र भेटलनि, ओ इतिहास मे शामिल करबा सँ वंचित क' देल गेल। एकरा जँ अराजकता नहि कहल जाय तँ की कहल जाय? साहित्यिक गुणवत्ताक आधार पर मूल्यांकन क' क' कोनो रचना कें न्यून पाओल जाय, ई एक न्यायसंगत बात भेल—मुदा जँ न्यून स्तरक रचना इतिहास मे विराजमान पाओल जाय आ मार्मिक आ गुणशाली रचना इतिहासक परिसर सँ मात्र साहित्येतर कारण सँ बाहर राखल जाय तँ एहना मे, कोना संभव छैक जे मैथिली समाजक जातीय साहित्यक ठीक-

ठीक चित्र हमरा लोकनिक समक्ष ठाढ़ भ' सकय?

जहाँ धरि मध्यकालक विशुद्ध मैथिली नाटकक प्रश्न अछि, अनेक नाचक मूलपाठ, जेना कि ओ लोक-समाज मे प्रचलित छल, आइ हमरा लोकनिक समक्ष मुद्रित रूप मे उपलब्ध अछि। राजा सलहेस (महेन्द्र मलंगिया, रामश्रेष्ठ दीवाना) विदापत, जटजटिन (ओमप्रकाश भारती) क अतिरिक्त डोमकछ, सामाचकेवा, दसौत आदिक मूलपाठ प्रकाशित अछि। जालिम सिंह, लोरिक, कमला-कोइला, हिरनी-बिरनी, कुमर बृजभान, गुगली घाटम, मैना गोविना, नल दमयन्ती आदिक लिखित रूप हेबाक सेहो उल्लेख भेटिते अछि। मुदा, कतेक आश्चर्यक बात थिक जे एहि नाच सभक आधार पर उपन्यास लिखि क' शिष्ट साहित्यकार लोकनि साहित्य अकादेमी पुरस्कार जीति अनैत छथि, एहि नाच पर महाकाव्य बना क' कवि लोकनि महाकवि कहबैत छथि, मुदा एहि मूल साहित्य-रचना कें मैथिली साहित्यक रूप मे मान्यता धरि प्राप्त नहि छैक। मान्यता प्राप्त करबाक लेल शिष्टीकरण अर्थात ब्राह्मणीकरण आइयो जरूरी मानल जाइछ। आ दोसर दिस ई हास्यास्पद स्थिति सेहो बयान कयल जाइछ जे मध्यकाल मे विशुद्ध मैथिली नाटक नहि लिखल जा सकल। एहि सन्दर्भ मे विद्वान लोकनिक द्वारा देल जाइत एक विचित्र तर्कक उल्लेख करब सेहो प्रासंगिक होयत। तर्क ई अछि जे कोनो लोकसाहित्य ताबे धरि लोकसाहित्य रहैत अछि जाधरि कि ओ अपन मूल पाठ आ मूल उद्देश्यक संग, अपन मूल प्रयोक्ता सभक संग जुड़ल रहैछ। उदाहरणक लेल जटजटिन वा डोमकछ महिला लोकनिक द्वारा खास-खास अवसर पर बंद आँगन मे कयल जाइवला नृत्य आयोजन थिक जतय सामान्यत: पुरुषक प्रवेश निषिद्ध रहैछ। तर्क देल जाइछ जे एकरा जँ लिखित रूप द' क' कलाकार लोकनिक द्वारा मंच पर अभिनीत कयल जाय तँ ओ लोककला नहि रहैत अछि।[13] प्रश्न अछि जे जँ ओ लोककला नहि रहैछ तँ की भ' जाइत अछि? की ओ शिष्ट साहित्य भ' जाइछ? एकर प्रश्नो धरि नहि उठैछ, तकर साक्षी तँ स्वयं अपना सभक इतिहासे अछि। असल मे ई लोक-समाजक कला-रूप कें जातीय साहित्यक कोटि मे आगुओ परिगणित नहि करबाक एक बहपा मात्र थिक। मने जे जाधरि ओ अपन मूल रूप मे रहैत अछि ताधरि साहित्यक गरिमा सँ तँ वंचित रहबे करत, आब जें कि ओहू वर्गक प्रयोक्ता लोकनि लग मे कलम भेलनि, यदि ओ ओकरा लिखित रूप देताह तखनहु ओ साहित्यक गरिमा सँ हीने रहत। एहि तरहक आग्रहक परिणाम भेल अछि जे मैथिलीक अपन जे जातीय कविता-स्वभाव छल, ताहि सँ ई निरंतर दूर होइत गेल अछि आ शब्दाडंबर आ आलंकारिक चमत्कार, छन्द सभक जंगल मे जा क' हेरा गेल अछि।

रचना-प्रवृत्ति

अठारहम शताब्दीक उत्तरार्ध सँ ल' क' सम्पूर्णत: उनैसम शताब्दी धरि हमरा लोकनि मैथिली काव्य-रचना मे एक गोट नव उत्साह देखि सकैत छी। एहि समय मे ने केवल भारी संख्या मे कविता लिखल गेल अपितु ओहि मे काव्यगत नवाचार कें प्रश्रय सेहो भेटल। जे कविता दरबारी पंडित लोकनिक हाथ मे जा क' संस्कृतनिष्ठ, आलंकारिक आ गतानुगतिक भ' गेल छल, ओकरा मानू जे टटका बसातक झोंक लगलैक। कविता एक बेर फेर अपना जातीय स्वभावक लगीच गेल आ लोकक ठोर पर जा बसल। ई नवाचार केवल भाषाक स्तर पर घटित भेल हो, सेहो नहि। पौराणिक विषयवस्तु आ पृष्ठभूमि सँ ससरैत ओ लौकिकता दिस प्रत्यागमन केलक। ई कमोबेश कविताक सौन्दर्य-दृष्टिक प्रत्यागमन सेहो छल, कारण ई कविता सब नव-नव विषय, नव बिम्ब-प्रतीक सँ भरल आबय लागल। देवी-देवतापरक गीत लिखब एखनहु प्रचलन मे तँ पूरा छल मुदा ओकर वस्तु आ कथन-भंगिमा मे परिवर्त्तन आबि रहल छलैक। मैथिली कविताक निर्गुण धारा, जे पहिनहि सँ अवहेलित छल, अनेक कवि-लोकनिक गायन सँ मुखरित भ' उठल। अधिकांशत: ई कवि लोकनि ने तँ राजदरबारक आश्रित छलाह आ ने निविष्ट पांडित्ये प्राप्त कयने छलाह, मुदा छन्द आ अलंकारक एक-सँ-एक विन्यस्त प्रयोग हम सब एतहु देखि सकैत छी, जे कि लोकमुखी हेबाक कारण समाज मे ग्राह्य सेहो भेल। कविताक विषयवस्तु मे शुद्ध मानुषिक वृत्ति, अर्थात अलौकिक-पारलौकिक वस्तु नहि, गुंजित भेल। दरबारी आ पंडित कवि लोकनि अंग्रेजी राजक विरोध नहि क' सकैत छलाह, आ ने ओहि सामाजिक कुप्रथा सभक विरुद्ध जा सकैत छलाह कारण ई राजद्रोह मानल जइतैक, मुदा जेना सौंसे देशक जनता मे एहि सभक प्रति खलबलाहटि छल ठीक तहिना मिथिलाक जनता मे सेहो छल, आ ई बात सब एहि कविता मे जगह-जगह नीक जकाँ प्रतिपादित भेलैक। एकरा हमरा लोकनि 1857क विद्रोह आ ताहू सँ पहिने एकर बनैत पृष्ठभूमि आ अखिल भारतीय नवजागरणक प्रभावक रूप मे देखि सकैत छी। एतबा बात तँ सुनिश्चित रूप सँ प्रमाणित होइत अछि जे राजा आ हुनकर अमला आ पंडित लोकनि जाहि तरहें सोचि आ लीखि रहल छलाह, समुच्चा मिथिला-समाज ठीक ताही तरहें ने तँ सोचि रहल छल, ने लीखि रहल छल। हमरा उचित प्रतीत होइत अछि जे एहि प्रवृत्ति कें देसिल आधुनिकताक शनै: शनै: प्रसारक रूप मे देखल जाय, एहि बात कें ध्यान मे रखैत जे एहि निरक्षर वा अल्पसाक्षर कवि-समुदायक अपन स्पष्ट मध्यकालीन सीमा सेहो छलनि। तें जे लोकनि ई मानैत छथि जे अंग्रेजीराज आ अंग्रेजी भाषाक बदौलत मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रवेश भेल, उपलब्ध तथ्य एकर विरुद्ध जाइत अछि। ई अवश्य मैथिली विद्वानक संकीर्णताक परिचायक थिक जे

एहि काव्यधाराक सूक्ष्म विश्लेषण सँ ओ लोकनि साफे नासकार गेलाह, आ अपन आँखि सीधे ओत्तहि जा क' खोललनि जतय अंग्रेज बहादुर छल आ अंग्रेजी भाषा।

भाषा

'रागतरंगिणी' मे ब्रजभाषाक प्रभावकारी उपस्थितिक चर्चा ऊपर भ' चुकल अछि। ई असल मे मिथिलाराजक भाषा-नीतिक मात्र एक टा उदाहरण थिक। आन अनेक उदाहरण प्राप्त अछि जाहि सँ स्पष्ट होइत छैक जे राजदरबार मे काव्यक जतबा जे स्थान छल, ताहि मे सँ बहुलांश ब्रजभाषाक पक्ष मे जाइत छल (जखन कि ठीकम ठीक एहू काल मे बंगालक एक तबका मे ब्रजबुलि कहि क' मैथिली कविता लिखल जा रहल छल)। तकर कारण छल ब्रजभाषा-काव्यक निजी स्वभाव, लड़ाइ-भिड़ाइ के वीरतापूर्ण छंद ओही मे खिलै छलैक आ बड़ाइ आ खोसामद मे लिखल प्रशंसा-काव्य सेहो अपन प्रभामंडल ओही मे कायम राखि पबैत छल। किछु दृष्टान्त देखने स्थिति स्पष्ट होयत।

परसरमा (सुपौल) गामक सोनकविक परिवार मिथिलाक मिथिलाक कवि-समाज बीच एक यशस्वी परिवार भ' गेल अछि। स्वयं सोनकवि सोलहम शताब्दी मे भेल छलाह आ एहि बातक उल्लेख भेटैत अछि जे खण्डबलाकुलक आरंभिक सब राजाक दरबार मे ओ प्रमुख कवि रहथि। महेश ठाकुरक राज्यारम्भ (1557) सँ अच्युत ठाकुरक राज्यावसान धरि हुनका, ओतय देखल जा सकैत अछि। चारि सौ वर्षक अभ्यन्तर एहि वंश मे कम सँ कम एक दर्जन कवि भेलाह—हेमकवि, गणेशकवि, प्रभाकर, श्याम, गोविन्द, कृष्ण (बूच), विश्वनाथ, डोमन, हैमन, कृष्णकवि, अचल कवि आदि। एहि वंशक प्राय: अंतिम कवि जगदीश कवि भेलाह जे महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारी कवि रहथि। जगदीश कविक संपादन मे 'मिथिला राज्यप्राप्ति कवितावली' 1921 ई. मे प्रकाशित अछि जाहि मे ओ अपन वंशक प्रमुख कवि लोकनिक कविता संकलित केलनि अछि। ई सब ब्रजभाषा मे अछि। कृष्णकवि तथा जगदीश कविक लिखल किछु मैथिली गीत लोककंठ मे प्रचलितो अछि जे एकाधिक ठाम संकलितो भेल अछि। जगदीश कवि मैथिली मे 'दुर्गासप्तशती'क मैथिली काव्य-रूपान्तर कयने रहथि तकर चर्चा भेटैत अछि मुदा ओ पुस्तक प्रकाशित नहि अछि।[14]

एहि सँ इतर किछु उदाहरण एहनो भेटैत अछि जाहि सँ एक्के राजाक दरबार मे बहुतो रास ब्रजभाषा कविक विद्यमानता प्रमाणित होइत अछि। जेना राजा नरेन्द्र सिंह (1743-1760)क दरबार मे तीन गोट कवि—लालकवि, चन्द्रकवि तथा ईशकविक रहबाक। ई तीनू राजा नरेन्द्र सिंहक युद्धविजय पर वीरकाव्य ब्रजभाषा मे लिखने रहथि। चन्द्रकविक ई कवित्त म.म. परमेश्वर झा, 'मिथिला तत्त्वविमर्श' मे उद्धृत कयने छथि—'ऐसो महाघोर जोर जंग सुलतानो बीच/ झुकत बबर जंग संगर करीन्द्र है/ औलिया नवाब नामदार पूछे बार-बार/ ये दोनो कौन लड़त अरिवारण परीन्द्र है/ साहेब सुजान जयनुद्दीन अहमद खान/ सामने भय अर्ज करत कहत कवि चन्द्र है/ ये तो दोनवार केशोशाह के अजीतशाह/ आगे राघो सिंह जी के नवल नरेन्द्र है।'[15] ईशकवि 'नरेन्द्र विजय' काव्यक रचना आल्हा छंद मे कयने छलाह। ताहि मे कतहु-कतहु आवेगवश मैथिली वाक्य-विन्यास मिश्रित भेटैछ। ओकर एक छन्द छैक—'बैठे सभ के बिच मे आए, महाराज नर इन्द्र बहादुर/ ताके सोभा कौन बखान, जैसे तारन मे शशि पूजन/ पण्डित पक्षक करे विचार, चारो वेद पढ़े वैदिक सभ/ करे जोतिसी लगन विचार/ कहूँ आगमी तंत्र विचारे/ बन्दी विरुद सुनाबे ठाढ़, कहूँ कवीश्वर रचे कड़ाखा।'[16] लालकविक 'कन्दर्पीघाट की लड़ाई' तँ प्रसिद्धे अछि। मैथिली मे हुनक लिखल किछु गीत लोककंठ मे भेटैत अछि आ इहो सूचना भेटैछ जे 'गौरीस्वयंवर नाटक' ओ मैथिली मे लिखने छलाह। 'प्राचीन गीत' मे जे लालकविक महेशबानी संकलित छनि से एही गौरीस्वयंवर सँ लेल गेल अछि। तहिना, 'गौरीदिगम्बर'क समापन-पंक्ति एहि तरहें अछि—'आंगुरिलाल लेल त्रिपुरारि, चलल कोबर गिरिराज कुमारि/ गान मंगल सखि दुइ चारि, हर देखि कौशल नयन निहारि/ सिन्दुर दय एक नारि, कोबर गेल हर हरखि विचारि/ सुकवि गणक भन आपद कारि, हरथु दुरित गौरी हरखि निहारि।'[17] एहि गीतक भणिता सँ प्रतीत होइत अछि जे सुकवि गणक नामक कविक ई रचना थिक।

राजा महेश ठाकुर तथा महिनाथ ठाकुरक मैथिली वन्दना-गीत अनेको ठाम संकलित छनि। राजकुमार गोपीश्वर सिंह (महाराज महेश्वर सिंहक कनिष्ठ अनुज)क मैथिली गीत सेहो 'मैथिली गीत रत्नावली' मे संकलित छनि, मुदा मूलत: ओ ब्रजभाषाक कवि छलाह, जेना कि हुनकर काव्य-संग्रह 'गोपीश्वर-विनोद' (प्रकाशन 1888) सँ स्पष्ट होइत अछि। तत्कालीन जे साक्ष्य सब देखबा लेल भेटैत अछि, ताहि सँ यैह स्पष्ट होइछ जे पेशेवर कविताक भाषा ब्रजभाषा छल। यैह बात मिथिलाक सन्त-साहित्य, खास क' क' वैष्णव धारा पर सेहो लागू छल। ओ लोकनि सधुक्कड़ी भाषाक प्रयोग करथि जकर मुख्य बगे ब्रजभाषाक छल। मुदा फेर ओतहि, मिथिलाक लोक-जीवन मे, से चाहे लोकाचार हो अथवा सगुण वा निर्गुण भक्ति, कविताक भाषा मैथिली छल। कबीरक परम्परा मे लिखित सैकड़ो गीत जकर भणिता मे कबीरक नाम अबैत छनि, मुख्यत: मैथिली मे लिखल गेल। ई स्पष्ट अछि जे उच्च आ संभ्रान्तवर्गक लोक सभक काव्यभाषा ब्रजभाषा छल, जखन कि आम लोकक काव्यभाषा मैथिली। कोनो कविताक जे अंश जन-उपयोग सँ जुड़ल रहैक, लोकाचार

अथवा भक्ति सँ, तकर भाषा मैथिली छल। फतूर कविक कविता 'कवित्त अकाली' एहि सब मे सँ कदाचित थोड़ेक भिप अछि जाहि मे ब्रजभाषा आ मैथिलीक समाहार प्रयोग कएल गेल अछि। हुनकर मैथिली गीत सब लोककंठ मे प्रचलितो रहलनि आ लोकगीतक संकलन सब मे अयबो कयल मुदा कोनो महत्त्वपूर्ण काव्य-संकलन मे ओ संकलित नहि कयल गेला। फतूरीलाल कवि कें ग्रियर्सन 'मैन ऑफ दि पिपुल' (जनताक आदमी) कहने छथि, तकर तात्पर्य थिक जे 1874क अकाल मे जन-जन के जे अनुभव छलैक तकरा ओ एहि कविता मे वाणी देने छलाह। एकर भाषाक बानगी देखी-'साल एकासिक बरनन सुनो, चौदिस पड़ल अकाल/ भेल बरिसात खिप एहि सालक, कहाँ लगि बरनौं हाल।' मुदा लगले हमरा लोकनि देखैत छी जे एहि कविताक मूल ठाठ मैथिलीक छैक—'जोतिष पढ़ि पढ़ि जे जन ऐलाह, साधि-साधि भूगोल/ रेखागणित, बीज सँ ओआकिफ तनिकहुँ कच्ची बोल।' ई 'कच्ची बोल' शब्दक प्रयोग शास्त्र आ लोकक बीच विद्यमान वास्तविक दूरीक अभिकथन थिक।

काव्यक रूप-विधान

विद्यापतिक पूर्वहि सँ जे रागताललयाश्रित गीत रचबाक चलन चलल, सैह अन्तत: मैथिली कविताक पहिचान बनि गेल। मैथिलीक जातीय लोककविता मे एकर आनो-आनो रूप प्रचलित छल, मुदा गतानुगतिकताक मारल मैथिली कवि लोकनि गीते मे अपना कें सीमित रखने रहलाह। लोचनक समय (1650-1725) धरि अबैत-अबैत इहो देखार पड़य लगैत अछि जे गीत-लेखनक ई गतानुगतिकता मैथिलीक एक कमजोरी, कि अभिशाप-स्वरूप भ' गेल। पूर्वहि चर्चा क' आएल छी जे 'रागतरंगिणी' मे लोचन परिभाषा-खंड तँ ब्रजभाषा मे लिखलनि, मात्र उदाहरण टा मैथिली गीतक देलनि। उदाहरण ओ आन भाषाक दइयो नहि सकैत छलाह कारण दरबार मे रागतालबद्ध गीत प्रस्तुतिक जखन अवसर अबैक, वरीयता मे मैथिलीये आगू भ' जाइत होयत कारण मैथिलीये मे गीत रागतालबद्ध क' क' लिखल जाइत छल, आ सैह प्रचलन मे छल। परिभाषा वा स्वरूप-निर्धारण कोनहु शास्त्रक सब सँ प्रमुख भाग होइछ। एकरा संस्कृत मे लिखबाक चलन छलैक, से ओ लिखबो केलनि, मुदा तकर स्वरूप-निर्धारण बला अंश सर्व-सम्प्रेषणीय हेबाक मंशा सँ जँ गद्य मे लिखने रहितथि तँ सैह बेसी उचित छल। मुदा कविता मे लिखलनि आ तकर भाषा ब्रजभाषा रखलनि। एक टा उदाहरण देखने बात बेसी स्पष्ट होयत। द्वितीय तरंगक आरंभ मे भैरव रागक रागिणी—बंगाली, मधुमाधवी, बराड़ी, भैरवी आ सैन्धवी—क वर्णन कयने छथि। सैन्धवीक स्वरूप-वर्णन देखल जाय—'करपंकज सों धरे तीष त्रिशूल, सदाशिव के पगु पाग पगी हए/ अम्बर लाल विराजत बालहि, माल वंधूकमयी ही लगी हए/ कोप प्रचंड उदण्ड भुजा, रविमंडल सी जाकि जोति जगी हए/ सिन्धु सबए गुनसिन्धु कही, कवि वीररसा सब रंग रंगी हए।'[18] एतबे नहि। ठाम-ठाम ब्रजभाषा मे प्रचलित आनो छंदक काव्य-रूप ओ देने छथि, दोहा समेत। एहि सब वस्तु कें मैथिली मे देब हुनका नहि ओरियेलनि, आ तकर ई तर्क देलनि जे मैथिली मे देने बहुत लोक (पाठक) धरि नहि पहुँचि सकत, एहि सँ मैथिली रचनाशीलताक प्रति हुनक हीनता प्रकट होइत छैक। स्मरण रहय जे ई हीनता-बोध कविक मन मे होइत छैक, स्वयं भाषा तँ प्रतिभाशाली कवि कें पौने अपन क्षमता-विकास कइये लैत अछि, जेना कि हमरा लोकनि देखितो छी जे एहि समस्त छन्दरूपक बहुविध प्रयोग मैथिली कवि लोकनि बीसम शताब्दीक पहिल तीन दशक मे खूब केलनि।

मुदा राजदरबार आ पंडितक आभामंडल सँ बाहर हमरा लोकनि मिथिलाक लोक-समाज दिस देखी तँ ई हीनताबोध कत्तहु नहि देखाइत अछि। ओहि ठाम कविताक सृजन लोकोपयोग लेल भ' रहल छलैक तें प्रयोगक लेल प्रयोग नहि होइत छल, लोकोपयोगी हेबाक लेल जतबा प्रयोग अपेक्षित छल, ततबे धरि सीमित छल। उदाहरणक लेल हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे लोक मे चौमासा, छौमासा आ बारहमासा गेबाक प्रचलन छल। ई एक भावनापरक गीत-प्रकार छल, जाहि संग चर्याक अनिवार्यता नहि छलैक, अत: कवि लोकनि कें अपन काव्यकला-प्रदर्शनक नीक अवसर एहि ठाम भेटि सकैत छलनि। चौमासा आदिक रूप पहिनहिं सँ निर्धारित आ प्रचलित अछि। मुदा, छन्दक नवीन प्रयोग करैत कवि लोकनि एकरा कोन तरहें अधिक मार्मिक आ भावगम्य बनौलनि, तकर एक उदाहरण जयदेव स्वामीक एहि छन्दपरक चौमासा मे देखल जा सकैत छथि—'की सुनि कान्ह गमन कियो/ मदन दहत तन जोर/ चंचल नयन विलंबित पथ/ चितवहु पिय तोर/ पंथ विषाद हे सखि, श्याम गेल परदेस यो/ शून्य सेज निकन्त देखल, कोना भेजब सनेस यो/ दादुरा घन घनहि रोवै, झंग झिंगुर बाज यो/ नव नेह अंकम हृदय साले, प्रथम मास अषाढ़ यो।'[19] एहि चौमासा मे बीच-बीच मे जे छन्द सब प्रयुक्त कएल गेल अछि, ताहि मे सँ एक टा अछि—'सावन सर्वसोहावन/ कानन बोले मोर/ तापर दछिन पवन बहे/ कठिन हृदय पिया तोर।' एक टा आर छन्द अछि—'शरद समय जल आसिन/ पन्थुक संचर मन डोल/ सूतलि धनि उठि बैसली/ काग कदम पर बोल।' ठीक एही प्रकारक एक छन्दपरक चौमासा मनमोहन कविक भेटैत छनि। ओहि मे एक टा छन्द अबैत छैक—'बारि वयस पहू तेजल, वृद्ध वयस नहि आय/ परदेस परवश भेल पहु मोर, सुध-बुध सकल भुलाय।'[20]

एहि प्रकारक छान्दस प्रयोग सब आरो जहाँ-तहाँ भेटैत अछि। जेना, सुकवि रचित एहि पावस गीत मे रोचक प्रयोग भेल देखाइत अछि—'उखम बिखम गेल, जलद समय भेल, पहु न मिलन देल ननदी/ नहि ओहि देस पावस रे की/ उमड़ि-घुमड़ि घन, हरियर तरु वन, झूर हमर मन ननदी/ अबला जनम अकारथ रे की।'[21]

दोहा सिद्ध लोकनिक जमाना मे प्रचलित एक काव्य-रूप छल। मुदा जेना कि पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि, सहरपादक दोहा सब मे मैथिलीक छाया न्यूनतम छैक आ ओ सब मूलत: पश्चिमी अपभ्रंशक बाना मे अछि। विद्यापतियुगक कोनो दोहा नहि भेटैत अछि आ ने बंगालेक ब्रजबुलि साहित्य मे दोहाक चलन रहल। आसाम मे अवश्य लिखल गेल मुदा तकर नाम आ ढब दुनू मे पर्याप्त स्थानीयता रहैक। मिथिला मे दोहा ब्रजभाषाक प्रभाव मे आयल। छत्रनाथक किछु दोहा शिवपूजन सहाय (हिन्दी साहित्य और बिहार, खंड 1 मे) संकलित कयने छथि। छत्रनाथ महाराज माधव सिंह (1785-1807) तथा लक्ष्मीनाथ गोसाँइ (1792-1872)क समकालीन छलाह। मूलत: हाटी-उझटी (दरभंगा)क निवासी छत्रनाथ बाद मे बनगाँव मे आबि क' बसि गेल छलाह। हुनकर कविता सब अधिकांशत: भक्तिपरक आ सधुक्कड़ी भाषा मे छनि। ब्रजभाषाक बाना मे मैथिलीक छाया लेने हुनक किछु दोहा—'सत्त पसेरी, सेर करहु नर, कोठी सन्त समाज/ रकम नरायन राम खरीदहु, बोझहु तनक जहाज/ बेचहु विषय विषम बिनु कौड़ी, धर्म करहु शोभकार/ मंदिर धीर, विवेक बिछौना, नीति पसार बजार।'[22]

बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक पाण्डुलिपि-संग्रहालय मे वैद्यनाथ रचित 'भाषा-चमत्कार' नामक कृति अछि, जे डीहटोल, पंडौल सँ प्राप्त भेल छल। कृति मैथिली मे अछि, मुदा रचना-कालक कोनो सूचना नहि अछि। विषयवस्तु पौराणिक मुख्यत: शिवविवाह विषयक अछि। एक विशेषता ई छैक जे ग्रन्थक समापन दोहा छंद मे होइत छैक—'तखन कहल समुचित कथा, गिरि कें नारद मूनि/ ये भेल गिरि कैलास पर, शंकर समो सभ सूनि/ तखन महीधर कहल कथा ज्योतिर्विद समुझाए/ ऋक्ष लग्न तिथि दिवस शुभ विवाहक देहु बनाए।' आदि।[23]

सम्मरि : मध्यकालीन कथाकाव्य

मैथिलीक मध्यकालीन रचनाकार लोकनि जतय जा क' बेस रमलाह अछि ओ गीत कें प्रबन्धात्मकता दिस बढ़ेबाक क्षेत्र थिक। मनबोध कविक संग-संग पंडित सेहो छलाह तें हुनकर देल प्रबन्धात्मकता पोथी-रूप धरि अयबा योग्य भेल, दोसर जे हुनका 'हरिवंश'क अनुवादक यश उठेबाक सेहो बुद्धि भेलनि। देखबाक थिक जे एहन मैथिली कवि जे पंडित नहि छलाह आ ने जिनका अनुवादक ब्याज भेटलनि,

ओहो लोकनि अपना शक्य भरि प्रबन्धात्मक रचनाक चेष्टा केलनि। ई मुक्तक रचनाक प्रबन्धात्मकता दिस बढ़बाक प्रवृत्ति छल, जे कि अठारहम-उनैसम शताब्दी मे आकार ल' रहल छल। लोकगाथाक जे अपन रचना-संसार छल, ओतय तँ ई प्रवृत्ति पहिनहिं सँ विद्यमान छलैहे ताहि सँ बाहर पहिल बेर एही काल मे एकर सूरसार देखल जा सकैत अछि।

मैथिली मे एहि प्रबन्धात्मक कविताक पहिल आ स्पष्ट झलक हमरा लोकनि कें 'सम्मरि' मे भेटैत अछि। मैथिली मे सम्मरि जकरा कहल जाइछ से दू भिप-भिप प्रकृतिक काव्य-रचना थिक। एक प्रबन्धात्मक। स्पष्टत: एहि मे कथा-विन्यास होइछ आ वर्णनपूर्वक कथा अपन परिणति कें प्राप्त करैत अछि। दोसर, मुक्तक। सम्मरि जें कि 'स्वयम्वर' सँ बनल शब्द अछि, वैवाहिक प्रसंगे सब कें यथासंभव उपजीव्य बनबैत अछि। मुक्तक सम्मरिक उपयोग विवाह-संस्कार मे प्रचलित रहने एहि समस्त जातिक काव्य-रचना कें वैवाहिक कहि देल जाइछ जे कि सही नहि अछि। प्रबन्धात्मक सम्मरि अलगो सँ गाओल जाइत छल। सम्मरिक प्रसिद्ध संकलयिता रामइकबाल सिंह राकेश लिखलनि अछि—'छुटपन में न जाने कितनी बार ग्रामीण गायकों की आकर्षक आवाज में इन गीतों को सुनकर एक अलौकिक आनन्द का अनुभव किया था। और काफी देर पहले इस पौध के गीतों को पर्याप्त तादाद में संगृहीत कर लेने के बावजूद इन्हें अंधेरे से प्रकाश में लाने की चेतना न हुई।'[24] चेतना नहि भेलनि जे ई रचना सब एक दिस शुद्ध आ श्रेष्ठ मैथिली कविताक सब गुण सँ भरल छल मुदा इतिहास मे ने एकरा लेल कोनो जगह छलैक ने परवाह। ओ देखौलनि अछि जे प्रबन्धात्मक सम्मरि मे प्रबन्धात्मकताक निर्वाहक प्रति पर्याप्त सजगता देखल जाइत अछि आ कलाचातुर्यक सेहो कतहु कमी नहि भेटैत अछि।

एहि बातक पर्याप्त साक्ष्य भेटैत अछि जे मिथिला मे सम्मरि नाम सँ एक अद्‌भुत काव्य-लेखनक परम्परा मौजूद छल। एकरा लोककविताक पसार कहि सकैत छिऐक—एहन कविता जे भाषा आ स्वभाव मे तँ एकदम लोककाव्य वा लोकगीत छल, मुदा छन्द-निर्वाह, काव्यत्व-दृष्टि आदि मे पर्याप्त साहित्यिक छल। चाही तँ ओकर प्रशंसा शिष्ट काव्यशास्त्रे ल' क' सकैत छी। सम्मरि वस्तुरूप मे मूलत: शृंगाररसक कथा थिक मुदा प्रवृत्ति मे ई वीर रसात्मक होइत छल, ई दुनू परस्पर विरोधी रस अछि तकर बादो, मुदा भक्ति-रसक परिपाक सेहो एहि मे भेल रहैत छल। प्रबन्धात्मक भेने कथा-विकास सेहो संग चलैत छलैक आ प्रसंगानुसार ओहि-ओहि रसक आलंबन-उद्दीपन जुटा लेल जाइत रहैक। एहि मे सब सँ चमत्कारी देखाइत छल कविक शिल्प। कवि लोकनाथक 'उषाहरण' 168 पाँतीक अछि, आ 'रुक्मिणीहरण' ओहि सँ छोट 132 पाँतीक। आन सम्मरि सब एहि सँ छोट-छोट। शृंगारिक कथा मे वीररसक प्रवृत्ति

भरि देल जा सकय, देखिते छी जे ताहि लेल 'हरण' कें विषय बनाओल गेल अछि। जेना कि राकेश जी लिखने छथि, प्रस्तोता द्वारा ई लोक-गोष्ठी मे सुनाओल जेबाक परम्परा रहय। आ तें, जीवित बचियो सकल। देखल जा सकैए जे ई मैथिलीक जातीय कविताक विकासक एक चरम उदाहरण छल, जे 'कीर्तनियाँ' नाटक परंपराक समानान्तर चलि रहल छल। नाटक अथवा नाच मे जे कविता छल, ओ तँ छल गीत, जकरा मान्यताप्राप्त विधाक अन्तर्गत राखल गेलै। समानान्तर जे लोक-कविता अलग सँ चलि रहल छल, ओ ठीक-ठीक ओहने छल जेना ब्रजभाषा मे चलि रहल छल। अर्थात गीतात्मक नहि, कवितात्मक। ओ अधिकतर कवित्तक रूप मे प्रस्तुत होइत छलैक। ब्रजभाषा-मिश्रित मैथिलीक सेहो एक टा चयन विकसित भेल, जकर छवि हमरा लोकनि 'कवित्त अकाली' मे देखि सकैत छिऐक। मुदा सम्मरि शुद्ध मैथिली थिक। कतहु-कतहु झाँइ पड़ैत छैक ब्रजभाषाक, मुदा एहन स्थल बहुत कम छैक। विषय जें कि एकर पौराणिक थिक आ समकालीन समय कें कविता मे जोड़ल नहि गेल अछि, तें ई स्पष्ट थिक जे 'कवित्त अकाली' सँ ई पूर्वक प्रवृत्तिक सूचक थिक। एहि मे मध्यकालीनता सेहो पर्याप्त रूप मे मौजूद छैक।

मध्यकालीन मैथिली नाटक, जकरा कि कीर्तनियाँ नाटक कहल गेल अछि, हमरा लोकनि किछु विषय कें एहि ठाम बहुत लोकप्रिय भेल देखैत छी। ई विषय सब छल—उषाहरण, पारिजातहरण आ रुक्मिणीहरण। एहि मे सँ 'पारिजातहरण' सब सँ पुरान अछि कारण हमरा लोकनि शंकरदेवे आदिक आसाम मे लिखाइत देखने छी। स्वयं शंकरदेवक 'पारिजातहरण' आ 'रुक्मिणीहरण' छनि। एकर सातत्य नेपाल मे बनल रहल। भातगाँवक संरक्षण मे जे नाट्यविषय रहलैक ओहि मे रुक्मिणीहरण कें बेसी लोकप्रिय देखैत छिऐक। मुदा एक टा नव विषय 'उषाहरण' जे कृष्णक पुत्रक कथा थिक, कें आगू लोकप्रिय होइत देखैत छिऐक। एतय धरि जे एम्हर मिथिला मे रत्नपाणि, देवानंद सहित हर्षनाथ झा धरि 'उषाहरण'क प्रसंग पर नाटक लिखलनि। एकरा अतिरिक्त 'गौरीदिगम्बर' सेहो कैक सदी धरि लोकप्रिय एक नाट्य-विषय रहल। विशेष ई रहल जे एहि समस्त पर सम्मरि अथवा स्वयंवरकाव्य लिखल गेल। एक टा जे नव विषय सम्मरि मे भेटैत अछि ओ थिक 'सीतास्वयंवर'। मैथिल संस्कृतिक उपादान सब सँ सराबोर ई कविता सब रसिक-समुदाय मे कतेक लोकप्रिय भेल छल हएत, तकर हमरा लोकनि अनुमान क' सकैत छी।

'रुक्मिणीहरण' मे राजा भीष्मक पुत्री रुक्मिणीक विवाह कृष्ण संग हेबाक कथा छैक आ 'उषाहरण' मे कृष्णक पुत्र अनिरुद्धक विवाह कोना वाणासुरक पुत्री उषा सँ भेलैक, तकर कथा अछि। दुनूक उपजीव्य हरिवंश थिक। कीर्तनियाँ नाट्यशैली मे लिखल रमापतिक रुक्मिणीहरण तथा रत्नपाणिक उषाहरण नाटक कें इतिहासकार

लोकनि सर्वाधिक सफल मानलनि अछि। एही विषय पर लिखल सम्मरिकाव्य कें जँ हमरा लोकनि देखी तँ कविक प्रौढ़ता चमत्कृत करैत अछि जे जाहि विधाक चयन केलनि अछि तकर अनुशासनक सम्यक् निर्वाह केलनि आ एहि नामक सुप्रसिद्ध कोनो नाटक सेहो छैक, तकर सुधि धरि नहि आब' देलनि अछि। कथाकाव्य मिथिलाक एक अत्यन्त प्राचीन काव्य-शैली छल, एकर विवरण हमरा लोकनि पहिनहुं देखि आयल छी। उत्तरमध्यकाल मे पौराणिक कथा कें विषय-बना क' कोना एहि मे सफलतापूर्वक एक सुंदर कथाकाव्य लिखल गेल तकर दृष्टान्त हमरा लोकनि एहि कविता सब मे पाबि सकै छी।

एहि कथाकाव्य सब पर एक नजरि द' ली तँ एकर रचना-विधान स्पष्ट होयत। कविताक आरम्भ वंदना सँ होइत अछि। 'रुक्मिणीहरण'क वंदना थिक—'प्रथमहि बन्दहुँ विघ्नविनाशन/ गिरिजातनय गणेश यो/ देवि शारदा चरण मनाबिय/ देहु सुमति उपदेश यो।' 'उषाहरण'क वंदना अछि—'लछमी सरोसति सहित नारायण/ गंगा गौरि गणेशे/ गिरिजानंदन दुरित निकंदन/ बन्दहुँ सिद्ध गणेशे।' एक पद मे वंदना केलाक बाद सीधे कथा-प्रसंग शुरू भ' जाइत अछि। 'रुक्मिणीहरण'—'कुण्डिनपुर एक नग्र बखानल/ जनि इन्द्रासन रूप यो।' तखन ओहि नगरक प्राकृतिक सुषमा आ सुख-सम्पतिक एक पद। आब मूल प्रसंग शुरू होइछ—'माय मनाबथि मनहि विचारथि/ धिया भेलि ब्याहन योग यो।' आ सब परिवारीजनक विचार होइत छैक जे 'पाणिग्रहण कय कृष्णहि दीजै/ सब मिलि रचथि विचार यो।' मुदा रुक्मिणीक जेठ भाइ रुक्मद, जे कृष्ण सँ बैर राखै छथि, एकर विरोध करैछ। कृष्ण रुक्मिणीक हेतु अपात्र छथि, तकर तर्क देल गेल अछि—'धेनु चराबथि वेणु बजाबथि/ छिर बिच करथि अधार यो/ नन्दमहर घर जन्म हुनक छनि/ जातिक ओछ गोआर यो।' हुनकर जिद छनि जे रुक्मिणीक योग्य वर शिशुपाल छथि, तें अंततः सैह तय होइछ आ नौतारी के सूचीकरण होअय लगैत छैक, जतय छैक जे अखिल भारत मे सब राजा कें नोंत पठाओल जायत, मुदा 'एक नहि नोतब नग्र द्वारिका/ जहँ बसु नन्दकुमार यो।' ध्यान देबाक बात थिक जे रमापतिक 'रुक्मिणीहरण' नाटक मे स्वयं कृष्ण कें कूटनीतिक चालि खेलैत शिशुपाल सँ रुक्मिणीक विवाह कराबी से प्रस्ताव करैत देखाओल गेल अछि। तहिना, प्रसंग सब कें दोषमुक्त करबाक तर्क देल गेल जाहि सँ हुनकर भगवत्ता पर कोनो आंच नहि आबय। तहिना नाटक मे नारद कें रुक्मिणी दिस सँ मध्यस्थ भ' क' कृष्ण कें रुक्मिणीक प्रेमनिवेदन सहित विवाह-प्रस्ताव पठाओल गेल अछि। कथाकाव्य मे एहि प्रसंग सभक सर्वथा अभाव छैक। कारण स्पष्ट अछि जे तर्क, अलंकार, कथा-विन्यास आ प्रसंग-विस्तार एहि कवि कें इष्ट नहि छैक। ई अपन विधाक अनुशासन मे काव्य-रचना क' रहल छथि, तें। दोसर, लोक-समाज कें तथ्य-

सत्य कें सीधा बूझब काम्य थिक से रचनाकार जनैत अछि। शिशुपाल सँ विवाहक योजना जखन रुक्मिणी सुनैत अछि, मुरुछा क' खसैत अछि। सखिक जिज्ञासा आ रुक्मिणीक उताराक वर्णन एक्कहि पद मे कएल गेल अछि—'किए तोहें रुकमिनि मनहि विरोधलि/ किए रे खसल मुरछाय यो/ जौं जिबह तौं कृष्ण शरण देथु/ नहि तँ मरब विष खाय यो।' आखिर रुक्मिणी कृष्ण कें पत्र लिखैत अछि। पत्रक सरंजामक वर्णन एक पद मे अछि—'केदली वन सौं पत्र मंगाओल/ निर्मद कैल मोसियान यो/ लिखय विलाप विनय कय माधव/ हैब हमहुँ तब दास यो।' पत्र मे रुक्मिणीक आत्मनिवेदन जे भेलैक अछि तकर काव्यत्व देखल जाय—'सिंहक भाग सियार लै भागत/ जनम अकारथ जाय यो/ कुआँ बावली इष्ट कयल यदि/ आबि धारिय एहो हाथ यो।' अपना कें ओ सिंहक भाग (कृष्णक सुयोग्य) कहैत छथि आ शिशुपाल कें सियार बतबैत छथि। आबि क' हाथ धारब अपरिहार्य ओ एहि लेल कहैत छथि जे इष्ट कयल कुआँ-बावली कें क्यो छोड़ि नहि दैछ। जे ब्राह्मण ई पत्र ल' क' कृष्ण लग जेताह, हुनका बड़ उपकारी मानैत ओ वचन दैत छथि—'देब हे ब्राह्मण अन-धन-लछमी/ और सहस्र धेनु गाय यो/ कृष्ण लेबाय तुरंत जौं अबिह/ हम होयब दास तोहार यो।' मुदा, एम्हर शिशुपाल संग विवाहक तैयारी जारी रहैत छैक, अन्ततः गौरी-पूजनक दिन आबि जाइत छैक। कृष्णक दिस सँ कोनो समाद नहि आयल अछि। ओ दिन रुक्मिणीक लेल घोर निराशाक दिन छिऐक—'चललि सखी सब गौरी पूजय/ रुकमिनि मन पड़ि आब यो/ हमरा लै कृष्ण कतय अओता/ हम धनि परम अभाग यो।' मुदा, कृष्ण सीधे ओहि पूजनस्थल पर पहुँचि अबैत छथि—'जौं लगि रुकमिनि गौरी पूजल/ गरुड़ चढ़ि प्रभु धाय यो/ कर धै रुकमिनि रथहि चढ़ाओल/ चलि भेल श्रीभगवान यो।' 'चलि भेल' क्रियापदक प्रयोग एहिठाम देखबा योग्य अछि जे सीधे 'लोक' सँ उतरल अछि। कविक स्वर एतय आबि किछु बदलैत छैक। एक गाथागायक जकाँ ओ कहैत अछि—'इन्द्र ब्रह्मा सब साक्षी रहब/ रुकमिनि हरल कुमारि यो/ रुकमिनि हरण सुनल शिशुपालहिं/ मुरुछि खसल महि माँझ यो।' मुदा, दुष्ट भाइ रुक्मद अपन सेना ल' क' कृष्णक पछोड़ करैत अछि। कृष्णक आगू ओकर कोनो वश नहि चलैछ आ ओ बंदी बना लेल जाइत अछि। रुक्मिणीक भ्रातृप्रेम जगैत छैक—'इहो सहोदर भाय थिका रुक्मद/ हिनका दियौन्ह जिबदान यो।' अन्ततः द्वारिका पहुँचि रुक्मदेक हाथें कन्यादान संपप होइत छैक। कविताक अंतिम पाँती अछि—'लोकनाथ' भजु चक्रपाणि प्रभु/ अवसर ने करिय विचार यो/ रुकमिनि सम्मरि गाबि सुनाओल/ कलिपातक दुरि जात यो।' सहायताक गोहार सुनि क' कृष्ण अवसरक विचार नहि कर' लगैत छथि, तुरन्त सहायता करैत छथि, आ फलश्रुति जे ई कथाश्रवण कलियुगक पापक शमन करैछ। मध्यकालीनताक सीमा स्पष्ट छैक मुदा एक सुन्दर

कथाकाव्यक सब टा गुण सेहो मौजूद छैक।

जेना कि पहिनहु कहल गेल, 'रुक्मिणीहरण' सँ 'उषाहरण'क कथा अपेक्षाकृत बेसी लोकप्रिय रहल। नेपालक भातगाँव दरबार मे हमरा लोकनि देखैत छी जे सतरहम-अठारहम शताब्दी मे जे क्यो राजा भेला सब क्यो—जगत्प्रकाश मल्ल, जितामित्रमल्ल, भूपतीन्द्रमल्ल आ रणजितमल्ल—अपना-अपना समय मे 'उषाहरण'क लेखन आ अभिनय करौलनि। ओम्हर ललितपुर शाखाक विष्णुसिंहमल्लक 'उषाहरण' सेहो अछि। एम्हर मिथिला मे देवानन्द, रत्नपाणि आ हर्षनाथ झा अपना-अपना तरहें 'उषाहरण' नाटक लिखलनि। रत्नपाणि, जे नवानी गामक सुप्रसिद्ध नैयायिक बच्चा झाक पितामह छला आ महाराज रुद्रसिंह (1839-1850) तथा महेश्वर सिंह (1850-1860)क आश्रित छलाह। हुनक 'उषाहरण' अथवा 'उषापरिणय' नाटक रमानाथ झा अपन संपादन मे 'साहित्यपत्र' मे प्रकाशित कयने छलाह। डॉ. जयकान्त मिश्र 'उषाहरण' नाटिका कें पूर्ण विकसित कीर्तनियाँ भाषा-नाटकक उत्तम उदाहरण माननलनि अछि।[25]

लोकनाथ कविक लिखल 'उषाहरण' सम्मरि सेहो काव्यक गुणवत्ताक दृष्टि सँ हुनकर 'रुक्मिणीहरण' सँ न्यून नहि कहल जा सकैत अछि। लोकनाथ के छलाह, कतयक छलाह, एहि संबंध मे किछु जानकारी नहि भेटैत अछि। स्वयं शिवपूजन सहाय अपन संकलन 'हिन्दी साहित्य और बिहार' के द्वितीय खंड मे लोकनाथ कविक 'रुक्मिणीहरण'क काव्यांश संकलित केलनि अछि, मुदा हुनका बारे मे बस एतबे जानकारी जुटा सकलाह जे ओ उपैसम शताब्दी मे, मिथिला मे भेल छलाह।

रमानाथ झा द्वारा संपादित 'मैथिली कथाकाव्य' संकलन 1965 ई. मे प्रकाशित भेल छल। ई हुनकर मैथिली काव्य-संकलनक महत्वाकांक्षी योजना, जे तीन खंड मे अयबाक छलैक, के दोसर खंड थिक। पहिल खंड 'प्राचीन गीत' छल आ तेसर 'नवीन गीत'। हमरा पूर्ण आशा छल जे रमानाथ बाबू लोकनाथ कविक कथाकाव्य अवश्य अपन संकलन मे शामिल कयने हेताह। मुदा, आश्चर्यजनक थिक जे ओ कीर्तनियाँ नाटक मे प्रयुक्त गीत सब कें एहि क्रम मे रखैत जे ओ कथाकाव्यक आभास दियय, संकलित केलनि, एतय धरि जे कथाकाव्यक नाम पर 'कीर्तिपताका'क अंश लेलनि, महाकाव्य आ खंड काव्यक अंश लेलनि, जे सब कि हुनका द्वारा अपने बनाओल कथाकाव्यक कसौटी पर खरा नहि उतरैत छल, मुदा मिथिलाक जातीय काव्य-परम्परा मे जे सम्मरि कथाकाव्यक चलन छल, तकरा छोड़ि देलनि। एहि संकलन मे रत्नपाणिक 'उषापरिणय' छैक, मुदा लोकनाथक 'उषाहरण' नहि। एहि संकलनक भूमिका मे ओ किछु बात लिखलनि अछि, जकरा एहन वस्तु सब कें संकलित नहि कयल जा सकबाक कारण रूप मे बूझल जा सकैत अछि। लिखलनि

अछि—'आइ सँ पचास-साठि वर्ष पूर्व स्वर्गीय महामहोपाध्याय परमेश्वर झा अपन 'सीमन्तिनी आख्यायिका' मे बरियातक वर्णन-प्रसंग मे कहैत छथि जे 'सीता-स्वयंवर, भासक गीत सँ आरम्भ कए विरहा-चाँचड़ि पर्यन्त गाबए लागल।' जे विरहा चाँचड़ि चौदहम शताब्दीक आरम्भ मे नगर मे सुनल जाइत छल, तकर गमैया भास बीसम शताब्दी धरि श्रुतिगोचर होइत रहल। उपलब्धा नहि से तँ सीतास्वयंवर, प्रभावतीहरण, रम्भाभिसार, रुक्मिणीहरण प्रभृति गमैया भासक गीत सब सेहो लुप्त भए गेल अछि, ओ एखन तकनहु नहि भेटत। कारण एकर भेल यैह जे एकरा 'गमैया' भासक गीत कहि पण्डित-समाज उपेक्षित कए देल ओ तें लोकसाहित्यक ई अपूर्व निधि कालक स्रोत मे पड़ि नष्ट भ' गेल।'[26] ई अपूर्व निधि लुप्त नहि भेल छल आ ने कालक स्रोत मे पड़ि नष्ट भेल छल, तकर उदाहरण तँ यैह थिक जे हुनकहु पचपन वर्ष बाद आइ ई उपस्थित अछि। एक आलोचकक रूप मे रमानाथ झाक समस्या ई छनि जे जातीय मैथिली कविताक अवहेलना लेल सब ठाम ओ मिथिलाक पंडित-समाज कें दोषारोपित करैत रहलाह, गंजन धरि केलनि, मुदा करबाक बेर मे ओ अपनहु वैह केलनि जे पंडित लोकनि करैत रहल छलाह।

'उषाहरण'क कथा 'हरिवंश' सँ लेल गेल छै। एहि मे प्रसंग छैक जे वाणासुरक पुत्री उषा पर प्रसप भ' क' गौरी वरदान देने रहथिन जे माधव शुक्ल द्वादशीक राति जे पुरुष स्वप्न मे तोरा लग अयतह सैह तोहर जीवनसाथी हेतह। ओहि राति उषाक स्वप्न मे कृष्णक पुत्र अनिरुद्ध अयलाह। एतबा प्रसंगक वर्णन रत्नपाणि कोना कयने छथि आ लोकनाथ कोना, बेराबेरी देखल जाय। पहिने रत्नपाणि—'माधव शुक्ल तीथि द्वादशि थिक, उषा से मन लाए/ गौरी-वर-निशि बुझि सौधा बिच, एकसरि सुतलिह जाए/ कोटि-काम-दुत युवा रसिकजन, उषा सेज पर जाए/ रंगरभस कत भेल सपन बिच, ऊषा उठलि चेहाए/——कहल सपन-गति चित्रलेखा सँ जानि सखी निज प्राण/ बिपति अथाह पड़ल अछि मानस, तुअ बिनु के कर त्रण/—-लिखल तहिखन चित्रलेखा जगत सबहिक वंश/ सभ नकारल तखन देखल जतए जनमल कंस/ देखि यदुवरवंश हरषित, ततए कृष्ण अनूप/ तन्हिक बालक कुलक पालक मदन तनु अनुरूप/—-हमर मानस हिनक वश भेल तेहन होअ उपाय/ पहु समागम देखि जागर-समय मीलिअ धाय।'

एहि प्रसंगक वर्णन लोकनाथ कोना करैत छथि, से देखल जाय—'किछु दिन बितल द्वादशि आयल/ मास बैशाख इजोते/ कुमरि सुमरि कय सुतलि धरोहर/ सपना पुरुष देख गोरे/ सुन्दर वर तन सांवर-सांवर/ पीताम्बर तनु ओढ़े/ बाहु अजानु कमलदल लोचन/ चित्त हरल जेहि देखै/ सकल सुरति सुत अनुभव सुन्दरि/ जागि निंहारय पासे/ अधर सुधा मधु पान व्यतित कय/ किय गेल कन्त उदासे/ चिन्ता लाज बेआकुलि मानुषि/ धाधस धरय न पाबय/ उसँसि-उसँसि रहु किछु ने कुमरि कहु/ नैन तजय जलधारे/ मंत्रिसुता सखि छपलि पलंग लग/ चित्ररेखा हुनि नामे/ कुमरि बात देखि जागि चकित भेल/ पुछय लागल तसु बाते/——मैं पट लिखौं चिन्ह सखि मन दय/ जे तोहि हृदय निवासे/ तीन भुवन जौं हयत कुमर वर/ आनि मिलत तोहि पासे/ देवासुर गंधर्व उपचारल/ मानुष सकल उरेहे/ यदुकुल लिखल कुमर अनुरुद्धहिं/ उषा चिन्हल वर एहे/ हरि घर चोरि मोहि कोना फरओत/ तीन भुवन जिन केरे/ से परकार रचहु सखि सुन्दरि/ जौं जानी कुलशीले/ तोंहि सखि योगिन लखय के पारय/ पाँव परै चलि जाहे/ जौं सखि प्रानक अछहु काज/ मोरा आनि देखाबह नारे।'

रत्नपाणिक उपर्युक्त रचना आ हुनका काव्य-कलाक मादे रमानाथ झा लिखलनि अछि—'पुनरुक्ति एहि मे अनेक ठाम अछि, एकहि घटनाक दू-दू बेरि दू छन्द मे वर्णन अछि। ततबा एहि मे कथाकाव्यक दृष्टियें त्रुटि अछि। तें एकरा ने नाटके कहि सकैत छी ने कथाकाव्ये।—- विषय अछि शृंगारक परन्तु शृंगारक रचना मे रत्नपाणि ओतेक सफल नहि भेल छथि। मुख्य रस एहि काव्य मे अछि वीर।—-भाषा अछि स्वच्छ, सरल परन्तु मनबोध जकाँ गमैया नहि। कथा मे गीत अछि ओ मनबोध मे जे एकरूपता दोष परिलक्षित होइत अछि से छन्दक विविधता सँ एहि मे नहि आबए पओलक। तथापि शुद्ध पंडिताम भाषा कहब सेहो नहि। शिष्टजनक जे भाषा होएबाक चाही, सैह अछि।'[27]

लोकनाथ कविक काव्यत्व पर जँ रमानाथ झा लिखने रहितथि तँ की लिखितथि, हमरा लोकनि अनुमाने टा क' सकैत छी। भाषा, भाव, प्रवाह, काव्यत्व सब कथू मे ई रत्नपाणि सँ विशेष छथि। दोष यैह जे शिष्टजनक जे भाषा हेबाक चाही तकर अभाव अछि। शुद्ध कविताक बारे मे एक टा बात इहो कहल गेल अछि जे ई अपन कवि कें खा जाइत अछि। कविता समाज कें मोन रहैत छैक आ कविक व्यक्तित्व बिसरा जाइत छैक। व्यक्तित्वे कें आधार बना क' चुनि-चुनि 'रत्न' लोकनिक जँ कविता एकट्ठा कएल जाय तँ एहन दोष भेटब स्वाभाविक अछि। असल भावक जे हेताह से तं लोकनाथक कवित्वक एहि उड़ान पर अवश्य मुग्ध हेताह। जखन स्वप्न मे देखल युवक कृष्णपुत्र अनिरुद्ध बहराइत छथि तँ उषा कोना सिहरि उठैत अछि आ की सोचैत अछि! कृष्ण कें ईश्वर मानि लेल गेलनि अछि, वास्तविक रूपें हुनक जीवन-काल मे मानल गेल हो वा नहि, एहि कविता मे तँ से मानि लेल गेल अछि। अनिरुद्ध उषा सँ प्रेम नहि करैत अछि, ओकरा भेंटो एखन धरि नहि छैक। सब मामिला एकतरफा छैक तें उषा एकरा चोरि करब कहैत अछि। 'हरिघर चोरि मोहि कोना फरओत/ तीन भुवन जिन केरे।' 'फरओत' के प्रयोग पर ध्यान दी, मोहाबरेदार प्रयोग छैक जकर तात्पर्य अछि फलित होयब, सुतरब। चित्रलेखा योगिनी अछि। ओकरा

बुते एहि दुनू प्रेमी-युगलक मिलन करा देब संभव छैक। उषा कहैत अछि जे जँ हमरा कुल-शीलक प्रति तों विश्वस्त छह तँ कोनो युक्ति करह जे हरिक घर मे हमर ई चोरि संभव भ' सकय। वास्ता मित्रताक देल गेल छैक, अर्थात मित्रक नातें ई हमर बहुत पैघ उपकार हेतह। मुदा नाम कुलशीलक लेल गेल अछि जे हम एकरा निमाहबह आ एहि उपकार कें नहि बिसरबह। कविता एतय छैक।

एहि कविता कें किछु आगुओ धरि देखल जा सकैत अछि। चित्रलेखा योगिनी छली, ओ आकाशमार्ग सँ विदा भेली आ थोड़बे काल मे पलंग-सहित सूतल अनिरुद्ध कें उठौने उषाक शयनकक्ष मे ल' अयलीह। रत्नपाणि जतबा कथाक वर्णन लेल दस-दस पाँतीक दू टा गीत लिखैत छथि, लोकनाथ केवल एक चतुष्पदी मे ओतबा खिस्सा कहि जाइत छथि—'कुसुममाल लय कुमरि अनन्दित/ कुमर गरां पहिराय' अर्थात ओही राति विवाह भ' जाइत छैक आ 'निशि दिन गुप्त भोग करि सुन्दरि/ बिसरल घर छव मास।' स्त्री जखन प्रेम मे पड़ैत अछि तँ सब सँ पहिने ओकरा अपन घर बिसराइत छैक। मुदा ओ तँ राजनिवास छल, चप्पा-चप्पा मे पहरूदार के नियुक्ति छलैक, राजपरिवार के एक-एक सदस्य पर नजरि रखबाक लेल परिचारिका लोकनि छली। छव मास बितैत-बितैत ई बात पकड़ मे आबि जाइछ जे कुमरि आब कुमारि नहि रहलीह, हुनका रनिवास मे कोनो पुरुषक अबर्जात छनि। जाहि कवि कें छव अंकक एक संपूर्ण नाटकक कथा मात्र 168 पाँतीक कविता मे कहबाक छैक, स्वाभाविक थिक जे ओ संक्षेपणक कल्पनाशील आ काव्यात्मक तरीका सब अपनाओत। एक टा दृष्टान्त देखी—'कोपि उठल अँग-अँग महीपति/ कड़कि कएल सिंहनादे/ ओहि अवसर कोतवाल पुकारय/ कुमारि महल क्यो आबै।' एहि ठाम पहिने कोतवाल राजा कें सूचना दैत छनि तखन राजा क्रोधा सँ भरि जाइत छथि, मुदा घटनाक क्रम कें उनटा क' प्रस्तुत कएल गेल अछि। एना कयने एक तँ आर बहुत किछु कहबाक आवश्यकता नहि रहि जाइछ, दोसर संक्षेपणक कारण कथा-गति भंग नहि होइछ, ओहि मे पर्याप्त क्षिप्रता आबि जाइछ। अस्तु, एम्हर वाणासुर संग युद्ध करैत कुमर शोणितपुर नगर मे फँसल रहैत छथि आ ओम्हर नारदमुनि कृष्ण कें जा क' सब टा समाचार सुनबै छनि। कृष्ण तुरन्त प्रयाण करैत छथि। संग मे जे सेना साजि क' ओ चलैत छथि तकर वर्णन मे कवि कहैत अछि—'राम कृष्ण दल दुगुन साजि करि/ कोना क सजब रणधीरे।' तकनीकी रूप सँ राम त्रेता मे भेला आ कृष्ण द्वापर मे, मुदा सहृदय सामाजिक लेल दुनू एक्कहि संग आइ मानसगत छथि। तें जें कि कहल जाइछ जे राम आ कृष्ण दुनूक सेना मिला क' जतबा होइछ, कृष्ण ततबा सेना ल' क' चललाह, ई बुझबा मे कोनो भांगठ नहि रहि जाइछ जे कते भारी सेना रहल हेतैक। कविता एहि ठाम अछि।

मुदा वाणासुर शिवक परम भक्त आ हुनका सँ आशीर्वादप्राप्त छल तें पुकारला पर महादेवो अपन सेना ल' क' वाणासुरक पक्ष मे युद्ध कर' चलि अयलाह। युद्धक वर्णन अछि—'भय भउ मेदिनि कंप झंप लय/ धूर पीत रति शूरे/ अपन पराR चिन्हय नहि पाबै/ दुहु दिस बाजे धूरे।' कृष्ण महाबली छलाह किन्तु शिव अपन भक्तक अभिघात नहि देखि सकैत रहथि—'जे मोहि परसय ताहि जनि परसी/ नहि त करब जिबघाते।' अन्तत: शिवेक सोझरौने मामिला सोझरायल। कृष्ण वाणासुर कें अभयदान देलनि आ वाणासुर वर-कन्या कें रथ पर चढ़ा विदा केलनि, ताहि संग 'देल दहेज अनेके।' अनेक उपहार सेहो देलकनि। उषा आ अनिरुद्धक जखन विवाह होइछ आ दुनू एक संग रथ पर बैसल छथि, कवि लोकनाथक कविताइ देखल जाय—'गौरी मिलल जनि इशर महादेव/ सिया मिलल श्रीरामे/ लक्ष्मी मिलल जनि देवनरायण/ तैसन दुहुँ अभिरामे।' सृष्टिक सर्वश्रेष्ठ युगल सब जकाँ ई दुनू शोभायमान भेलाह।

सीतास्वयम्वर पर मैथिली मे अनेक सम्मरि काव्य लिखल गेल। विशेष बात ई छैक जे ई सब अलग-अलग छन्द मे लिखल गेल। छन्दोबद्ध हेबाक कारण एकरा गाओल तँ अवश्य जा सकैत छल, मुदा गीत जकाँ नहि, गाथा-गायन सन भासहि मे एकरा गाओल जा सकैत छल। सम्मरि गीत आ सम्मरि काव्य कें अलग अलग देखबाक चाही। गीत मे मात्र कोनो एक प्रसंगक अभिव्यक्ति भेल रहैछ जखन कि सम्मरि काव्य मे सम्पूर्ण कथा आद्योपान्त आयल रहैत अछि। अधिकतर सीतासम्मरि सीता द्वारा धनुष उठेबाक प्रसंग सँ शुरू होइत अछि आ विवाहक बाद बरियातक प्रस्थान पर समाप्त भ' जाइछ, तें एकरा मिथिला मे रामकथाक प्राचीनतम रूप नहि कहल जा सकैछ, अन्तत: ई 'सीताकथा' सैह थिक जाहि मे कवि लोकनि मिथिलाक ओहि अविस्मरणीय स्वयम्बरक गाथा कें छन्दोबद्ध केलनि अछि। एहि ठाम राम ने कोनो अवतारी पुरुष थिका ने ईश्वर, ओ मात्र एक प्रतिष्ठित राजकुलक सुयोग्य वर थिका जिनका सीता संग विवाहक योग्य मानल गेल अछि।

सीता-स्वयंवर प्रसंगक सब सँ छोट सम्मरि सोलह पांतिक अछि। ई एना शुरू होइत अछि—'सीताक सम्मर सुनि मुनि सब आयल हे/ राजा जनक राज नहि भावै, रानी सोचै हे/ आब सिया रहली कुमारि धनुष के तोड़त हे।' आ अंतिम पाँती अछि—'भेल विवाह शोभा रामक, राम चलु कोबर हे/ सिया लेल अंगुरि धराए सखि सब मंगल गाबहु हे।' सब सँ पैघ सम्मरि अस्सी पांतिक भेटैत अछि। एकर खूबी ई छैक जे छन्दविधान बदलल छैक आ चतुष्पदीक बदला मे ई पंचपदी छैक। एहन प्रतीत होइत अछि जे आल्हा सन के धुन मे संभवत: एकरा गाओल जाइत छल हेतैक। आरंभक पाँती अछि—'सिया स्वयम्बर पाँती फिरि गेल/ सब जग राज मँझार/ राम-लखन यग पूरन कारन चले मुनी के साथ/ भला कठ किमकिम झिमझिम बाज रहे।'

दूल्हा बनल रामचन्द्र जखन मड़बा पर प्रवेश करैत छथि, ताहि कालक एक छन्द अछि—'कांच बांस कंचन के खाम्ही/ चारों माड़ब छारि/ जगमग जोति झलामल गौरी/ रघुवर भौर फिराय/ भला पुरहितगन कंगन बान्हि दियो।' एहि सम्मरिक सब सँ विचित्र बात ई अछि जे एकर भणिता मे कबीरक नाम भेटैत अछि। आ से केवल नामेटा नहि, रामक बारे मे जे कबीरक मान्यता छलनि तकरो झलक देखना जाइत अछि। हमरा लोकनि अवगत छी जे मिथिला मे जेना विद्यापतिक अनुसर्ता हरेक युग मे होइत रहलाह, ठीक तहिना कबीरोक अनुयायी होइत रहलाह। ओ लोकनि कलमक अभाव मे अधिकांशत: लोककंठे मे सीमित रहि गेलाह, से भिप बात। मुदा हुनका लोकनिक जे किछु जतय कतहु भेटैत अछि, ओहि मे कबीरक चेतना अवश्य देखार दैत अछि। एहि मामिला मे भेल ई अछि जे जाहि प्रस्तोता सँ ल' क' एहि काव्य कें अभिलिखित कएल गेल छल होयत, ओ कबीरक अनुयायी रहल हेताह। कबीरो पंथ मे राग-रंग, ब्याह-शादी के खूब वर्णन भेटैत अछि, यद्यपि कि ओ सब टा प्रतीकात्मक होइछ। ओकर भणिते लग मे जा क' बात खुजैत छैक। विद्यापतिक अनुसर्ता होइतथि तँ कविक नाम टा बदलि क' भनहि विद्यापति' क' दितथि, मुदा कबीरक अनुयायी लेल अंतिम पूरा छन्द लिखब किएक जरूरी रहल हेतैक, तकर कारण सहजहि बूझल जा सकैत अछि। अंतिम छन्द देखी—'कहय कबीर दिगम्बर थाकत/ लीला बरनि ने जाय/ छूटल अच्छर रघुवर जानथि/ हमसों किछु ने बसाय/ भला आपहुँ सँ मिलि कय शुद्ध किय।' एहि ठाम कबीरक ज्ञान-परम्पराक स्पष्ट झलक देखल जा सकैत अछि। कवि जें कि स्वयं अपन यशक लोभी नहि अछि, तें ओकरा श्रेष्ठो कवि लोकनिक विचार कें उठा क' अनस्थाने सही, उद्धृत क' देबा मे कोनो संकोचो नहि छैक।

58 पांतिक एक आर 'सीतास्वयम्बर' भेटैत अछि जकर भणिता मे नाम तँ ककरहु नहि भेटैत छैक मुदा एकर भाषा आ भाव देखने लगैत अछि जे इहो लोकनाथ कविक रचना भ' सकैत अछि। एकर पहिल छन्द अछि—'नगर अयोध्या राज उचित थिक/ जहँ बसु दशरथनन्द यो/ रामक जोड़ी बसथि जनकपुर/ छपन कोटि देल दान यो।' भाव अछि जे रामक जन्म तँ अयोध्या मे भेल अछि, तें ओ प्रशस्तो मानल जाइ छथि, मुदा हुनकर जोड़ी (जिनका सँ विवाह हेबाक छनि) जनकपुर बसै छथिन, जिनका छप्पन करोड़ देवताक आशीर्वाद प्राप्त छनि। एहि सम्मरि मे एक टा नव उद्‌भावना भेटैत अछि। प्रसंग अछि जनकक फुलबाड़ीक, जतय राम-लक्ष्मण संग सीता आ हुनकर सखी लोकनिक भेंट होइत अछि। भेंटे टा नहि, एहि ठाम गप-सप, नियार-भास आ निर्णय धरि होइत देखाओल गेल अछि। कविक पंक्ति देखी—'हम तोरा पुछू सीता/ तुअ मोरा भाउजि हे/ कओन संकट तोरा घेरल/ पुजिय भवानिय हे/ कहइते आ हे बाबू लछुमन/ कहइत लजाऊ हे/ धनुष-संकट हमें घेरल/ पुजिय भवानिय हे/ फेरि दिअ आहे सीता आरति/ फेरि दिअ धूप-दीप हे/ फेरि दिअ सखिया-सलेहर/ जनकपुर नंदिनी हे/ होयब अयोध्याक रानी/ कि तुरही बजायब हे।' लोकगीतक एहिठाम पूरा छाया छैक जे कि असल मे कवि-सिद्धि थिक। काव्यत्वक उड़ान लोककवि मे सेहो संभव होइत छैक जेना गरीब मनुक्ख सेहो मनुक्खे होइत अछि।

भक्ति आ सन्त-साहित्य

मैथिली मे कविता-लेखनक जे आरम्भ भेल छल, ओ सही माने मे सन्त-साहित्य छल, सत्य तँ ई कहब हेतैक जे आधुनिक भारतीय भाषा सब मे आगू जे भक्तिकाव्य वा सन्तकाव्य लिखल गेलैक, ताहि समस्त के ओ मूल प्रेरणाबिन्दु छल। मुदा, विद्यापतिक बाद जखन एक बेर मैथिली कविता चलि निकलल तँ विद्यापतिक आदर्शक राग-साहित्य ओकरा लेल सर्वस्व भ' गेलैक। सन्त-साहित्य ठीक-ठीक ककरा कहल जा सकैछ तकरो धरि ठेकान मैथिलीक अध्यापक लोकनि कें नहि रहलनि आ मिथिलाक सन्तसाहित्य मध्य ओ लोकनि मंडन मिश्र आ हुनकर कथित स्त्री भारती धरि कें शामिल करैत रहलाह।[28]

डॉ. जयकान्त मिश्र अठारहम शताब्दीक मध्य मे मैथिली कविता (गीत-काव्य) मे एक टा मौलिक परिवर्त्तन होइत देखैत छथि।'शृंगारगीत आओर व्यवहार-गीतक लेखन तँ पूर्ववत होइत रहल, किन्तु विशेष ध्यान भक्ति-मूलक आओर दार्शनिक आभास बला विषय पर देल जाए लागल।'[29] प्रथमत: तँ एहि कोटिक कवि लोकनि मे ओ रत्नपाणि, गोपीश्वर, शंकर, रामनाथ, आदिनाथकवि आदिक नाम गनबैत छथि आ बादक परिदृश्यक बारे मे हुनकर कहब छनि जे 'बाद मे मैथिली कवि विष्णुपद दिस झुकलाह।' मैथिली कविता मे एहन मौलिक परिवर्त्तन किएक आ कोना भेलैक, एकरा पाछू की कारक छल, ताहि संबंध मे जयकान्त मिश्र एक्को शब्द नहि लिखने छथि। एकर परिणाम टा पर ओ एक वाक्य लिखने छथि—'एहि प्रवृत्ति कें बल भेटलैक ओहि कवि-मंडली सँ, जाहि मे मुख्य व्यवसायक रूप मे विष्णुक अर्चना मे लागल साधु आओर महंथ कोटिक लोक रहथि।'[30] हुनक कहब छनि जे मिथिला मे विष्णु-अर्चना एक व्यवसायक रूप ल' लेलक, व्यवसायी लोकनि छलाह वैष्णव साधु आ महंथ लोकनि। मिथिला मे विष्णु-भक्ति वास्तव मे एक व्यवसायक रूप मे विकसित भेल, आ कि जयकान्त बाबू श्रद्धालु, स्मार्त ब्राह्मण हेबाक कारण ई अनर्गल आरोप लगौलनि अछि, एहि बात पर विवाद भ' सकैत अछि। मुदा, विलक्षण बात ई छैक जे एहि 'व्यवसाय'क भाषा मैथिली नहि छलैक,

ओ कि तँ ब्रजभाषा छल अथवा सधुक्कड़ी। मैथिलीक प्रयोग ओतय गोग्रासे जकाँ भेल अछि। प्रमुखत: दू टा एहन कवि कें मैथिलीक इतिहासकार लोकनि इतिहासबद्ध करब पसिप केलनि अछि। संत लक्ष्मीनाथ गोसाँइक संबंध मे मायानन्द मिश्र लिखलनि अछि—'संत लक्ष्मीनाथक अनेक पद प्राप्त अछि जकर अनेक संस्करण प्रकाश मे आयल अछि जकर भाषा मैथिली, ब्रजभाषा तथा सधुक्कड़ी मिश्रित भाषा अछि, किन्तु प्रमुखता अछि मैथिली भाषाक।'[31] एहन प्रतीत होइत अछि जे प्रो. मिश्र 'लक्ष्मीनाथ भजनावली'क नामेटा सुनि क' बिनु देखने ई बात लिखि देलनि अछि, कारण हुनक भजनावली मे 734 पद संकलित अछि, जाहि मे सँ मात्र पचीस टाक भाषा मैथिली थिक, शेष ब्रजभाषा आ सधुक्कड़ी मे अछि। जे पद मैथिली मे अछियो तकरा हुनकर प्रतिनिधि पद, जाहि सँ हुनकर साधना वा कवित्वक वैशिष्ट्य प्रतिपादित होइत हो, नहि कहल जा सकैछ। दोसर इतिहाबद्ध कवि साहेबराम लग मे मैथिलीक पद अपेक्षाकृत बेसी छनि, मुदा हुनको मुख्य भाषा मैथिली नहि छल। एहि तरहें इतिहासबद्धे कवि लोकनि दगा क' जाइत छथि आ प्रमाणित नहि भ' पाबैछ जे वैष्णव-व्यवसायक भाषा मैथिली छल।

'कबीरपन्थ इन मिथिला' डॉ. पूर्णेन्दु रंजनक पुस्तक छियनि, जे वर्ष 2008 मे प्रकाशित भेल अछि। एहि मे ओ देखौलनि अछि जे कोना सतरहम शताब्दी मे अत्यन्त गंभीरता आ उत्साहक संग कबीरपन्थक विकास मिथिला मे आरंभ भेल छल आ शूद्र आ दलित वर्गक विशाल जनसंख्याक धार्मिक आवश्यकता पूरा करैत ने केवल ई आइयो सक्रिय अछि अपितु समयानुसार एकर गति मे वृद्धिये भेलैक अछि, सोशल मीडिया धरिक नव-नव तकनीकक प्रयोग ई लोकनि केलनि अछि आ आइ सैकड़ो-हजारोक संख्या मे कबीरपंथी प्रभावक मैथिली गीत हमरा लोकनि ग्रामीण गायक सँ यूट्यूब पर देखि-सुनि सकैत छी। पूर्णेन्दु अपन पुस्तकक आरम्भे मे कहैत छथि जे कबीरपंथ केवल एक सम्प्रदाय नहि, मिथिलाक शूद्र आ दलित लोकनिक लेल 'सामाजिक-धार्मिक मुक्तिक आन्दोलन रहल अछि।'[32] फ्रांसिस बुकानन 1809-1812 मे पूर्णियाँ जिलाक आधिकारिक सर्वे कयने छलाह। ओ अपन रिपोर्ट मे देखौलनि अछि जे पूर्णियाँ जिलाक विभिप स्थान पर अनेको कबीरमठ संचालित छलैक जे अपना कें धर्मदासी शाखा संग सम्बद्ध करैत छल, एकर सभक मुख्य शाखा बगीचा मठ (रोसड़ा) मे छलैक।[33]

जेना सिद्ध लोकनि कें एक जबाना मे आम जनताक बीच अपन मतक प्रचार हेतु स्थानीय भाषा मैथिलीक काज पड़ल छलनि, ठीक वैह स्थिति कबीरपंथक सन्दर्भ मे हमरा लोकनि बीसम शताब्दी धरि देखि सकैत छी। सैद्धान्तिक ग्रन्थ जे हिनकर आचार्य लोकनि लिखलनि, जकर पाण्डुलिपि मिथिलाक विभिप भाग मे पाओल

गेल अछि, तकर भाषा प्रचलनक मोताबिक निस्सन्देह ब्रजभाषा वा सधुक्कड़ी अछि, मुदा आम जनताक संग सत्संग आदि मे जे गीत गाओल जाइत छल तकर भाषा मैथिली होइत छल। एकर किछु दृष्टान्त पर आगू चर्चा होयत।

केवल मैथिल ब्राह्मण कवि हेबाक कारण कोना मैथिलीक विद्वान लोकनि ब्रजबुलिक महान कवि गोविन्ददास कें मैथिली कवि घोषित क' अपना लेने छलाह आ हुनकर सम्प्रदायक मान्यता कें अस्वीकार करैत कोना अन्ततः हुनका जड़ि सँ अलग क' मात्र एक शृंगारिक कवि साबित कयने छलाह, एकर पूरा विवरण हमरा लोकनि गोविन्ददासक प्रकरण मे देखि आएल छी। मुदा, एतय मिथिला मे, मैथिली भाषा कें प्रधान भाषा बना क' जे तीन सय वर्ष सँ गीत लिखल आ गाओल जा रहल छलैक, तकरा दिस ओ लोकनि तकबो धरि नहि केलनि आ 'मिथिलाक सन्तकवि' ओहि सन्त लोकनि कें घोषित केलनि जिनकर रचनाक प्रधान भाषा मैथिली नहि छल। ई मानू एक जीवन्त काव्यधारा सँ अपना संकायक लोक कें मान्यता द' इतिहासबद्ध क' छुट्टी छोड़ायब छल। व्यापक भक्ति आन्दोलन कें डॉ. जयकान्त मिश्र तँ मठक व्यवसायिकता सँ जोड़लनि, मुदा प्रो. मायानन्द मिश्र तँ एकर अस्तित्वे सँ इनकार क' देलनि। ओ लिखलनि—'मिथिलाक लेल स्वयं सन्तकाव्य तथा ओकर अबौद्धिकता एवं अशास्त्रीयता ओ साकार-निराकारक प्रति एक संग समान आकर्षण तथा सूफी मतक छौंक, ई सब अपरिचित छल तैं ने एहि ठाम टिकि सकल आ ने चलि सकल। आ तैं पश्चिम भारतक कबीरक अशास्त्रीयता, साकार-निराकारक प्रति द्वन्द्वभाव, धार्मिक उच्छृंखलता तथा वैचारिक असंतुलन मिथिला मे नहि चलि सकल।'[34] हमर इतिहासकार लोकनि मिथिला कें कते कम जनैत छथि, तकर पता एहि सँ चलैत अछि। मुदा, स्वयं अपनो धर्म कें ओ कते कम जनैत छथि? शंकराचार्यक अद्वैत सिद्धान्त ब्राह्मण धर्मक चिन्तनाक सर्वोच्च शिखर थिक, से बात स्वयं मायानन्द मिश्रो मानैत छथि। मुदा, की ओ एहि बात कें देखि सकलाह जे अद्वैत वेदान्त भने सैद्धान्तिक रूप सँ कतबो तर्कसंगत होइक, ओहि मे भक्तिक लेल कि देवी-देवताक पूजाक लेल, जकरा ओ शास्त्रीयता कहैत छथि, कोपहु जगह नहि भ' सकैत छैक! भक्ति कि पूजन तँ साकारेक भ' सकैत अछि निराकारक नहि, जखन कि शंकराचार्यक ब्रह्म अवाघ्मनसगोचर, भावाभावविवर्जित तथा निर्विशेष थिकाह। असल बात ई थिक जे शंकराचार्यक दर्शन कें भक्तिक दृष्टि सँ नितान्त त्रुटिपूर्ण मानैत स्वयं दक्षिणहि मे चारि गोट आचार्य भेलाह जे हुनक अद्वैत मतक खंडन केलनि आ वैकल्पिक बाट सुझौलनि। ई लोकनि छलाह—रामानुज, माधव, निम्बार्क तथा विष्णुस्वामी, जिनकर दर्शन क्रमशः विशिष्टाद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत आ शुद्धाद्वैत कहबैत अछि। एकरा क्यो अशास्त्रीय आ अबौद्धिक कोना कहि सकैत अछि? आगू रामानन्द भक्तिक क्षेत्र मे

जातिवर्ण-भेद कें समाप्त केलनि आ चैतन्य एकरा आर आगू बढ़बैत लीलगानक परम्परा कें एहि मे शामिल केलनि। रामानन्दक शिष्य कबीर कें क्यो उच्छृंखल तथा असंतुलित तँ तखनहि टा कहि सकैत छथि जँ भक्ति आ मानवता सँ बेसी हुनकर प्रतिबद्धता वर्ण आ जाति-भेद बनौने रखबा पर हो। सूफी मतक छौंक वा साकार-निराकारक प्रति द्वन्द्वभाव किनकहु व्यक्तिगत धारणा नहि छियनि जे एकरा अस्वीकार कयने ई अस्वीकृत भ' जायत। ई एक वास्तविक सत्य थिक। सन्तसाहित्यक प्रधान गुण थिक—मानवतावाद, निर्भीकता, फक्कड़पन, समाज मे जे आलोच्य हो तकर स्पष्ट शब्दें आलोचना, मानव-जगतक संबंध मे सुधारवादी दृष्टिकोण, उदारता, बाह्य कर्मकांडक स्थान पर धर्मक सार-तत्व कें ग्रहण करब, सामंजस्यवाद आदि। ई वास्तविक सत्य थिक आ एखनहुँ संसार कें एकर आवश्यकता छैक तें एकर अस्वीकारक अर्थ अपन जड़तेक प्रदर्शन टा भ' सकैत अछि।

मुदा आगू लक्ष्मीनाथ गोसाँइ पर लिखैत मायानन्द मिश्र सन्तसाहित्य आ भक्तिकाव्य कें एक दोसर सँ सर्वथा भिप, विपरीत ध्रुव पर ठाढ़ घोषित करैत छथि, मानू सन्तसाहित्य भक्तिक नहि मात्र उच्छृंखलता आ असंतुलनेक काव्य होइक। दुनूक गुणावगुण पर प्रकाश दैत ओ लिखैत छथि—'भक्तिकाव्य ओ सन्तकाव्य परम्परा, भावबोधक दृष्टियें परस्पर विरोधी काव्य-धारा थिक। कारण, प्रथम शास्त्रीय तथा दोसर थिक अशास्त्रीय, प्रथमक उद्देश्य थिक गार्हस्थ्य ओ पुन: पुन: जन्मधारण आ दोसरक उद्देश्य थिक संन्यास ओ मोक्ष, प्रथम मे स्वसंस्कृति परम्पराक रंग अछि, दोसर मे विजातीय ज्ञानक, प्रथम मे अछि सहिष्णुता, दोसर मे उग्रता, प्रथम मे बौद्धिक चिन्तनक सन्तुलन अछि तथा दोसर मे अछि अबौद्धिकता, प्रथम थिक साकारोपासना तथा दोसर थिक निगुर्णियाँ।'[35] एहि उद्धरण कें पढ़ने सँ साफ लगैत अछि जे मिथिला मे निर्गुण काव्यधाराक हुनका खूब पता छनि, मुदा जें कि हुनकर अपन सम्प्रदायक मताग्रह मे हुनकर इतिहास-लेखन सेहो लपेटि लेल गेल अछि, ओ ओम्हर सँ आँखि मूनि लैत छथि। मुदा, हुनकहि अनुसार, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ तँ सन्त छलाह। तखन? लक्ष्मीनाथक बचाव करैत लिखैत छथि—'संत लक्ष्मीनाथ दुनूक अद्‌भुत संयोग आ समन्वय केलनि अछि।' दोसर दिस, साहेबराम दास तँ सेहो सैह छलाह। हुनकर बचाव मे लिखैत छथि—'साहेबराम दास संन्यासी होइतहु कृष्णकाव्यक रचना अधिक केलनि जाहि मे परम्परागत शृंगार-भाव सेहो अछि। ई शिवविषयक अनेक पदक रचना सेहो केलनि।'[36] अर्थात ई सब यदि नहि कयने रहितथि तँ हिनकहु लोकनिक संतत्व निन्दनीय छल।

एहि ठाम उचित होयत जे एहि धाराक कविता सब कें हमरा लोकनि भक्तिकाव्य आ संतकाव्यक दू अलग-अलग कोटिक अन्तर्गत देखी।

जेना कि ऊपर उद्धृत कयल गेल, डॉ. जयकान्त मिश्र अठारहम शताब्दी मे मैथिली कविता मे एक गोट बड़ मौलिक परिवर्त्तन अबैत देखैत छथि। एकरा पाछू कारण की छल, तकर खोज ओ नहि केलनि अछि। एकर विवरण आयल अछि मोहन भारद्वाजक एक लेख मे। ओहि ठाम ओ देखबैत छथि जे ओहि समय मे मिथिला मे बेर-बेर अकाल पड़ैत छल। आम लोक अपक अभाव मे साले-साल मरय मुदा राजाक लगान साले-साल बढ़ैत जाइत छल। धर्मक बन्धन ढील भ' रहल छल। संस्कृतक आधिपत्य मे कमी आबि रहल छल। ब्रिटिश प्रशासन दिस सँ अंग्रेजी पर जोर छल तँ दोसर दिस इसाई मिशनरी देसी भाषा मे अपन धर्मप्रचार क' धर्मान्तरण पर जोर द' रहल छल। ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज आदि संस्था बनल तँ सनातन धर्मक बाना मे, मुदा जेना कि मिथिलाक लोक अनुभव केलक, 'इहो सब सनातन धर्म कें मटियामेटे करबाक षडयंत्र छल।' इस्लामी शासनक प्रतिकार मे अन्य प्रान्त मे जेना भक्ति-आन्दोलन विकसित भेल छल, तकर पहुँच आब मिथिला धरि बनि रहल छलैक। अनतय जे परिस्थिति पन्द्रहम-सोलहम शताब्दी मे आबि चुकल छलैक से परिस्थिति आब मिथिला मे, अठारहम शताब्दी मे उत्पप भ' रहल छल। मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि—'वैष्णवधर्म आ अवतारवादक मान्यता पर जोर तत्कालीन सामाजिक आवश्यकताक परिणाम छल। शासक वर्ग सेहो सामाजिक व्यवस्था कें संतुलित रखबाक लेल धर्मक उपयोग केलक।'[37]

एहि तथ्यक पुष्टि तत्कालीन रचना सब सँ सेहो होइत अछि। वैष्णव सन्त रामसनेही दास (1819-1906)क एक पद मे तत्कालीन परिस्थिति सभक चित्र एहि प्रकारें भेटैत अछि—'सीतापति रामचन्द्र कोशल रघुराई/ वेद विप्र धेनु संत, दुखित सकल जीव-जन्त/ मैथिल नृप ज्ञानवंत, बिपति-घटा छाई/ ब्रिटिश राज करत पाप जन-गण बिच बढ़ल दाप/ आबि आब हरहु ताप सत्वर सुखदाई/ सबल सुवन भेल मंद देशक दय फटक फंद/ मूँह कान करै बंद गोरा कटकाई/ कहत रामस्नेहिदास मारहु खंड श्रीनिवास/ हरहु त्रस एक आस चरण केरि साईं।'[38] एहि ठाम लोकक दुर्दशा, ब्रिटिश राजक अत्याचारक बीच जखन ओ मैथिल नृप कें 'ज्ञानवंत' कहैत छथि तँ मानू बड़ भारी व्यंग्य क' रहल होइत छथि। ब्रिटिश राजक खिलाफ जेना ओ साफ-साफ लिखलनि, एहन दृष्टांत मिथिला-मैथिली मे बहुत कम अछि। एहू सँ कदाचित बेसी मार्मिक हुनकर ओ पद अछि जाहि मे सीताक वंदना करैत ओ कहैत छथि जे 'लख मुनिजन परिजन परजाजन सचराचर चहुँ ओर/ केहि विधि कतए जाए हम ककरा कहि माँ, करबै सोर।' ओहि ठाम ओ सीताक पृथ्वी-प्रवेश पर आपत्ति करैत इहो कहैत छथि जे 'निरखि दशा लवकुशक न सरिपों किनकर लोचन नोर?/ रामसनेही मुदा धरनि तों सिय गहि लए लेलि कोर।' लवकुशक दशा देखि

क' ककर आँखि नहि डबडबा जाइछ! मुदा, सीता पताल-प्रवेश करब पसंद केलनि!

तहिना, कपिल कविक एक भगवान-भजन मे आमजनक अभावग्रस्तताक वर्णन एहि तरहें भेलैक अछि—'अप ओ वस्त्र विना चैन नहि राति दिना/ नहि टृण के ठेकान/ कर्मक हीन दानी किछुओ दिय' हे प्राणी/ नहि दुख दारिद्र समान।' शशिनाथ कविक एक भजन मे पढ़लो-लिखल लोकक बेरोजगारी, आ ताहि सँ उत्पप भीषण दरिद्रताक वर्णन भेल अछि। बेगरतूत भेने कोना अपनो लोक पराया भ' जाइत छैक—'मंगने कहय हाथ अछि खाली, रहितो द्वार बखारी हे/ लिखल-पढ़ल कत बात गढ़ल कत, किछुओ ने भेल हितकारी हे।'[39] चन्दा झाक किछु भजन मे एहि परिस्थितिक तिक्ख दृश्यांकन भेल अछि। जेना एहि ठाम—'गैया जगतक मैया हे भोला कटय कसैया हाथ/ हाकिम भेल निरदैया हे भेला कतय लगायब माथ।'

मुदा, ब्रिटिश सरकार वा जमीन्दारक अनीति आ कुव्यवस्था मैथिली कविताक विषय नहि बनल। वस्तुवादी ढंग सँ साहसपूर्वक अवलोकन सँ से होइत। एकरा बदला भाववादी ढंग सँ भयपूर्वक देखल गेल आ तकर परिणाम भक्तिकाव्यक रूप मे भेल। अपन इष्टदेवक स्तुति मे गीत लिखब मिथिला मे सब दिन सँ प्रचलित रहल अछि। एक तरहें देखी तँ जकरा फकड़ा जोड़य अबैत छैक, एहन हरेक भक्त एहि ठाम एक छोट-मोट कवि रहल अछि आ तद्युगीन प्रवृत्ति सँ एकरा कोनो मतलबो नहि रहल अछि, केवल अपन इष्टभक्ति सँ काज रहैत छल। ई क्रम आइयो जारी अछि। एहि ठाम भक्तिक एक रूप ओहो अछि जतय स्वयं राजनीति केनिहार—राजा वा मंत्री वा धनिकवर्ग जिनका शोषणक पथ पर चलैत एक तरहें मनुष्यद्रोहक अभियोगी मानल जा सकैत अछि, एहनो लोक भक्तकवि छथि। हिनका लोकनिक भजन अधिकतर देवी उपसनापरक होइत छनि। एहन भजन सब मे अधिकतर हमरा लोकनि शक्ति, भुक्ति आ मुक्ति माँगल जाइत देखैत छिऐक, भने माँगल जाइत एहि तीनू वस्तुक बीच कोनो तर्कसंगत सामंजस्यो बनैत होइक वा नहि। मनुष्य-द्रोहक जहाँ धरि प्रश्न अछि, एकरा तँ सम्पूर्ण मैथिली भक्ति-साहित्यक सब सँ भयावह सीमा मानल जा सकैत अछि। आम लोक वा जमीन्दार कवि लोकक तँ बाते छोड़ी, एहि ठाम जे परमहंस टाइपक महान वैष्णव सन्त सब भेलाह सेहो लोकनि परमात्मा सँ प्रार्थना यैह केलखिन जे वेद, विप्र, धेनु आ संतक रक्षा करथि। ई चारू जँ कष्ट मे छथि तखने कष्ट कें कष्ट बूझल जाइछ। भक्तिक परिभाषा देल गेल अछि जे श्रद्धा आ प्रेमक योग भक्ति होइछ, मूल तत्व तँ प्रेमे थिक, मुदा प्रेम मे जे ऐकान्तिकता रहैछ, तकर जखन समाजीकरण भ' जाइत हो, आ ताहि संग श्रद्धा जुड़ल हो, तँ से भक्ति थिक। मम्मट भट्ट जखन भक्ति कें एक स्वतंत्र रसक हैसियत दैत एकरा परिभाषित करैत छथि तँ यैह कहैत छथि जे 'देवविषयक रति भक्ति थिक', मुदा

एहि ठाम आबि क' 'देवविषयक' आ 'रति' के व्याप्ति बढ़तैक कि ने! अखिल चराचर एहि रतिक भीतर आबि जायत, तखनहि तँ क्यो पाथर वा वृक्ष वा पशु-धरिक भीतर ईश्वरक भावना क' सकैत अछि। वेद, विप्र, धेनु आ संत सँ बाहरो जँ कल्याणक कामना कबीरपंथी कविता मे छैक तँ तकरा मैथिली कविताक चौहद्दी सँ एहि लेल बाहर राखल गेल अछि जे ओ 'उग्र' आ 'उच्छृंखल' छैक।

कोन परिस्थिति मे अठारहम शताब्दी मे, मिथिला मे वैष्णव मठ सभक संग वैष्णव-भक्तिक प्रादुर्भाव भेल रहैक तकर चर्चा ऊपर भेल अछि। उनैसम शताब्दीक अन्त मे आबि क' एहि मठ सभक मिथिला, मने दरभंगा जिला मे, की स्थिति छल तकर किछु विवरण रासबिहारी लाल दासक पुस्तक 'मिथिला दर्पण' (1915) मे भेटैत अछि। ओहि ठाम एहन वैष्णव मठ सभक ओ सूची देने छथि, जे एतबा सम्पप छल जे ओकर भूमि विषयक वार्षिक आय एक हजार रुपैया सँ बेसी छलैक। ओहि समयक बाजार-भाव के इतिहास देखी तँ पता लगैत अछि जे अठारहम शताब्दी शुरू हेबाक समय 1 रुपैया मे 90 सेर अनाज अबैत रहैक जखन कि उनैसम शताब्दीक शुरूआत मे ई 47 सेर भ' गेलै। एहि तरहें जन-समाज पर महगीक मारि सेहो पड़ि रहल छल। पता लगैत अछि जे महगी के बढ़बा मे 1857क विद्रोह आ रेल-सेवाक आरंभ के पूरा भूमिका रहैक। महगीक बारे मे चन्दा झाक ई कविता बेस प्रसिद्ध अछि—'मरीच भाव अप भेट से जनेर गोट/ उपायहीन लोक कें सुखाय गेल भोट।' एक ठाम आर कहै छथि—'दूध ओ दही नही स्वकण्ठ कें सुखाउ/ अप ई महार्घ तें जनेर कीनि खाउ।'

एहना स्थितिक समाज मे, हजार रुपैया सँ ऊपर बला मठ सब, अर्थ मातबर हेबा सँ अछि, तकर एक नमहर सन सूची, अक्षरानुक्रम मे प्रस्तुत क' देलाक बादो अन्त मे 'इत्यादि' लगौने छथि। (रासबिहारी लाल दासक सूची मे छनि—अन्टौर, अदलपुर, अंधारी दामोदरपुर, कमलाबाड़ी, कोटौला, कुन्हौली, गाढ़ा, गाहड़, गुरम्हा, गोलौठी, गंगासागर, चनौरा, चानपुरा, चोरौत, आहर, धरमपुर, नरघोघी, नदियामी, पचगामा, पचाढ़ी, पोखरौनी, फुलकाही, फुलहर, बनबारो, बसुआर, बलिराजपुर, बहोरवन, बराही, बिसौली, बिशनपुर, बेलाही, भरबाड़ा, भवानीपुर, भिरहा, मकरन्दा, मटुकिया, मिरजापुर, मुरेठ, मोरोना, मंगरौनी, रामपुरा, रामपट्टी, लोठबा, सारी, सिधपा, सोनकी, हनुमाननगर, इत्यादि।')[40] हजार सँ नीचा बला तँ आरो जानि नहि कतेक छल होयत। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक बारे मे कहल जाइछ जे ओ सतरह ठाम कुटी (मठ) बनौने छलाह, जाहि मे सँ चारि टा तँ मुख्य छल।[41] ताहू सँ पहिने साहेबराम दास (1860-1770) छव टा कुटी बनौने छला।[42] एहि तमाम मे सँ नमहर भेल मठ आ तकर महंथक बारे मे रासबिहारी लालदास लिखै छथि—'(पुराने समय से) मिथिलापुरी

में सदावर्त की परंपरा स्थापित थी। संस्थापक साधु-महात्मा इस सदावर्तिक सम्पत्ति को विषवत समझकर परमार्थ में ही लगाते थे किन्तु निज कार्यों में कभी व्यय नहीं करते थे। और इनकी प्रवृत्ति संसार-विरक्त तथा कलत्रत्यागी तथा उदासीन होते थे, परन्तु वर्तमान समय में तो 'एको6हम् द्वितीयो नास्ति' की बात है।'[43] एहन वैष्णव साधु लोकनिक प्रवृत्ति पर लक्ष्मीनाथ गोसाँइ कड़गर कटाक्ष कयने छथि—'ठगि-ठगि ठौर-ठौर ते भागे, यन्त्र-मन्त्र लिखि केती/ चटक दिखाइ गोसाँइ कहाबे, फिरि-फिरि घर घर सेती/ कहीं झूठ कहिं सांच बोलि के धन लेने की रीती/ बान्धि अखाड़ा कियो महन्ती, करन लगे तब खेती।'[44] एकर बाद ओ (रा.बि.ला. दास) चारिये गोट मठक नाम लेलनि जकर महंथ मैथिल ब्राह्मण छलाह, तकरा ओ मुख्यत: ठीक मानलनि। विशेष विवरण मात्र एक टाक—पचाढ़ी मठक—देने छथि—जतय सदावर्त कमोवेश एखनो जारी छल। बिहारी लाल फितरत अपन किताब मे सूचना देलनि अछि जे 1870 के दशक मे एहि मठक औसत वार्षिक आय चालीस हजार रुपैया छल। बांकीक बारे मे दास जी लिखलनि अछि—'इन महंत समुदायों में विशेष संख्या भूमिहार की है।'[45] ब्राह्मण कम किएक छथि तकर कारण बतौलनि अछि जे 'ये लोग परिवारप्रिय गृहस्थ तथा शाक्त होते, वैष्णव कमतर होते हैं।'[46] ई स्वभाव ब्राह्मणेक नहि, समस्त सुविधाप्राप्त जातिक छल। दलितवर्ग जे छल, सुविधाहीन-उपायहीन—तकर स्वभाव आन तरहक छलैक। ओहि स्वभावक अनुकूल ई धर्म रूप नहि ल' सकल छल। एक टा पैघ अंशक समाज एहि वैष्णव मठक संग नहि छल। ओकरा जाहि प्रकारक धर्म अनुकूल पड़ै छल से कबीरक धर्म छल। कबीर दलित समाज मे पूरा पसरलाह। ब्राह्मणवर्चस्व सँ दुखी जे सद्शूद्र जातिक लोक छला, सेहो लोकनि थोड़ेक भिप आवश्यकतावश कबीर दिस अयलाह। मिथिला समाज मे वैष्णवधर्मक असल रूप यैह रहलैक। एकरा माया बाबू 'उग्र' आ 'उच्छृंखल' कहैत छथि। ई असल मे वर्चस्व आ प्रतिरोधक राजनीति थिक, आ इतिहासकार वर्चस्वी दिस छथि। ई शब्दावली उग्र दक्षिणपंथ कें उभारैबला, प्रेरित करैबला शब्दावली थिक, तें साहित्य लेल अप्रयोजनीय।

भद्रजनोचित विचारक जे वैष्णव साधु लोकनि छलाह, सेहो लोकनि माया बाबुए जकां कबीर आ हुनक पंथक प्रति घोर असहिष्णु रहथि। लक्ष्मीनाथ गोसाँइ अपन एक भजन (?) में कबीरदास कें एहि शब्दें स्मरण करैत छथि—'रहे एक कोइ पापी घाती, मरल मगह मे जाई/ खात न ताहि गिद्ध कौआ खग, कुक्कुर देखि पड़ाई/ गलि गये मांस चाम भौ न्यारा केश हाड़ बिलगाई।'[47] ईश्वर जे अधमो लोक पर दया क' क' ओकरा ताड़ि देल करैत छथिन, तकर एक लंबा सूची विभिप साधुक भजन सब मे आएल अछि, मुदा ओहि ठाम भूलो सँ कबीरक नाम नहि भेटत।

लक्ष्मीनाथक एक पद मे छनि—'अपर निरोग भये हैं केते, गोपी, शबरी, मीरा, राही/ घना भगत, रविदास, नामदेव, केवट, सदना, सुपच सिपाही।'[48] वैष्णव कबीर भद्रजनोचित वैष्णव साधुओक लेल अस्पृश्य छथि।

1883 मे मूलत: उर्दू मे प्रकाशित 'आईना-ए-तिरहुत' बिहारी लाल फितरत लिखने छलाह। एकर हिन्दी अनुवाद कल्याणी फाउन्डेशन प्रकाशित कयने अछि। एहि पुस्तक मे फितरत ओहि जबाना मे मिथिला मे ख्यात किछु महात्मा लोकनिक नाम देने छथि। सूची देखने सँ पता लगैत अछि जे प्राय: समस्त महात्मा भद्रोचित समाजक छथि, बेसी गोटेक चमत्कार प्रसिद्ध छनि, किछुए गोटे एहन छथि जे किछु भक्तिपद सेहो लिखने छथि—एहन लोक मे ओ साहेबराम दास, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, रामदयाल आ वेणीमाधव तिवारीक नाम देने छथि। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक बारे मे लिखलनि अछि जे 'लेखक को गोसाँइ जी से मुलाकात हुई थी। लड़कपन में देखा था।' रामदयाल तिवारीक हजारो भजन छनि आ वेणीमाधव तिवारीक सैकड़ो, तकर चर्चा 'आईना-ए-तिरहुत' करैत अछि मुदा एहि दुनू गोटेक कोनो भजन कतहु नहि प्राप्त होइत अछि।

जाहि वैष्णव साधु लोकनिक भजन भेटैत अछि, ताहि मे सँ किछु छथि—अपूछदास (1791-1892), रामरूप दास (1800-1870), रामसनेही दास (1819-1906), कान्हर दास, शम्भु दास आदि। अपूछदासक एक पद मे पारिवारिक जीवनक निस्सारताक वर्णन भेल अछि—'जे सुत पोसल बहुत जतन सौं घृतमधु भोजन कराई/ से सुत भागत प्रेत प्रेत कहि दादा अबत लबाई/ जे नारी तोहें प्राणपियारी सोबहु अंग लगाई/ से नारी न्यारी होइ जैहें मति रहु नारि लोभाई।' रामरूपदासक एक भजन मे सम्भ्रान्त समाजक कुत्सित मनोवृत्ति पर प्रहार भेल अछि जे अपन स्वार्थ लेल तँ कुकूर जकाँ बौआइत रहैत अछि, मुदा आनक उत्कर्ष देखि ईर्ष्या करैछ, आनक विपत्ति पर आनंदित होइछ आ अपन सम्मानक सदा गौरव रखनिहार एहन लोक दोसरक अपमानक कोनो अवसर नहि चुकैत अछि—'संपति अवर को देखि जरत उर विपति निरखि हरखानी/ डोलत फिरत घर-घर कुकुर सम कदहुँ न पेट अघानी/ पर को छिद्र विलोकत जहँ तहँ पर-तिय निज कर जानी/ पर अपमान मान नहि कदहूं दिन-दिन मान मोटानी।' रामस्नेही दासक भजन सब मे भक्त हृदयक औदात्यक संगहि अदम्य साहस सेहो देखार दैत अछि। कैक ठाम ब्रिटिश राजक अनीति के स्पष्ट विवरण आयल अछि। एक पद मे कहैत छथि—'गोरा म्लेच्छ विधर्मी बढ़ले चहुँदिस खल समुदाई/ एहि कलिकाल और किछु साधन चलतै नै चतुराई।' एक पद मे तँ ओ स्पष्ट रूप सँ कहैत छथि जे जकरा लोक ब्रजवासी कृष्ण कहै छथि से आर क्यो नहि, हमरे अवध के रसिया, अर्थात राम थिकाह। एहि संतक ई आकलन निश्चिते

तुलसीदासक ओहि कथित प्रतिज्ञाक सर्वथा विपरीत अछि जतय ओ कहै छथि जे तुलसी मस्तक तब नबै धानुष-वाण लै हाथ। एक पद मे भौतिक सुख-संपदाक निषेध करैत कहैत छथि—'प्रभु मोहि और अधिक नहि दीजै/ दए दिढ़ भगति रामसनेही को सब संपति हरि लीजै।' हुनकर दोहा-संकलन 'श्रीरामस्नेही शतक' मे ज्ञानवादी परंपराक बहुतो वस्तु संकलित भेल अछि। एक टा दोहा छनि—'पण्डित ढूँढ़त रहि गयो पायो मूरख मर्म/ रामसिनेही भगत को होबए अद्‌भुत कर्म।' एक टा सोरठा मे आयल अछि जे लोक द्वारा देल गेल 'संतशिरोमणि' उपाधि पर अपन आत्मनिवेदन मे भगवान कें की कहै छथि—'कहि कहि सिरमनि सन्त, प्रभु मोहि लोगन आदरहीं/ जानौं तोहि अनन्त, हौं सेवक तुअ दास को।'[50]

मिथिलाक वैष्णव संत कवि लोकनिक बारे मे एक तँ नहिमोक बराबर लिखल गेल अछि, जतबा लिखलो गेल अछि तँ ई बात नहि बिसरल गेल अछि जे ओ कोन महान कुलक ब्राह्मण छलाह, किछु ठाम तँ ओहि महान कुलक समस्त अतीत-भविष्यक गुण-गाथा लगभग ओही तरहें प्रस्तुत कयल गेल अछि जेना कहियो रमानाथ झा विद्यापतिक वंश आदिक संबंध मे अपन लेख सब मे कयने छलाह। अपन उद्‌भव मे वैष्णव विचारधारा एक क्रान्तिकारी विचारधारा छल, जाहि मे जाति-वर्ण, लिंग आदिक समस्त बन्धन शिथिल छल। ओहुनो संन्यासीक कोनो जाति नहि होइत अछि। मुदा से तँ शाक्त साधना-पद्धतिक सेहो नियम छल। मुदा मिथिला एक विचित्र क्षेत्र रहल जतय क्रान्ति आ प्रतिक्रान्ति, विद्रोह आ यथास्थिति दुनू मानू एक्के थारी मे संग-संग भोजन करैत छल। अस्तु, वैष्णव भक्तिक प्रति अन्यथा भाव रखितहु थोड़-थाड़ जे नाम मुश्किल सँ लेल जा सकल, सोचलो नहि जा सकैत छल जे कोनो दलित वा शूद्र जातिक वैष्णव सन्त भेल होथि आ हुनकर वृत्तान्त इतिहासक पृष्ठ धरि पहुँचि पाओत। उदाहरणक लेल रंगलाल दास (1802-1858)क देखि सकैत छी। महात्मा नाम सँ अपन परोपट्टा मे प्रख्यात रंगलाल दास यादव कुलक छलाह। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक समकालीने टा नहि, हुनकर पड़ोसिया गाम बैरो (सुपौल)क निवासी रहथि जतय हुनका द्वारा स्थापित वैष्णव मठ एखनहु क्रियाशील अछि। जगदीश यादवक संपादन मे हुनकर 159 पदक संकलन 'रंगमाला भजनावली' नाम सँ प्रकाशित अछि जाहि मे हुनकर संक्षिप्त जीवनक्रम सेहो देल गेल छैक। कोशीक इलाका मे ई किम्वदन्ती प्रसिद्ध छैक आ एकर चर्चा एहू पुस्तकक भूमिका मे कयल गेल छैक जे एक बेर लक्ष्मीनाथ गोसाँइ संगे रंगलाल दास कें परस्पर विवाद पत्रचारक माध्यमें भेल छलनि। ई प्रसंग रोचक एहि दुआरे अछि जे विवादक मूल मे वर्णव्यवस्था अछि, जकर समर्थन करैत लक्ष्मीनाथ कें देखाओल गेल अछि आ रंगलाल कें तकर प्रत्याख्यान करैत। अपन गौआँ-घरुआ सब सँ रंगलालक प्रशंसा सुनि क' हुनकर

जाँचक वास्ते, अध्यात्म मे हुनकर अपात्रता कें देखबैत लक्ष्मीनाथ एक पत्र हुनका पठौलकनि। पत्र मे ई पाँती छलैक—'कौन कहा हरि कैसा मूरत, कबहूं न कोई देखा है/ ब्रह्मा चार वेद के मालिक, जाती वरण बनाया है।' रंगलाल दास लगले हुनका उतारा पठा देलखिन—'अलख अगोचर है अविनाशी, हरिजन हरि को देखा है/ देखो प्रह्लाद भक्त के कारण खंभ फाड़ि हरि आया है/ विष्णु होकर बलि के द्वारे वामन नाम धराया है/ घर-घर देखो गोप बधुन संग अतिशय प्रेम बढ़ाया है/ मीरा प्रकट किये मूरत से नामदेव मधु पिलाया है/ वेद पुराण के सम्मति से रंगलाल गुण गाया है।' रोचक ई एहू लेल अछि जे एतय देल गेल सब दृष्टान्त असुर, शूद्र आ स्त्री लोकनिक छनि, जिनकर अध्यात्म मे अपात्रता मानल जाइछ। एहि हिसाब सँ लक्ष्मीनाथक आपत्ति के सटीक उत्तर एहि मे छलैक। आ, आधार ओही वेद-पुराण कें कहल गेल छल जकर अनुयायी लक्ष्मीनाथ अपनहु छलाह। मुदा, किंवदन्ती मे इहो प्रचलित अछि जे लक्ष्मीनाथ एकरो उतारा लिखने छलाह—'वेद-पुराण-कुरान की सम्मति है कोउ ऐसा कहता है/ अन्धे के पुर हाथी जैसे अकिल स्वरूप बताता है।' तात्पर्य ई जे कोपहु हालति मे ओ रंगलाल दास कें मानि देबा लेल तैयार नहि भेल छलाह। एहि ठाम एक बात आरो ध्यान देबा योग्य अछि। रंगलाल तँ केवल वेद आ पुराणक सम्मतिक बात अपन उतारा मे कयने छलाह, लक्ष्मीनाथ ओहि मे कुरान सेहो जोड़ि देलखिन, एहि व्यंग्यक मारकता ध्यातव्य अछि। अर्थात रंगलाल एहू लेल अपात्र छलाह जे ओ मुस्लिम कें अपन संग रखैत छलाह। आइ दलित-शूद्र जातिक जे लोक 'सनातन हिन्दू' बनल जयश्रीराम क' रहल छथि, हुनका लोकनि कें अपन पुरखाक स्मरण रखबाक चाही।

मिथिलाक वैष्णव सन्त लोकनिक काव्य मे हमरा लोकनि देखैत छी जे सगुण भक्तिक पद तँ ओ लिखबे केलनि, ताहू मे सर्वाधिक कृष्ण आ रामक जीवन-प्रसंगपरक, अपन आराध्य देवक हरेक जीवन-प्रसंग पर लिखब जेना हुनकर बाध्यता होइन, मुदा एकरा अतिरिक्त आन अनेक देवी-देवता शिव, दुर्गा, उमा, गंगा पर सेहो ओही तरहक भजन लिखलनि जेहन कि क्यो गृहस्थ भक्तकवि लिखैत छलाह। एहन भक्तिगीत सब ओ चाहे साहेबरामक होइन कि लक्ष्मीनाथक अपन भाव आ अभिव्यक्ति मे एहन कोनो विलक्षणता नहि राखैत अछि जेहन कि कोनो गृहस्थक नहि भ' सकैत हो। कृष्णक प्रसंग मे तँ कतोक ठाम एहि सन्त लोकनि कें ओही प्रकरण पर गीत लिखैत देखल जा सकैत अछि जाहि पर विद्यापति लिखने छथि। अन्तर यैह अछि जे विद्यापतिक गीत एक धर्मनिरपेक्ष साहित्यिक कृति थिक जखन कि हिनका लोकनिक रचना धार्मिक सीमाक भीतर अछि। गृहस्थ आ सन्तक फर्क जतय देखार दैत अछि से निर्गुण पद थिक, जकर रचना प्राय: सब सन्त कयने छथि। रंगलाल

दास अल्पायु भेलाह मुदा हुनका बारे मे प्रसिद्धि अछि जे ओ प्रत्येक दिन एक टा नव भजन लिखथि आ अपन इष्टदेव कें सुनाबथि। यैह बात लक्ष्मीनाथक संग सेहो छलनि, से प्राय: सब सन्तकविक संग छलनि। एहना मे, एक सन्त जे युवावस्था मे रचना केलनि आ वैह परिणतवय भेला पर बैराग्यक पद लिखलनि, दुनूक बीच भाव आ अनुभवजन्य भिपता होयब स्वाभाविके थिक।

रंगलाल दासक पद सब मे अनेक नव बात अछि जकर आन सन्त मे अभाव देखल जाइछ। कबीरक प्रति जे लक्ष्मीनाथक विचार छलनि तकर ऊपर चर्चा भेल। रंगलाल कबीर कें सम्मानपूर्वक तँ स्मरण करिते छथि, ओ तुलसीदासक प्रति सेहो वैह सम्मान रखैत छथि। कहै छथि—'तुलसी, सूर, कबीर, रूपानंद, उनकर महिमा अगम अपार/ रंगलाल शरण में आए, राखहु शरण लगाई।' सन्त लोकनिक एक सामाजिक दायित्व सेहो होइत अछि। समर्थ गुरु रामदासक एक प्रसिद्ध पदक भाव छनि जे गाम पर यदि गुंडा हमला क' दियय तँ सन्त कें अपन माला खूंटी पर टाँगि क' गुंडा कें भगेबा मे ग्रामीण सभक संग देबाक चाही। वास्तविक अर्थ मे जे लोक धार्मिक होइत छथि, हुनका मे ई गुण होइतहि छनि। आनो सन्त मे हेबाक कथा सब प्रचलित अछि। रंगलाल दासक किछु पद सेहो एहि प्रकरणक भेटैत अछि। गाम मे अकाल पड़ि गेलैक अछि, ताहि पर हुनकर पद छनि—'कैसे चले झाड़ूदारी हो सीताराम/ बहे न हल पड़े न कुदाली, आमद कछु न हमारी।' प्रार्थनाक ई पद हृदयंगम करबा योग्य अछि—जँ एहिना अकालक स्थिति बनल रहलैक तँ इष्टदेवक पूजा-प्रार्थना यथावत कोना संभव अछि? ओहि पदक अंत मे छैक, लगैत अछि जे ग्रामीण लोकनि महात्मा जी कें कोनो चमत्कार करबाक निवेदन कयने हेथिन, ओ कहैत छथि जे 'रंगलाल के कछु बस नाही, जानहु जगत भिखारी।' आ एहि स्थिति मे एकमत भ' क' परिश्रमपूर्वक इनार-पोखरि खूनब मात्र उपाय अछि—'सकल ग्रामीण मिलि एकमत होहु, मानहु वचन हमारी।'

रंगलालक एहि भजनमाला मे किछु मर्सिया सेहो संकलित छैक। एक पद कें देखने सँ लगैत अछि जे हुनकर अनुयायी मुस्लिम लोकनि सेहो छलाह आ हिन्दू-मुस्लिम एकताक जे रूप हमरा लोकनि 1857क विद्रोहक समय देखैत छी से गाम-घरक एक सामाजिक वास्तविकता छल। पद छनि—'हाय रे अल्ला किदन भेला मियां कहाँदन गेला/ मनु सुतिहार पच्छिम गेला, फोचाइ गेला उत्तर को/ तबला सारंगी ढनमन भेला ठीठर पड़ला अनमन मे।'[51] ऐतिहासिक स्रोत सब सँ हमरा लोकनि अवगत छी जे जखन कंपनी सरकार 1857 के विद्रोह कें दबेबा मे सफल भ' गेल तँ विद्रोही सब सँ बदला लेबाक जे कार्रवाइ चलल ताहि मे फिरंगीक सेनाक द्वारा बीस लाख भारतीय प्रजाक हत्या कयल गेल छल। चिह्नित गाम वा चिह्नित समूह पर अचानक सिपाही सभक धावा होइक आ जे पकड़ल जाय तकरा मारि दैक वा जीवित पकड़ा गेल तँ गामक कोनो उँचगर गाछ ताकि क' खुलेआम फांसी लटका दैक जाहि सँ अंग्रेजक अकबाल जुग-जुग बरकरार रहय, प्रजा भय मानय। रंगलालक एहि गीत कैँ हमरा लोकनि एहि कार्रवाइक 'आंखों देखा हाल' कहि सकैत छिऐक।

अंग्रेज सिपाही सभक बदलाक टारगेट संत सभक समूह एहि दुआरे बनैत छल जे खुफिया-तंत्रक अनुसार, ई लोकनि अपन भजन-मंडलीक संग जतय-जतय जाथि, फिरंगी शासनक प्रति विद्रोह भड़कबैत छला। लक्ष्मीनाथ गोसांइ के तँ एक शिष्य क्रिश्चियन जॉन अंग्रेजे रहथि, एहन कोनो कनेक्शन रंगलाल कैँ नहि छलनि। एहन प्रतीत होइत अछि जे रंगलाल दासक भजन-मंडली पर जे फिरंगी हमला भेल ताहि मे ओ अपने आ हुनकर एक शिष्य ठीठर पकड़ल गेला आ शहीद भेला। गुमनाम शहीद। बीस लाख भारतीय प्रजा मे सँ क्यों एक-दू।

'जे जे आए फिर फिर जावे, जग मे रहिहे कोइ नाही/ सब शिष्य मिलि एकमत होइहें, रंगलाल सुमरहु मन मांही।' सोहर, महेशबानी, चौमासा, बारहमासा आदि रंगलाल मैथिली मे लिखने छथि। रंगलाल जगपाथपुरीक यात्रा पर सेहो गेल छला, एक पद ताहि पर अछि—'मन आनंद भेल देखलौं मैं पुरुषोत्तमपुर नगरिया/ महाराज के रूप निरेखल सकल पाप लेल हरिया।' ओतय ओ मलूकदासक चौकी पर सेहो गेलाह—'दास मलूका के चौकी उहमां, तहमां पाय टुकरिया/ अगहन शुक्ल पुरी हम त्यागल, रंगलाल दुख टरिया।'[52] जगपाथपुरीक यात्रा लक्ष्मीनाथ सेहो कयने छलाह। ओ मलूक दासक चौकी पर नहि गेल छलाह। जतय-जतय गेल छला, अपन पद मे चर्चा कयने छथि—'जय जगमोहन चन्दन चौकी, जय मूरति हर पापा/ जय जय दारु ब्रह्म परिकर्मा, करन हरण भवतापा।'[53] जगपाथपुरीक यात्रा साहेबराम सेहो कयने रहथि। हुनकर अनुभव बहुत दारुण छल। तकरा ओ अपन भजन मे व्यक्त कयने छथि—'सब जग भेल भाला, गुरु आ अठारह नाला/ आ हे सजनी, ओहि ठाम कोइ न छोड़ायल रे की/ सिंघ दरवाजा देखि मन मोरा लुबधल/ आहे सजनी, ओहि ठाम पंडा बेंत बजारल रे की/ साहेब जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि/ आहे सजनी जगत जीवन नियरायल रे की।'[54]

ई स्पष्ट अछि जे मिथिलाक सन्त लोकनि मे काव्य-भाषा ल' क' एक असमंजस सदैव बनल रहल आ किछु किछु मैथिली मे लिखितहु ओ लोकनि मुख्यत: ब्रजभाषा मे लिखैत रहलाह। ब्रजभाषा सेहो हिनका लोकनिक प्रयोगशाला मे आबि क' अबंच बचल होइक, सेहो नहि, ओ अपन इच्छानुसार भाषा-प्रयोग केलनि, जकरा मिथिला मे सधुक्कड़ी भाषा वा बबजिया बोली कहल जाइत छैक। हुनकर रचनाक वैशिष्ट्य आ आध्यात्मिक अनुभवक प्रामाणिकता कें जनबाक लेल एहि पद सब

कें गुनब अनिवार्य थिक। मुदा, दोसर दिस एक टा आर प्रवृत्ति हमरा लोकनि देखैत छी जे हिनका लोकनिक कतेको ब्रजभाषा पद लोकगीत मे प्रचलित भ' गेल। लोकगीतक संकलयिता लोकनिक पाठ जे कि लोककंठ सँ लेल गेल अछि, तकरा जँ हुनक रचनावलीक मूल पाठ सँ मिलान क' क' देखी तँ पबैत छी जे अधिकांशत: ब्रजभाषाक रचना कें 'लोक' अपन व्यवहार-शब्दावली आ वाक्य-गठन सँ भरि क' मैथिलीक पद बना लेलकैक। मैथिली लोकगीतक प्राय: प्रत्येक संकलन मे साहेबराम, लक्ष्मीनाथ आदिक पद भेटैत अछि। रंगलाल अथवा रामस्नेही दासक पद नहि भेटैत अछि। रंगलाल अथवा रामस्नेही दासक पद नहि भेटैत हो तँ एकर कारण यैह बुझबाक चाही जे ओहि पदक प्रसार-क्षेत्र सँ लोकगीत-संकलन नहि कयल जा सकल अछि।

मैथिलि मे प्राय: तीन प्रकारक रचनाकार द्वारा रचित भक्ति-गीत भेटैत अछि— सन्त, साधक आ व्यवहार-गीतक रचयिता। साधक अर्थात तंत्र-साधक, जिनकर अधिकांश गीत शक्ति-साधना विषयक अछि। अठारहम-उपैसम शताब्दी मे एहि गीतक भाषा मैथिली छल, जे कि पूर्व मे संस्कृत रहल हेतैक। सब सँ आश्चर्यजनक तँ ई जे आधुनिक युग मे आबि क' एहन चर्यागीत, जे साधना-क्रम मे गाओल जाइत हो, के प्रतिस्थानी भाषा पुन: संस्कृत (श्लोक) भ' गेल। संस्कृत श्लोक, जे प्राचीन कवि लोकनिक द्वारा लिखित, संकलित होइत अछि। व्यवहार-गीत मे सब दिन भक्ति-गीतक आवश्यकता बनल रहलैक, कारण मिथिलाक कोनहु संस्कार वा चर्या भक्तिगीते सँ आरंभ होइछ। स्त्रीगण कें प्राचीन संकलनक अछैतो नव-नव गीतक काज पड़ैत रहैत रहलनि, कारण लोकसाहित्यक स्वभावक अनुरूपे बहुतो रास प्राचीन गीत समयानुसार लुप्त होइत रहलैक। एहना मे स्त्रीगण आवश्यकतानुसार अपनहु गीत बनबैत रहलीह आ अपन पहुँच के कवि लोकनि सँ गीत लिखि देबाक आग्रह सेहो करैत रहलीह। एहन अनेको कविक रचना लोककंठ मे तँ अवश्य अछि, लोकगीतक संकलन सब मे सेहो अछि, मुदा एहन कवि सब कहियो इतिहासक हिस्सा नहि बनि सकलाह।

कुल मिला क' मैथिली भक्ति-साहित्य कें देखी तँ पबैत छी जे रचनाकार लोकनिक सर्वाधिक ध्यान अपन इष्टदेवक लीलागान पर रहल। सगुण भक्ति-परंपराक ई अनुरूपे छल। पहिनहि चर्चा भेल जे देवता लोकनिक कतोक कृत्य जे अपन मूल मे धर्मनिरपेक्ष आशय रखैत छल, आब धार्मिक रंग ल' लेलक। एहि क्रम मे मुदा पौराणिकताक मात्र युगानुसार घटैत गेल आ तकरा स्थान पर लौकिकताक वृद्धि भेल। लखत्र पांडेक एक भैरव-गीत मे ठीक वैह प्रसंग कतहु बेसी आत्मीयताक संग उठा लेल गेल छैक जे पहिने शिवक लेल प्रसिद्ध छल। शिव आ भैरव मे अन्तर ई छनि जे एक बसहा पर चलैत छथि दोसर पांव-पैदल। 'धर सँ बहार भेली नैन जोगिनियाँ/ एक्के टक्के भैरव निहार/ भिखियो ने लै छै भैरव, मुखहु ने बोलै छै/ वैह भैरव छल कैने जाय।'[55] चक्रधरक एक महेशबानी मे दाइ-माइ जखन दूल्हा शिव कें देखै लेल अबै छनि तँ हुनकर तृतीय नेत्र कें टकटक निहारैत देखि छगुन्ता मे पड़ै छथि—'कि कहब हे सखि, हिनक ढिठाइ/ टक-टक ताकय, किछु ने धखाय/ धर-धुर लाज करू गाम घिनाय/ आबहु वसन लिय' माथ चढ़ाय।'[56] विवाहकाल मे शिवक विचित्र बाना आ व्यवहार पर बहुतो गीत प्राचीने काल सँ लिखल गेल, मुदा लक्ष्मीनाथक एक गीत मे हुनकर कायिक विशेषता सभक अद्‌भुत वर्णन भेल अछि—'सकुचल चाम, सीर सब जागल/ नख सिख पसरल चमरदिनाइ/ सटकल पेट पीठ मे लागल/ छरहर पजरा के हाड़ दिखाइ/ मुख नहि दाँत, गाल दुनू चोकटल/ उझकुन सन मुख मोछ बनाइ।'[57] एकरा देखने एनमेन बिकौआ काया आँखिक सोझा ठाढ़ भ' जाइछ। छत्रनाथक एक पद मे दुर्गाक रण-कौशलक वर्णन एहि शब्दें कयल गेल अछि—'सिंह चढ़ि कत समर धँसि-धँसि/ विकट मुख विकराल हँसि-हँसि/ शुम्भ कच गहि कएल कर बसि/ मासु गहि असि हे।'[58] शाक्त भक्ति-धाक एक विलक्षणता इहो छैक जे भक्त अपना जे गलती करैत अछि, तकरो छार-भार अपन इष्ट देविए पर सौंपि देबाक सुविधा छैक। जेना, यदुनन्दन कविक एही काली-गीत मे आयल अछि—'लोभा कए चित्त कें बल सँ हमर मन कें फँसौने छी/ विषय के मोह ममता मे महामाया मतौने छी/ की केलौं, कखन केलौं अहीं सब टा करौने छी/ पिया कए मोहमय मदिरा महामाया मतौने छी।'[59] वैष्णव अथवा निर्गुण धारा मे एहि सुविधाक सर्वथा अभाव छैक। लक्ष्मीनाथक एक पद मे मिथिलाक जमीन्दारवर्ग, धनिक वर्ग जे कि अधिकतर शक्ति-उपासक होइत छलाह, के मानू कच्चा चिट्ठा खोलल गेल अछि आ एहन लोक कें दगादार, कसूरदार आ नमकहरामी कहल गेल अछि—'सन्त सताय गणिका प्रतिपाले, केते कल लगाई/ केते जीव सताय लाय धन, झूठे बात बनाइ/ क्रोधी, कपट, काम, मदमाते, एहि विधि जनम गमाई/ दगादार हौं, नमकहरामी, कसुरदार हौं भारी।'[60] मुदा जनसाधारण जे भक्तहृदय अछि, ओकरा मे एहू व्यतिरेकक ज्ञान पाओल जाइत छैक, अपन आत्मनिवेदन मे एहि सब कथू कें ओ स्वीकार करैत अछि। जेना कि कन्त कविक एहि गीत मे देखल जा सकैत अछि—'ने पूजा मोन सँ कयलौं ने मन्त्रे ध्यान सँ जपलौं/ उदर चिन्ता के ज्वाला मे समय सब टा बितौने छी/ हमर सन जे कुटिल कामी, जतए जे क्यो भेला नामी/ क्षमा करि कय महारानी, अहाँ तैयो निमाहै छी।'[61] शिवक भक्ति एहि मे सर्वाधिक सुगम पड़ैत अछि। बैकुण्ठ कविक एक गीत मे आएल अछि जे 'एक बेर हुकुम चलाउ हे भोला/ बड़का टाक पीसि देब भांग के गोला/ टूटल तँ गांथि देब रुद्राक्षक माला/ फाटल तँ सीबि देब बाघ के छाला।'[62] जे हो, एहि भक्तिक सब सँ पैघ विशेषता थिक जे इष्टदेव कें सेहो भक्त अपनहि बीचक एक सदस्य, अपनहि सन सीमा मे आबद्ध पबैत छथि।

सब कथूक अछैत मिथिलाक सगुण भक्ति-उपासनाक एक गंभीर सीमा रहल जे एहि ठाम विराट मानवतावाद के सर्वथा अभाव रहल। एकर कारण भेल ब्राह्मणधर्मक लघु मताग्रह, जकर मनोवैज्ञानिक सीमा सँ कवि आ साधक लोकनि तँ सहजहि, सन्त लोकनि सेहो घेरायल रहलाह। लक्ष्मीनाथ गोसाँइ सन सन्त, जिनका बारे मे कहल जाइछ जे हुनकर एक प्रमुख शिष्य क्रिश्चियन तँ दोसर मुसलमान छलाह, आ ओ अपने सब सिद्धि कें प्राप्त क' परमहंस भ' गेल छलाह, हुनको रचना मे हमरा लोकनि वर्ण-व्यवस्थाक समर्थन, समानता आ समन्वय पर आधारित वैष्णवधर्मक विरोध आदि देखैत छी तँ हतवाक् रहि जाय पड़ैत अछि आ कबीरक कथन मोन पड़ि जाइत अछि जे कि ब्राह्मणवादी पुजेगरी सभक बारे मे कहलनि अछि। जखन लक्ष्मीनाथ कहैत छथि जे 'ब्रह्मा वेद चारि के मालिक, जाति बरन बिलगाया है/ जड़ जंगम सबही को गढ़ता लेकिन भेद न पाया है।'[63] तँ रोचक थिक जे वर्णव्यवस्था कें ओ तते तात्विक वस्तु मानलनि अछि जकर रहस्य कें बुझबा मे स्वयं ब्रह्मा धरि असमर्थ रहि जाइत छथि। एहना मे, भक्तियोक पद मे एहन-एहन मानवताद्रोही, जे मानव-मानवक बीच विभेद करैत हो, कथन सब भेटि जाय तँ आश्चर्य नहि मानबाक चाही। लखत्र पांडेक लिखल एक ज्वालामुखी-भजन हमरा मोन पड़ैत अछि, जतय ओ चौदह देबानक सेवक भइयो क' गुआर जातिक निन्दा करैत लिखैत छथि जे 'कौने कुगति मति देलौं हे ज्वालामुखी/ अयलों गुआरक गाम।'[64] स्वाभाविके अछि जे एहन सीमाबद्ध भक्तिक परम उद्देश्य मनकामना-पूर्त्तिये टा भ' सकैत अछि, मुक्ति वा शरणागति तँ बहुत आगूक बात भेल। मैथिली मे बहुतो कविक बहुतो पद एहि आशयक लिखल गेल जाहि मे जीवनक चारू अवस्थाक मे कयल गेल गतिविधिक वर्णन करैत हाथ आयल शून्य, जकरा विद्यापतिक शब्द मे 'परिणाम निराशा' कहल जा सकैछ, अबैत अछि। महात्मा नाम सँ प्रसिद्ध जीवनराम (अठारहम सदी)क एहि पद कें मैथिल भक्तिक एक औसत परिमाप मानल जा सकैत अछि—'बाल समय हम खेल बिताओल, तरुण समय सुखयामा/ वृद्ध समय पुनि व्याधि ग्रसित भए, जपलहुँ नहि तुअ नामा/ माया के किंकर भए रहलहुँ निस दिन आठो यामा/ भव केरि भारें प्रेम मगन नहि, गाओल तुअ गुनगामा/ अब अपराध क्षमा करू माता, पुरिअ सकल मनकामा।'[65]

सन्दर्भ

1. राजमोहन झा/ टिप्पणीत्यादि/ पृ. 58
2. डॉ. विश्वेश्वर मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखन/ संपादक मोहन भारद्वाज (1989)/ पृ. 38
3. उपर्युक्त/ पृ. 42
4. टिप्पणीत्यादि/ पृ. 56
5. उपर्युक्त/ पृ. 57
6. उपर्युक्त/ पृ. 57
7. उपर्युक्त/ पृ. 59
8. रागतरंगिणी/ संपादक पं. शशिनाथ झा/ पृ. 5
9. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 131
10. विशेष विवरण लेल देखी—ज्योतिरीश्वर/ डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, मैथिली अकादमी/ पृ. 60 एवं ज्योतिरीश्वर/ डॉ. सुरेश्वर झा, साहित्य अकादेमी/ पृ. 22
11. किरण समग्र/ पृ. 146
12. उपर्युक्त/ पृ. 148
13. विवरण लेल देखल जा सकैछ—पाहन फोरि गंग एक निकसी/ रामचन्द्र ओझा/ पृ. 81-89
14. विशेष विवरण लेल देखी-हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 4/ पृ. 78
15. मिथिलातत्वविमर्श/ पृ. 175-76
16. नरेन्द्रविजय/ संपादक पं. महेश झा (1921)/ पृ. 3
17. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण/ प्रधान संपादक नलिन विलोचन शर्मा/ खंड 6/ पृ. 104
18. रागतरंगिणी/ पं. बलदेव मिश्र संस्करण/ पृ. 11-12, डॉ. शशिनाथ झा संस्करण/ पृ. 20
19. मिथिला गीतसंग्रह/ भाग 3/ पृ. 28
20. मिथिला संस्कारगीत (कामेश्वरी देवी)/ पृ. 170
21. हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 2/ पृ. 266
22. उपर्युक्त/ खंड 1/ पृ. 122
23. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण/ खंड 6/ पृ. 110
24. रामइकबाल सिंह राकेश/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 101
25. मैथिली साहित्यक इतिहास (डा. जयकान्त मिश्र)/ पृ. 180
26. रमानाथ झा/ भूमिका/ मैथिली कथाकाव्य/ पृ. 4
27. उपर्युक्त/ पृ. 10-11
28. विशेष विवरण लेल देखी—'मिथिलाक साहित्यक सांस्कृतिक उत्कर्ष मे संत कवि लोकनिक योगदान', संपादक—देव नारायण साह (2016), प्रकाशक-साहित्यक अकादेमी।
29. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 207
30. उपर्युक्त/ पृ. 207
31. प्रो. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 144
32. पूर्णेन्दु रंजन/ कबीरपंथ इन मिथिला/ पृ. 1
33. उपर्युक्त/ पृ. 51
34. प्रो. मायानन्द मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 143
35. उपर्युक्त/ पृ. 145

36. उपर्युक्त/ पृ. 149,
37. मोहन भारद्वाज/ रामकथाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ चन्द्ररामायण/ अनवरत/ पृ. 4
38. हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 2/ पृ. 159-60
39. गीतनाद (संपादक विभति आनन्द/ जयोत्स्नाचन्द्रम)/ पृ. 25
40. रास बिहारी लाल दास/ मिथिला दर्पण/ पृ. 127
41. छेदी झा द्विजवर/ भमिका/ लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. ल
42. विवरण लेल देखी—साहेबराम दास (मोनोग्राफ)/ श्रीशंकर झा/ पृ. 14
43. मिथिला दर्पण/ पृ. 126
44. लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. 246-47
45. मिथिला दर्पण/ पृ. 126
46. उपर्युक्त/ पृ. 127
47. लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. 207 (यैह गीत अणिमा सिंहक 'मैथिली लोकगीत' (पृ. 49) मे सेहो प्रकाशित अछि।
48. उपर्युक्त/ पृ. 269
49. आईना-ए-तिरहुत/ पृ. 82
50. विशेष विवरण लेल देखी—श्री रामस्नेही दास (संपादक-श्रीशंकर झा (2005)
51. रंगमाला भजनावली (संपादक जगदीश यादव)/ पृ.
52. उपर्युक्त/ पृ.
53. लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. 205
54. साहेबराम पदावली/ पृ. 63
55. मैथिली लोकगीत (अणिमा सिंह)/ पृ. 95
56. उपर्युक्त/ पृ. 64
57. उपर्युक्त/ पृ. 71
58. हिन्दी साहित्य और बिहार/ शखंड 1/ पृ. 121
59. मैथिली लोकगीत (अणिमा सिंह)/ पृ. 33
60. लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. 175
61. मैथिली लोकगीत (अणिमा सिंह)/ पृ. 33
62. उपर्युक्त/ पृ. 78
63. लक्ष्मीनाथ भजनावली/ पृ. 213
64. मैथिली लोकगीत (अणिमा सिंह)/ पृ. 41
65. हिन्दी साहित्य और बिहार/ खंड 1/ पृ. 128

•••